



# THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

[WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC](http://WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC)

---

## FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

**If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.**

**-The TFIC Team.**

वीर सेवा मन्दिर  
दिल्ली



क्रम संख्या

४०४५

काल न०

२६३.२

जोहरा

खण्ड

31 नवंबर से समाप्ति तक

माणिकचन्द्र दि० जैन ग्रन्थमाला : ग्रन्थांक-४८

# जैन शिलालेख संग्रह

## [ भाग चार ]

संग्राहक-संपादक

डॉ० विद्याधर जोहरापुरकर,  
एम० ए०, पीएच० डी०

प्रकाशक

भारतीय ज्ञानपीठ काशी

प्रथमावृत्ति ]

वीर निर्वाण संवत् २४९१

[ मूल्य ७ रुपये



## **ग्रन्थमाला सम्पादक**

डॉ० हीरालाल जैन, एम० ए०, डी० लिट्०

डॉ० आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये, एम० ए०, डी० लिट्०

प्रकाशक

भारतीय ज्ञानपीठ

दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

प्रथम आवृत्ति १००० प्रति  
मूल्य सात रुपये

मुद्रक

सन्मति मुद्रणालय

दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

## अनुक्रमणिका

<b>प्रधान सम्पादकीय</b>	<b>५-८</b>
<b>प्राक्कथन</b>	<b>६-१०</b>
<b>संकेत-सूची</b>	<b>११</b>
<b>प्रस्तावना</b>	<b>१-३३</b>
१ लेखकोंका साधारण परिचय	१-२
२ जैन संघका परिचय	२-१६
(अ) यापनीय संघ	२-४
(आ) मूलसंघ	४-१४
(इ) गौड संघ	१४
(ई) द्राविड़ संघ	१५
(उ) माथुर संघ	१५
(ऊ) पंचस्तूप निकाय	१५
(ऋ) जम्बूखंडगण	१५
(ॠ) सिंहवूरगण	१५
(ऌ) जैनसंघके विषयमें साधारण चिचार	१५-१६
३ राजवंशोंका आश्रय	१६-३२
(अ) उत्तर भारतके राजवंश	१६-१६

## जैनशिक्षालेख-संग्रह

(भा) दक्षिण भारतके राजवंश	१९-३२
(इ) राजाश्रयके विषयमें साधारण विचार	३२
४ जैन संघकी दुरवस्था	३२-३३
५ उपसंहार	३३
<b>मूल लेख ( तिथिक्रमसे )</b>	<b>१-३८४</b>
<b>परिशिष्ट</b>	
१ श्वेताम्बर लेखोंकी सूचना	३८५-३८८
२ जैनेतर लेखोंमें जैन व्यक्ति आदिके उल्लेख	३८९-३९२
३ नागपुर प्रतिमा लेख संग्रह	३९३-४२९
<b>मन्दिरों व मूर्तियोंका विवरण</b>	<b>४३०-४५४</b>
<b>नामसूची—</b>	<b>४५५</b>

## प्रधान-सम्पादकीय

प्राचीन कालकी मानवीय प्रवृत्तियोंका विधिवत् वर्णन व विश्लेषण हो इतिहास है। ऐसे इतिहासके लिए आधारभूत सामग्री प्राप्त होती है मानव-की निर्मितियोंके भग्नावशेषों अर्थात् गुफाओं, चैत्यों, स्तूपों, समाधियों, गृहों, मन्दिरादि धर्मायतनों व मूर्तियों जैसे स्थापत्यके भग्नावशेषोंसे, चित्रोंसे व साहित्यिक रचनाओंसे। किन्तु इनसे भी अधिक प्रामाणिक और यथावत् वृत्तान्त उन लेखोंसे मिलता है जो राजाओं व अन्य धनिकोंके दानकी तथा उनके द्वारा निर्माण कराये गये मन्दिरादिकी स्मृति-रक्षणार्थ पाषाणखण्डों व ताम्रपटों आदि पर उत्कीर्ण कराये गये पाये जाते हैं। ऐसे प्राचीनतम लेखोंकी लिपि बहुधा वही ब्राह्मी है जिससे आजकी नागरी लिपि विकसित हुई है, तथापि उसका प्राचीनतम रूप इतना भिन्न था कि उसे पढ़ना बहुत कठिन सिद्ध हुआ। बड़े परिश्रमके पश्चात् उस लिपिकी कुंजी हाथ लगी, जिससे लगभग गत अढ़ाई सहस्र वर्षोंके शिलालेख पढ़े और समझे जा सके। किन्तु चालीस-पचास वर्ष पूर्व सिन्धु घाटीसे ऐसे भी मुद्रालेख प्राप्त हुए हैं, जिन्हें पढ़ने और समझनेका अभी प्रयास ही चल रहा है, कोई सफलता प्राप्त नहीं हो सकी।

जो प्राचीन शिलालेख पढ़े गये और प्रकाशित हुए वे पुरातत्त्व विभागके बहुमूल्य व दुर्लभ ग्रन्थमालाओं व पत्रिकाओंमें समाविष्ट पाये जाते हैं। इनमें जैन धर्म सम्बन्धी शिलालेखोंका विवरण भी यत्र-तत्र बिखरा पाया जाता है। इन लेखोंका ऐतिहासिक महत्त्व तब प्रकट हुआ जब सन् १८८९ में मैसूरके पुरातत्त्व विभागकी ओरसे श्रवणबेलगोलके १४४ शिलालेखोंका अलगसे संग्रह एक विद्वत्तापूर्ण प्रस्तावना सहित प्रकाशित हुआ। सन् १९२२में इसका संशोधित और परिवर्धित संस्करण प्रकाशमें आया

जिसमें शिलालेखोंकी संख्या ५०० हो गयी। इसी बीच सन् १९०८ में फ्रांसीसी विद्वान् गैरीनोकी एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई, जिसमें उन्होंने तब तक प्रकाशित हुए आठ सौ पचास जैन शिलालेखोंका परिचय कराया। इस सब सामग्रीके सम्मुख आनेपर कुछ जैन विद्वानोंकी आँखें खुलीं, और उन्हें अनुभव हुआ कि जब तक इस सामग्रीका उपयोग करते हुए धर्म व साहित्य सम्बन्धी लेख नहीं लिखे जायेंगे तबतक जैनधर्मका प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। स्वभावतः उस समय जो विद्वान् जैन साहित्य और इतिहासके संशोधनमें तल्लीन थे उन्हें इस आवश्यकताका विशेष रूपसे बोध हुआ। इनमें माणिकचन्द्र ग्रन्थमालाके संस्थापक व प्रधान सम्पादक स्वर्गीय पं० नाथूरामजी प्रेमीकी याद आती है। उन्होंने ही अपनी प्रेरणा-द्वारा जैनशिलालेख संग्रहका प्रथम भाग तैयार कराकर प्रस्तुत ग्रन्थमालाके २८वें पुष्पके रूपमें प्रकाशित किया, जिसमें श्रवण-बेलगोलके उपर्युक्त पाँच सौ शिलालेख नागरी लिपिमें हिन्दी सारांश तथा विस्तृत भूमिका व अनुक्रमणिकाओं सहित जिज्ञासुओं व लेखकोंको अति सुलभ हो गये। इसका तुरन्त ही हमारे साहित्य व इतिहास संशोधन कार्यपर महत्त्वपूर्ण प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगा। तद्विषयक लेखोंमें इनके उपयोग द्वारा बड़ी वांछनीय प्रामाणिकता आने लगी जिसके लिए प्रेमीजी-जैसे विद्वान् बहुत आतुर थे। अब उन्हें अन्य शिलालेखों को भी इसी रूपमें सुलभ पानेकी अभिलाषा तीव्र हुई जिसके फलस्वरूप उक्त गैरीनो महोदयकी रिपोर्टके आधार शिलालेख संग्रह भाग २ और ३ में (ग्र० ४५-४६ सन् १९५२, १९५७) आठ सौ पचास लेखोंका पाठ व परिचय हमारे सम्मुख आ गया।

आगेका लेख-संग्रह कार्य बड़ा कठिन प्रतीत हुआ, क्योंकि इसके लिए कोई व्यवस्थित सूचियाँ उपलब्ध नहीं थीं। किन्तु इस कार्यको पूरा कराना हमने अपना विशेष कर्तव्य समझा। सौभाग्यसे डॉक्टर विद्याधर जोहरापुर-करने यह कार्य-भार अपने ऊपर लेकर विशेष प्रयासों द्वारा यह छह सौ

चौवन लेखोंका परिचय करानेवाला चौथा संग्रह प्रस्तुत कर दिया। प्रस्तावनामें उन्होंने लेखोंका काल, प्रदेश, भाषा, प्रयोजन, मुनिसंध, राज-वंश आदि दृष्टियोंसे जो विश्लेषण व अध्ययन किया है वह बहुत महत्वपूर्ण है इसके लिए हम उनके बहुत कृतज्ञ हैं। हमें दुःख है कि पण्डित नाथूरामजी प्रेमी आज हमारे बीच नहीं रहे ! कितना हर्ष होता उन्हें इस नये लेख संग्रहको देखकर !

शिलालेख-संग्रहके इन भागोंमें संकलित सामग्रीका जैन साहित्य और इतिहासके संशोधन कार्यमें विशेष उपयोग हो रहा है, और होगा इसमें सन्देह नहीं। किन्तु इस विषयमें अब तकके अनुभवके आधारसे कुछ सूचनाएँ कर देना हम अपना कर्तव्य समझते हैं—

१. लेखोंका जो मूल पाठ यहाँ प्रस्तुत किया गया है, वह सावधानी पूर्वक तो अवश्य लिया गया था, तथापि उसे अन्त-प्रमाण होनेका दावा नहीं किया जा सकता। कन्नड लेखोंको यहाँ जो देवनागरीमें लिखा गया है उसमें भी लिपिभेदसे अशुद्धियाँ हो जाना सम्भव है। आगे-पीछे विशिष्ट विद्वानों-द्वारा पाठ व अर्थ-संशोधन सम्बन्धी लेख लिखे ही गये होंगे। अतएव विशेष महत्वपूर्ण मौलिक स्थापनाओंके लिए संशोधकोंको मूलस्रोतों का भी अवलोकन कर लेना चाहिए।

२. इधर कुछ कालसे ऐसी प्रवृत्ति दिखाई देती है कि जहाँ दो आचार्योंमें नाम-साम्य दिखाई दिया वहाँ उन्हें एक ही मान लिया गया। किन्तु यह बात भ्रामक है। एक ही नामके अनेक आचार्य विविध कालोंमें भी हुए हैं और सम-सामयिक भी। अतएव उन्हें एक सिद्ध करनेके लिए नाममात्रके अतिरिक्त अन्य प्रमाणोंकी भी खोज करना चाहिए।

३. इन प्रकाशित शिलालेखोंमें यह अपेक्षा नहीं करना चाहिए कि उनमें समस्त प्राचीन आचार्योंका उल्लेख आ ही गया है : अतएव इनमें किसी आचार्यके नामका अभाव किसी विशिष्ट अनुमान व तर्कका आधार

नहीं बनाया जा सकता । ये लेख जैन मुनियोंकी पूरी गणनाका लेखा नहीं समझना चाहिए ।

४. कन्नड लेखोंका जो सार हिन्दीमें दिया गया है उसीके आधार मात्रसे कोई नयी कल्पनाएँ नहीं करना चाहिए । उसके लिए मूल पाठ और उसके शब्दशः अनुवादका अवश्य अवलोकन करना चाहिए ।

यथार्थतः ये लेख-संग्रह सामान्य जिज्ञासुओंके लिए तो पर्याप्त है । किन्तु विशेष संशोधकोंके लिए तो ये मूल सामग्रियोंकी ओर दिग्निर्देश मात्र ही करते हैं ।

इस ग्रन्थमालाको अपनी गोदमें लेकर श्री शान्तिप्रसादजी व श्रीमती रमारानीजीने न केवल समाजके एक अग्रणी हितैषी सेठ माणिकचन्द्रजीकी स्मृतिकी रक्षा की है व ग्रन्थमालाके जन्मदाता पं० नाथूरामजी प्रेमीकी भावनाको सम्मान दिया है किन्तु जैन साहित्यकी रक्षा व जैन इतिहासके नवनिर्माण कार्यमें बड़ी महत्त्वपूर्ण सेवा की है जिसके लिए समाज सदैव उनका ऋणी रहेगा ।

— ही. ला. जैन

— आ. ने. उपाध्ये

( प्रधान सम्पादक )

## प्राक्कथन

प्रस्तुत संग्रहका प्रथम भाग डॉ० हीरालालजी जैन-द्वारा संपादित होकर सन् १९२८ में प्रकाशित हुआ था । उसमें श्रवणबेलगोल तथा निकटवर्ती स्थानोंके ५०० लेख संकलित हुए थे । इसका दूसरा तथा तीसरा भाग श्री विजयमूर्ति शास्त्री-द्वारा संकलित हुआ । इन दो भागोंमें फ्रेन्च विद्वान् डॉ० गेरिनो-द्वारा संपादित पुस्तक 'रिपोर्टर द एपिग्राफी जैन'के आधारसे ८५० लेख दिये हैं । डॉ० गेरिनोकी पुस्तक पैरिससे सन् १९०८ में प्रकाशित हुई थी । अतः इन दो भागोंमें सन् १९०८ तक प्रकाशित हुए लेख ही आ सके हैं । इन ८५० लेखोंमेंसे १४० लेख प्रथम भागमें आ चुके हैं तथा १७५ लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायके हैं अतः इनकी सूचना-भर दी गयी है — शेष ५३५ लेखोंका पूरा विवरण दिया गया है । इस तरह पहले तीन भागोंमें कुल १०३५ लेखोंका संग्रह हुआ है ।

सन् १९५७ में इस संग्रहके तीसरे भागके प्रकाशित होनेपर श्रीमान् डॉ० उपाध्येजीने हमें प्रस्तुत चौथे भागके संपादनके लिए प्रेरित किया । तबसे कोई चार वर्ष तक अवकाशके समयका उपयोग कर यह कार्य हमने किया । इसे कुछ विस्तृत रूप देनेके लिए हमने सन् १९६१ की गर्मियोंकी छुट्टियोंमें दो सप्ताह तक उटकमंड स्थित प्राचीनलिपिविद्-कार्यालयमें भी अध्ययन किया । इसके फलस्वरूप सन् १९०८ के बाद प्रकाशित हुए कोई ६५४ लेखोंका संग्रह प्रस्तुत भागमें प्रकाशित हो रहा है ।

यद्यपि ये सब लेख पुरातत्त्वविभागके प्रकाशनोंमें पहले प्रकाशित हो चुके हैं तथापि साधारण अभ्यासके लिए वे सुलभ नहीं हैं — उनका संपादन अँगरेजीमें हुआ है तथा उनका मूल्य भी बहुत अधिक है । अतः इस संग्रहमें उनका पुनः प्रकाशन उपयोगी होगा



इसमें सन्देह नहीं है ।

यह कहना तो संभव नहीं है कि इन भागोंमें अबतक प्रकाशित सब लेख संगृहीत हो चुके हैं — तथापि अधिकांश लेखोंका संग्रह करनेकी हमने कोशिश की है ।

यह स्पष्ट ही है कि इन प्रकाशित लेखोंके अतिरिक्त अभी सैकड़ों लेख अप्रकाशित भी हैं — विशेषकर मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात तथा उत्तरप्रदेशके सैकड़ों मूर्तियों तथा मन्दिरों आदिके लेखोंका अध्ययन अभी बहुत कम हुआ है । परिशिष्टमें दिये हुए नागपुर मूर्तिलेख संग्रहसे इस कार्यके विस्तारकी कल्पना हो सकती है । हमें आशा है कि इन लेखोंका संग्रह भी प्रस्तुत मालाके अगले भागोंमें प्रकाशित हो सकेगा ।

माणिकचन्द्र ग्रन्थमालाके प्रारम्भसे ही इसका कार्य स्व० नाथू-रामजी प्रेमीने बहुत श्रद्धा तथा उत्साहसे संभाला था । हमें जैन इतिहासके अध्ययनमें उनसे बहुत प्रोत्साहन मिला है । खेद है कि इस पुस्तकके सम्पादनके पूर्ण होनेसे पहले ही उनका स्वर्गवास हो गया । हम उन्हें कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं ।

प्रस्तुत संग्रहकी प्रेरणाके लिए हम आदरणीय डॉ० उपाध्येजीके भी ऋणी हैं । उटकमंडके प्राचीन लिपिविद् कार्यालयके प्रमुख डॉ० दिनेशचन्द्र सरकारसे वहाँके पुस्तकालयमें अध्ययनकी सुविधा मिली तथा वहाँके अन्य अधिकारी डॉ० गै एवं श्री० रिक्तीसे अच्छा सहयोग मिला एतदर्थ हम उनके ऋणी हैं । उन सब विद्वानोंका ऋण तो स्पष्ट ही है जिन्होंने इन लेखोंका पहले सम्पादन किया था तथा विभिन्न पत्रिकाओंमें उन्हें प्रकाशित किया था ।

अन्तमें कन्नड भाषा अथवा इतिहासके अज्ञानवश जो त्रुटियाँ रही हो उनके लिए हम पाठकोसे क्षमा चाहते हैं ।

जावरा — दिसम्बर १९६१

— वि० जोहरापुरकर

## संकेत-सूची

(अ) पूर्णतः उपयुक्त पत्रिकाएँ -

ए० इ०	एपिग्राफिया इण्डिका
रि० इ० ए०	एन्युअल रिपोर्ट ऑन इण्डियन एपिग्राफी
रि० सा० ए०	एन्युअल रिपोर्ट ऑन साउथ इण्डियन एपिग्राफी
इ० म०	इन्स्क्रिप्शन्स ऑफ दि मद्रास प्रेसिडेन्सी
इ० पु०	इन्स्क्रिप्शन्स ऑफ दि पुदुकोट्टै स्टेट
ए० रि० मै०	एन्युअल रिपोर्ट ऑफ दि मैसोर आर्किऑलॉजिकल डिपार्टमेण्ट
रि० आ० स०	एन्युअल रिपोर्ट ऑफ दि आर्किऑलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया

(आ) अंशतः उपयुक्त पत्रिकाएँ -

सा० इ० इ०	साउथ इण्डियन इन्स्क्रिप्शन्स
इ० ए०	इण्डियन एण्टिक्वेरी
मे० आ० स०	मेमॉयर्स ऑफ दि आर्किऑलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया
इ० हि० का०	इण्डियन हिस्टॉरिकल काँग्रेस-रिपोर्ट
इ० ओ० का०	इण्डियन ओरिएण्टल कॉन्फरन्स-रिपोर्ट

## प्रस्तावना

### १. लेखोंका साधारण परिचय—

जैन शिलालेख संग्रहके प्रस्तुत चौथे भागमें कुल ६५४ लेख संगृहीत हैं। इन्हे समयके क्रमसे प्रस्तुत किया है। इसमें सन्पूर्व चौथी सदीका १ (क्र० १) सन्पूर्व तीसरी सदीका १ (क्र० २), सन्पूर्व पहली सदीके ११ (क्र० ३ से १३,) सन् पहली सदीका १ (क्र० १४), दूसरी सदीके ४ (क्र० १५ से १८), पाँचवी सदीका १ (क्र० १९), छठी सदीके दो (क्र० २० व २१), सातवीं सदी के २२ (क्र० २२ से ४३) आठवीं सदीके १० (क्र० ४४ से ५३), नौवीं सदीके २० (क्र० ५४ से ७३), दसवीं सदीके ४२ (क्र० ७४ से ११५), ग्यारहवीं सदीके ६७ (क्र० ११६ से १८२), बारहवीं सदीके १३४ (क्र० १८३ से ३१६), तेरहवीं सदीके ७३ (क्र० ३१७ से ३८९), चौदहवीं सदीके ३० (क्र० ३९० से ४१९), पन्द्रहवीं सदीके ३५ (क्र० ४२० से ४५४) सोलहवीं सदीके ४७ (क्र० ४५५ से ५०१), सत्रहवीं सदीके १५ (क्र० ५०२ से ५१६), अठारहवीं सदीके ११ (क्र० ५१७ से ५२७), तथा उन्नीसवीं सदीके ८ (क्र० ५२८ से ५३५) लेख हैं। शेष ११९ लेखोंका समय अनिश्चित है।

इन ६५४ लेखोंमें राजस्थानके २१, उत्तरप्रदेशके ९, बिहारके ४, बंगालका १, गुजरातके ३, मध्यप्रदेशके १५, उड़ीसाके १६, महाराष्ट्रके ७, आन्ध्रके ४६, मद्रासके ८२, केरलका १ एवं मैसूर प्रदेशके ४४७ लेख हैं।

भाषाकी दृष्टिसे इन लेखोंका विभाजन इस प्रकार है — प्राकृतके १८, संस्कृतके ८८, हिन्दीके ३, तेलुगुके ८, तमिलके ७७ एवं कन्नडके ४६०।

प्रयोजनकी दृष्टिसे ये लेख मुख्यतः चार भागोंमें बाँटे जा सकते हैं—  
 -८७ लेखोंमें जिनमन्दिरोंके निर्माण अथवा जीर्णोद्धारका वर्णन है, १२६  
 लेखोंमें जिनमूर्तियोंकी स्थापनाका वर्णन है, २०८ लेखोंमें मन्दिरों तथा  
 मुनियोंको गाँव, जमीन, सुवर्ण, करोंकी आय आदिके दानका वर्णन है,  
 तथा १६४ लेखोंमें मुनियों, गृहस्थों तथा महिलाओंके समाधिमरणका उल्लेख  
 है। इसके अतिरिक्त १३ लेखोंमें गुहा-निर्माणका, ४ लेखोंमें (क्र० ४८६,  
 ४८७, ४८९ तथा ५७६) मठोंके आर्थिक व्यवहारोंका, ३ लेखोंमें (क्र०  
 ४२५, ४७१ तथा ४७२) साम्प्रदायिक समझौतोंका एवं एक लेख (क्र०  
 ५०७) में सामाजिक कुर्रुडिके निवारणका वर्णन है।

लेखोंके इस स्थूल परिचयके बाद हम इनसे प्राप्त ऐतिहासिक तथ्योंका  
 कुछ विस्तारसे अवलोकन करेंगे— पहले जैनसंघके बारेमें तथा बादमें राज-  
 वंशों आदिके विषयमें।

## २. जैनसंघका परिचय—

(अ) यापनीय संघ—प्रस्तुत संग्रहमें यापनीय संघका उल्लेख कोई  
 १७ लेखोंमें हुआ है। इनमें सबसे प्राचीन लेख गंग राजा अविनीतका  
 ताम्रपत्र है जो छठी सदीके पूर्वार्धका है (ले० २०)<sup>१</sup>। इसमें 'यावनिक'  
 संघ-द्वारा अनुष्ठित एक मन्दिरके लिए राजा-द्वारा कुछ दान दिये जानेका  
 वर्णन है।

इस संघके कुमिलि अथवा कुमुदि गणका उल्लेख चार लेखोंमें है<sup>२</sup>  
 (क्र० ७०, १३१, ६११ एवं ६१२)। इनमें पहले लेख (क्र० ७०)  
 में नौवीं सदीमें इस गणके महावीर गुरुके शिष्य अमरमुदल गुरुका वर्णन  
 है। इन्होंने कीरैप्पाकम् ग्रामके उत्तरमें देशवल्लभ जिनालयका निर्माण

१. पहले संग्रहके क्र० ९९, १०० तथा १०५ लेखोंमें ५वीं सदीके  
 उत्तरार्धमें भी यापनीय संघका उल्लेख है।

२. पहले संग्रहमें इस गणका कोई उल्लेख नहीं है।

कराया था। दूसरे लेख ( क्र० १३१ ) में सन् १०४५ में इस गणके कुछ आचार्योंका वर्णन है। इस समय चावुण्ड नामक अधिकारीने मुगुन्द ग्राममें एक जिनालय बनवाया था। अन्य दो लेख ( क्र० ६११ तथा ६१२ ) अनिश्चित समयके निषिद्धि लेख हैं। इनमें पहला लेख इस गणके शान्त-वीरदेवके समाधिमरणका स्मारक है।

यापनीय संघका दूसरा गण पुन्नागवृक्षमूल गण चार लेखोंसे ज्ञात होता है ( क्र० १३०, २५९, १६८, ६०७ )। पहले लेखमें सन् १०४४ में इस गणके बालचन्द्र आचार्यको पूल नगरके नवनिर्मित जिनालयके लिए कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। इसी लेखके उत्तरार्धमें सन् ११४५ में इस गणके रामचन्द्र आचार्यको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। इस गणका अगला उल्लेख ( क्र० २५९ ) सन् ११६५ का है। इसमें इस गणकी गुरुपरम्परा इस प्रकार दी है — मुनिचन्द्र — विजयकीर्ति — कुमारकीर्ति त्रैविद्य — विजयकीर्ति ( द्वितीय )। शिलाहार राजा विजयादित्यके सेनापति कालणने एक्कसम्बुगे नगरमें एक जिनालय बनवाकर उसके लिए विजयकीर्ति ( द्वितीय ) को कुछ दान दिया था। एक लेखमें ( क्र० १६८ ) वृक्षमूलगणके मुनिचन्द्र त्रैविद्यके शिष्य चारुकीर्ति पण्डितको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है — यह सन् १०९६ का लेख है। एक अनिश्चित समयके लेख ( क्र० ६०७ ) में भी वृक्षमूलगणके एक मन्दिर कुसुमजिनालयका उल्लेख है। हमारा अनुमान है कि इन दो लेखोंका वृक्षमूलगण पुन्नागवृक्षमूलगणसे भिन्न नहीं होगा।<sup>१</sup>

यापनीय संघके कण्डूर गणका उल्लेख तीन लेखोंमें है ( क्र० २०७, ३६८, ३८६ ) इनमें पहला लेख १२वीं सदीके पूर्वार्धका है तथा इसमें

---

१. पहले संग्रहमें पुन्नागवृक्षमूलगणके दो उल्लेख सन् ८१२ तथा सन् ११०८ के हैं ( क्र० १२४, २५० )।

इस गणके बाहुबली, शुभचन्द्र, मौनिदेव एवं माघनन्दि इन चार आचार्यों का वर्णन है — इनमें परस्पर सम्बन्ध बतलाया नहीं है। दूसरे लेखमें १३वीं सदीमें इस गणके एक मन्दिरका उल्लेख है तथा तीसरे लेखमें इसी समयकी एक जिनमूर्तिका उल्लेख है।<sup>१</sup>

इसी संघके कारेयगणका उल्लेख १२वीं सदीके पूर्वार्धके एक लेख (क्र० २०९) में है। मुल्लभट्टारक तथा जिनदेवमूरि ये इस गणके आचार्य थे।<sup>२</sup>

पाँच लेखोंमें यापनीय संघका उल्लेख किसी गण या गच्छके बिना ही प्राप्त होता है (क्र० १४३, २९८-३००, ३८४)। इनमें पहला लेख सन् १०६० का है तथा इससे जयकीर्ति — नागचन्द्र — कनकशक्ति इस गुरुपरम्पराका पता चलता है। अगले दो लेख १२वीं सदीके हैं तथा इनमें मुनिचन्द्र एवं उनके शिष्य पाल्यकीर्तिके समाधिमरणका उल्लेख है। अन्तिम लेखमें १३वीं सदीमें त्रैकीर्ति आचार्यका उल्लेख है।

इस तरह प्रस्तुत संग्रहसे यापनीय संघका अस्तित्व छठी सदीसे तेरहवीं सदी तक प्रमाणित होता है।<sup>३</sup>

(आ) मूलसंघ—प्रस्तुत संग्रहमें मूलसंघके अन्तर्गत सेनगण, देशी गण, सूरस्थगण, बलगारगण (बलात्कार गण) क्राणूरगण तथा निगमा-

१. पहले संग्रहमें इस गणका उल्लेख सन् १८० में हुआ है (क्र० १६०)।

२. पहले संग्रहमें इस गणके दो लेख सन् ८७५ तथा दसवीं सदी-पूर्वार्धके हैं (क्र० १३०, १८२)।

३. पहले संग्रहमें यापनीय संघके तीन और गणोंका उल्लेख है — कनकोपलसम्भूत वृक्षमूल गण, श्रीमूलमूलगण तथा कोटिमहुव गण- (तीसरा भाग-प्रस्तावना पृ० २७-२९)।

न्वय इन छह परम्पराओंके उल्लेख विस्तारसे मिलते हैं।<sup>१</sup> इनका अब क्रमशः विवरण प्रस्तुत करेंगे।

(आ १) सेनगण—इसका प्राचीनतम उल्लेख सन् ८२१ का है (क्र० ५५)। इस लेखमें इसे 'चतुष्टय मूलसंघका उदयान्वय सेनसंघ' कहा है। इसकी आचार्यपरम्परा मल्लवादी-मुमति पूज्यपाद-अपराजित इस प्रकार थी। लेखके समय गुजरातके राष्ट्रकूट शासक कर्कराज सुवर्णवर्षने अपराजित गुरुको कुछ दान दिया था।<sup>२</sup>

सेनगणके तीन उपभेद थे—पोगरि अथवा होगरि गच्छ, पुस्तक गच्छ, एवं चन्द्रकवाट अन्वय। पोगरि गच्छका पहला लेख (क्र० ६१) सन् ८९३ का है तथा उसमें विनयसेनके शिष्य कनकसेनको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। इस लेखमें इसे मूलसंघ-सेनान्वयका पोगरियगण कहा है। दूसरा लेख (क्र० १३४) सन् १०४७ का है तथा इसमें नागसेन पण्डितको सेनगण-होगरि गच्छके आचार्य कहा है। इन्हें चालुक्य राजा अक्कादेवोंने कुछ दान दिया था।<sup>३</sup>

चन्द्रकवाट अन्वयका पहला लेख (क्र० १३८) सन् १०५३

१. पहले संग्रहमें उल्लिखित देवगणका कोई लेख इस संग्रहमें नहीं है। पहले संग्रहमें मूलसंघके प्राचीन उल्लेख (क्र० १०, ९४) पाँचवीं सदीके हैं। तथा उनमें गण आदिका उल्लेख नहीं है।
२. पहले संग्रहमें सेनगणका प्राचीनतम उल्लेख सन् ९०३ का है (क्र० १३७)। इसे देखकर डॉ० चौधरीने कल्पना की थी कि आदिपुराणकर्ता जिनसेन ही सेनगणके प्रवर्तक होंगे (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० ४४) किन्तु प्रस्तुत लेखमें जिनसेनके गुरु वीरसेनके समयमें ही सेनसंघकी परम्पराका अस्तित्व प्रमाणित होता है। वीरसेनने धवलाटीकाकी रचना सन् ८१६ में पूर्ण की थी।
३. पहले संग्रहमें पोगरिगच्छके चार उल्लेख सन् १०४५ से १२७१ तक के आय हैं। (क्र० १८६, २१७, १८६, ५११)

का है तथा इसमें अजितसेन-कनकसेन-नरेन्द्रसेन-नयसेन इस परम्पराका वर्णन है। लेखके समय सिन्द कुलके सरदार कंचरसने नयसेनको कुछ दान दिया था। नयसेनके शिष्य नरेन्द्रसेन (द्वितीय) का उल्लेख सन् १०८१ के लेख (क्र० १६५) में मिलता है। दोण नामक अधिकारी-द्वारा इन्हें कुछ दान दिया गया था। इन लेखोंमें नरेन्द्रसेन तथा नयसेनकी व्याकरण-शास्त्रमे निपुणताके लिए प्रशंसा की गयी है।<sup>१</sup>

एक लेख (क्र० १४७) मे चन्द्रिकवाट वंशके शान्तिनन्दि भट्टारकका सन् १०६६ मे उल्लेख है। इसमे मूलसंघका उल्लेख है किन्तु सेनगणका उल्लेख नहीं है।

सेनगणके तीसरे उपभेद पुस्तकगच्छका वर्णन १४वीं सदीके एक लेख (क्र० ४१५) मे है। इसमे ग्यारह आचार्योंकी परम्परा बतलायी है। इस परम्पराके प्रभाकरसेनके शिष्य लक्ष्मीसेनके समाधिमरणका प्रस्तुत लेखमें वर्णन है। लक्ष्मीसेनके शिष्य मानसेनका समाधिमरण सन् १४०५ मे हुआ था (ले० ४२१)।

प्रस्तुत, संग्रहके पाँच लेखोमे सेनगणका उल्लेख किसी उपभेदके बिना हुआ है (क्र० ४९२, ४९३, ५०४, ५०७, ६२६)। पहले दो लेखोमे सन् १५९७ मे सोमसेन भट्टारक-द्वारा एक मन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है। अगले दो लेखों (५०४, ५०७) मे समन्तभद्र आचार्यका सन् १६२२ एवं १६३२ मे उल्लेख है। सन् १६२२ मे उन्होंने एक मन्दिरका जीर्णोद्धार किया था तथा सन् १६३२ मे दीवालीका त्यौहार मनानेके ढंगमे कुछ सुधार किया था। अन्तिम लेख अनिश्चित समयका है तथा इसमे प्रसिद्ध वादी भावसेन त्रैविद्यचक्रवर्तीके समाधिमरणका उल्लेख है।<sup>२</sup>

१. पहले संग्रहमें चन्द्रकवाट अन्वयका कोई वर्णन नहीं है।

२. भावसेन कृत संस्कृत ग्रन्थ विज्ञवत्स्वप्रकाश जीवराज ग्रन्थमाला (शोलापुर) द्वारा प्रकाशित हो रहा है। इसकी प्रस्तावनामें हमने भावसेनका समय १३वीं सदीका उत्तरार्ध निश्चित किया है।



इस तरह प्रस्तुत संग्रहके १३ लेखोंसे सेनगणका अस्तित्व आठवीं सदीसे सत्रहवीं सदी तक प्रमाणित होता है ।

(आ २) देशीगण—प्रस्तुत संग्रहमें देशीगणके पुस्तकगच्छ, आर्य-संघग्रहकुल, चन्द्रकराचार्याम्नाय, तथा मैणदान्वय इन चार परम्पराओंका उल्लेख हुआ है ।

पुस्तकगच्छका एक उपभेद पनसोगे ( अथवा हनसोगे ) बलि था । इसका पहला उल्लेख ( क्र० ७४ ) दसवीं सदीके प्रारम्भका है<sup>२</sup> तथा इसमें श्रीधरदेवके शिष्य नेमिचन्द्रके समाधिमरणका उल्लेख है । इस बलिका दूसरा लेख ( क्र० २७२ ) सन् ११८० के आसपासका है तथा इसमें नयकीर्तिके शिष्य अध्यात्मी बालचन्द्र-द्वारा एक मूर्तिकी स्थापनाका वर्णन है । इस शाखाके चार लेख और हैं ( क्र० २९२, ३३५, ४१६ तथा ५३८ ) जो बारहवींसे चौदहवीं सदी तकके हैं । इनमें ललितकीर्ति, देवचन्द्र तथा नयकीर्ति आचार्योंका उल्लेख है । अन्तिम लेखमें 'घनशोकवली' इस प्रकार इस शाखाके नामका संस्कृतीकरण किया गया है ।

पुस्तकगच्छका दूसरा उपभेद इंगुलेश्वर बलि था । इसका उल्लेख सात लेखोंमें ( क्र० २९०, ३१०, ३६९, ३७८, ३८२, ६०६, ६४२ ) मिला है । ये सब लेख १२वीं - १३वीं सदीके हैं । तथा इनमें हरिचन्द्र, श्रुतकीर्ति, भानुकीर्ति, माघनन्दि, नेमिदेव, चन्द्रकीर्ति तथा जयकीर्ति

१. सेनगणकी पुष्करगच्छ नामक शाखा कारंजा ( विदर्भ ) में १५वीं सदीसे २०वीं सदी तक विद्यमान थी । इसका विस्तृत वृत्तान्त हमारे ग्रन्थ 'मटारक सम्प्रदाय' में दिया है । पुष्करगच्छ सम्भवतः पोगिरि गच्छका ही संस्कृत रूप है ।
२. यही इस संग्रहमें देशीगणका पहला उल्लेख है । पहले संग्रहमें देशीगणके उल्लेख सन् ८६० ( क्र० १२७ ) से मिले हैं तथा पनसोगे शाखाके उल्लेख सन् १०८० ( क्र० २२३ ) से प्राप्त हुए हैं ।

इन आचार्यों के उल्लेख मिलते हैं।<sup>१</sup>

प्रस्तुत संग्रहमें पुस्तकगच्छके उल्लेख बिना किसी उपभेदके भी कई लेखोंमें मिलते हैं। इनमें पहला लेख (क्र० १६४) सन् १०८१ का है तथा इसमें सकलचन्द्र भट्टारकका उल्लेख है। इस प्रकारके अन्य लेख १७ हैं (क्र० १७१, १७७-८, १९०, २०३, २३४, २५१, ३१८-९, ३६१-६, ४९०, ५६१)। ये लेख १६वीं सदी तकके हैं। इनसे कोई विस्तृत गुरु-परम्पराका पता नहीं चलता<sup>२</sup>!

देशीगणके दूसरे उपभेद आर्यसंघग्रहकुलका उल्लेख एक ही लेख (क्र० ९४) में मिला है। यह लेख दसवीं सदीका है तथा इसमें कुलचन्द्र-के शिष्य शुभचन्द्रका उल्लेख है। विशेष यह है कि यह लेख उड़ीसाके खण्डगिरिपर्वतपर मिला है जब कि देशीगणके अन्य उल्लेख मैसूर प्रदेशके हैं।<sup>३</sup>

देशी गणका तीसरा उपभेद चन्द्रकराचार्याम्नाय भी एक ही लेखसे ज्ञात होता है (क्र० २१७) तथा यह मध्यप्रदेशमें मिला है। इसमें प्रतिष्ठाचार्य सुभद्र-द्वारा १२वीं सदीके पूर्वार्धमें एक मन्दिरकी प्रतिष्ठाका उल्लेख है।<sup>४</sup>

देशी गणके चौथे उपभेद मैणदान्वयके शुभचन्द्र आचार्यका एक उल्लेख १३वीं सदीमें मिला है (क्र० ३७२)।<sup>५</sup>

१. पहले संग्रहमें इंगुलेश्वर बलिके उल्लेख सन् ११८३ (क्र० ४११) से सन् १५४४ (क्र० ६७३) तकके हैं।
२. पहले संग्रहमें पुस्तक गच्छके उल्लेख सन् ८६० (क्र० १२७) से सन् १८१३ (क्र० ७०३) तक के हैं।
३. ४ पहले संग्रहमें इन दोनों उपभेदोंका कोई उल्लेख नहीं है।
५. पहले संग्रहमें इय अन्वयका उल्लेख नहीं है इससे मिलता जुलता एक उपभेद बाणद बलि है जो पुस्तकगच्छके अन्तर्गत था (क्र० ४७८) इसका उल्लेख सन् १२३२ का है।

किसी उपभेदके बिना भी देशीगणके कई उल्लेख मिले हैं। इनमें दो लेखोंमें (क्र० ८३, १६९) सन् ९५० तथा १०९६ में गुणचन्द्र और रविचन्द्र आचार्योंका उल्लेख है। इन लेखोंमें देशी गणके साथ सिर्फ कोण्डकुन्दान्वय यह विशेषण है। कोई १८ लेखोंमें मूलसंघ — देशीगण इस प्रकार उल्लेख है। इनमें प्राचीनतर लेख (क्र० १९३, २२९, २५६) बारहवीं सदीके हैं। कोई ८ लेखोंमें देशीगणके साथ अन्य कोई विशेषण नहीं है। ऐसे लेखोंमें प्राचीनतर लेख (क्र० १२६, १३९, १४०) सन् १०३२ तथा १०५४ के हैं और इनमें अष्टोपवासी कनकनन्दि आचार्यको कुछ दान देनेका वर्णन है।

(आ ३) कोण्डकुन्दान्वय—देशी गणके पुस्तक गच्छको प्रायः कोण्डकुन्दान्वय यह विशेषण दिया गया है। कुछ लेखोंमें किसी संघ या गणके बिना सिर्फ कोण्डकुन्दान्वयका उल्लेख है। ऐसे लेखोंमें प्राचीनतर लेख (क्र० १८०, २२२) ग्यारहवीं-बारहवीं सदीके हैं। एक प्राचीन लेख (क्र० ५४) में सन् ८०८ में कोण्डकुन्देय अन्वयके सिर्मलगूरु गणके कुमारनन्दि-एलवाचार्य-वर्धमानगुरु इस परम्पराका उल्लेख है। वर्धमानगुरुका राष्ट्रकूट राजा कम्भराजने एक ग्राम दान दिया था। इस लेखमें कोण्डकुन्देय अन्वय यह शब्द प्रयोग है जो स्पष्टतः कोण्डकुन्दे स्थानका सूचक है।

(आ ४) सूरस्थ गण — प्रस्तुत संग्रहमें इस गणका पहला उल्लेख सन् ९६२ का है (क्र० ८५)। इसमें प्रभाचन्द्र — कल्लेलेदेव-रविचन्द्र-

१. पहले संग्रहमें कोण्डकुन्दान्वयका प्रथम उल्लेख सन् ७९७ में (क्र० १२२) बिना किसी गणके हुआ है। वहाँ सिर्मल-गूरु गणका कोई उल्लेख नहीं है। कोण्डकुन्दान्वय यह विशेषण क्वचिन् द्राविड़ संघ, सेनगण आदिके लिए भी प्रयुक्त हुआ है (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० ४५, ५१)

रविनन्दि-एलाचार्य इस परम्पराका वर्णन है। गंग राजा मारसिंह २ ने एलाचार्यको एक ग्राम अर्पण किया था।<sup>१</sup>

सूरस्थ गणके दो उपभेदोंका पता चला है — कौरुर गच्छ तथा चित्रकूटान्वय।<sup>२</sup> कौरुर गच्छका एक ही लेख है (क्र० ११७) तथा इसमें सन् १००७ में अर्हणन्दि पण्डितका वर्णन है। चित्रकूटान्वयके १० लेख हैं। पहले लेखमें (क्र० १५३) सन् १०७१ में इस अन्वयके श्रीनन्दि पण्डितकी एक शिष्याको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। श्रीनन्दिकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी — चन्द्रनन्दि-दामनन्दि-सकलचन्द्र-कनकनन्दि-श्रीनन्दि। श्रीनन्दि तथा उनके गुरुबन्धु भास्करनन्दिके समा-धिलेख सन् १०७७-७८ के हैं (क्र० १६०)। इस अन्वयका तीसरा लेख (क्र० १५८) सन् १०७४ का है तथा इसमें अरुहणन्दिके शिष्य आर्य पण्डितको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। अगले दो लेखोंसे (क्र० २३७-३८) इस अन्वयकी एक परम्पराका पता चलता है जो इस प्रकार थी — बासुपूज्य-हरिणन्दि-नागचन्द्र। हरिणन्दि तथा नागचन्द्रको सन् ११४८ में कुछ दान मिला था। इस अन्वयके अन्य लेख अनिश्चित समयके हैं। इस प्रकार कोई १४ लेखोंसे सूरस्थ गणका अस्तित्व इसवीं सदीसे बारहवीं सदी तक प्रमाणित होता है।<sup>३</sup>

(आ ५) बलगार-(बलात्कार)-गण — इस गणका पहला उल्लेख

१. सूरस्थ गणका प्राचीन लेख पहले संग्रहमें सन् १०५४ का है (क्र० १८५)।
२. पहले संग्रहमें इन दोनों उपभेदोंका वर्णन नहीं है। वहाँ चित्र-कूटान्वयका सम्बन्ध बलगार गणसे भी पाया गया है (क्र० २०८)।
३. कुछ लेखोंमें सेनगण और सूरस्थगणको (जिसमें कहीं-कहीं शूरस्थ भी कहा है) अभिन्न माना है। इसका विवरण हमने 'भट्टारक सम्प्रदाय' के सेनगण विषयक प्रकरणमें दिया है।

सन् १०७१ का है ( क्र० १५४ ) ।<sup>१</sup> इसमें मूलसंघ-नन्दिसंघका बलहार गण ऐसा इसका नाम है तथा इसके ८ आचार्योंकी परम्परा दी है जो इस प्रकार है - वर्धमान-महावादी विद्यानन्द-उनके गुरुबन्धु ताकिकार्क माणि-क्यनन्दि-गुणकीर्ति-विमलचन्द्र-गुणचन्द्र-गण्डविमुक्त-उनके गुरुबन्धु अभय-नन्दि ।<sup>२</sup> अगले लेख ( क्र० १५५ ) में इसी परम्पराके तीन और आचार्यों-के नाम हैं-अभयनन्दि-सकलचन्द्र-गण्डविमुक्त २-त्रिभुवनचन्द्र । इन लेखों-में गुणकीर्ति तथा त्रिभुवनचन्द्रको मिले हुए दानोंका विवरण है । लेख १५७ में सन् १०७४ में पुनः त्रिभुवनचन्द्रका उल्लेख है । इस गणके अगले महत्त्वपूर्ण लेख ( क्र० ३४२, ३७६ ) तेरहवीं सदीके हैं । इनमें शास्त्रसारसमुच्चय आदि ग्रन्थोंके कर्ता माघनन्दि आचार्यका वर्णन है । इनकी गुरुपरम्परामें १९ आचार्योंके नाम दिये हैं किन्तु उनका क्रम व्यवस्थित प्रतीत नहीं होता ।

चौदहवीं सदीसे बलात्कारगणके साथ सरस्वतीगच्छका उल्लेख मिलता है । इसकी एक परम्पराके आचार्य अमरकीर्ति थे । इनके शिष्य माघनन्दिने सन् १३५५में एक मूर्ति स्थापित की थी ( क्र० ३९३ ) इसी परम्पराके तीन लेख और हैं । इनमें वर्धमान, धर्मभूषण तथा वर्धमान २ इन भट्टा-रकोंका उल्लेख है । ये लेख सन् १३९५ तथा १४२४ के हैं ( क्र० ४०३,

१. इस लेखसे बलहार गणकी परम्पराका अस्तित्व सन् ९०० तक ज्ञात होता है । अतः डॉ० चौधरीकी यह कल्पना ग़लत प्रतीत होती है कि यह बलहारि गणका ही रूपान्तर है । बलहारि गणका उल्लेख पहले संग्रहमें सन् ६५० के लगभग मिला है ( तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० २६, ३० ) ।

२. इस परम्परामें माणिक्यनन्दिका नाम उल्लेखनीय है । हमारा अनुमान है कि परीक्षामुखके कर्ता माणिक्यनन्दि इनसे अभिन्न होंगे !

४०४, ४३४) ।<sup>१</sup>

बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छकी उत्तर भारतीय शाखाओंके तीन लेख इस संग्रहमें है ( क्र० ४४८, ४६०, ४६८ ) ।<sup>२</sup> इनमें सन् १५०० में रत्न-कीर्तिका तथा सन् १५३१ में धर्मचन्द्रका उल्लेख है ।

( आ ६ ) क्राणूर गण — इस गणके उल्लेखोंमें पहला दसवीं सदीका है ( क्र० ९६ ) ।<sup>३</sup> इसमें एक विस्तृत गुरुपरम्पराका वर्णन है किन्तु लेख-के बीच-बीचमें घिस जानेसे इस परम्पराका ठीक ज्ञान नहीं होता । इस लेखमें मुनिचन्द्र आचार्यके एक शिष्यको कुछ दान मिलनेका उल्लेख है ।

क्राणूर गणके तीन उपभेदोंके उल्लेख मिले हैं — तिन्त्रिणी गच्छ, मेघपाषाण गच्छ तथा पुस्तकगच्छ । तिन्त्रिणी गच्छके ६ लेख हैं ( क्र० २१२, २९१, ३२३, ४७६, ५६५, ६१९ ) । पहले दो लेख बाह्यारवीं सदी-के हैं<sup>४</sup> तथा इनमें मेघचन्द्र तथा पर्वतमुनि इन आचार्योंका वर्णन है । तीसरा लेख सन् १२०७ का है तथा इसमें अनन्तकीर्ति भट्टारकको कुछ दान मिलनेका वर्णन है । अनन्तकीर्तिके पूर्ववर्ती छह आचार्योंके नाम भी इस

१. इस परम्पराका वर्णन पहले संग्रहके क्र० ५७२ तथा ५८५ में भी है ।

२. पहले संग्रहमें ऐसे दो लेख हैं ( क्र० ६१७, ७०२ ) । क्र० ६१७ में इसे मद्सारद गच्छ पढ़ा गया है, यह 'श्रीमद्धारद गच्छ'-अर्थात् सरस्वतीगच्छका ही रूपान्तर है । उत्तर भारतमें बलात्कार-गणकी दस शाखाएँ १४वीं सदीमें २०वीं सदी तक विद्यमान थीं । इनका विस्तृत वृत्तान्त हमने 'भट्टारक सम्प्रदाय' में दिया है ।

३. पहले संग्रहमें क्राणूरगणका प्राचीनतम लेख सन् १०७४ का ( क्र० २०७ ) है ।

४. पहले संग्रहमें तिन्त्रिणीगच्छका पहला लेख सन् १०७५ का ( क्र० २०९ ) है ।

लेखमें दिये हैं। इस गच्छके चौथे लेख ( क्र० ४७६ ) में सन् १५५६ में देवकीर्ति-मुनिचन्द्र-देवचन्द्र यह परम्परा दी है। लेखके समय देवचन्द्रको कुछ दान मिला था।

मेषपाषाणगच्छके दो लेख हैं ( क्र० २१४, ६०३ )। पहले लेखमें सन् ११३० में प्रभाचन्द्रके शिष्य कुलचन्द्र आचार्यका वर्णन है। दूसरा लेख इस गच्छकी एक बसदिके बारेमें है।<sup>१</sup>

पुस्तक गच्छका एक लेख ( क्र० २४० ) सन् ११५० का है किन्तु यह बीच-बीचमें घिसा हुआ है अतः इसका तात्पर्य स्पष्ट नहीं है।<sup>२</sup>

बारहवीं-तेरहवीं सदीके चार लेखोंमें ( क्र० २०२, ३१२, ३२६, ३७३ ) क्राणूरगणके कनकचन्द्र, माधवचन्द्र तथा सकलचन्द्र आचार्योंका वर्णन है। इनका गच्छ-नाम अज्ञात है।

इस तरह कोई १५ लेखोंसे क्राणूरगणका अस्तित्व दसवीं सदीसे सोलहवीं सदी तक प्रमाणित होता है।

(आ ७) निगमान्वय—मूलसंघ-निगमान्वयका एक लेख ( क्र० ३६० ) सन् १३१० का है। इसमें कृष्णदेव-द्वारा एक मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है।<sup>३</sup>

उपर्युक्त विवरणसे मूलसंघके भेद-प्रभेदोंका अच्छा परिचय मिलता है। कोई १५ लेखोंमें किसी भेदका उल्लेख किये बिना मूलसंघका उल्लेख मिलता है। इनमें प्राचीनतर लेख ( क्र० ११२, १४५, २०४ ) दसवीं-

१. पहले संग्रहमें मेषपाषाणगच्छका पहला उल्लेख सन् १०७९ का है ( क्र० २१६ )
२. पहले संग्रहमें इस गच्छका कोई उल्लेख नहीं है ( देशीगण तथा सेनगणमें भी पुस्तकगच्छ थे उनका वर्णन पहले आ चुका है। )
३. पहले संग्रहमें इस अन्वयका कोई लेख नहीं है।

ग्यारहवीं सदीके हैं। इस तरह प्रस्तुत संग्रहमें कुल मिलाकर मूलसंघके कोई १५० लेख आये हैं।

(इ) गौड संघ—इस संघका एक लेख (क्र० ८४) मिला है। इसमें सोमदेवसूरि-द्वारा एक जिनालयके निर्माणका उल्लेख है।<sup>१</sup>

(ई) द्राविड संघ—इस संघके नन्दिगण-अरुंगल अन्वयका एक लेख ग्यारहवीं सदीका है (क्र० १७५)

इसमें शान्तिमुनि-वादिराज-वर्धमान यह परम्परा दी है। वर्धमानके समाधिमरणका स्मारक उनके गुरुबन्धु कमलदेवने स्थापित किया था। इस अन्वयका अगला लेख सन् ११९२ का है (क्र० २८२) तथा इसमें वासुपूज्यके शिष्य वज्रनन्दिका वर्णन है। इनकी गुरुपरम्परा काफ़ी विस्तार-से दी है किन्तु उसमें आचार्योंका क्रम स्पष्ट नहीं है। चौदहवीं सदीके एक लेखसे (क्र० ३४४) इस अन्वयके श्रीपाल-पद्मप्रभ-धर्मसेन इस परम्पराका पता चलता है।

द्राविड संघके तीन लेखोंमें (क्र० २५२, ३५७, ४०९) अरुंगल अन्वयका उल्लेख नहीं है। ये लेख सन् ११५९, १२९५ तथा १४वीं सदीके हैं। अन्तिम दो लेखोंमें क्रमशः गुणसेन तथा लोकाचार्यका नाम ज्ञात होता है। इस तरह प्रस्तुत संग्रहके कोई आठ लेखोंसे इसका अस्तित्व ११वीं सदीसे १४वीं सदी तक प्रमाणित होता है।<sup>२</sup>

१. गौडसंघका पहले संग्रहमें या अन्यत्र साहित्यमें कोई वर्णन नहीं है। सोमदेवसूरिके लिखित यशस्तिलकचम्पू तथा नातिवाक्यामृत ये ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं।

२. पहले संग्रहमें द्राविड संघके उल्लेख सन् ९९० (क्र० १६६) से मिले हैं। इसे कहीं-कहीं मूलसंघ-द्रविडान्वय और द्राविड संघ-कोण्डकुन्दान्वय कहा है (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० ३५-४३)



(उ) माथुर संघ—इसका उल्लेख सन् ११७० के एक लेखमें (क्र० २६५) है। इस संघके महामुनि गुणभद्र-द्वारा इस लेखकी रचना की गयी थी। लेखमें लोलक श्रेष्ठी-द्वारा पार्श्वनाथमन्दिरके निर्माणका वर्णन है।<sup>१</sup>

(ऊ) पंचस्तूप निकाय—प्रस्तुत संग्रहके एक लेख (क्र० १९) में काशीके पंचस्तूप निकायके आचार्य गुहनन्दिका वर्णन है। इनके शिष्योंके लिए बटगोहाली ग्राममें एक विहार था जिसे ब्राह्मण नाथशमनि सन् ४७९ में कुछ दान दिया था।<sup>२</sup>

(ऋ) जम्बूखण्डगण—इसका उल्लेख छठी-सातवीं सदीके एक लेखमें (क्र० २२) हुआ है। इसके आचार्य आर्यगणन्दिको सेन्द्रक राजा इन्द्रगणन्दने कुछ दान दिया था।

(ॠ) सिंहवूर गण—इसका एक लेख (क्र० ५६) मिला है। इसमें सन् ८६० में सम्राट् अमोघवर्ष-द्वारा इस गणके नागनन्दि आचार्यको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है।<sup>३</sup>

(लृ) जैन संघके विषयमें साधारण विचार—अब तक जैन मुनियोंके विभिन्न संघोंका जो परिचय दिया गया है उससे स्पष्ट है कि इनमें व्यवहार-

१. माथुर संघ बादमें काष्ठासंघका एक गच्छ बन गया था। इसका विस्तृत वृत्तान्त हमने 'मट्टारक सम्प्रदाय' में दिया है।

२. धवलाढीकाके कर्ता वीरसेन आचार्य पंचस्तूप अन्वयके ही थे (धवला-प्रशस्ति)। किन्तु उनके प्रशिष्य गुणभद्र उन्हें सेनान्वयका कहते हैं। हो सकता है कि पंचस्तूपान्वयको ही बादमें सेनान्वय नाम प्राप्त हुआ हो। किन्तु सेनान्वय सन् ७८० के लगभग अस्तित्वमें आ चुका था यह पहले स्पष्ट कर चुके हैं।

३. जम्बूखण्ड गण तथा सिंहवूर गणका वर्णन पहले संग्रहमें नहीं है।

की दृष्टिसे कोई खास भेद नहीं था। इन सभी संघोंके मुनि मठ-मन्दिर बनवाते थे, उनके लिए खेत, घर, बगीचे, गाँव आदिका दान ग्रहण करते थे, राजसभाओंमें वादविवाद करते थे, प्रसंगानुकूल राजकार्यमें मदद देते थे तथा मन्त्रसाधना, ज्योतिष और वैद्यकका आश्रय लेकर जैन संघका प्रभाव बढ़ानेकी कोशिश करते थे। ये सब प्रवृत्तियाँ जैन साधुके मूलभूत उद्देश-वीतराग भावकी साधनाके कहाँतक अनुकूल है यह प्रश्न विचारणीय है। इन्हें रोकनेका ऐसा कोई व्यवस्थित प्रयत्न दिगम्बर सम्प्रदायमें हुआ हो ऐसा प्रमाण नहीं मिला है।<sup>१</sup>

यह तो नहीं कहा जा सकता कि दिगम्बर साधुसंघके सभी मुनि इस प्रकारकी प्रवृत्तिप्रधान गतिविधियोंमें ही मग्न रहते थे — साधुसंघका एक दर्ग अवश्य ही प्राचीन शास्त्रोक्तमार्गका निःस्पृह भावसे अनुसरण करता रहा होगा। किन्तु लौकिक कार्योंमें दूर रहनेके कारण इन वीतराग साधुओंका शिलालेखों आदिमें वर्णन मिलना कठिन है।

### ३. राजवंशोंका आश्रय—

(अ) उत्तर भारतके राजवंश—प्रस्तुत संग्रहमें जैन संघका सम्मान करनेवाले जिन राजवंशोंका उल्लेख है उनमें कलिंगके राजा खारबेलका वंश प्रथम व प्रमुख है। सन्पूर्व पहली सदीमें इस वंशके तीन राजपुरुषों-द्वारा जैन साधुओंके लिए खण्डगिरि पर्वतपर कई गुहाएँ बनवायी गयी। खारबेलकी पटरानी, महाराज कुदेष्वरी तथा कुमार बडुख ये वे तीन राजपुरुष हैं ( ले० ३-५ )। यहींके एक लेख (क्र० ९) में नगरके न्यायाधीश

---

१. श्वेताम्बर सम्प्रदायमें इन प्रवृत्तियोंको रोकनेके कुछ प्रयत्न होते रहे हैं। इस विषयमें पं० नाथूरामजी प्रेमीका लेख 'चैत्यवासी और वनवासी' ( जैन साहित्य और इतिहास-द्वितीय संस्करण ) देखने योग्य है।

सुभूति-द्वारा निर्मित गुहाका भी उल्लेख है ।<sup>१</sup>

पाटलिपुत्रके गुप्त राजाओंके समयका एक लेख (क्र० १९) प्रस्तुत संग्रहमें है । यह सन् ४७९ का है तथा इसमें एक ब्राह्मण-द्वारा वटगोहालीके जैन विहारको कुछ दान मिलनेका वर्णन है ।<sup>२</sup>

हस्तिकुण्डी ( राजस्थान ) के राष्ट्रकूट वंशके राजा विदग्धराजका उल्लेख सन् ९४० के एक लेख (क्र० ८१) में मिला है । आचार्य वासुदेवके उपदेशसे इस राजाने ऋषभदेवका एक मन्दिर बनवाया था । इस मन्दिरके लिए राजाने अपनी सुवर्णतुला कराकर दान दिया था तथा नगरके व्यापारियोंसे कुछ करोकी आय भी अर्पित की थी । यह कार्य सन् ९१७ में हुआ था । विदग्धराजके पुत्र मम्मटने सन् ९४० में उक्त दानकी पुनः सम्मति दी । मम्मटके पुत्र धवलकी वीरताका विस्तारसे वर्णन इस लेखमें मिलता है । धवलके पुत्र बालप्रसादके समय सन् ९९७ में उक्त मन्दिरका जीर्णोद्धार हुआ था ।

उड़ीसाके राजा उद्योतकेसरीके समय — दसवीं सदीके दो लेख (क्र० ९३-९४) इस संग्रहमें हैं । इनमें खण्डगिरिके पुरातन मन्दिरोंके जीर्णोद्धारका वर्णन है ।

१. पहले संग्रहमें खारवेलके जीवनके विषयमें एक विस्तृत लेख (क्र० २) आ चुका है । उसके पहले मौर्य सम्राट् अशोकके लेखमें (क्र० १) निर्ग्रन्थों ( जैनों ) की देखभालका भी उल्लेख हुआ है ।
२. पहले संग्रहमें गुप्तकालके तीन लेख ( क्र० ९१-९३ ) आये हैं । उसके पहले शक और कुषाण राजाओंके कई लेख भी हैं ।
३. पहले संग्रहमें इस राजवंशका उल्लेख नहीं है । वहाँ इसके पहले गुर्जर प्रतिहार राजा भोजका एक लेख (क्र० १२८) है । इसी समयके कच्छपघात तथा चन्देल वंशोंके भी कुछ लेख पहले संग्रहमें आये हैं (क्र० १५३, २२८ आदि ) ।

मालवाके परमार वंशके राजा भोजके समयका — ग्यारहवीं सदी (पूर्वार्ध) का एक लेख (क्र० १३५) मिला है।<sup>१</sup> इसमें सामन्त यशोवर्मा-द्वारा कल्कलेश्वर तीर्थके मुनिसुव्रतमन्दिरके लिए कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। इसी वंशके उदयादित्यके समयका एक मन्दिर ऊनमें है (क्र० १७४)।

गुजरातके चोलुक्य राजा भीमदेव (प्रथम) का एक लेख मिला है (क्र० १४६)। इसने सन् १०६६ में वायड अधिष्ठानकी वसतिाके लिए कुछ भूमि दान दी थी। इसी वंशके राजा भीमदेव (द्वितीय) के समय — बारहवीं सदीके अन्तका एक लेख (क्र० २८७) है। इसमें वेरावलके चन्द्रप्रभमन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है। अणहिल्लपुरमें राजा-द्वारा नन्दिसंघके आचार्य श्रीकीर्तिके सम्मानका भी इसमें उल्लेख है।<sup>२</sup>

बुन्देलखण्डके कलचुरि वंशका एक लेख मिला है (क्र० २१७)। इसमें राजा गयाकर्ण तथा उसके सामन्त गोलहणदेवके समय — बारहवीं सदीके पूर्वार्धमें एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है।<sup>३</sup>

राजस्थानके चाहमान वंशके पाँच लेख हैं (क्र० २१८, २३१-३२, २३५, २६५)।<sup>४</sup> पहले चार लेख नडोलके राजा रायपालके समयके सन् ११३३ से ११४६ तकके हैं। इनमें पहले लेखमें रानी मीनलदेवी-द्वारा यतियोंके लिए दानका तथा बादके लेखोंमें ठाकुर राजदेव-द्वारा मन्दिर

१. इस वंशका उल्लेख पहले संग्रहमें नहीं है। परमार वंशकी बाँस-वाडा व चन्द्रावती शाखाके लेख वहाँ आये हैं। (क्र० ३०५, ४७१, ४७२)।

२. चोलुक्य कुमारपालका एक लेख (क्र० ३३२) पहले संग्रहमें है।

३. इस वंशके कोई लेख पहले संग्रहमें नहीं है।

४. पहले संग्रहमें नडोलके चाहमान वंशके दो (क्र० ३५७-५८) तथा जालोरके चाहमान वंशका एक (क्र० ५०७) लेख है।

और यतियोंके लिए कुछ दानका वर्णन है। पाँचवाँ लेख शाकम्भरीके चाहमान राजा सोमेश्वरके समयका सन् ११७० का है। इसमें बिजोलिया-के पार्श्वनाथ मन्दिरके लिए पृथ्वीराज २ तथा सोमेश्वर-द्वारा दो गाँव दान दिये जानेका वर्णन है। इस राजवंशके कोई ३० पीढ़ियोंका वर्णन इस लेखमें मिलता है।<sup>१</sup>

मुगल साम्राज्यके तीन लेख इस संग्रहमें हैं (क्र० ४८१, ५०६, ५१२)। पहला लेख अकबरके समयका सन् १५७१ का है। इसमें महेश्वरके आदिनाथ मन्दिरका जीर्णोद्धार मण्डलोई सुजानराय-द्वारा होनेका वर्णन है। शाहजहाँके राज्यका एक लेख (क्र० ५०६) सन् १६२८ का है। इसमें भी एक जिनमन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है। तीसरा लेख सन् १६६२ का — औरंगजेबके समयका है। इसमें राजा जयसिंहके मन्त्री मोहनदास-द्वारा एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है।<sup>२</sup>

### (आ) दक्षिण भारतके राजवंश—

(आ १) गंग राजवंश—इस वंशके १३ लेख प्रस्तुत संग्रहमें हैं। इनमें पहला (क्र० २०) राजा अविनोतका एक दानपत्र है जो छठी सदीके पूर्वार्धका है। इसमें यावनिक संघके जिनमन्दिरके लिए राजा-द्वारा कुछ भूमिके दानका वर्णन है। दूसरा लेख (क्र० २४) सातवी सदीके अन्तका शिवकुमार पृथ्वीकोणिवृद्धराजके समयका है। इसमें राजा तथा कुछ अन्य सज्जनों-द्वारा एक जिनमन्दिरके लिए भूमिदानका वर्णन है। तीसरे लेखमें (क्र० ४८) आठवीं सदीके अन्तमें राजा श्रीपुरुष तथा नवीं सदीके प्रारम्भमें राजा शिवमारके समय कुछ अधिकारियों-द्वारा एक जिनमन्दिरके

१. पहले संग्रहमें इसके बाद गुजरातके वाघेल और ग्वालियरके तोमर वंशके कुछ लेख हैं।

२. पहले संग्रहमें मुगल राज्यके कई लेख इबेताम्बर सम्प्रदायके हैं। एक लेख (क्र० ७०२) दिगम्बर सम्प्रदायका भी है।

लिए दो गाँवोंके दानका वर्णन है। चौथे लेखमें (क्र० ६३) राजा दुग्गमार-द्वारा नवीं सदीमें एक मन्दिरको भूमिदान देनेका उल्लेख है। इसके बाद दसवीं सदीके प्रारम्भके एक लेखमें (क्र० ७६) एरेय राजाके समय एक जैन आचार्यके समाधिमरणका वर्णन है। सन् ९५० के एक लेख (क्र० ८३) में राजा ब्रूतुगकी रानी पद्मम्बरसि-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरके लिए कुछ दानका वर्णन है। सन् ९६२ में राजा मारसिह २ ने अपनी माता-द्वारा निर्मित मन्दिरके लिए एलाचार्यको एक गाँव दान दिया था (क्र० ८५) इसी वर्षमें इस राजाने मुंजार्य नामक जैन ब्राह्मणको भी एक गाँव दान दिया था (क्र० ८६)। सन् ९७१ में इस राजाके समय शंखजिनालयको कुछ दान मिलनेका वर्णन एक लेखमें (क्र० ८८) में है। दसवीं सदीके अन्तके एक लेख (क्र० ९६) में राजा रक्कसगंग तथा नन्नियगंगके समय कुछ दानका वर्णन है। एक लेख (क्र० १५४) में ब्रूतुग राजा तथा रानी रेवकनिर्मडिका उल्लेख है। इनकी स्मृतिमें गंगकन्दर्प नामक जिनमन्दिर अण्णिगेरे नगरमें बनवाया गया था। एक अन्य लेखमें (क्र० २०७) पुनः रानी रेवकनिर्मडिका उल्लेख हुआ है। इस तरह गंगवंशके राज्यकालमें जैनसंघकी स्थिति सदा ही प्रभावशाली रही थी।<sup>१</sup>

(आ २) कदम्ब वंश — इस वंशके स्वतन्त्र राज्यकालका एक लेख (क्र० २१) इस संग्रहमें है जो छठी सदीके राजा रविवर्मके समयका है। इस राजाने एक सिद्धायतनके लिए कुछ भूमि दान दी थी।<sup>२</sup> राष्ट्रकूट तथा चालुक्य साम्राज्यमें कदम्बवंशके कई सामन्त प्रादेशिक शासक थे। ऐसे सामन्तोंके कोई १५ लेख मिले हैं। सन् ८९० के एक

१. पहले संग्रहमें गंग वंशके कई लेख हैं, जिनमें सबसे प्राचीन लेख (क्र० ९०) पाँचवीं सदीके उत्तरार्धका है।

२. पहले संग्रहमें इस वंशके दस लेख हैं जो पाँचवीं व छठी सदीके हैं (क्र० ९६-१०५)।

लेखमें कदम्ब महासामन्त अलियमरस-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरका वर्णन है ( क्र० ६० ) । सन् १०४५ के एक लेखमें कोंकण प्रदेशमें महामण्ड-  
लेश्वर चट्टय्यदेवके शासनका उल्लेख है ( क्र० १३१ ) तथा एक मन्दिर-  
को कुछ दान मिलनेका वर्णन है । सन् १०८१ के दो लेखोंमें कदम्ब राजा  
गोवलदेव तथा 'कादम्बचक्रवर्ति' वीरमके समय एक बसदिको दान मिलने-  
का तथा एक महिलाके समाधिमरणका वर्णन है ( क्र० १६३-४ ) ।  
सन् १०९६ में कदम्ब कुलके सामन्त एरेयंगकी रानी असवब्बरसिने एक  
मन्दिर बनवाया था ( क्र० १६९ ) । सन् ११२३ और ११३० के दो  
दानलेखोंमें ( क्र० २०२ व २१४ ) कदम्ब सामन्त तैलपदेव तथा मयूर-  
वर्मके शासनका उल्लेख है । तैलपदेवके शासनका उल्लेख सन् ११४८ के  
दो दानलेखोंमें भी है ( क्र० २३६-२३८ ) । सन् १२०७ के एक दानलेखमें  
कदम्ब सामन्त ब्रह्मका तथा सन् १२१८ में जयकेशीका उल्लेख मिला है  
( क्र० ३२३ व ३२५ ) । सन् १५०४ में कदम्ब लक्ष्मणरसने चारुकीर्ति  
पण्डिताचार्यके शिष्यको धर्माधिकार प्रदान किये थे ( क्र० ४५५ ) । एक  
अनिश्चित समयके लेख ( क्र० ६१४ ) में त्रिभुवनवीर नामक कदम्ब  
शासककी रानीके समाधिमरणका उल्लेख है ।

( आ ३ ) राष्ट्रकूट वंश — प्रस्तुत संग्रहमें इस वंशके देज्ज महाराज-  
के सामन्त सेन्द्रक इन्द्रणन्दका एक लेख है ( क्र० २२ ) जो छठी-सातवीं  
सदीका है । इन्द्रणन्दने आर्यनन्दि आचार्यको एक ग्राम दान दिया था ।<sup>१</sup>  
राष्ट्रकूट वंशकी प्रधान शाखाके कोई १३ लेख इस संग्रहमें हैं ।<sup>२</sup> इनमें पहला

१. देज्ज राजाका राष्ट्रकूटोंके प्रमुख वंशसे क्या सम्बन्ध था यह स्पष्ट नहीं है । सेन्द्रक वंशके तीन लेख पहले संग्रहमें हैं — ( क्र० १०४, १०६, १०९ ) ।
२. पहले संग्रहमें इस शाखाके दस लेख हैं जिनमें पहला ( क्र० १२४ ) सन् ८०२ का है ।

लेख सन् ८०८ का है ( क्र० ५४ ) । इसमें सम्राट् गोविन्दराज जगतुंगके राज्यकालमें उनके ज्येष्ठ बन्धु रणावलोक कम्भराज-द्वारा वर्धमानगुरुको एक गाँवके दानका वर्णन है । दूसरे लेख ( क्र० ५५ ) में सन् ८२१ में सम्राट् अमोधवर्षका तथा उनके चाचाके पुत्र कर्कराज सुवर्णवर्षका उल्लेख है । कर्कराजने अपराजितगुरुको एक खेत दान दिया था । सन् ८६० में सम्राट् अमोधवर्षने नागनन्दि आचार्यको भूमिदान दिया था ( क्र० ५६ ) । सन् ८६४ में इसी सम्राट्के राज्यकालमें एक समाधिलेख लिखा गया था ( क्र० ५७ ) । नवीं-दसवीं सदीके एक लेखमें नेमिचन्द्र आचार्यका वर्णन है जिसमें उन्हें राष्ट्रकूट वंशके लिए आनन्ददायी कहा है ( क्र० ७२ ) । सन् ९०२ के एक मन्दिरलेखमें सम्राट् कृष्ण २ अकालवर्षके शासनका तथा सन् ९२५ के एक मन्दिरलेखमें सम्राट् गोविन्द ४ नित्यवर्षके शासनका उल्लेख है ( क्र० ७७, ७८ ) । कृष्ण २ की रानी चन्दियब्बेने सन् ९३२ में एक जिनमन्दिर निर्माण कराया था ( क्र० ७९ ) । सन् ९५० के एक लेखमें कृष्ण ३ अकालवर्षके शासनका तथा इसके बादके एक लेखमें सम्राट् खोट्टिगका वर्णन है ( क्र० ८३, ८७ ) । इन्द्र ४ नित्यवर्षने एक जिनमूर्तिका पादपीठ बनवाया था ( क्र० ८९ ) । सम्राट् इन्द्र ३ के सेनापति श्रीविजयकी प्रशंसामें एक स्तम्भलेख मिला है ( क्र० ९७ ) ।

बारहवीं सदीके एक लेख ( क्र० २१७ ) में कलचुरि राजा गयाकर्ण-के अधीन राष्ट्रकूट कुलके सामन्त गोलहणदेवका उल्लेख है ।

( आ ४ ) पाण्ड्य वंश — इस वंशके पाँच लेख प्रस्तुत संग्रहमें हैं ।<sup>१</sup> इनमें पहला ( क्र० २३ ) सातवीं सदीके राजा वरगुण विक्रमादित्यके समयका दानलेख है । आठवीं सदीके एक लेखमें ( क्र० ५० ) सुन्दर पाण्ड्य राजा-द्वारा एक जिनमन्दिरकी जमीनको करमुक्त करनेका वर्णन है । सन् ८७० में राजा वरगुण २ के समय दो मूर्तियोंका जीर्णोद्धार हुआ

१. पहले संग्रहमें इस वंशका कोई लेख नहीं है ।



था ( क्र० ५८ ) । सित्तन्नवासलके गुहामन्दिरका जीर्णोद्धार नवीं सदीमें राजा अवनिपशेखर श्रीवल्लभके समयमें हुआ था ( क्र० ६२ ) । इस वंशका अन्तिम लेख ( क्र० ३५६ ) सन् १२९० का एक दानलेख है तथा इसमें मारवर्मन् विक्रम पाण्ड्यके राज्यका उल्लेख है ।

( आ ५ ) पल्लववंश—इसका उल्लेख तीन लेखोंमें है । इनमें पहला लेख ( क्र० २० ) छठी सदीके पूर्वार्धका है । इसमें पल्लव राजा सिंहविष्णुकी माता-द्वारा निर्मित एक जिनमन्दिरका वर्णन है । दूसरे लेख ( क्र० ३९ ) में सातवीं-आठवीं सदीके शासक पल्लवादित्य वादिराजुलको अर्हत् भट्टारकका पादानुध्यात कहा है । तीसरा लेख ( क्र० ५३७ ) अनिश्चित समयका है तथा इसमें पेरुजिगदेव नामक पल्लव राजाके शासनका उल्लेख है ।<sup>१</sup>

( आ ६ ) चालुक्य वंश—बदामीके चालुक्य राजाओंके दो लेख इस संग्रहमें हैं ।<sup>२</sup> पहला ( क्र० ४६ ) सन् ७०८ का है तथा इसमें राजा विजयादित्यकी रानी कुंकुमदेवी-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरका उल्लेख है । दूसरे लेख ( क्र० ४६ ) में राजा कीर्तिवर्मा २के राज्यमें सन् ७५१ में एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है ।

वेंगीके चालुक्य राजाओंके तीन लेख इस संग्रहमें हैं ।<sup>३</sup> पहला ( क्र० ४४ ) लेख राजा जयसिंहवल्लभ २के राज्यका—आठवीं सदीके प्रारम्भका है तथा इसमें रट्टगुडि वंशके सामन्त कल्याणवसन्त-द्वारा अर्हत् भट्टारकको कुछ दानका वर्णन है । दूसरा लेख ( क्र० ४९ ) आठवीं सदीके उत्तरार्धमें राजा सर्वलोकाश्रय विष्णुवर्धनके समयका है तथा इसमें सामन्त गोंकय्य-द्वारा एक जिनमन्दिरके लिए दानका वर्णन है । तीसरे ( क्र० १०० )

१. इस वंशका एक लेख पहले संग्रहमें है ( क्र० ११५ ) ।

२. इस शाखाके ६ लेख पहले संग्रहमें हैं ( क्र० १०६-८ तथा १११, ११३, ११४ ) ।

३. इस शाखाके तीन लेख पहले संग्रहमें हैं ( क्र० १४३-१४४, २१० ) ।

में दसवीं सदीके उत्तरार्धमें अम्मराज २-द्वारा विजयवाटकके जिनमन्दिरके लिए एक गाँवके दानका वर्णन है ।

कल्याणीके चालुक्य राजाओंके लेख संख्यामें सर्वाधिक-५८ है । लेखोंकी अधिकताके कारण हम यहाँ उन लेखोंका ही उल्लेख करेंगे जिनमें इस वंशके सम्राटोंका जैन धर्मकार्योंसे साक्षात् सम्बन्ध आया था — जिनमें सिर्फ उनके राज्यकालका उल्लेख है उनका निर्देश सूचीमें होगा ही । इस वंशके लेखोंमें पहला ( क्र० ११७ ) सन् १००७ का है तथा इसमें सामन्त नागदेवकी पत्नी-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका वर्णन है । यह लेख सम्राट् सत्याश्रय आहवमल्लके समयका है । सन् १०२७ के एक लेखमें ( क्र० १२४ ) सम्राट् जयसिंह २ की कन्या सोमलदेवी-द्वारा एक मन्दिरको कुछ दान मिला था ऐसा वर्णन है । सन् १०३२ के एक लेखमें सम्राट् जगदेकमल्ल-द्वारा एक मन्दिरको दान मिलनेका वर्णन है ( क्र० १२६ ) । इस मन्दिरका नाम ही जगदेकमल्ल जिनालय था । जगदेकमल्लकी बहन अक्कादेवीने सन् १०४७ में गणदबेडंगि जिनालयको कुछ दान दिया था ( क्र० १३४ ) । सन् १०५५ के एक लेखमें आचार्य इन्द्रकोतिको त्रैलोक्यमल्लकी सभाका आभूषण कहा है । ( क्र० १४१ ) । इस वंशका अन्तिम लेख ( क्र० २७४ ) सन् ११८५ का है तथा इसमें सोमेश्वर ४ के राज्यकालमें एक मन्दिरको कुछ दानका वर्णन है ।<sup>१</sup>

( आ ७ ) चोल वंश—इस वंशका उल्लेख कोई २५ लेखोंमें है ।<sup>२</sup> इनमें पहला ( क्र० ८२ ) सन् ९४५ का है तथा इसमें राजा परान्तक १ के समय एक कूपके निर्माणका वर्णन है । सन् ९९९ के एक लेखमें

१. पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला ( क्र० १६६ ) सन् ९६० के आसपासका है ।

२. पहले संग्रहमें इस वंशके तीन लेख ( क्र० १६७, १७१, १७४ ) हैं ।

(क्र० ९२) राजराज १ के समय कुछ जैन आचार्योंका उल्लेख है। दसवीं सदीके उत्तरार्धके एक दानलेखमें (क्र० ९८) गण्डरादित्य मुमुडि चोल राजाका उल्लेख है। सन् १००९ के एक लेखमें (क्र० ११९) राजराज १ को आज्ञाका वर्णन है जो ब्राह्मणों तथा जैनोंको नियमित रूपसे कर देनेके लिए दी गयी थी। दो दानलेखोंमें (क्र० १२१, १२९) ग्यारहवीं सदी-पूर्वार्धमें राजेन्द्र १ चोलके शासनका उल्लेख है। सन् १०६८ के दो दानलेख राजेन्द्र २ के शासनकालके हैं (क्र० १५०-५१)। कुलोत्तुंग १ के शासनके पाँच लेख हैं (क्र० १६७, १७३, १९४, १९५, १९८)। जो सन् १०८६ से १११८ तकके दानलेख हैं। विक्रमचोलके शासनके दो दानलेख सन् ११३१ तथा ११३४ के हैं (क्र० २१५, २१९) कुलोत्तुंग २ के राज्यकालके तीन लेख हैं जिनमें एक सन् ११३७ का है (क्र० २२३, २२४, २२६)। राजराज २ के शासनके तीन लेख सन् ११५६-५७ के हैं। (क्र० २४८-२५०)। कुलोत्तुंग ३ के समयके दो लेख हैं (क्र० ३२४, ३८०) इनमें पहला सन् १२१६ का तथा दूसरा अनिश्चित समयका है। इस दूसरे लेखके अनुसार कुलोत्तुंग राजाने नल्लूर नामक गाव एक देवमन्दिरको अर्पण किया था।

इस तरह हम देखते हैं कि चोल राजाओंके प्रायः सब लेख राजपुरुषों-से साक्षात् सम्बन्ध नहीं रखते।

युद्धके दिनोंमें चोल सेना-द्वारा जिनमन्दिरोंका विध्वंस होनेका वर्णन सन् १०७१-७२ के एक लेखमें (क्र० १५४) हुआ है।

(आ ८) होयसल वंश—इस वंशके कोई ३० लेख प्रस्तुत संग्रहमें हैं।<sup>१</sup> इनमें सबसे पहला लेख (क्र० १४५) सन् १०६२ का है तथा

१. पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला (क्र० २०५) सन् १०६२ का ही है।

इसमें राजा विनयादित्य-द्वारा अभयचन्द्र पण्डितको दान दिये जानेका वर्णन है। सन् १०६९ के एक लेखमें विनयादित्य-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका वर्णन है। ग्रामीण लोग गरीबीके कारण यह कार्य नहीं कर सके थे अतः राजाने सहायता देकर यह मन्दिर बनवाया था ( क्र० १५२ ) ग्यारहवीं सदी-अन्तिम चरणके एक लेखमें ( क्र० १७५ ) वर्धमान आचार्यको होयसल राज्यके कार्यकर्ता यह विशेषण दिया है। राजा बल्लाल १ के सेनापति मरियानेने बारहवीं सदीके प्रारम्भमें एक मूर्ति स्थापित की थी ( क्र० १८३ )। बारहवीं सदी - प्रथम चरणके दो लेखोंमें राजा विष्णुवर्धनकी रानी चन्तलदेवी तथा उसके बन्धु दुहमल्ल-द्वारा जिन-मन्दिरोंको दान देनेका वर्णन है ( क्र० १८८-८९ )। इस समयके चार लेखोंमें ( क्र० २००, २०१, २१२, २१३ ) विष्णुवर्धनके चार सेनापतियों— गंगराज, उसका पुत्र बोप्प, पुणिसमय्य तथा मरियानेके धर्मकार्योंका — मन्दिर निर्माण, दान आदिका वर्णन है। राजा नरसिंह १ ने सन् ११५९में एक मन्दिरको कुछ दान दिया था ( क्र० २५२ ) तथा उसके सेनापति भरतिमय्य एवं माचियणने सन् ११४५ तथा ११५३ में इसी प्रकारके दान दिये थे ( क्र० २३३, २४६ )। सन् ११७६ तथा ११९२ के लेखोंमें ( क्र० २७१, २८२ ) राजा वीरबल्लाल २ द्वारा जिनमन्दिरोंको दान देनेका वर्णन है तथा सन् ११७३ एवं ११९० के लेखोंमें इसी राजाके अधीन अधिकारियों-द्वारा ऐसे ही दानोंका उल्लेख है ( क्र० २६८, २८१ )। इसी राजाके समयके तीन दानलेख और हैं ( क्र० २८५, २८६, ३२३ ) जो सन् ११९९ से १२०७ तक के हैं तथा दो समाधिलेख हैं ( क्र० ३२०-३२२ )। राजा नरसिंह ३ ने सन् १२६५में एक जिनमन्दिरको दान दिया था ( क्र० ३४२ ) तथा उसके अधीन अधिकारियोंने सन् १२५७, १२७१ तथा १२८५ में ऐसे ही धर्मकार्य किये थे ( क्र० ३३५, ३४५, ३५१ )। एक लेखमें राजा रामनाथ-द्वारा पार्श्वनाथ मन्दिरको दान देनेका वर्णन है ( क्र० ३६० ) तथा एक अन्य लेखमें राजा वीरबल्लाल ३ के समय सन्

१३१९में कुछ स्थानीय अधिकारियों-द्वारा ऐसे ही दानका उल्लेख मिलता है ( क्र० ३९१ ) ।

( आ ९ ) कलचुर्य वंश—प्रस्तुत संग्रहमें इस वंशका उल्लेख सात लेखोंमें है ।<sup>१</sup> इनमें पहला लेख सन् ११५९ का है तथा इसमें किसी सेना-पति-द्वारा एक जैन आचार्यको दान मिलनेका वर्णन है ( क्र० २५१ ) । यह लेख राजा बिज्जलके समयका है । इस राजाका उल्लेख चार अन्य लेखोंमें है ( क्र० २५६, २६०-२६२ ) । ये लेख सन् ११६१ से ११६८ तक के हैं तथा इनमें स्थानीय अधिकारियों-द्वारा जैन आचार्योंको मिले हुए दानोंका वर्णन है । इस वंशके अन्तिम दो लेख राजा सोविदेवके राज्यके सन् ११७३ तथा ११७५ के हैं ( क्र० २६७, २७० ) तथा इनमें भी स्थानीय व्यक्तियोंके दानोंका उल्लेख है ।

( आ १० ) यादव वंश—देवगिरिके यादवोंका उल्लेख प्रस्तुत संग्रह-के १५ लेखोंमें है ।<sup>२</sup> इनमें पहला लेख ( क्र० ३२६ ) राजा सिंहणके समय सन् १२३० में लिखा गया था तथा एक मन्दिरके लिए कुछ दानका इसमें वर्णन है । इस राजाके समयके तीन अन्य लेखोंमें ( क्र० ३२८, ३२९, ३३० ) तीन महाप्रधानों — प्रभाकरदेव, मल्ल तथा बीचिराज-द्वारा जिन-मन्दिरोंके लिए दानोंका वर्णन है । ये लेख सन् १२४५ तथा १२४७ के हैं । राजा कन्हरदेवके राज्यके चार लेख हैं ( क्र० ३३४, ३३६, ३३७, ३३९ ) । ये लेख सन् १२५७ से १२६२ तकके हैं इनमें तीन दानलेख हैं तथा एक समाधिलेख है । राजा महादेवके समयके तीन लेख हैं ( क्र० ३४०, ३४१, ३४४ ), ये सन् १२६५ तथा १२६९ के हैं तथा तीनों समाधिमरणके स्मारक हैं । राजा रामचन्द्रके समयके चार लेख हैं ( क्र० ३५२, ३५४, ३५५, ३५९ ), ये सन्

१. पहले संग्रहमें इस वंशके तीन लेख हैं ( क्र० ४०८, ४३५, ४३६ ) ।

२. पहले संग्रहमें इस वंशके ९ लेख हैं, जिनमें पहला ( क्र० ३१७ ) सन् ११४२ का है ।

१२८५ से १२९७ तक के हैं। पहले लेखमें सर्वाधिकारी मायदेव-द्वारा एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है, दूसरा एक समाधिलेख है, तीसरेमें एक मन्दिरके लिए दानोंका वर्णन है तथा चौथेमें महामण्डलेश्वर तिकमदेव-के मन्त्रीके पुत्र-द्वारा एक मन्दिरके जीर्णोद्धारका उल्लेख है।

( भा ११ ) विजयनगरके राजवंश—विजयनगर राज्यके कोई २० लेख प्रस्तुत संग्रहमें हैं।<sup>१</sup> इनमें पहला ( क्र० ३९३ ) सन् १३५५ का है तथा हरिहर राजाके समय एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका इसमें उल्लेख है। बुक्क राजाके समयके दो लेख हैं ( क्र० ३९४, ३९६ ), ये सन् १३५७ तथा १३७६ के हैं। पहला लेख एक जिनमन्दिरके अवशेषोंमें है तथा सेनापति बैचयका इसमें उल्लेख है। दूसरा एक समाधिलेख है। राजा हरिहर २ के सेनापति इरुगने एक जिनमन्दिर बनवाया था (क्र० ४०३)। तथा इस राजाके अधीन गोवाके शासक माधवके सेनापति नेमण्णेने पार्श्वनाथ-मन्दिरको सन् १३९५ में कुछ दान दिया था (क्र० ४०२)। सन् १३९५ के ही एक लेखमें बैचय दण्डनायकके पुत्र इम्मडि बुक्कमन्त्रीश्वर-द्वारा एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है ( क्र० ४०४ )। राजा बुक्क २के समयके दो लेख हैं ( क्र० ४०६, ४१५ ) इनमें एक शान्तिनाथमन्दिरके निर्माणका स्मारक है तथा दूसरेमें लक्ष्मीसेन भट्टारकके समाधिमरणका उल्लेख है। राजा देवरायके समयके दो लेख हैं ( क्र० ४२५, ४३४ )—पहला सन् १४१२ का है तथा दो मन्दिरोंकी सीमाओंके बारेमें एक समझौतेका इसमें वर्णन है। दूसरा सन् १४२४ का है तथा इसमें राजा-द्वारा नेमिनाथ-मन्दिरके लिए वरांग ग्रामके दानका वर्णन है। राजा मल्लिकार्जुनके समय सन् १४५० में एक मन्दिरको मिले हुए दानोंका वर्णन एक लेखमें है ( क्र० ४४० )। कृष्णदेव महारायके समयके एक लेखमें ( क्र० ४५६ )

---

१. पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला सन् १३५३ का है ( क्र० ५५८ )।

मन्दिरोंकी भूमियोंको करमुक्त करनेका वर्णन है, यह लेख सन् १५०९ का है। वरांग ग्रामकी मन्दिरकी ज़मीनको खेतीयोग्य बनानेका वर्णन सन् १५१५ के एक लेखमें है (क्र० ४५८)। राजा अच्युतदेवने सन् १५३० में एक जिनमूर्तिकी पूजाके लिए कुछ करोंकी आय दान दी थी (क्र० ४६७)। राजा सदाशिवके समय रामराजने सन् १५४५ में एक जिनमन्दिरको कुछ भूमि दान दी थी (क्र० ४७३)। इसी राजाके समयका एक दानलेख सन् १५५६ का है (क्र० ४७६)। राजा रामदेवके समय सन् १६१९ में एक जैन विद्वान्को कुछ दान दिया गया था (क्र० ५०३)। इस राज्यका अन्तिम लेख सन् १७५७ का है (क्र० ५२०) तथा इसमें सदाशिव रायके अधीन शासक अरसप्पोडेय-द्वारा चारुकीर्ति पण्डितको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है।

(घा १२) दक्षिण भारतके छोटे राजवंश—अब हम उन राजवंशोंके उल्लेखोंका विवरण देखेंगे जिन्होंने राष्ट्रकूट, चालुक्य, होयसल या यादव राज्योंमें सामन्तोंके रूपमें महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया था। ऐसे वंशोंमें नोलम्बवंश प्रथम है जिसके चार लेख मिले हैं (क्र० ५९, ६१, १२३, १३९)।<sup>१</sup>

इनमें पहले दो लेख राजा महेन्द्रके समयके हैं। एकमें राजा-द्वारा सन् ८७८ में एक जिनमन्दिरको दान मिलनेका वर्णन है तथा दूसरेमें सन् ८९३ में आचार्य कनकसेनके लिए कुछ दानका उल्लेख है। नोलंब घटयंककारने एक जिनमन्दिरको सन् १०२४ में भूमिदान दिया था (क्र० १२३)। नोलंब ब्रह्माधिराजके समय सन् १०५४ में अष्टोपवासी मुनिको कुछ दान मिले थे (क्र० १३९)।

हुम्मचके सान्तर वंशके चार लेख मिले हैं (क्र० १३७, २५८, ४२२-

---

१. पहले संग्रहमें नोलम्बवाडिके कई उल्लेख हैं किन्तु नोलम्ब राजाओंका कोई लेख नहीं है।

४६१)।<sup>१</sup> इनमें पहला लेख सन् १०५३ का है तथा इसमें राजा वीर सान्तर-द्वारा उसके जैन मन्त्री नकुलरसको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। दूसरे लेखमें राजा तैलपदेवक जैन सेनापति गोगिकी मृत्युके बाद राजा-द्वारा उसके कुटुम्बियोंको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। यह लेख सन् ११६२ का है। तीसरे लेखमें राजा पाण्ड्यभूपाल-द्वारा एक जिन-मन्दिरके लिए भूमिदानका वर्णन है। यह लेख सन् १४१० का है। चौथा लेख सन् १५२२ का है तथा इसमें इम्मडि भैरवरस राजा-द्वारा बरांगके नेमिनाथमन्दिरके लिए एक गाँवके दानका वर्णन है।

सिन्द कुलके सामन्तोंके चार उल्लेख मिले हैं (क्र० १३८, १६६, २६१, २६४)।<sup>२</sup> इनमें पहला सन् १०५३ का है तथा इसमें सिन्द कंचरस-द्वारा नयसेन आचार्यको कुछ दान मिलनेका उल्लेख है। दूसरा लेख सन् १०८५ का है तथा यह सिन्द बर्मदेवरसके समयका दानलेख है। तीसरे लेखमें सन् ११६७ में सिन्द होलरस-द्वारा एक बसदिको दान दिये जानेका वर्णन है। अन्तिम लेखमें सन् ११७० में सिन्द चावुण्डरस-द्वारा जैन शालाको भूमिदान मिलनेका वर्णन है।

रट्ट कुलके उल्लेख छह लेखोंमें हैं (क्र० १७६, १८६, २५१, ३१७, ३१८, ३१९)।<sup>३</sup> इनमें पहला लेख ११वीं सदीका राजा कार्तवीर्य २ के समयका है, इसका विवरण अधूरा है। दूसरा लेख सन् ११०८ का है तथा इसमें राजा लक्ष्मीदेव-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरका उल्लेख है। तीसरे लेखमें सन् ११६५ में राजा कार्तवीर्य ३-द्वारा एककस्म्बुगेके जिनमन्दिरके

१. पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला (क्र० १४६) सन् ६५० के आसपासका है।
२. पहले संग्रहमें सिन्द राजाओंके लेख नहीं हैं।
३. पहले संग्रहमें इस वंशके दस लेख हैं जिनमें पहला (क्र० १३०) सन् ८७५ का है।



दर्शनका वर्णन है। अन्तिम तीन लेख कार्तवीर्य ४ के राज्यके सन् १२०१ तथा १२०४ के हैं। इनमें राजा-द्वारा जिनमन्दिरोंके लिए दानोंका वर्णन है।

शिलाहार वंशके चार लेख मिले हैं (क्र० १९२, २२१, २२२, २५९)।<sup>१</sup> इनमें पहला सन् १११५ का है तथा इसमें राजा गण्डरादित्य-द्वारा उनके जैन सामन्त नोलम्बको दो गाँवोंके दानका वर्णन है। अगले दो लेखोंमें गण्डरादित्यके जैन सामन्त निम्बका वर्णन है। इसने सन् ११३५ में एक जिनमन्दिरका निर्माण कराया था। अन्तिम लेखमें गण्डरादित्यके जैन सेनापति जिन्नण तथा विजयादित्यके सेनापति कालणका उल्लेख है। कालणने सन् ११६५ में एक मन्दिर बनवाया था।

काकतीय वंशका एक लेख सन् १११७ का मिला है (क्र० १९७)।<sup>२</sup> इसमें राजा प्रोलके मन्त्री बेतकी पत्नी-द्वारा अन्मकोण्डमे पद्मावती देवीका मन्दिर बनवानेका वर्णन है।

गुप्त वंशके महामण्डलेश्वर विक्रमादित्यने सन् ११६२ में पार्श्वनाथ-मन्दिरके लिए कुछ दान दिया था (क्र० २५७)।<sup>३</sup>

कोगात्व वंशके शासक वीरकोगात्वने सन् १११५ के आसपास सत्यवाक्यजिनालय नामक मन्दिर बनवाया था (क्र० १९३)।<sup>४</sup>

मैसूरके राजा चामराजकी रानी देवीरम्मणिने मैसूरके शान्तिनाथ-मन्दिरमें दीपस्तम्भ तथा कलश दान दिये थे (क्र० ५२४-५२५)। इनका

१. पहले संग्रहमें इस वंशके तीन लेख हैं (क्र० २५०, ३२०, ३३४)।

२. ३. पहले संग्रहमें इन दो वंशोंका उल्लेख नहीं है।

४. पहले संग्रहमें इस वंशके छह लेख हैं जिनमें पहला सन् १०५८ का है (क्र० १८६)।

समय १८वीं सदीका अन्तिम चरण है ।<sup>१</sup>

(इ) राजाश्रयके विषयमें साधारण विचार — उपर्युक्त विवरणसे यह स्पष्ट होता है कि जैन संघको प्रायः सभी राजवंशोंके समय-विशेषकर दक्षिण भारतीय राजवंशोंके समय-अपने धर्मकार्योंमें अच्छी सहायता मिली है । इस सम्बन्धमें एक बातका ध्यान रखना चाहिए कि इनमें-से अधिकांश राजाओंका कुलधर्म जैनधर्म नहीं था — वे विष्णु, शिव, सूर्य या लक्ष्मीके उपासक थे ।<sup>२</sup> तथापि उनकी प्रजामें जैन आचार्योंका अच्छा प्रभाव रहा होगा अतः जैन संघके विषयमें उनकी नीति सहानुभूतिपूर्ण रही है ।

४ जैन संघकी दुरवस्था — बारहवीं सदीसे दक्षिण भारतमें वीरशैव तथा श्रीवैष्णव सम्प्रदायोंका प्रभाव बढ़ता गया तथा इनके आक्रामक रुख-का परिणाम जैन आचार्यों तथा मठ-मन्दिरोंको सहना पड़ा । इसके प्रत्यक्ष उल्लेख पहले संग्रहके दो लेखोंमें हैं ।<sup>३</sup> इस संग्रहके कई लेखोंसे अप्रत्यक्ष रूपसे यही बात स्पष्ट होती है — ये लेख विष्णुमन्दिरों तथा शिवमन्दिरोंमें लगे पाये गये हैं । स्पष्ट है कि जैन मन्दिरोंके ध्वंसावशेषोंसे ही ये पत्थर

१. पहले संग्रहमें मैसूरके राजाओंके कई लेख हैं ।

२. जिन्हें हम 'जैन' राजा कह सकते हैं ऐसे राजाओंकी संख्या सीमित ही है — कलिङ्गके खारवेळ, नवीं सदीसे दसवीं सदी तकके गंग राजा, दसवीं-ग्यारवीं सदीके होयसळ राजा तथा कुछ सामन्त ये जैन राजा कहे जा सकते हैं । आठवीं सदी तकके गंग राजा तथा बारहवीं सदीके तथा बादके होयसळ राजा भी विष्णु, शिव आदिके उपासक थे ।

३. यहाँ उल्लिखित राजवंशोंके राजनीतिक प्रभाव, राज्यविस्तार आदिके बारेमें तीसरे भागकी प्रस्तावनामें डॉ० चौधरीने विस्तारसे लिखा है अतः वे बातें यहाँ दुहरायी नहीं हैं ।

४. लेख क्र० ४३५-३६ ।

विष्णु या शिवके मन्दिरोंमें ले जाये गये हैं। इसका महत्त्वपूर्ण उदाहरण कोल्हापुरका महालक्ष्मी मन्दिर है जहाँके कुछ स्तम्भोंपर पार्श्वनाथमन्दिर सम्बन्धी लेख मौजूद हैं (क्र० २२२)। आन्ध्र प्रदेशमें अन्मकोण्ड पहाड़ी-पर देवी पद्मावतीका मन्दिर था जो बादमें पूरी तरह ब्राह्मणोंके अधिकारमें चला गया (क्र० १९७)। इस तरहके अन्य उदाहरण भी हैं।

५ समारोप—जैनधर्म, साहित्य तथा समाजके इतिहासके लिए शिलालेखोंका महत्त्व सर्वमान्य है। अबतक इस संग्रहके लेखोंसे प्राप्त तथ्योंका जो विवरण दिया है उससे यह बात अतिस्पष्ट होगी। इस ऐतिहासिक जानकारीका उपयोग कर जैन साहित्य तथा कथाओंकी प्रामाणिकता परखना आवश्यक है। साहित्यिक तथा शिलालेखीय दोनों साधनोंके समन्वित उपयोगसे ही तथ्यपूर्ण इतिहासका निर्माण सम्भव है।

इस संग्रहके अन्तमें तीन परिशिष्ट दिये हैं। पहले परिशिष्टमें इस संग्रहकी तैयारीके समय जो श्वेताम्बर लेख हमारे अवलोकनमें आये उनकी सूची दी है। दूसरे परिशिष्टमें उन जैनतर लेखोंकी संक्षिप्त जानकारी दी है जिनमें जैन व्यक्तियोंसे संबद्ध कुछ उल्लेख हैं। तीसरे परिशिष्टमें नागपुरके समस्त मूर्तिलेखोंका संग्रह है। यह संग्रह आजसे कोई २५ वर्ष पहले श्रीमान् शान्तिकुमारजी ठवलीने तैयार किया था जो कई कारणोंसे अबतक प्रकाशित नहीं हो सका। इस पुस्तकमें प्रस्तुत संग्रहकी अन्तर्भूत करनेकी अनुमतिके लिए हम श्रीठवलीजीके आभारी हैं। हमे आशा है कि इन तीन परिशिष्टोंसे प्रस्तुत संग्रह अभ्यासकोंके लिए अधिक उपयोगी सिद्ध होगा।

# जैन शिलालेख संग्रह

[ मूल लेख तथा सारांश ]

# मूल लेख तथा सारांश

१

बारली ( जि० अजमेर ) ( राजस्थान म्युजियम )

बारलीसे एक मील दूर मिलोत माताके मन्दिरमें ।

प्राकृत, ब्राह्मी—सन्पूर्व ४थी सदी

१ वीराय भगव ( ते )

२ चतुगमिति व ( से )

३ ये सा ( लि ) मालिनि

४ रं नि ( वि ) ठ माझिमिके

[ इस लेखमें भगवान् वीरका निर्देश है जिससे प्रतीत होता है कि यह किसी जैन मन्दिरका लेख होगा । इसकी लिपि सम्राट् अशोकके लेखोंकी लिपिसे प्राचीन है । इससे अनुमान होता है कि इसमें जो ८४वें वर्षका निर्देश है वह महावीरके निर्वाणके बादका ८४वाँ वर्ष होगा । इसकी अन्तिम पंक्तिमें माध्यमिका नगरीका उल्लेख है । लेख टूटा है अतः इसका उद्देश्य ज्ञात नहीं होता । ]

[ इ० ए० ५८ ( १९२९ ) पृ० २२९ ]

२

मालकोण्ड ( नेलोर, आन्ध्र )

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्पूर्व ३री सदी

[ यह लेख स्थानीय पहाड़ीकी एक गुहाके अप्रभागमें है । यह गुहा अरुवाहि कुलके नन्दसेठिके पुत्र विरिसेठिने अर्पित की ऐसा लेखमें कहा है ।

लिपि सन्पूर्व ३री सदीकी है। ये गुहाएँ श्रमणोंके लिए उत्कीर्ण की गयी थीं। ]

[ रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ५३१ पृ० ५९ ]

## ३

**खण्डगिरि ( ओरिसा )—** ( मंचपुरी गुहा—ऊपरका भाग )

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

१ अरहंतपसादाय कालिंगा ( नं ) ( सम ) नानं लेणं कारितं  
राजिनो लालाक ( स )

२ हथिसाहस-पपोतस धु ( तु ) ना कलिंगच ( कवतिनो सिरिखा )-  
रवेलस

३ अगमहिसि ( ना ) कारि ( तं )

[ अरहंतोंकी कृपासे कलिंग प्रदेशके श्रमणोंके लिए यह गुहा कलिंग-चक्रवर्ती खारवेलकी महारानीने बनवायी। यह हस्तिसाहसके प्रपौत्र लालाककी कन्या थी ]

[ ए० इ० १३ पृ० १५९ ]

## ४

**खण्डगिरि—**( मंचपुरी गुहा—नीचेका भाग )

प्राकृत—ब्राह्मी सन्पूर्व पहली सदी

१ खरस महाराजस कलिंगाधिपतिनो महा ( मेघ ) वाह ( नस )  
कुदेपसिरिनो लेणं

[ कलिंगके अधिपति महाराज खर महामेघवाहन कुदेपश्रीने यह गुहा बनवायी। ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६० ]

५

खण्डगिरि—( मंचपुरी गुहा—नीचेका भाग )

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

कुमारो वड्डुखस लेणं

[ यह गुहा कुमार वड्डुखने बनवायी । ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६१ ]

६

खण्डगिरि ( सर्पगुहा )

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

चूलकमस कोठाजेया च

[ चूलकम्म ( क्षुद्रकर्म अथवा चूडाकर्म ) का कक्ष । ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६२ ]

७

खण्डगिरि ( सर्पगुहा )

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

१ कंसस हलखि—

२ णय च पसादो

[ कर्म तथा हलखिण ( सल्लक्षण ) का बनवाया प्रासाद । ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६२ ]

८

खण्डगिरि ( हरिदास गुहा )

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

[ यह लेख सर्पगुहाके पहले लेखके समान ही है । ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६२ ]

६

खण्डगिरि ( बाघ गुहा )

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

१ नगर अखदंस

२ सभूतिनो लेणं

[ नगरके न्यायाधीश सभूतिकी गुहा ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६३ ]

१०

खण्डगिरि ( जम्बेश्वर गुहा )

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

महामदास बारियाय नाकियस लेणं

[ महामदकी पत्नी नाकियाकी गुहा ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६३ ]

११

खण्डगिरि ( छोटा हाथीगुफा )

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

अगिख.....स लेणं

[ अगिख.....की गुहा ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६४ ]

१२

खण्डगिरि ( तत्त्वगुहा )

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

पादमुलिकस कुसुमास लेणं फि....

[ पदमूलिकके कुसुमकी गुहा ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६४ ]



१३

खण्डगिरि ( अनन्तगुहा )

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

दोहद समणनं लेणं

[ दोहदके श्रमणोंकी गुहा ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६४ ]

१४

खण्डगिरि ( तत्त्वगुहा )

ब्राह्मी, पहली सदी

१ ....घ....

२ ....ण त थ द ध न....

३ ....ण त थ द ध न....श ष स....

४ ....ण त थ द ध न प फ ब....श ष स ह....

५ ....त थ द ध न प फ ब....श ष स ह....

६ ....थ....

[ यह वर्णमाला चित्रित की गयी है जो सम्भवतः किसी नवदीक्षित साधुका कार्य है । ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६५ ]

१५

मथुरा ( उत्तर प्रदेश )

प्राकृत-ब्राह्मी, वर्ष ८४ ( दूसरी सदी )

१ ओं सिद्ध स ८० ४ व ३ दि २० ५ एतस्मि पूर्वय दमित्रस्य  
धितु ओख-

२ रिकाये कुटुबिणिये दताये दानं वर्धमानप्रतिमा प्रतिथपिता

३ गणतो कोट्टियतो....सत्यसेनस्य....धरवृधिस्य नि....

[ वर्ष ८४ मे वर्षा ऋतुके तीसरे महीनेके २५वें दिन दमित्रकी पुत्री तथा ओखरिककी पत्नी दत्ता ( दत्ता ) ने यह मूर्ति स्थापित की । कोट्टिय गणके....सत्यसेन....धरवृद्धि । ] [ यदि लेखका वर्ष शककालका हो तो वह सन् १६२ होगा । ]

[ ए० ई० १९ पृ० ६७ ]

१६

मथुरा

प्राकृत-ब्राह्मी, पहली-२ री सदी ( खण्डित जैनमूर्तिके पादपीठपर )

( शा ) खातो वाच ( कस्य ) आर्य ऋ ( षि ) दासस्य निर्वर्तना....  
रकस्य भट्टिदामस्य....

[ ....शाखाके वाचक आर्य ऋषिदासने यह बनवायी ।.....रक भट्टिदामकी.... ]

[ रि० आ० स० १९११-१२ पृ० १७ ]

१७-१८

मथुरा

प्राकृत-ब्राह्मी, २री सदी

[ यह लेख २री सदीकी लिपिमें है । अरहतके प्रणामसे इसका प्रारम्भ होता है तथा लाघके पुत्रका इसमें उल्लेख है । एक अन्य पादपीठपर इसी समयकी लिपिमें वर्धमानको प्रणाम किया है । ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ५२८-२९ पृ० ७७ ]

१६

पहाड़पुर ताम्रपत्र ( जि० राजशाही, बंगाल )

गुप्त वर्ष १५९ = सन् ४७९ संस्कृत

अगला भाग

- १ स्वस्ति पुण्ड्र ( वर्ध ) नादायुक्तका आर्यनगरश्रेष्ठिपुरोगाञ्चाधिष्ठा  
नाधिकरणं दक्षिणांशकवीथेयनागिरट्ट-
- २ माण्डलिकपलाशाष्टपार्श्विक - वटगोहालीजम्बूदेवप्रावेश्यपृष्ठिमपो-  
त्तक-गोषाटपुञ्जक-मूलनागिरट्टप्रावेश्य-
- ३ नित्वगोहालीषु ब्राह्मणोत्तरान् महत्तरादिकुटुम्बिनः कुशलमनुव-  
र्णानुबोधयन्ति । विज्ञापयत्यस्मान् ब्राह्मणनाथ-
- ४ शर्मा एतद्भार्या रामी च युष्माकमिहाधिष्ठितानाधिकरणे द्विदी-  
नारिक्कुकुस्यवापेन शश्वत्कालोपमोग्याक्षयनीवीसमुदयवाह्या-
- ५ प्रतिकरखिलक्षेत्रवास्तुविक्रयोनुवृत्तस्तदर्थधानेनैव क्रमेणावयोः  
सकाशाद् दीनारत्रयमुपसंगृह्यावयोः स्वपुण्याप्या-
- ६ यनाय वटगोहास्यामवास्यान् काशिक-पञ्चस्तूपनिकायिकनिग्रन्थ-  
श्रमणाचार्य-गुहनन्दि-शिष्यप्रशिष्याधिष्ठितविहारे
- ७ भगवतामर्हतां गन्धधूपसुमनोदीपाद्यर्थन्तलवटकनिमित्तं च  
अ ( त ) एव वटगोहालीतो वास्तुद्रोणवापमध्यर्धं ज-
- ८ म्बूदेवप्रावेश्य-पृष्ठिमपोत्तकेत् क्षेत्रं द्रोणवापचतुष्टयं गोषाटपुंजाद्  
द्रोणवापचतुष्टयं मूलनागिरट्ट-
- ९ प्रावेशयानित्वगोहालीतः अर्धत्रिकद्रोणवापानित्येवमध्यर्धं क्षेत्र-  
कुस्यवापमक्षयनीग्या दातुमि ( त्यत्र ) यतः प्रथम-
- १० पुस्तपालदिवाकरनन्दि-पुस्तपालघृतिविष्णु - विरोचनरामदास-हरि-  
दास-शशिनन्दिषु प्रथमनु.....मवधारण-
- ११ यावद्युतमस्यस्मदधिष्ठितानाधिकरणे द्विदीनारिक्कुकुस्यवापेन  
शश्वत्कालोपमोग्याक्षयनीवासमु ( दयवा ) ह्याप्रतिकर-
- १२ ( खिल ) क्षेत्रवास्तुविक्रयोनुवृत्तस्तद् यद् युष्मान् ब्राह्मणनाथ-  
शर्मा एतद्भार्या रामी च पलाशाष्टपार्श्विकवटगोहालीस्थ-

## पिल्ला भाग

- १३ .....कपञ्चस्तूपनिकायिकाचार्यनिग्रन्थ-गुहनन्दि-शिष्यप्रशिक्ष्या-  
धिष्ठितसद्विहारे अर्हतां गन्ध ( धूपा ) द्युपयोगाय
- १४ ( तलवा ) टकनिमित्तं च तत्रैव चटगोहाल्यां वास्तुद्रोणवाप-  
मध्यर्धं क्षेत्रं जम्बूदेवप्रावेश्यपृष्ठिमपोत्तके द्रोणवापचतुष्टयं
- १५ गोषाटपुञ्जाद् द्रोणवापचतुष्टयं मूलनागिरट्टप्रावेश्यनिस्वगोहालीतो  
द्रोणवापद्वयमाढवा ( पट्ट ) याधिकमित्येवम-
- १६ मध्यर्धं क्षेत्रकुल्यवापं प्रार्थयतेत्र न कश्चिद् विरोधः गुणस्तु यत्  
परमभट्टारकपादानामर्थोपचयो धर्मषड्भागाप्याय-
- १७ नं च भवति तदेवं क्रियतामित्यनेनावधारणाक्रमेणास्माद् ब्राह्म-  
णनाथशर्मत एतद्भार्यारामियाश्च दीनारत्र-
- १८ यमार्याकृत्यैताभ्यां विज्ञापितकक्रमोपयागायोपरिनिर्दिष्टग्रामगो-  
हालीकेषु तलवाटकवास्तुना सह क्षेत्रं
- १९ कुल्यवाप अध्यर्धोक्षयनीवीधर्मेण दत्तः कु १ द्रो ४ तद् युष्मामिः  
स्वकर्मणाविरोधिस्थाने षट्कनडैरप-
- २० विच्छेद्य दातव्यांक्षयनीवीधर्मेण च शश्वदाचन्द्रार्कतारककालमनु-  
पालयितव्य इति सं १०० ( + ) ५० ( + ) ९
- २१ माघ दि ७ उक्तं च भगवता व्यासेन । स्वदत्तां परदत्तां वा यो  
हरेत वसुन्धरां ।
- २२ स विद्यायां कृमिर्मूत्वा पितृभिः सह पच्यते ॥ षष्ठिवर्षसह-  
स्राणि स्वर्गे वसति भूमिदः ।
- २३ आक्षेप्ता चानुमन्ता च तान्येव नरकं वसेत् ॥ राजमिर्बहुमिर्दत्ता  
दीयते च पुनः पुनः । यस्य यस्य
- २४ यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥ पूर्वदत्तां द्विजातिभ्यो  
यस्माद् रक्ष युधिष्ठिर । महीं महिमतां श्रेष्ठ

२५ दानाच्छ्रेयोनुपालनम् ॥ विन्ध्याटवीध्वनम्भःसु शुष्ककोटर-  
वासिनः । कृष्णाहिनी हि जायन्ते देवदायं हरन्ति ये ॥

[ यह ताम्रपत्र गुप्तवर्ष १५९ के माघ मासके ७वें दिन लिखा गया था । ब्राह्मण नाथशर्मा तथा उसकी पत्नी रामीने पुण्ड्रवर्धनके राजकोषमें तीन दीनार देकर डेढ़ कुल्यवाप जमीन प्राप्त की । इसमें ४ द्रोणवाप जमीन पृष्ठिमपोत्तक गाँवमे, ४ द्रो० गोषाटपुंजक गाँवमे, २½ द्रो० नित्व-गोहालीमे और १½ द्रो० वटगोहालीमें थी । काशीके पञ्चस्तूपनिकायके निर्ग्रन्थ श्रमणोंके आचार्य गुहनन्दिके शिष्य-प्रशिष्योंका एक विहार वट-गोहालीमें था । वहाँ भगवान् अर्हत्की पूजाके लिए गन्ध, धूप, फूल, दीप आदिकी व्यवस्थाके लिए यह जमीन नाथशर्मा तथा रामीने दान दी । इस ताम्रपत्रमें परमभट्टारक पदसे किसी सम्राट्का उल्लेख किया है । ये सम्भवतः गुप्तवंशीय सम्राट् बुधगुप्त थे । पहाड़पुरके समीपका गोआलमिटा गाँव ही सम्भवतः प्राचीन वटगोहाली है । यहाँके एक बड़े मन्दिरके उत्खननमें कई जैन, बौद्ध तथा ब्राह्मण अवशेष मिले हैं । ]

[ ए० इ० २० पृ० ५९ ]

२०

होसकोटे ( मैसूर )

६वीं सदी पूर्वार्ध संस्कृत

पहला पत्र :

१ स्वस्ति जितं भगवता गतघनगगनाभेन पद्मनाभेन श्रीमज्जाङ्ग-  
वेयकुलामल्लभ्यो-

२ मावमासनमास्करस्थ स्वभुजजवजयजनितासुजनजनपदस्थ  
दारुणारिगण-

३ विदारणरणोपलब्धव्रणविभूषणभूषितस्थ काण्वायनसगोत्रस्थ श्री-

४ मत्कोङ्गणवर्मधर्ममहाधिराजस्थ पुत्रस्थ पितुरन्वागतगुणयुक्तस्थ

- ५ विधाविहितविनयस्य सम्यक्प्रजापालनमात्राधिगतराज्य-  
प्रयोजनस्य

द्वितीयपत्र : पहला भाग

- ६ विद्वत्कविकांचननिकषोपलभूतस्य विशेषतोप्यनवशेषस्य नीति-  
शास्त्रस्य वक्तृप्र-  
७ योक्तृकुशलस्य सुविभक्तमक्तभृत्यजनस्य दत्तकसूत्रवृत्तेः प्रणेतुः  
श्रीमन्माधववर्मम-  
८ हाधिराजस्य पुत्रस्य पैतृपितामहगुणयुक्तस्य अनेकचतुर्दन्त-  
युद्धावाप्त-  
९ चतुर्दधिसलिलास्वादितयशसः समदद्विरदतुरगारोहणातिशयो-  
त्पन्नतेजसो धनुर-  
१० भियोगजनितसम्पादितसम्पद्विशेषस्य श्रीमद्धरिवर्ममहाधिराजस्य  
पुत्रस्य

द्वितीय पत्र : पिछला भाग

- ११ गुरुगोब्राह्मणपूजकस्य नारायणचरणानुध्यातस्य श्रीमद्विष्णु-  
गोपमहाधि-  
१२ राजस्य पुत्रस्य त्र्यम्बकचरणाम्भोरुहरजःपवित्राकृतोत्तमांगस्य  
व्यायामोद्वृत्तपीन-  
१३ कठिनभुजद्वयस्य स्वभुजबलपराक्रमक्रयक्रांतराज्यस्य चिरप्रनष्ट-  
ब्रह्मदे-  
१४ यबहुसहस्रविसर्गाग्रयणकारिणः क्षुत्क्षामोष्ठपिशिताशनप्रोत्तिकर-  
निश्चितधा-  
१५ रासेः कलियुगमलर्पकावसन्नधर्मवृषोद्धरणनित्यसन्नद्धस्य श्रीमाधव-  
महाधिराज-

तृतीय पत्र : अगला भाग

- १६ स्य पुत्रेण जननीदेवतापर्यंकतलसमधिगतराज्येन निजप्रभाव-  
खंडित-  
१७ रिपुनृपतिमंडलेनाखंडलविलंबिविभवविक्रमेण करितुरगवरारो-  
हणसौष्ठ-  
१८ वजनितगुणविशेषेण स्वदानकुसुममंजरीसुरमितसमंतदिगंत-  
रामिग-  
१९ तबुधमधुकरसमुदयेन वरांगनापांगशरविक्षेपलक्षांगेन प्रजापरिरक्ष-  
२० णैकदीक्षाक्षपितकल्मषेणापरिणतवयसापि परिणतमतिसस्व-  
सम्पदा परम-

तृतीय पत्र : पिछला भाग

- २१ धार्मिकेण श्रीमता कौण्डिन्याधिराजेनात्मनः प्रवर्धमानविजयैश्वर्ये  
द्वादशे संवत्स-  
२२ रे कार्तिके मासे शुक्लपक्षे तिथौ पौर्णमास्यां शासनाधिकृतस्य  
सकलमंत्रतंत्रांतर्ग-  
२३ तस्य विविधागमजलप्रक्षालितविशुद्धबुद्धेः सिंहविष्णुपद्मलवाधि-  
राजस्य  
२४ जनन्या भर्तृकुलकोर्तिजनन्यार्थं चात्मनश्च धर्मप्रवर्धनार्थं च  
प्रतिष्ठापिताय अर्हद्दे-  
२५ वतायतनाय यावनिकसंघानुष्ठिताय कोरिकुन्दभागे पुल्लिङ्ग  
नाम ग्रामे

चतुर्थ पत्र : अगला भाग

- २६ महातटाकस्याधस्तात् मूलाभ्यांशे श्रमणकंदारसहितसप्तकण्डुका-  
वापमात्रं  
२७ क्षेत्रं मध्यभागे पंचकण्डुकावापमात्रं क्षेत्रं इक्षुनिष्पादनक्षममे-  
२८ कन्तोदक्षेत्रं ग्रासं दक्षिणेन कण्डुकावापमात्रं पद्मं उत्तरेण च द्वा-

- २९ दशकण्डुकावापमात्रमारण्यक्षेत्रं च देवतायतनसन्निकृष्टमेकं वेदम च  
 ३० एतत् सर्वं सर्वपरिहारपरिगृहीतं पानीयपातपुरस्सरं दत्तं योस्य  
 चतुर्थपत्र : पिछला भाग  
 ३१ लोभात् प्रमादाद् वापि हर्ता स पंचमहापातकसंयुक्तो भवति  
 अपि चास्मिन्न-  
 ३२ र्थे मनुगीता( न् ) श्लोकानुदाहरन्ति ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो  
 हरेत् वसुन्धराम्  
 ३३-३८ ( नित्यके शापात्मक श्लोक )  
 ३६ कुवलालत्वष्टकारस्य इदम्पटुवस्य पुत्रेण पेरेरञ्जामलिखिताम्पट्टिका ॥  
 शिवमस्तु

[ यह ताम्रपत्र गंगवंशीय राजा माधव ( द्वितीय ) के पुत्र कोंगण्य-  
 धिराज ( अविनीत ) द्वारा राज्यवर्ष १२ के कार्तिक शु० १५ को दिया  
 गया था । इसमें यावनिक संघ-द्वारा अनुष्ठित एक अर्हद्देवतायतन ( जिन-  
 मन्दिर ) के लिए पुल्लिऊर ग्रामकी कुछ भूमि और एक घर दान दिये जाने-  
 का उल्लेख है । यह मन्दिर पल्लव राजा सिंहविष्णुकी माता-द्वारा निर्माण  
 किया गया था । ताम्रपत्रको इदम्पटुवके पुत्र पेरेरने लिखा था । ]

[ ए० रि० मै० १९३८ पृ० ८० ]

२१

कोरमंग ( मैसूर )

६वीं सदी, संस्कृत

प्रथम पत्र

- १ सूर्याशुष्यतिपरिषिक्तपंकजानां शोभां यद् बहति सदास्य पाद-  
 पद्मम् ।



सिद्धम्

- २ देवानां मकुटमणिप्रभाभिषिक्तं सर्वज्ञः स जयति सर्व-  
लोकनाथः (॥१)
- ३ कीर्त्या दिगन्तरव्यापी रघुरासीश्वराधिपः (१) काकुत्स्थतुल्यं काकु-  
स्थो यर्वायास्तस्य भूपतिः (॥२)
- ४ तस्याभूत् तनयः श्रीमाञ् शान्तिवर्मा महीपतिः (१) मृगेशस्तस्य  
तनयो मृगेश्वरपराक्रमः (॥३)
- ५ कदम्बामलवंशाद्रेः मौलितामागतो रविः (१) उदयाद्रिमकुटटेप  
( टाटोप ) दीप्रांशुरिवांशुमान् (॥४)
- ६ नृपश्छलनकी विष्णुदैत्यजिष्णुरयं स्वयं (१) हिरण्मयचलन्मालं  
त्यक्त्वा चक्रं विभावितः (॥५)
- ७ साम्राज्ये नन्दमानोपि न माद्यति परंतपः (१) श्रीरेषा मदयत्य-  
न्यानतिर्पातेव वारुणी (॥६)

द्वितीय पत्र

- ८ नर्मदं तं मही प्रीत्या यमाश्रित्यामिनन्दति (१) कौस्तुभामारुण-  
च्छायं वक्षो लक्ष्मीर्हरिर्व (॥७)
- ९ रवावधि जयन्तीयं सुरेन्द्रनगरी श्रिया (१) बैजयन्तो चलच्चित्रं  
बैजयन्ती विराजते (॥८)
- १० रेवर्भुजंगदासीव चंदनप्रीतमानसा (१) तथा श्रीर्नाभवत् प्रीता  
सुरारेरपि वक्षसि (॥९)
- ११ विश्वा वसुमती नाथस्त्राधते नयकोविदम् (१) द्यौरिवेन्द्रं ज्वलद्ब-  
ज्रदाप्तिकोरकितांगदम् (॥१०)
- १२ यस्य मूर्ध्नि स्वयं लक्ष्मीं हेमकुम्भोदरच्युतैः (१) राज्याभिषेकम-  
करोदम्भोजशबलैर्जलैः (॥११)
- १३ रघुणालम्बितामीली ( मौलौ ) कुण्डो गिरिधारयत् (१) रवेराज्ञां  
वहस्यद्य मालामिव महीश्वरः (॥१२)

१४ धर्मार्थं हरिदत्तेन सोयं विज्ञापितो नृपः (१) स्मितज्योत्स्नाभिषि-  
क्तेन वचसा प्रत्यभाषत (॥१३)

द्वितीय पत्र : दूसरा भाग

१५ चतुस्त्रिंशत्तमे श्रीमद्राज्यवृद्धिसमासमा (१) मधुर्मासस्थितिः  
पुण्या शुक्लपक्षश्च रोहिणी (॥१४)

१६ यदा तदा महाबाहुरासंघामपराजितः (१) सिद्धायतनपूजार्थं  
संघस्य परिवृद्धये (॥१५)

१७ सेतोरुपलकस्यापि कोरमंगाश्रितां महीम् (१) अधिकां निवर्त-  
नान्येव दत्तवां स्वामरिन्दमः (॥१६)

१८ आसन्दी दक्षिणस्याथ सेतोः केदारमाश्रितम् (१) राजमानेन  
मानेन क्षेत्रमेकनिवर्तनम् (॥१७)

१९ समणे सेतुबंधस्य क्षेत्रमेकनिवर्तनम् (१) तच्चापि राजमानेन  
वेटिकौटेनिवर्तनम् (॥१८)

२० उच्छादिपरिहर्तव्ये समाधिसहितं हितम् (१) दत्तवांश्श्रीमहाराज-  
स्सर्वसामन्तसंनिधौ (॥१९)

२१ ज्ञात्वा च पुण्यमभिपालयितुर्विशालं तद्मंगकारणमितस्य च  
दोषवत्ताम्

तीसरा पत्र :

२२ .....श्रमस्खलितसंयमनैकचित्ताः संरक्षणेस्य जगतीपतयः  
प्रमाणं (॥२०)

२३ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजमिस्सगरादिभिः (१) यस्य यस्य यदा  
भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं (॥२१)

२४ अद्भिर्दत्तं त्रिभिर्मुक्तं सद्भिश्च परिपालितम् (१) एतानि न निवर्त-  
न्ते पूर्वराजकृतानि च (॥२२)

२५ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरंत वसुंधरां (१) षष्टिर्वर्षसहस्राणि  
नरकं पश्यते तु सः (॥२३)

[ यह ताम्रपत्र कदम्बवंशीय राजा मृगेशके पुत्र रविवर्मा-द्वारा दिया गया था । हरिदत्तके निवेदनपर राजाने सिद्धायतनकी पूजा तथा संघ-की वृद्धिके लिए कोरमंग ग्रामकी कुछ जमीन दान दी ऐसा इसमें निर्देश है । दानकी तिथि राज्यवर्ष ३४ के चैत्र शुक्ल पक्षकी पुण्यतिथि कही गयी है । ]

[ ए० रि० मै० १९३३ पृ० १०९ ]

२२

गोकाक ताम्रपत्र ( जि० बेलगांव, मैसूर )

६-७वीं सदी, संस्कृत-नागरी

- १ स्वस्ति ॥ वर्धतां वर्धमानेन्दोर्वर्धमानगणोदधेः । शासनं नाशित-
- २ रिपोर्मासुरं मोहशासनं ॥ ( १ ) इहास्यामवसर्पिण्यान्तीर्थ-
- ३ कराणां चतुर्विंशतितमस्य सन्मतेः श्रीवर्धमानस्य वर्धमा-
- ४ नायां तीर्थसन्ततावागुसायिकानां राज्ञामष्टसु वर्षशते-
- ५ शु पंचचत्वारिंशदग्रेषु गतेषु राष्ट्रकूटान्वयजातश्रीदे-

दूसरा पत्र : पहला भाग

- ६ जमहाराजस्यामिमतः श्रीसेन्द्रकामलकुलांबरोदितदी-
- ७ प्रदिवाकरो विजयानन्दमध्यराजात्मजः श्रीमानिन्द्रगणन्दाधि-
- ८ राजः स्ववंश्यानामात्मनश्च धर्मवृद्धये कम्पाण्डीविषये
- ९ पर्वतप्रत्यासन्नजलारामे जम्बूवण्डगणस्थाय ज्ञान-
- १० दर्शनतपस्सम्पन्नाय आर्यगन्धाचार्याय भगवदर्ह-

दूसरा पत्र : दूसरा भाग

- ११ अतिमानवरतपूजार्थं शिक्षकगलानवृद्धानां च तपस्विनां वै-  
 १२ यावृत्त्यर्थं ग्रामस्योत्तरतः पूर्वोणग्रामविरेयसीमकं द-  
 १३ क्षिणेन मुञ्जजलमार्गपर्यन्तं अपरतः एन्दावीरुत्स-  
 १४ द्वितवल्मीकं तस्मादुत्तरतः पुष्करणी ततश्च यावत् पूर्वविरेय-  
 १५ कं राजमानेन पंचाशद्विवर्तनप्रमाणक्षेत्रन्द-

तीसरा पत्र

- १६ त्तवानेतद् यो हरति स पंचमहापातकसंयुक्तो भवति ॥ उक्तञ्च  
 १७-२० बहुमिर्वसुधा भुक्ता—( नित्यकं शापात्मक इलोक )

[ यह ताम्रपत्र सेन्द्रक वंशके अधिराज विजयानन्दके पुत्र इन्द्रणन्द-द्वारा जम्बूखण्डगणके आचार्य आर्यणन्दको दिया गया था । अर्हत्प्रतिमाकी पूजाके लिए तथा तपस्वियोंकी सेवाके लिए जलार ग्रामके पासकी कुछ भूमि उन्हें दी गयी थी । राजा इन्द्रणन्द राष्ट्रकूट वंशके देज्ज महाराजका सामन्त था । इस ताम्रपत्रका काल आगुप्तायिक राजाओंका ८४५वाँ वर्ष इस प्रकार कहा है । किन्तु इसमें कौन-सी कालगणना अभिप्रेत है यह स्पष्ट नहीं क्योंकि लिपिकी दृष्टिसे यह ताम्रपत्र छठी या सातवीं सदीका प्रतीत होता है । ]

[ ए० ई० २१ पृ० २८९ ]

२३

चित्तरल ( केरल )

७वीं सदी, तमिल

भगवती मन्दिरके लिए प्रसिद्ध तिरुच्छाणत्तुमलै पहाड़ीपर

[ इस लेखमें अरिष्टुनेमि भटारके शिष्य गुणन्दांगि कुरट्टिगल-द्वारा देवीके लिए कुछ सोनेके आभूषण दान देनेका निर्देश है । यह लेख विक्रमादित्य वरगुणके २८ वें वर्षका है । ]

[ इ० म० तिरुवांकुर २ ]

२४

कुलगाण ( मैसूर )

संस्कृत-कन्नड, ७वीं सदी

पहला पत्र

- १ स्वस्ति श्री जितं भगवता श्रीमज्जान्हवेय....
- २ श्रमणाचार्यसाधितः स्वस्वद्वैक....
- ३ राक्रमैक्यशसः दारुणारिगणविदार....
- ४ श्वायनसगोत्रस्य श्रीमत्कोंगणिवर्मभ....

दूसरा पत्र

- ५ युक्तस्य श्रीमन्माभवमहाभिराजस्य प्रियोरसस्य श्रीविष्णुवर्म-  
गोपमहाभिराजस्य अने-
- ६ कचतुर्दन्तयुद्धावासचतुर्दभिसकिक्कास्वादितयशसः पुत्रस्य श्री-  
मन्माभवमहाभिराज-
- ७ जस्य पुत्रस्य श्रीमत्कृष्णवर्ममहाभिराजस्य मागिनेयस्य श्रीमत्-  
कोंगणिवृद्धराजस्वा-
- ८ विनीतनाम्नः पुत्रस्य श्रीदुर्विनीतनामधेयस्य समस्तपाणाटपुञ्जा-  
टाभिपतेरात्मजस्य श्री-

दूसरा पत्र ( ब )

- ९ मत्कोंगणिवृद्धराजस्य प्रथितमुष्करद्वितीयनामधेयस्य सर्वविद्या-  
पारगस्य सूनोः श्रीम-
- १० तृथिवीकोंगणिवृद्धराजस्य श्रीविक्रमद्वितीयनामधेयस्य सर्व-  
विद्यानिकषोपलभूतस्य प्र-
- ११ योगनिपुणतरस्य श्रीविक्रमोपाजितानेकजनपदस्य प्रतापोपनत-  
सकलसामन्तस्य

१२ घनविनीतस्यास्मजे श्रीमत्पृथिवीकौंगणिवृद्धराजे प्रणितानेक-  
राजस्य मकुटमणिम-

तीसरा पत्र

१३ यूखपुंजपिंजरितांगुष्टे वरयुवतिमनोनयनसुमगे रिपुनुपतिगजाश्व-  
रधनरोरुवन-

१४ लोकसमद्विरदतुरगारोहणोपभीसमाननिरतिशयनिजशरीरश्री-  
वल्लभे सकल-

१५ पाणाटपुञ्जाटघनेकजनपदाधिपता मनोविनीतस्य भ्राता शिव-  
कुमारः श्रीमत्पृथिवी-

१६ कौंगणिवृद्धराजः स्थिरविनीतः अवनिमहेन्द्रविख्यातः पाणाटपु-  
ञ्जाटघनेकजनपदाधि-

तीसरा पत्र (ब)

१७ पातः पृथिवीं परिपालयति कोडुगून्नाडा केल्लिपुसूरा चेदिअक्के  
कर्गुलप्पोल तटुवल्लु-

१८ वेरेउं वमदिगालुमेरडु कलनिउं तोट्टमुं मनेत्तानमुं पृथिवीकौंगणि  
मुत्तरसरनुमतदो-

१९ लं पल्लवेलारमर् पोय्दार् कोकन्दियुं मयिल्लरगयुं मेल्ल्पालुं  
जादिगालु कोळिगंकरक्कालु ओन्दुतोट्टमुमा-

२० रु कलनिउं पृथिवीकौंगणि मुत्तरसरनुमतदोलं गजेनाडर् कण्णमन्  
पोय्दार् चन्त ( न्द्र ) सेनाचा-

चौथा पत्र

२१ यंर् कर्तारराग अदकें साक्षि केह्लिपुसूर् पञ्चिर्वरं अय्सामन्तरं  
नालत्ताणिउं इदा-

२२ नलिदोन् पंचमहापातगनप्पोन् श्री बहुमिर्वसुधा भुक्ता राजमि-  
स्सक (ग)-

२३ रादिमिः यस्य यस्य यदा भूमि (ः) तस्य तस्य तदा फलं ॥  
देवस्त्वं तु विषं घो-

२४ रं न विषं विषमुच्यते विषमेकाकिनं हन्ति देवस्त्वं पुत्रपौत्रकं ॥  
स्वदत्तां परदत्तां वा

चौथा पत्र (व)

२५ यो हरंति वसुन्धरा षष्टिं वर्षसहस्राणि धारं तमसि वर्तते ।  
मारगो-

२६ टेररोन्दु तोट्टं पोय्दार् देवरा पसु गोट्टोन्दु तोट्टं कोण्डत्तु गंजे-  
नाडर्

२७ कण्णम्मन् कोडुगूनाडाल ओरंकल्वाय्गरं मीम्पालवाय्गरमिर्वरं  
तुप्पूालअरसरान-

२८ नुमतप्पडिसि पाय्ददु तुल्टिल्काल् किलिप्पुमूर् चेदियक्क

पाँचवाँ पत्र

२९ से ३२ तक पंक्तियाँ १३ से १६ तक के समान हैं ।

३३ पाणाटपुत्ताटायनेकजनपदाधिपतिः पृथिवीं परिपालयति कंडुगूर्-  
विषये

३४ केलिपुसूर् नाम ग्रामे जिनालयाय वसदिकालुं जातिकालुं  
मेल्पालुं कोलि-

३५ गन्करेकालुं कर्गुलदापोल तट्टुवल्लुवेरेडं एलुकलनिडं नाल्गु-  
तोट्टमुं म-

३६ नेत्तानमुं चन्द्रसेनाचार्यके उदपूर्वं कोट्टरदके साक्षी कोट्टेरं  
कारेअरुकुं

[ इस ताम्रपत्रके प्रारम्भमें गंग बंशके राजाओंकी वंशावली इस प्रकार बतलायी है — कोंगणिवर्मा माधव — विष्णुवर्मगोप — माधव — अविनीत कोंगणिवृद्धराज — दुर्विनीत — मुष्कर कोंगणिवृद्धराज — श्रीविक्रम पृथिवीकोंगणिवृद्धराज — श्रीवल्लभ पृथिवीकोंगणिवृद्धराज । श्रीवल्लभके बन्धु शिवकुमार अवनिमहेन्द्र पृथिवीकोंगणिवृद्धराजके शासनकालमें यह लेख लिखा गया था । पल्लवेल अरसने राजाकी अनुमतिसे केल्लिपुसूर् ग्रामका एक खेत, बगीचा और कुछ जमीन एक जिनमन्दिरको दान दी उसका इस लेखमें निर्देश है । इसी समय गंजेनाड निवासी कण्णम्मन्ने भी कुछ खेत इस मन्दिरको अर्पण किये । मारुगोट्टेरर्ने एक बगीचा तथा ओरंकल्वाय्गर् और सीम्पाल्वाय्गर्ने कुछ खेत दान दिये । राजाने भी कुछ खेत दान दिये थे । इस जिनमन्दिरके अधिष्ठाता चन्द्रसेनाचार्य थे । ]

[ ए० रि० मै० १९२५ पृ० ९० ]

२५-२६-२७

कोनकोण्डल ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

७वीं सदी, कन्नड

[ ये तीन लेख रसासिद्धलुगुट्ट नामक पहाड़ीपर पाषाणोंपर खुदे हैं । इनमें निम्नलिखित नाम उत्कीर्ण हैं —

१ सिंगनन्दिवन्दितन्

२ श्रीउरिगपसिण्डि

३ श्रीसूलाकोमरन्

इनकी लिपि ७वी सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५४-५५-५६ पृ० १२६ ]



२८

रत्नगिरि ( कटक, उड़ीसा )

संस्कृत, ७वीं सदी

[ इस लेखमें ७वीं सदीकी लिपिमें एक जिनालयका उल्लेख है । लेख खण्डित है । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४४८ पृ० ६७ ]

२९

पेनिकेलपाडु ( कडप्पा, आन्ध्र )

संस्कृत-तेलुगु, ७वीं सदी

[ इस लेखमें वृषभ नामक जैन आचार्यकी प्रशंसा की गयी है । उन्हें भव्यरूपी फसलके लिए मेघके समान तथा बाद-विवादमें पर्वतके समान दृढ़ कहा है । इस स्थानको अब संन्यासिगुण्डु कहा जाता है । लिपि ७वीं सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४०१ पृ० १२० ]

३०

कौंगरपुस्तियंगुलम् ( मद्रास )

वट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

( एक जैनमूर्तिके नोचे - ) श्रीअज्जणन्दि

[ यहाँसे ३८वें लेख तक ९ लेखोंका समय लिपिके आधारपर कहा है । ]

[ रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ५४ ]

३१

मुत्तुप्पट्टि ( मद्रास )

वट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

[ ( जैनमूर्तिके नीचे - ) यह मूर्ति वेण्बुनाडुके कुरण्डि अट्टुपवासि भटारके शिष्य गुणसेनदेवके शिष्य कनकवीरपेरियडिगल्-द्वारा बनवायी गयी थी । ]

[ रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ६१ ]

३२

मुत्तुप्पट्टि ( मद्रास )

वट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

[ यह मूर्ति कुरण्डि अट्टुपवासिके शिष्य माघनन्दि-द्वारा बनवायी गयी थी । ]

[ रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ६२ ]

३३-३८

कीलक्कुडि ( मद्रास )

वट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

[ यहाँ जैन मूर्तियोंके समीप निम्न नाम खुदे हैं - कनकनन्दि भटारके शिष्य अभिनन्दन भटारके शिष्य अरिमण्डल भटारके शिष्य अभिनन्दन भटार ( २ ) ।

अज्जणन्दिकी माता गुणमतियार् ।

गुणसेनदेवके शिष्य अनत्तवन् मासेनन्का भतीजा आच्चन् श्रीपालन् ।

गुणसेनदेवके शिष्य कण्डन् पोपट्टन् । वेण्बुनाडुके तिरु कुरण्डिके सेवक कनकनन्दि । गुणसेनदेवके शिष्य अरयंगविदि, पल्लिके प्रमुख । ]

[ रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ६३-६९ ]

३६

## नलजनम्पाडु ( आन्ध्र )

तेलुगु, ७वीं-८वीं सदी

## अगला भाग

- |                            |                           |
|----------------------------|---------------------------|
| १ स्वस्ति म-               | २ गवदहंत ( प )-           |
| ३ रमभट्टारकस्य पा-         | ४ दानुध्यात परममा-        |
| ५ हेइवर पर(मे) इवर प-      | ६ ललवादित्य श्रीबादि-     |
| ७ राजुल अन्दु पल्ले-       | ८ यरि कोडुकु बादि (रा)-   |
| ९ जेन्वानरु राजमा (नं)-    | १० बु मूनरु बुट्टु आलं-   |
| ११ पट्टु क्षेत्रंबु प(रि)- | १२ सि पल्लेयारि (दा)-     |
| १३ अनंभुनाकु इच्चे         | १४ दीनि रक्षिचिनवानि (कि) |

## पिछला भाग

- |                 |                 |
|-----------------|-----------------|
| १५ अडुगडु-      | १६ गइवमंभंभुना  |
| १७ पलंबगु       | १८ दीनि लच्चिन- |
| १९ वानिकि एकलु  | २० श्रीपर्वतंबु |
| २१ लच्चिन पाप-  | २२ बगु वाच्चो-  |
| २३ लाल कोडुकु   | २४ पल्लवाचा-    |
| २५ ज्यस्य लिकि- | २६ तम् (॥)      |

[ इस लेखमे परमेश्वर पल्लवादित्य वादिराजुल नामक शासक-द्वारा ३ पुट्टि जमीन किसी ग्राममुख्यको दिये जानेका उल्लेख है । वादिराजुलको अहंतभट्टारक तथा महेश्वर दोनोंका भक्त कहा गया है । लेखकी लिपि ७वीं-८वीं सदीकी है । ]

४०-४३

सातानिकोट ( कुर्मूल, आन्ध्र )

ककड, ७वीं-८वीं सदी

[ यहाँ एक खेतमें पाषाणोंपर निम्न नाम खुदे हैं -

१ श्री.....कोपा ( शि ) की निसिधि

२ संसारमीत

३ श्रीविमलचन्द्रन्

४ गणिगे महाव्रति

इनकी लिपि ७वी-८वीं सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ३३०, ३३२,

३३७, ३३९ पृ० ४१-४२ ]

४४

माचेल ( कृष्णा, आन्ध्र )

तेलुगु, ८वीं सदी, पूर्वार्ध

[ यह लेख पूर्वोक्त चालुक्य राजा सकललोकाश्रय जयसिंहवल्लभ ( द्वितीय ) के राज्यवर्ष ८ में लिखा गया था । दयावसन्त पृथिवीदेशरट्ट-गुडिके प्रपौत्र तथा धन्यवसन्त पृथिवीदेशरट्टगुडिके पुत्र कल्याणवसन्तुलु-द्वारा अरहन्तभटारको कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । इस दानकी रक्षा कोंठूरके रट्टगुडि वंशके शासक करेंगे ऐसा लेखमें कहा है । ]

[ रि० सा० ए० १९४१-४२ क्र० १८ पृ० १३१ ]

४५

शिगांव ( धारवाड, मैसूर )

शक ६३० = सन् ७०८

संस्कृत-नागरी

[ यह ताम्रपत्र चालुक्य राजा विजयादित्यके ११वें राज्यवर्ष शक ६३० मे आषाढ पौर्णिमाके दिन दिया गया था । किसुबोललके राजस्कन्धा-वारसे राजाने पुरिगेरे नगरमे कुंकुमादेवी-द्वारा निमित्त जिनमन्दिरके लिए गुड्डिगेरे ग्राम दान दिया ऐसा इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९४५-४६ ए० क्र० ४९ ]

४६

अणिगेरि स्तम्भलेख ( जि० धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष ६ = सन् ७५१-५२, कन्नड

- |                                 |                               |
|---------------------------------|-------------------------------|
| १ स्वस्ति कीर्तिवर्म(सत्या)श्रय | २ श्रीपृथु(वीवस्वत) महाराजा   |
| ३ धिराज परमेश्वर भटारर          | ४ राज्य ओन्दुत्तरममिवृद्धि स- |
| ५ ले आरनेया वर्ष प्रव-          | ६ दर्मानमागे जे-              |
| ७ बुलगेरिगे कलि-                | ८ यम्म गामुण्डुगेयदी          |
| ९ चेदियमान्माडिसिदोद्           | १० इदर मुन्दे कोण्डि-         |
| ११ शुलरकुप्प कीर्तिवर्म-        | १२ गोसासिय निरिसिदा           |
| १३ कीर्तन । दीशापालस्य लि-      | १४ खित्त । प्रभुनामन् ।       |

[ यह लेख बदामीके चालुक्य राजा कीर्तिवर्मा द्वितीयके राज्यके छठे वर्षका अर्थात् सन् ७५१-५२ का है । इसमें जेबुलगेरिके ग्रामाधिकारी कलिमय्य-द्वारा एक चेदिय- अर्थात् जिनमन्दिर बनवाये जानेका निर्देश है । ]

[ ए० इ० २१ पृ० २०४ ]

४७

कुडलूर ( मैसूर )

कन्नड, ८वीं सदी

श्रीयम्मं तोरेय तडिय तोण्टदोलू तम्म भागमं देवर्गे कोट्टर् अय्यप्प  
राउणद् पक्कदतोण्टमं कोण्डु तोरंय तडिय तम्म भागद् तोण्टमं मूडण-  
बयदिगे कोट्टर् रणपाकरमर् आले कोण्डु तोट्टर् ॥

[ इस लेखमें रणपाकरसके राज्यकालमें श्रीयम्म तथा अय्यप्प-द्वारा  
किसी नदीतीरपर स्थित पूर्वोक्तसदिके लिए कुछ उद्यान आदिके दानका  
उल्लेख है । लिपि ८वीं सदीकी प्रतीत होती है । ]

[ ए० रि० मै० १९०९ पृ० १४ ]

४८

नरसिंहराजपुर ( मैसूर )

संस्कृत-कन्नड, ८वीं-९वीं सदी

[ यह ताम्रपत्र गंग राजा श्रीपुरुष-द्वारा दिया गया था । इस राजाके  
'अनुकूलवर्ती' पसिण्डि गंग कुलके नागवर्मा तथा कदम्बकुलके तुलुअडिने  
तगरे प्रदेशके तोल्लग्राममें स्थित चैत्यालयके लिए मल्लवल्लि ग्राम दान  
दिया था । इसी प्रकार कोशिक वंशके मणलि मनेओडेयोन्ने कुछ भूमि  
दान थी । इसी ताम्रपत्रके अन्तिम भागमें गंग राजा शिवमारके राज्यमें  
सिन्दनाडु ८००० के शासक विट्टरस-द्वारा तोल्लरके चैत्यके लिए करिमानी  
ग्रामके दानका भी उल्लेख है । तदनन्तर इसी चैत्यके लिए राजा शिवमारके  
मामा विजयशक्ति अरस-द्वारा ६ खंडुगभूमिके दानका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९२० पृ० २७ ]

४६

मुनुगोडु ( गुण्टूर, आन्ध्र )

तेलुगु, ८वीं सदी

[ यह लेख पूर्वीय चालुक्य राजा सर्वलोकाश्रय विष्णुवर्धनके राज्यवर्ष ३७ का है। इस समय महामण्डलेश्वर गोंकय्यने मुनुगोडुके जिनालयके लिए कुछ भूमि दान दी थी। यहीके एक अन्य लेखमें गोंकके सेवक ब्रयुगट्टु-द्वारा इस जिनालयके जीर्णोद्धारका उल्लेख है जिसका निर्माण अम्गोति-द्वारा मुनिमुव्रतके तीर्थमें किया गया था। ]

[ रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० १७-१८ पृ० ६ ]

५०

तिरुगोकर्णम् ( मद्रास )

तमिल, ८वीं सदी

[ यह लेख शडैयापारै नामक पहाड़ीपर एक जिनमूर्तिके पास है। पाण्ड्य राजा कोणेरिण्मैकोण्डान् सुन्दरपाण्ड्यदेवके २४वें वर्षकी एक राजाज्ञाका इसमें उल्लेख है। तदनुसार तेंकविणाडुके निवासियोंसे कहा गया था कि कल्लारुप्पल्लिके पेरुनकिलि चोलप्पेरुम्पल्लि आल्वारके पूजादि-के लिए स्थानीय पल्लि ( जिनमन्दिर ) के व्यवस्थापकों-द्वारा अर्पित जमीनोंको करमुक्त किया गया। ]

[ इ० पु० क्र० ५३० पृ० ८५ ]

५१-५३

ब्रिटिश म्यूजियम ( लन्दन )

८वीं-९वीं सदी, संस्कृत-नागरी

१ अनन्तवीर्य      २ सुलोचना      ३ धृति

[ ये नाम तीन मूर्तियोंके पादपीठोपर खुदे हैं। ये मूर्तियाँ यक्ष तथा

यक्षिणियोंकी हैं और इनके शिरोभागमें जिनमूर्तियाँ खुदी हैं । अक्षरोंकी लिपि तथा मूर्तिशिल्प ८वीं-९वीं सदीके हैं । ]

[ Medicval Indian Sculpture in the  
British Museum P. 41-42 ]

५४

वदनगुप्ते ( मैसूर )

संस्कृत-कन्नड, शक ७३० = सन् ८०८

[ इस ताम्रपत्रके पाँच पत्रोंमें-से पहले तीन पत्र द्वितीय भागके लेख क्र० १२३ के समान हैं जिनमें राष्ट्रकूट राजाओंका वंशवर्णन गोविन्द-राज३ तक किया गया है । ]

चतुर्थ पत्र : पहली ओर

- ५१ धारावर्षश्रीवल्लभमहाराजाधिराजस्य पुत्रः शौचाचारप्रभुगुण-  
गणप्रण-
- ५२ मितसमस्तलोकः परोपकारकरुणापरः परमेश्वरचरणारविन्दबन्द-  
नामिनन्दनः र-
- ५३ णावलोकश्रीकम्भराजः पुञ्जाड एडेनाडुविषये वदनगुप्ते नाम  
ग्रामः तलव-
- ५४ ननगरं अधिवसति विजयस्कन्धवारः । त्रिंशदुत्तरेष्वतीतेषु शक-  
वर्षेषु कार्तिक-
- ५५ मास-पौर्णमास्यां रोहिणीनक्षत्रे सोमवारे कोण्डकुन्देयान्वय  
सिर्मलगे-
- ५६ गूरुगण कुमारणन्दिमट्टारकस्य शिष्यः एळवाचार्यगुरुः तस्य  
शिष्यो वर्धमा-
- ५७ नगुरुः (१) सर्वप्राणिहितः साक्षात् सिद्धान्तानुगमोद्धतः (१)  
ज्ञान्तः सर्वज्ञकल्पोयं नयोज-



- ५८ तगुणोज्ञतः (॥) तस्मै तं ग्रामं अदात् स्वपुत्रश्रीशंकरगण  
विज्ञापनेन श्रीकम्भदेवः श्रीविजय-  
५९ बसतये तलवननगरे प्रतिष्ठितायै । तस्य सोमान्तराणि बडगण  
दिरे पोन्नपु-

चतुर्थ पत्र : दूसरी ओर

- ६० लि बडगण पडुवण कोनेदु पोसत्तिगल्लु पडुवणसीमे कदम्ब-  
गेरेय पेर्व-  
६१ ग पडुवण तेंकण कोनेदु पांगुहवळ्त्तिय तेजोहवे तेंकण सीमे  
बेलक्काल तेन्ना-  
६२ हवे तेंकण मूडण कोनेदु मुदुवन्नि कोरलु मूडणसीमे कल्लि-  
बेट्टिन मूडण पोरे-  
६३ ये मूरु बेट्टु ओळगु मूडण बडगण कान्नेदु बदनिय बडगण  
ओळवे  
६४ अस्य दानस्य साक्षिणः षणवतिसहस्रविषयः प्रकृतयः  
६५ योस्यापहर्ता कोमान्मोहात् प्रमादेन च स पञ्चभिर्महद्भिः  
पातकैः (:) संयुक्तो  
६६ भवति यो रक्षति स पुण्यमाग् भवति अपि चात्र मनुगीता (:)  
इकोका (:) स्वदत्तां परदत्तां  
६७ वा यो हरत वसुन्धरां (१) षष्टिं वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते  
क्रिमिः (॥) स्वं दातुं  
६८ सुमहच्छक्यं दुःखं अन्यस्य पाळनं (१) दानं वा पाळनं वेत  
दानाच्छ्रेयोनुपा-

पाँचवाँ पत्र : पहली ओर

- ६९ लनं (॥) बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः (१) यस्य  
यस्य यदा भूमि (:) तस्य

- ७० तस्य तदा फलं (॥) देवस्त्वं तु विषं धोरं न विषं विषमुच्यते  
(१) विषमंकाकिनं हन्ति  
७१ देवस्त्वं पुत्रपौत्रिक (॥) विश्वकर्माचार्येण लिखितं (॥)

[ यह ताम्रपत्र राष्ट्रकूट सम्राट् गोविन्दराज ( तृतीय ) के राज्यकालमें सम्राट् ( ध्रुव निरूपम ) धारावर्षके पुत्र रणावलोक कम्भराज-द्वारा कार्तिक शु० १५ शक ७३०, सोमवारके दिन दिया गया था । कौण्डकुन्देय अन्वय-सिर्मलेश्वर गणके कुमारगण्दि भट्टारकके प्रशिष्य तथा एलवाचार्यके शिष्य वर्धमानगुक्को वदनोगुप्ते ग्राम दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । यह दान तलवननगरकी श्रीविजयवसतिके लिए दिया गया था । ]

[ ए० रि० मै० १९२७ पृ० ११२ ]

५५

### सूरत ताम्रपत्र ( गुजरात )

शक ७४३ = सन् ८२१, संस्कृत-नागरी

- १ ओं । श्रियः पदं नित्यमशेषगोचरं नयप्रमाणं प्रतिषिद्धदुष्पथं ।  
जनस्य मव्यस्वसमाहितात्मना जयत्यनुग्राहि जिनेन्द्रशायनं ॥  
(१) स वो-
- २ व्याद् वेधसां धाम यज्ञाभिकमलं कृतं । हरश्च यस्य कान्तेन्दु-  
कलया कमलंकृतं ॥ (२) आर्यान् द्विषत्तिमिरमुद्यतमण्डलाग्रो  
ध्वस्तिज्ञय-
- ३ नमिमुख्यो रणशर्वरीपु । भूपशुचिर्विधुरिवास्तदिगन्तकीर्ति-  
गोविन्दराज इति राजसु राजसिंहः ॥ (३) दृष्ट्वा चमूममि-
- ४ सुखीं सुमटाट्टहासामुज्जामितं सपदि येन रणेषु नित्यं । दष्टाधरेण  
दधता भ्रुकुटिं ललाटे खड्गं कुलं च हृदयं-
- ५ च निजं च सत्त्वं ॥ (४) खड्गं करप्राप्तमुखतश्च शोभां मानो  
मनस्तस्मिन्मेव यस्य । महाहवे नाम निशम्य सद्यस्त्र-

- ६ यं रिपूणां विगलत्यकाण्डे ॥ (५) तस्यारमजो जगति विश्रुत-  
दोर्धर्कान्तरातीर्तिहारिहरिविक्रमधामधारी । भूप-
- ७ त्रिविष्टपनृपानुकृतिः कृन्जः श्रीकर्कराज इति गोत्रमणिर्बभूव ॥  
(६) तस्य प्रमिन्नकरटाच्युतदानद-
- ८ न्तिदन्तप्रहाररुचिरोल्लिखितामपीठः । क्षमापः क्षितौ क्षपितशत्रु-  
रभूत्तन्जः सद्राष्ट्रकूटक्रनकाद्रिविन्दराजः ॥ (७) तस्योपा-
- ९ र्जितमहमस्तनयश्चतुर्दधिवलयमालिन्याः । भोक्ता भुवश्शत-  
क्रतुसदृशः श्रीदन्तिदुर्गराजोभूत् ॥ (८) काञ्चीशंकर-
- १० लनराधिपचोलाण्डयश्रीमौयवज्रटविभेदविधानदर्क्ष । कर्णाटकं  
बलमचिन्त्यमजेयमन्यैर्भृत्यैः कियद्भिर-
- ११ पि यस्महसा जिगाय ॥ (९) अभ्रूविभंगमगृहीतनिशातशस्त्र-  
मभ्रान्तमप्रतिहताङ्गमपेतयत्नं । यो बल्लभं सपदि दण्ड-
- १२ बलेन जित्वा राजाधिराजपरमेश्वरतामवाप ॥ (१०) आसेतो-  
विपुलोपलावलिलसल्लोलोर्मिमालाजलादाप्रालेयक-
- १३ लंकितामलशिलाजालात्तुषाराचलादा पूर्वापरवारिराशिपुलिन-  
प्रान्तप्रसिद्धावधेयेनैदं जगती स्वविक्रमबलेनेका-
- १४ तपत्रीकृता ॥ (११) तस्मिन् दिवं प्रयाते बल्लभराजे क्षतप्रजा-  
बाधः । श्रीकर्कराजसूनुर्महापतिः कृष्णराजोभूत् ॥ (१२) यस्य  
स्वभुजप-
- १५ राक्रमनिशेषोत्सादितारिद्रिक्चक्रं । कृष्णस्येवा(कृष्णं) चरितं  
श्रीकृष्णराजस्य ॥ (१४) शुभतुंगतुंगनुरगप्रवृद्धरंणूद्धरुद्धरवि-  
किरणं । ग्रीष्मेपि नमो निखिलं
- १६ प्रावृट्कालायते स्पष्टं ॥ (१४) दीनानाथप्रणयिषु यथेष्टचेष्टं  
समीहितमज्वलं । तत्क्षणमकालवर्षे वर्षति सर्वार्थिनिर्घ(प) णं ॥  
(१५) राहृप्पमा-

- १७ स्मभुजजातबलाबलेपमाजौ विजित्य निशितासिकताप्रहारैः ।  
पालिध्वजावलिशुभामचिरेण यो हि राजाधिराजपरमेश्वरतां  
१८ ततान ॥ (१६) क्रोभादुत्खातखड्गं प्रसूतरिपुभयैर्मासमानं  
समन्तादाजादुद्वृत्तवैरिप्रकटगजघटाटोपसंक्षोभदधं । सौमं  
त्यक्त्वारि-

दूसरा पत्र : पहला भाग

- १९ बर्गो मयचकितवपुः क्वापि दृष्ट्वैव सद्यो दर्पोध्मातारिचक्रक्षय-  
करमगमद्यस्य दोर्दण्डरूपं ॥ (१७) पाता यश्चतुरंबुराशिरसनालं-  
कारभाजा भु-  
२० वस्त्रयथाश्चापि कृतद्विजामरगुरुप्राज्याज्यपूजादरो । दाता मानभृद-  
प्रणीर्गुणवतां योसौ श्रियो वल्लभो भोक्तुं स्वर्गफलानि भूरितपसा  
२१ स्थानं जगामामरं ॥ (१८) येन श्वेतातपत्रप्रहतरविकरवात-  
तापात्सलीलं जग्मे नासारभूर्लाभवलितवपुषा बल्लमाख्यस्स-  
दाजौ । श्रीमद्गोविन्दराजो जि-  
२२ तजगदहितस्त्रेणैषेभ्यहंतुस्तस्यासीत् सूनुरेक.....लिताराति(म)  
सेमकुम्भः ॥ (१९) तस्यानुजः श्रीध्रुवराजनामा महानुभावः  
प्रथितप्रतापः ।  
२३ प्रसाधिताशेषनरेन्द्रच(क्रः) क्रमेण बालार्कवपुर्बभूव ॥ (२०) जाते  
वत्र च राष्ट्रकूटतिलके सद्भूतचूडामणौ गुर्वी तुष्टिरथाखिलस्य  
जगतः सुस्वामिनि प्रत्यहं । ( सत्यं ) सत्यमिति प्रसा-  
२४ सति सति क्षामासमुद्रान्तिकामासीद् धर्मपरे गुणामृतनिधौ  
सत्यव्रताभिष्टिते । (२१) शशधरकिरणनिकरनिभं यस्य यशः  
सुरनगाग्रसानुस्थैः । परिगी-  
२५ यतेनुरक्तैर्बिम्बाधरसुन्दरीनिवहैः ॥ (२२) हृष्टेन्वहं योर्धिजनाय  
नित्यं सर्वस्वमानन्दितबन्धुवर्गः प्रादात् प्ररुष्टो हरति स्मवेगात्  
प्राणान् यमस्यापि नितान्त-

- २६ वीर्यः ॥ (२३) रक्षता येन निश्शेषं चतुरम्भोधिषंयुतं । राज्यं  
भर्मेण लोकानां कृता हृष्टिः परा हृदि ॥ (२४) योसौ प्रसाधित-  
(समुन्नत) सारदुर्गो गांगौघसन्ततिनिरोध-
- २७ विवृद्धकीर्तिः । आत्मीकृतोन्नतवृषांकविभूतिरुच्चैर्व्यक्तं ततान्  
परमेश्वरतामिहैकः ॥ (२५) तस्यात्मजो जगति सत्प्रथितोरु-  
कीर्तिर्गोविन्दराज इ-
- २८ ति गोत्रललाममूतः त्यागी पराक्रमधनः प्रकटप्रतापः सन्तापि-  
ताहितजनो जनवल्लभोमूत् ॥ (२६) पृथ्वीवल्लभ इति च  
प्रथितं यस्या-
- २९ परं ज(ग)ति नाम । यश्चतुरदधिसीमामेको वसुधां वशे चक्रे ॥  
(२७) एकोप्यनेकरूपो यो ददशे भेदवादिमिरिवात्मा । परबल-  
जलधिमपारं
- ३० तरन् स्वदोभ्यां रणे रिपुभिः ॥ (२८) एको निर्हेतिरहं गृहीतशस्त्रा  
मे परे बहवो । यो नैवंविधमकरोच्चित्तं स्वप्नेपि किमुताजौ ॥  
(२९) राज्यामिषेकलशैरमि-
- ३१ विच्य दत्तां राजाभिराजपरमेश्वरतां स्वपित्रा । अन्यैर्महानृपति-  
भिर्बहुभिस्समेत्य स्तस्मादिमिर्भुजबलादवलुप्यमानां ॥ (३०)  
एकोनेकनरैर्द्रवृन्दसहिता-
- ३२ न्यस्तान् समस्तानपि प्रोत्खा(ता)सिलताप्रहारविधुरां बध्वा  
महासंयुगे । लक्ष्मी(म)प्यचलां चकार विलसत्सन्ध्यामरग्राहिणीं  
संसीदद्गुरुविप्रसज्जनसुहृद्ब-
- ३३ भूपमोग्यां भुवि ॥ (३१) तत्पुत्रोत्र गते नाकमाकम्पितरिपुप्रजे ।  
श्रीमहाराजसर्वाख्यः ख्यातो राजाभवद् गुणैः ॥ (३२) अर्धेषु  
यथार्थतां यस्मममिष्टफलाप्तिलब्धतो-
- ३४ षेपु । वृद्धिजिनाय परमामोघवर्षाभिधानस्य ॥ (३३) राजा-

भूत् तत्पितृभ्यो रिपुभवंविभवोद्भूत्यमाबैकहेमुलंक्षमीवानिन्द्रराजो  
गुणिजननिकरान्तश्चमत्का-

३५ रकारी । रागादन्यान् व्युदस्य प्रकटितविनया यं नृपं सेवमाना  
राजश्रीरेव चक्रे स(कल)कविजनोद्गीततथ्यस्वभावं ॥ (३४)  
निर्वाणावासिवानासहितहितजनो -

३६ पास्यमाना सुवृत्तं वृत्तं जित्वान्यराज्ञां चरितमुदयवान् सर्वतो  
हिसकेभ्यः । एकाकी दसवैरिस्खलनकृतिसहप्रातिराज्येशशंकु-  
र्लाटीयं मण्डलं

३७ यस्तपन इव निजस्वामिदत्तं ररक्ष ॥ (३५) यस्यांगमात्रजयिनः  
प्रियसाहसस्य क्षमापालवेषफलमेव बभू(व) सैन्यं । मुक्त्वा च  
सर्वभुवनेश्वरमादिदे -

दूसरा पत्र : दूसरा भाग

३८ वं नावन्दतान्यममरेष्वपि यो मनस्वी ॥ (३६) श्रीकर्कराज इति  
रक्षितराज्यमारस्सारः कुलस्य तनयो नयशालिशौर्यैः । तस्या -

३९ भवद् विम(व)नन्दितबन्धुसार्थः पार्थः सदैव धनुषि प्रथम-  
श्शुचीनां ॥ (३७) दानेन मानेन सदाज्ञया वा शौर्येण वीर्येण च  
कोपि भूपः । एतेन साम्योस्ति

४० न वेति कीर्तिस्सकौतुका भ्राम्यति यस्य लोकं ॥ (३८) स्वेच्छा-  
गृहीतविषया(न्)दृढसंघमाजः प्रोद्बुत्तदसतरशौलिकतराष्ट्रकूटान् ।  
उत्खातखड्गानिज -

४१ बाहुबलेन जित्वा योमोघवर्षमचिरात् स्वपदे व्यधत् ॥ (३९)  
तेनेदमनिलविद्युच्चंचलमालोक्य जीवितमसारं । क्षितिदानपरम-  
पुण्यः प्रवर्तितो ध -

४२ मंदायोयम् ॥ (४०) स च समधिगताशेषमहानन्दमहासामन्ता-

धिपतिः सुवर्णवर्षश्री(क)र्कराजदेवः कुशली सर्वनिव यथासंबध्य-  
मानान् राष्ट्रपति -

- ४३ विषयग्रामपतिग्रामकूटयुक्त नियुक्तवासावकाधिकारिकमहत्तरादि-  
कान् समनुदर्शयत्यस्तु वस्संविदितं यथा मया श्रीवक्त्रिकातट -
- ४४ स्थावासितविजयस्कन्धावारस्थितेन मातापित्रोरात्मनश्चैहिका-  
मुष्मिकपुण्ययशोभिवृद्धये श्रीनागसारिकास्वतलसन्निविष्टार्हचैत्या-  
ल(या)यतननि(बद्ध) -
- ४५ सम्बपुराभ्यमण्डितवसतिकायाः खण्डस्फुटितनवकर्मचरुबलिदान-  
पूजार्थं तथा तथानिबध्यमानचातुष्टयमूलसंघोदयान्वयसेन -
- ४६ सेनसंघमलवादिगुरोश्शिष्यश्रीसुमतिपूज्यपादः तच्छिष्य-श्रीमद्-  
पराजितगुरोः श्रीनागसारिकाप्रतिबद्ध अम्बापाटकग्रामस्य  
उत्तरदिशि
- ४७ हिरण्ययोगामिधानां ढाण्डवापी यस्याघाटनानि पूर्वतः श्रीधर-  
वापिका दक्षिणतो वहः अपरतः पूरावी महानदी उत्तरत-  
स्सम्बपुर -
- ४८ वापिका । एवमियं चतुराघाटापलक्षिता सधान्यहिरण्यादेया  
अचाटमटप्रवेश्यस्सर्वराजकीयानामहस्तप्रक्षेपणीयः आच -
- ४९ न्दार्कार्णवक्षितिसरित्पर्वतसमकालीनः शिष्यप्रशिष्यान्वयक्रमोप-  
मोग्यः शकनृपकालातीतसंवत्सरशतेषु सप्तसु त्रिचत्वारिंशद -
- ५० धिकेष्वतीतेषु बैशाखपार्ष्णमास्यां स्नात्वोदकातिसर्गेण प्रतिपादि-  
तोऽस्योचितया आचार्यस्थित्या भुञ्जतो भोजयतः कर्षतः कर्षयतः  
प्रतिदि -
- ५१ शतो वा न केनचित् परिपन्थिना करणीया ॥ तथागामिनृपति-  
मिरस्मद्वंश्यैरन्यैर्वा सामान्यं भूमिदानफलमवेत्य विबुद्धोला-  
न्यनित्यान्यैश्च -

५२ याणि नृणाग्रलग्नचंचलबिन्दुचंचलं च जीवितमाकलय्य स्वदाय-  
निर्विशेषोयमनुमन्तव्यः परिपालयितव्यश्च । यश्चाज्ञानतिमिर-  
पटलावृत —

५३ मतिराच्छिन्नादाच्छिद्यमानकं वानुमोदेत स पं(च)भिर्महापात-  
कैरुपपातकैश्च संयुक्तस्स्यादित्युक्तं च मग(व)ता वेदव्यासेन  
व्यासेन ॥

५४-५८ [ नित्यके शापात्मक श्लोक — षष्टि वर्षसहस्राणि आदि ]

५९ यथा चैतदेवं तथा शासनदाता लिपिज्ञस्वहस्तेन स्वमतमारोप-  
यति ॥ स्वहस्तोयं मम श्रीकर्कराजस्य श्रीमदि —

६० न्द्रराजसुतस्य ॥ लिखितं चैतन्मया महासन्धिविग्रहाधिपतिना  
नारायणेन कुलपुत्रकश्रीदुर्गभट्टसूनुना ॥ जीयाद्दुरितविद्वेषि  
शासनं जि —

६१ नशासनं । यदन्यमतशैलानां भेदने कुलिशायते ॥ (४९)  
जयति जिनोक्तो धर्मण्डजीवनिकायवत्सलो नित्यं । चूडामणि-  
रिव लो(के)

६२ विभाति यस्सर्वधर्माणाम् ॥ (५०)

[ यह ताम्रपत्र शक ७४३ मे वैशाख पूर्णिमाको दिया गया था ।  
इसमे पहले राष्ट्रकूट सम्राटोकी वंशावली अमोघवर्ष ( प्रथम ) तक दी गयी  
है । तदनन्तर अमोघवर्षके पितृव्य(चाचा)इन्द्रराजके पुत्र कर्कराज सुवर्णवर्ष-  
का उल्लेख है जो गुजरातमे शासन कर रहा था । अमोघवर्षके राज्यारोहण-  
के बाद कई सामन्तोंने विद्रोह किया था उनपर विजय प्राप्त करनेमे कर्क-  
राजकी ही मदद उपयोगी सिद्ध हुई थी । कर्कराजने उक्त वर्षमे मुलसंघ-  
सेनसंघके मल्लवादिगुरुके शिष्य सुमतपूज्यपादके शिष्य अपराजितगुरुको-  
नागसारिकाके जितमन्दिरके लिए हिरण्ययोगा नामक खेत दान दिया था । ]

[ ए. ई. २१ पृ. १३३ ]



५६

राणिबेण्णूर ( धारवाड, मैसूर )

शक ७८१ = सन ८६०, कन्नड

[ यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् अमोघवर्ष ( प्रथम ) के समयका है । नागुल पोल्लब्बे द्वारा स्थापित नागुलबसदिके लिए शक ७८१ में कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें निर्देश है । यह दान सिंहवूरगणके नागनन्दा-चार्यको दिया गया था । ]

[ रि० आ० सं० १९३०-३४ पृ० २०९ ]

५७

बेंदूर ( मैसूर )

शक ७८५ = सन् ८६४, कन्नड

[ यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् अमोघवर्ष १ के समय शक ७८५, तारण संवत्सरमें लिखा गया था । चिकण्ण नामक अधिकारीको कुछ भूमि दिये जानेका इसमें उल्लेख है । ब्रतोंका पालन और सन्यसन इनका भी उल्लेख हुआ है । अतः यह समाधिमरणका स्मारक प्रतीत होता है । ]

( मूल कन्नडमें मुद्रित )

[ सा० इ० इ० ११ पृ० ६ ]

५८

पेवरमलै ( मदुरा, मद्रास )

शक ७९२ = सन् ८७०, तमिल

१ शकर याण्डुएलु-नूरुत्तोण्णूरिरण्डु

२ पोन्दणवरगुणकुं याण्डु एट्टु गुणवीरक्कु-

३ रवडिगल् माणाक्क(र)कालत्तु शान्तिवीरक्कु-

४ कुरवर् तिरुवयिरै पोरिश्च (पाश्वर्)प(म)टारैरैयुमिय-

५ किक अन्बैगलैयुं पुदुक्कि इरण्डुक्कुमुद्-

६ टाववियुमोरडिगलुक्कु शोराग अमैत्त पो-

७ ण् ऐन्नूरैन्दु काणम् ॥

[ यह लेख पाण्ड्य राजा वरगुण २ के राज्यवर्ष ८, शक ७९२ का है । इस समय गुणवीरके शिष्य शान्तिवीरने तिरुवयिरै स्थित पार्श्वनाथ मूर्ति तथा यक्षीमूर्तिका जीर्णोद्धार किया था । इसके लिए उन्हें ५०२ काणम् ( सुवर्णमुद्रा)दान मिला था । ]

[ ए० इ० ३२ पृ० ३३७ ]

५६

**धर्मपुरी ( सालेम, मद्रास )**

शक ८०० = सन् ८७८, कन्नड

किलेमें मारियम्मन देवालयके आगे पड़े हुए स्तम्भपर

[ इस लेखमें पल्लव महेन्द्र नोलम्ब-द्वारा किसी जैन मन्दिरके लिए दान दिये जानेका निर्देश है । इस लेखका समय शक ८००, विलम्ब संवत्सर था । ]

[ इ० म० सालेम ८१ ]

६०

**कोप्पल ( रायचूर, मैसूर )**

कन्नड, शक ८११ = सन् ८९०

[ इस लेखकी तिथि कार्तिक पूर्णिमा, शक ८११, शोभन संवत्सर ऐसी है । इस समय दण्डनायक अम्मरसने कुपण तीर्थकी यात्रा की तथा महासामन्त कदम्बवंशीय अलियमरस-द्वारा निर्मित बसदिके लिए कुछ दान दिया था । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १५९ पृ० ४१ ]

६१

धर्मपुरी ( सालेम, मद्रास )

शक ८१८ = सन् ८९३, कन्नड

मल्लिकार्जुन मन्दिरके आगे एक स्तम्भपर

[ राजा महेन्द्राधिराज नोलम्बके समय शक ८१५ मे यह लेख लिखा गया । इसमें निधियण्ण और चण्डियण्ण-द्वारा मूलसंघ, सेनान्वय, पोगरिय-गणके आचार्य विनयसेन सिद्धान्तभटारके शिष्य कनकसेन सिद्धान्तभटारको मूलपल्लि ग्राम दान देनेका उल्लेख है । ]

[ ६० म० सालेम ७४ ]

६२

सित्तन्नवासल ( पुदुकोट्टै, मद्रास )

९वीं सदी, तमिल

[ यह लेख पाण्ड्य राजा अबनिपशेखर श्रीवल्लभके समयका है । इलंगोतमन् ( इसीका नाम मदिरै आशिरियन् भी था ) द्वारा अन्तर्मण्डप-का जीर्णोद्धार तथा बाह्य मण्डपका निर्माण किये जानेका इसमें उल्लेख है । इस मन्दिरको अरिवन् कोयिल् ( अर्हन्मन्दिर ) कहा गया है । इस गुहा-मन्दिरके बाहरी भागपर कई यात्रियोंके नाम खुदे हैं जिनकी लिपि ७वीं सदीकी है । ]

[ रि० आ० स० १९२९-३० पृ० १६७-१६९ रि० सा० ए०  
१९४०-४१ क्र० २१५ पृ० ९९ ]

६३

हेब्बलगुप्पे ( मैसूर )

९वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्तिश्रीनरसीगेरे अण्पोर् दुग्गमार

२ कोयिल्वसदिगे अरुगण्डुगन्बेदे मण् कोट्टर्

- ३ अरमण्डमेगालुमगोकेमोगेयु ओड्डिपा-
- ४ डियुं गोयियन्दम्मगलरुगण्डुग बेदेकेल् मण्कोट्टर्
- ५ इदानलित्तु केडिसिदोनोक्कल् केडुग पंचम-
- ६ हापातकनक्कवन् मक्कलु साग-
- ७ वसदियान्केय्दोन् नारायण पे-
- ८ रुन्तच्चन्

[ यह लेख ९वीं सदीकी लिपिमें है । नरसीगेरे अप्पोर् दुग्गमार ( जो गंगवंशका राजपुत्र था ) द्वारा एक जिनमन्दिर ( कोयिल्वसदि ) को ६ खण्डुग भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । इतनी ही भूमि अरमण्डमेगलु, अगोकेमोगे, ओड्डिपाडि इन ग्रामोंके निवासियों-द्वारा तथा गोयिन्दम्म-द्वारा दान दी गयी थी । श्रेष्ठ शिल्पकार नारायणने इस बसदिका निर्माणकार्य किया था । ]

[ ए० रि० मै० १९३२ पृ० २४० ]

६४

**मोटे बेन्नूर ( धारवाड, मैसूर )**

९वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख ९ वीं सदीकी लिपिमें है । इसमें किसी बसदिके लिए चन्द्रनन्दि भट्टारको भूमि दान दी जानेका उल्लेख है । इस लेखकी स्थापना इन्दर पिट्टम्मके सेनबोव कुण्डमध्य-द्वारा की गयी थी । ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई १११ पृ० १२९ ]

६५

**कलकत्ता ( नाहर म्युज़ियम )**

९वीं सदी, कन्नड

- १ श्री जिनवल्लभन सज्जन
- २ मागियबेय माडिसिद
- ३ प्रतिमे

[ यह लेख पीतलकी चौबीसतीर्थकरमूर्तिके पादपीठपर है । लिपि ९वीं सदीकी है । यह मूर्ति जिनवल्लभको स्वजन ( पत्नी ) भागियबे-द्वारा स्थापित की गयी थी । लिपिसे स्पष्ट होता है कि यह मूर्ति कर्नाटकमें निर्मित हुई थी । ]

[ ए० रि० मै० १९४१ पृ० २५० ]

६६-६७

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

९वीं सदी, तमिल

[ इस लेखमें कहा है कि तिरुनरुंगोण्डैके किलैप्पल्लि ( जैन मन्दिर ) का चतुर्भुगतिरुक्कोयिल् ( चतुर्मुख वसति ) तथा पूर्वका सभामण्डप तलक्कूडि निवासी विशैयनल्लूलान् कुमरन् देवन्ने बनवाया था । लेखकी लिपि ९वीं सदीकी है । यहींके अन्य दो भागोंमें इसी समयकी लिपिमें वाणकोवरैयर् तथा आरुलगपेरुमान्का उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०६-७ पृ० ६६ ]

६८-६९

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

९वीं सदी, तमिल

[ इस लेखमें नारियप्पाडि निवासी शिगणार् पेरियवडुगणार्-द्वारा दो जैन पल्लियों ( मन्दिरों ) के लिए १० पोण् ( मुद्राएँ ) दान दिये जानेका निर्देश है । यहींके एक अन्य लेखमें नारियप्पाडि निवासी पेरियन-क्कनार्के पुत्र ( नाम लुप्त ) द्वारा भी कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है । लिपि ९वीं सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०८-९ पृ० ६६ ]

७०

कीरप्पावकम् ( चिगलपेट, मद्रास )

९वीं सदी, तमिल

[ इस लेखमे कीरप्पावकम्के उत्तरमें देगवल्लभ जिनालयका उल्लेख है। इसका निर्माण यापनीय संघ कुमिलिगणके महावीरगुरुके शिष्य अमरमुदलगुरु-द्वारा किया गया था। लिपि ९वीं सदीकी है। ]

[ रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० २२ पृ० १० ]

७१

बेगूर ( बंगलोर, मैसूर )

९वीं सदी, कन्नड

[ इस निसिधिलेखमे मोन भट्टारकेशिष्य.....न्दिभट्टारके समाधिभरणका उल्लेख है। लिपि ९वीं सदीकी है। यह लेख नागेश्वर मन्दिरमे लगा है। ]

[ ए० रि० मै० १९१५ पृ० ४६ ]

७२

बेलगाँव ( मैसूर )

९वीं-१०वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख नेमिनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इस मूर्तिकी स्थापना 'राष्ट्रकूट वंशरूपी समुद्रके लिए चन्द्रके समान' मणिचन्द्रके गुरु नेमिनाथ ( नेमिचन्द्र ? ) द्वारा की गयी थी। ]

[ रि० आ० स० १९२८-२९ पृ० १२५ ]

७३

अलगरमलै ( मदुरा, मद्रास )

वट्टेलुत्तु लिपि-९वी-१०वीं सदी

[ यह लेख एक जिनमूर्तिके समीप खुदा है ]

( मूल-) १ श्री अच्चणं - २ दि शेयल्

[ आर्यनन्दि आचार्यका यह नामोल्लेख है । लिपि ९वीं-१०वीं सदी-की है ।

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ३९६ पृ० ६२ ]

७४-७५

### चिक्कहनसोगे ( मैसूर )

१०वीं सदी-प्रारम्भ, कन्नड

[ इस निसिधिलेखमें मूलसंघ-देसिगण-पनसोगे शाखाके श्रीधरदेवके शिष्य नेमिचन्द्रके समाधिमरणका उल्लेख है । यह लेख १०वीं सदीके प्रारम्भका है तथा इस समय रामेश्वर मन्दिरमे लगा है ।

यहीँके एक अन्य निसिधिलेखमे नागकुमारकी पत्नी जक्कियब्बेके समाधिमरणका उल्लेख है । समय १०वीं सदीके प्रारम्भका है । ]

[ ए० रि० मै० १९१४ पृ० ३८ ]

७६

### चिक्कहनसोगे ( मैसूर )

१०वीं सदी-प्रारम्भ, कन्नड

- |                      |                              |
|----------------------|------------------------------|
| १ परेय समु-          | २ द्रवेष्टितधरात-            |
| ३ लमं प्रतिपालिसु    | ४ तुमित्तेरेग म-             |
| ५ हारिमण्डलिक-       | ६ रिं बेसकेटये विला-         |
| ७ सयेल्गेयं मे-      | ८ रेवकरुरनेन्दे-             |
| ९ निसल भालिपोरी      | १० स्तितासन्ध्यरिन्दु वन्दे- |
| ११ रग समन्तु क-      | १२ हनेलेयदेवर                |
| १३ पादपथोरुहं-       | १४ गलोल् ॥ स्थावरजं-         |
| १५ गमतीर्थ भावि-     | १६ सि पेल्दागलोरदे गो-       |
| १७ म्मटदेवर् स्थावर- | १८ तीर्थ कलनेलेदेव-          |
| १९ र् भूवल्लयदोलगे   | २० जंगमतीर्थ ॥               |

२१ बेलदेवं बरेदं

२२ इल्लवेडे मल्लाचा-

२३ रि ॥

[ इस लेखमें ( गंग राजा ) एरेयके समय एलाचार्यके समाधिमरणका तथा उनके शिष्य कल्लेलेदेव-द्वारा उनकी निसिधिकी स्थापनाका उल्लेख है । गोम्मटदेवको स्थावरतीर्थ तथा कल्लेलेदेवको जंगमतीर्थ कहकर उनकी प्रशंसा की है । लेख १०वीं सदीके प्रारम्भका है । ]

[ ए० रि० मै० १९१४ पृ० ३८ ]

७७

बन्दलिके ( मैसूर )

शक ८२४ = सन् ९०२, कन्नड

[ यह लेख राष्ट्रकूट राजा कृष्ण २ अकालवर्षके समयका है । महा-सामन्त बकेयरसके पुत्र लोकटेयरसके अधीन पेगडे बिट्टय-द्वारा शक ८२४ में बन्दलिकेमें एक बसदिके निर्माणका इसमें उल्लेख है । लोकटेयरसने इस बसदिके लिए नागर खण्ड ७० विभागका दण्डिपल्लि ग्राम बिट्टयको दान दिया था । ]

[ ए० रि० मै० १९११ पृ० ३८ ]

७८

असुण्डि ( मैसूर )

शक ८४७ = सन् ९२५, कन्नड

[ यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् गोविन्द ( चतुर्थ ) नित्यवर्षके समय शक ८४७, पार्थिव संवत्सरमें लिखा गया था । इसमें नागय्य द्वारा एक जिनालयका निर्माण तथा उसके लिए कुछ भूमिदान किये जानेका उल्लेख है । यह दान बंकापुरके घोरजिनालयके प्रमुख चन्द्रप्रभ भट्टारके शासनकालमें दिया गया था । ]

( मूल कन्नडमें मुद्रित )

[ सा० इ० इ० ११ पृ० २० ]



७६

**हलहरवि ( बेल्लारी, मैसूर )**

शक ८२४ = सन् ९३२, कन्नड

[ यह लेख शक ८५४ पार्थिव संवत्सर ( यह वर्षनाम गलत है ) का है । इसमें राजा नित्यवर्षके राज्यकालमें कन्नरदेवकी रानी चन्दियब्बे द्वारा नन्दवरमें एक जैन बसदिका निर्माण तथा उसके लिए कुछ करोंका उत्पन्न पद्मनन्दि आचार्यको अर्पित किये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० ५४० पृ० ५२ ]

८०

**कोप्पल ( रायचूर, मैसूर )**

शक ८६२ = सन् ९४०, कन्नड

[ यह लेख जिनशासनकी प्रशंसासे शुरू होता है । तिथि शक ८६२, विकारि संवत्सर ऐसी दी है । अन्य विवरण प्राप्त नहीं । ]

[ रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १९६ पृ० ३७ ]

८१

**बिजापुर ( उदयपुरके समीप, राजस्थान )**

संवत् ९९६ = सन् ९४० तथा संवत् १०५३ = सन् ९९७

संस्कृत-नागरी

१ .....जवस्तवः । परिशाम्तु ना.....परा(यंख्या)पना जिनाः ॥१  
ते वः पांतु(जिना)विनामसम(ये यत्पा)दपञ्चोन्मुखप्रैखासंख्य-  
मयूख(शे)खरनखश्रेणीषु बिम्बोदयात् । प्रायैकादशभिर्गुणं दश-  
शती शक्रस्य शुभद्दशां कस्य स्याद् गुणकारको न यदि वा  
स्वच्छात्मनां संगमः ॥२

- २ ....नासत्करोलो(प)शोमितः । सुशो(खर)....लौ मूर्ध्नि रुढो मही-  
भृतां ॥३ अभिभिभ्रद् रुचिं कांतां सावित्रीं चतुराननः । हरिवर्मा  
बभूवात्र भूविभुर्भुवनाधिकः ॥(४) सकललोकविलोकनपंकजस्फुर-  
दनं बुदबालदिवाकरः । रिपुवध्वदनेंदुहृतद्युतिः
- ३ समुद्रपादि विदग्धनृप(स्ततः) ॥(५) स्वाचार्यैर्यो रुचिरवच(नैवा)-  
सुदेवामिधानैर्बोधं नातो दिनकरकरैर्नोरजन्माकरो व । पूर्व जैनं  
निजमिव यशो (कारयद् ह-)स्तिकुंड्यां रम्यं हर्म्यं गुरुहिमगिरिः  
शृंगशृंगारहारि ॥६ दानेन तुलितबलिना तुलादिदानस्य येन  
देवाय । भाग(द्वयं)व्यतीर्यत भागश्चा -
- ४ (चार्यव)र्याय ॥(७) तस्मादभू(त्लुद्ध)सत्त्वो मंमटाख्यो महीपतिः ।  
समुद्रविजयो श्लाघ्यतरवारिः सत्कर्मिकः ॥८ तस्मादसमः सम-  
जनि (समस्त)जनजनितलोचनानंदः । ध(व)लो वसुधाभ्यापी  
चंद्रादिव चंद्रिकानिकरः ॥(९) मंत्रवाघाटं घटामिः प्रकटमिव मद्रं  
मेदराटे मटानां जन्ये राजन्य -
- ५ जन्ये जनयति जनताजं रणं मुंजराजे । (श्री)-माणे (प्र)णष्टे हरिण  
इव भिया गूर्जरेणो विनष्टे तस्मै न्यानां शरण्यो हरिरिव शरणे यः  
सुराणां बभूव ॥(१०) श्रीमद्दुर्लभराजभूभुजि भुजैर्भुजत्यमंगां  
भुवं दंढैर्भण्डनशोण्डचंडसुभटैस्तस्याभिभूतं विभुः । यो दैत्यै-  
रिव तारक -
- ६ प्रभृतिभिः श्रीमान् महेन्द्रं पुरा सेनानीरिव नीतिपौरुषपरो नैषीत्  
परां निवृत्तिं ॥(११) यं मूलादुदमूलयद् गुरुबलः श्रीमूलराजो  
नृपो दर्पाधो धरणीवराहनृपतिं यद्वद् द्विपः पादपं । आयातं भुवि  
कांदिशांकममिको यस्त शरण्यो दर्पा दृष्टायामिव रूढमूढमहिमा  
कोलो महीमंडलं ॥१२
- ७ इत्थं पृथ्वीमर्तृभिर्नाथमानैः सा....सुस्थितैरास्थितो यः । पाथोनाथो  
वा विपक्षात् स्वप(क्ष)रक्षाकांक्षै रक्षणे बद्धकक्षः ॥(१३) दिवा-

करस्येव करैः कठोरैः करालिता मूकदम्बकस्य । अशिश्रियतापहतो-  
रुतापं यमुन्नतं पादपवज्जनौघाः ॥ (१४) धनुर्धरशिरोमणेरमलधर्म-  
मभ्यस्यता जगा -

८ म जलधेरुणो (गु)रुमुष्य पारं परं । समीयुरपि संमुखाः सुमुख  
मार्गणानां गणाः सतां चरितमद्भुतं सकलमेव लोकोत्तरं ॥ (१५)  
यात्रासु यस्य त्रियदौर्णविषुर्विशेषात् वल्गात्तुरंगसुरखातमहीरजांसि।  
तेजोभिरुज्जितमनेन विनिर्जितस्वाद् भास्वान् विलजित इवातितरां  
तिरोभूत् ॥ १६

९ न कामनां मनो धीमान् धर्माणां दधी । अनन्याद्वार्थसत्कार्य-  
भारधुर्योर्थतोपि यः ॥ (१७) यस्तेजोभिरहस्करः करुणया शौद्धो-  
दनिः शुद्धया मीढ्मो वचनवंचितेन वचसा धर्मेण धर्मात्मजः ।  
प्राणेन प्रलयानिलो बलमिदं मंत्रेण मन्त्री परो रूपेण प्रमदाप्रियेय

१० मदनो दानेन क(र्णो)भवत् ॥ (१८) सुनयननयं राज्ये बालप्रसाद-  
मतिष्ठिपत् परिणतवया निःसंगो यां बभूव सुधीः स्वयं कृतयुग-  
कृतं कृत्वा कृत्यं कृतात्मचमत्कृतीरकृत सुकृती नो कालुष्यं  
करोति कलिः सतां ॥ (१९) काले कलावपि किलामलमेतदीयं  
लोका विलोक्य कलनातिगत गुणौ -

११ धं । (पार्थी)दिपार्थिव(गुणा)न् गणयन्तु सत्यानेकं व्यधाद् गुण-  
निधिं यमितीव वेधाः ॥ २० गोचरयति न वाचो तच्चरितं चंद्र-  
चंद्रिकारुचिर । वाचस्पतैर्वचस्वो को वान्यो वर्णयेत् पूर्णं ॥ (२१)  
राजधानी भुवो भर्तुस्तस्यास्ते हस्तिकुण्डका । अलका धनदस्येव  
धनाढ्यजनसेविता ॥ (२२) नीहारहारहरहास(हि) -

१२ (मां) शुहारि (ज्ञा) त्का(र) वारि (भु)वि राजविनिर्भराणां ।  
वास्तव्यमव्यजनचित्तसमं (स)मंतात् संतापसंपदपहारपरं परेषां ॥  
(२३) धौतकलधौतकलशामिरामरामास्तना इव न यस्यां ।

संस्थपरेष्यपहाराः सदा सदाचारजनतायां ॥ (२४) समदमदना  
लीलालापाः प—

१३ नाकुलाः कुवलयदशां संदृश्यन्ते दशस्तरलाः परं । मलिनितसुखा  
यत्रोद्वृत्ताः परं कठिनाः कुष्मा निविद्धरचना नी(वौ) बन्धाः परं  
कुटिलाः कच्चाः ॥ (२५) गाढोत्तुंगानि सार्धं शुचिकुचकलशैः  
कामिनीनां मनोजैविस्तीर्णानि प्रकायं सह धनजघनैर्देवतामंदि-  
राणि । भ्राजन्ते दभ्रशुभ्राण्य—

१४ तिशयसुभगं नेत्रपात्रैः पवित्रैः सत्रं चित्राणि धात्रीजनहृतहृदयै-  
विभ्रमैर्यत्र सत्रं ॥ (२६) मधुरा धनपर्वणो हृद्यरूपा रसा-  
धिकाः । यत्रेक्षुवाटा लोकेभ्यो नालिकत्वाद् भिदेलिमाः ॥  
(२७) अस्यां सूरिः सुराणां गुरुरिव गु(रु)मिगौरवाहो गुणौघै-  
र्भूपानां त्रिलोकोवल्यविक—

१५ सितानंतरान्तकीर्तिः । नाम्ना श्रीशान्तिभद्रोभवदभिमवितु मास-  
(या)वासमाना कामं कामं सम(र्था) जनितजनमनःसमदा यस्य  
मूर्तिः ॥ (२८) मन्येमुना मुनीद्रेण (म)नोभू रूपनिर्जितः ।  
स्वप्नेपि न स्वरूपेण समगंस्तातिलज्जितः ॥ (२९) प्रोद्यत्पद्मा-  
करस्य प्रकटितविकटाशेषभाव—

१६ स्य सूरः सूर्यस्येवामृतांशुं स्फुरितशुभरुचिं वासुदेवमिधस्य ।  
अध्यासीनं पदव्यां यममलविलसज्ज्ञानमालोक्य लोको लोका-  
लोकावलोकं सकलमचकलत् केवलं संभवीति ॥ (३०) धर्माभ्या-  
सरतस्यास्य संगतो गुणसंग्रहः । अमग्नमार्गणेच्छस्य चित्रं  
निर्वाणवर्जना ॥ (३१)

१७ कमपि सर्वगुणानुगतं जनं विधिरयं विदधाति न दुर्विधः । इति  
कलंकनिराकृतये कृता यमकृतेव कृताखिलसद्गुणं ॥ (३२)  
तदीयवचनाञ्चिजं धनकलत्रपुत्रादिकं विलोक्य सकलं चलं दल-

मिवानिलां(लि)तं । गरिष्ठगुणगोष्ठ्यदः समुददीधरद् धीरधीरु-  
दारमत्तिमुंदरं प्रथम—

- १८ तीर्थकृन्मंदिरं ॥ (३३) ( रक्तं ) वा रम्यरामाणां मणितारा-  
वराजितं । इदं मुखमिवाभाति भासमानवराळकं ॥ (३४)  
चतुरस्र (पट्टज) नघा(ङ्गु)निकं शुभशुक्तिकरोटकयुक्तमिदं बहु-  
भाजनराजि जिनायतनं प्रविराजति भोजनधामसमं ॥ (३५)  
विदग्धनृपकारिते जिनगृहे—

- १९ तिजोर्णे पुनः समं कृतसमुद्धृताविह भवांबुधिरात्मनः । अति-  
ष्ठित सोप्यथ प्रथमतीर्थनाथाकृतिं स्वकार्तिमिव मूर्ततामुपगतां  
सितांशुद्युतिं ॥ (३६) शांत्याचार्यैस्त्रिपंचाशे सहस्रे शरदामियं  
मावशुक्लत्रयोदश्यां सुप्रतिष्ठैः प्रतिष्ठिता ॥ (३७) विदग्धनृपतिः  
पुरा यदतुलं तुलादे—

- २० र्ददौ सुदानमवदानधीरिदमपीपलज्ञातुं । यतो धवलभूपति-  
जिनपतेः स्वयं सारम (जो) रघट्टमय पिप्पलोपप (दकू) पकं  
प्रादिशत् ॥ (३८) यावच्छेषशिरस्थमेकरजतस्थूणास्थिताभ्युल्ल-  
सत्पातालानुलमंडपामलतुलामालंबते भूतलं । तावत्ता—

- २१ रवामिरामरमणी(गं)धर्वधीरध्वनिधर्मन्यत्र धिनोतु धार्मिकधियः-  
(स)द्भूपवेलावि(धौ) ॥ (३९) सालंकारा समधिकरसा साधु-  
संधानबंधा इलाप्यइलेषा ललितविलसत्तद्विताख्यातनामा । सद्-  
वृत्ताख्या रुचिरविरतिधुर्यमाधुर्यवर्या सूर्याचार्यैर्व्यरचिरमणीवा—

- २२ ति(रम्या) प्रशस्तिः ॥ (४०) संवत् १०५३ माघशुक्ल १३  
रविदिने पुष्यनक्षत्रे श्रीऋषभनाथदेवस्य प्रतिष्ठा कृता महाध्वज-  
श्रारोपितः ॥ मूलनायकः ॥ नाहकजिदजसनांपूरमद्रनागपोषि-  
(स्थ)श्रावकगोष्ठिकैरशेषकर्मक्षयार्थं स्वसंतानमवाधितर—

- २३ (गार्थ) च न्यायोपार्जितवित्तेन कारितः ॥४॥ परवादिदर्पमधनं

हेतुनयसहस्रभंगकाकीर्ण । मय्यजनदुरितशमनं जिनेन्द्रवरशासनं  
जयति ॥ (१) आसीद् धोधनसंमतः शुभगुणो मास्वत्प्रतापो-  
ज्वलो विस्पष्टप्रतिमः प्रभावकलितो भूपोत्तमांगार्चितः ।  
योषित्पी—

२४ नपयोभरांतरसुखाभिष्वंगसंलालितो यः श्रीमान् हरिवर्म उत्तम-  
मणिः सद्दंशहारे गुरौ ॥ (२) तस्माद् बभूव भुवि भूरिगुणोपपेतो  
भूप्रभूतमुकुटार्चितपादपीठः । श्रीराष्ट्रकूटकुलकाननकल्पवृक्षः श्री-  
मान् विदग्धनृपतिः प्रकटप्रतापः ॥ (३) तस्माद् भूप—

२५ गणात्तमा (कीर्तेः) परं भाजनं संभूतः सुतनुः सुतोतिमतिमान्  
श्रीमंसमो विश्रुतः । येनास्मिन् निजराजवंशगगने चन्द्रायितं  
चारुणा तेनेदं पितृशासनं समधिकं कृत्वा पुनः पाह्यते ॥ (४)  
श्रीबलभद्राचार्यं विदग्धनृपपूजितं समभ्यर्च्य । आचंद्रार्कं यावद्-  
दत्तं भवते मया—

२६ .... ॥ (५) (श्रीहस्ति)कुण्डिकायां चैत्यगृहं जनमनोहरं भक्त्या ।  
श्रीमद्बलभद्रगुरोर्द्विहितं श्रीविदग्धेन ॥ (६) तस्मिन् लोकान्  
समाहूय नानादेशसमाग(ता)न् । आचंद्रार्कस्थितिं यावच्छासनं  
दत्तमक्षयं ॥ (७) (रूपक एको देवो बहतामिह विंशतेः प्रवह-  
णानां । धर्म—

२७ .... क्रयविक्रये च तथा ॥ (८) संभृतगन्था देयस्तथा वहंत्याश्च  
रूपकः श्रेष्ठः । घाणे घटे च कर्षो देयः सर्वेण परिपाठ्या ॥ (९)  
श्री(मह)लोकदत्ता पत्राणां चोल्लिका त्रयोदशिका । पेल्लकपेल्लक-  
मेतद् द्यूतक (रैः) शासने देयं ॥ (१०) देयं पलाशपाटकमर्यादा-  
वर्तिक—

२८ .... । प्रत्यरघ(दं) धान्याढकं तु गोधूमयवपूर्णं ॥ (११) पेडा च  
पंचपलिका धर्मस्य विशोपकस्तथा भारे । शासनमेतत्पूर्वं विदग्ध-

राजेन संदत्तं ॥ (१२) (कर्पा)सकांस्यकुंकुमा(पुर)मांजिष्ठादिसर्व-  
मांडस्य । (द)श दश पलानि मारे देयानि विक्र—

२९ .... ॥ (१३) आदानादेतस्माद् भागद्वयमर्हतः कृतं गुरुणा ।  
शेषस्तृतीयभागो विद्याधनमात्मनो विहितः ॥ (१४) राज्ञा  
तत्पुत्रपौत्रैश्च गोष्ठ्या पुरजनेन च । गुरुदेवधनं रक्ष्यं नोपे(क्ष्यं  
हितमीप्सुभिः) ॥ (१५) दत्ते दाने फलं दानात् पालिते पालनात्  
फलं । (भक्षितो)पेक्षिते पापं गुरुदे—

३० (वधने)धिकं ॥ (१६) गोधूममुद्गयवलवणराल(का)देस्तु मेयजा-  
तस्य । द्रोणं प्रति माणकमेकमत्र सर्वेण दातव्यं ॥ (१७) बहु-  
मिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमि-  
स्तस्य तस्य तदा फलं ॥ (१८) रामंगिरिनंदकलिते विक्रमकाले  
गते तु शुचिमा(से) ।

३१ (श्रोम)द्वलमद्रगुरोर्विदग्धराजेन दत्तमिदं ॥ (१९) नवसु शतेशु  
गतेषु तु षण्णवतीसमधिकेषु माघस्य । कृष्णैकादश्यामिह सम-  
र्थितं मंसटनृपेण ॥ (२०) यावद् भूधरभूमिमानुभरतं भागीरथी  
भारती भास्व(द्भा)नि भुजंगराजमव(नं) आजद्मवांमोधयः ।  
ति(ष्ठं)—

३२ त्यत्र सुरासुरेद्रमहितं (जै)नं च सच्छासनं श्रोमत्केशवसूरि-  
संततिकृते तावत् प्रभूयादिदं ॥ (२१) इदं चाक्षयधर्मसाधनं  
शासनं श्रीविदग्धराज्ञा दत्तं ॥ संवत् ९७३ श्रीमंसट(राज्ञा  
समर्थितं) संवत् ९९६ । सूत्रधारोद्भव(शत)योगेश्वरेण उत्कीर्णं यं  
प्रशस्तिरिति ।

[ इस बृहत् शिलालेखके दो भाग हैं । दूसरा भाग जो २३वीं  
पंक्तिसे शुरू होता है समयकी दृष्टिसे पहलेका है । इसमें राष्ट्रकूट  
कुलके राजा हरिवर्मके पुत्र विदग्धराजका वर्णन किया है । आचार्य

वासुदेवके उपदेशसे विदग्धराजने राजधानी हस्तिकुण्डिकामें ऋषभदेवका मन्दिर बनवाया था । इसने अपनी सुवर्णतुलाका दो तिहाई भाग इस मन्दिरके लिए तथा एकतिहाई भाग गुरुके लिए दान दिया था । विदग्धराजने इसी मन्दिरके लिए हस्तिकुण्डीके व्यापारियोंके कई करोंका उत्पन्न बलभद्र गुरुको दान दिया था । इस दानकी तिथि आषाढ़, संवत् ९७३ थी । विदग्धराजका पुत्र ममट हुआ । इसने उक्त दानको माघ कृष्ण ११, संवत् ९९६को पुनः सम्मति दी । ममटका पुत्र धवल हुआ । इसकी वीरताका विस्तृत वर्णन लेखमें किया है । जब मुंजराजने मेदपाटकी राजधानी आघाटको नष्ट किया तब वहाँके राजाको धवलने आश्रय दिया था । दुर्लभराजके आक्रमणसे महेन्द्रका रक्षण इसीने किया तथा मूलराजके द्वारा पराजित धरणीवराहको भी आश्रय दिया । वृद्धावस्थामे धवलने अपने पुत्र बाल प्रसादको मिहासनपर स्थापित किया । इसके समय संवत् १०५३ मे वासुदेवके शिष्य शान्तिभद्रसूरिके उपदेशसे हस्तिकुण्डीकी गोष्ठी ( व्यापारियोंके समूह ) ने विदग्धराज-द्वारा निर्मित मन्दिरका जीर्णोद्धार किया । गोष्ठीके सदस्योंके नाम पंक्ति २२में गिनाये हैं । लेखके पहले भागमें जो ४० श्लोकोंकी प्रशक्ति है वह सूर्याचार्यने लिखी थी । लेखके अन्तमें केशवसूरिका उल्लेख है ] [ ए० इ० १० पृ० १७ ]

८२

**विलप्पक्कम** ( जि. उत्तर अर्काट, मद्रास )

सन् ९४५, तमिल

नागनाथेश्वर मन्दिरके आगे पड़ी हुई शिलापर

[ यह लेख चोल राजा मदिरेकोण्ड परकेसरिवर्मन् ( परान्तक १ ) के राज्यके ३८ वें वर्षमें लिखा गया था । तिहप्पान्मलैके आचार्य अरिष्ट-नेमिकी एक शिष्याके द्वारा एक कुर्आ बनवानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ इ० म० उत्तर अर्काट २१६ ]



८३

## नरेगल ( मैसूर )

शक ८७३ = सन् ९५०, कन्नड

[ यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् अकालवर्ष कृष्णराजदेव ( तृतीय ) के सामन्त गंगवंशीय वृत्तय्य पेमाडिके समयका है । इसकी रानी पद्मम्बरसि-  
द्वारा निर्मित बसदिके दानशालाके लिए नमयर मारसिघय्यने एक  
तालाब अर्पित किया था । यह दान कोण्डकुन्दान्वय देसिग गणके महेन्द्र  
पण्डितके प्रशिष्य तथा वीरणन्दि पण्डितके शिष्य गुणचन्द्र पण्डितको  
सौंपा गया था । दानकी तिथि पौष शु० १० रविवार, उत्तरायण  
संक्रान्ति, शक ८७३ साधारणसंवत्सर ऐसी दी है । ]

[ मूल कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० २३ ]

८४

## वेमुलवाड ( करीमनगर, आन्ध्र )

१० वीं सदी—उत्तरार्ध ( लगभग सन् ९६० )

संस्कृत—कन्नड

[ इस मूर्तिलेखमें चालुक्य राजा बद्देग-द्वारा गौडसंघके आचार्य सोमदेव-  
सूरिके लिए एक जिनालय बनवाये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १५८ ]

८५

## धारवाड ( मैसूर )

शक ८८४ = सन् ९६२, कन्नड

[ यह ताम्रपत्र गंग राजा मारसिंह ( द्वितीय ) के समय पौष कृष्ण ९  
मंगलवार, शक ८८४, दुन्दुभि संवत्सर, उत्तरायण संक्रान्तिके दिन दिया  
गया था । इसमें राजा-द्वारा मेलपाडिके स्कन्धावारसे कोंगल देशमें

स्थित कादलूर ग्राम एलाचार्यको अर्पण किये जानेका उल्लेख है। उस-  
की माता कल्लब्बे-द्वारा निर्मित जिनालयके लिए यह दान दिया गया  
था। एलाचार्यकी गुरुपरम्परामे निम्न नाम दिये हैं—सूरस्थ गणके  
प्रभाचन्द्र योगीश—कल्लेलेदेव—रविचन्द्रमुनीश्वर—रविनन्दिदेव—एला-  
चार्य। ] [ रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ए० २३ पृ० ७ ]

८६

## कुडलूर ( मैसूर )

शक ८८४ = सन् ९६२, संस्कृत-कन्नड

[ इस ताम्रपत्रमे गंग राजा मारसिंह-द्वारा मुंजार्य अपर नाम  
वादिघंघल भट्टको चैत्र शु० ५ शक ८८४, रुधिरोगारि संवत्सरके दिन  
गुरुदक्षिणाके रूपमे पूनाट्ट प्रदेशका बागियूर ग्राम दान दिये जानेका  
उल्लेख है। मुंजार्य पराशर गोत्रका ब्राह्मण था तथा 'स्याद्वादोदयशैल-  
भास्कर-स्याद्वादरूपी उदयपर्वतके लिए सूर्यके समान था। ]

[ ए० रि० मै० १९२१ पृ० १८ ]

८७

## कोकिवाड ( धारवाड, मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख जिनशासनकी प्रशंसासे प्रारम्भ होता है। राष्ट्रकूट  
राजा खोट्टिग तथा उनके सामन्त गंगवंशीय सत्यवाक्य कोंगुणिवर्म धर्म-  
महाराजका इसमे उल्लेख है। ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ८९ पृ० ३५ ]

८८

## लक्ष्मेश्वर ( मैसूर )

शक ८९३ = सन् ९७१, कन्नड

[ यह लेख बहुत घिस गया है। गंग राजा मारसिंहदेवके समय

कार्तिक शु० (?) शक ८९३, प्रजापति संवत्सरके दिन शंखजिनालयको कुछ दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ३० पृ० १६३ ]

८६

दालबुलपाडु ( जि० कडप्पा, आन्ध्र )

१०वीं सदी ( लगभग सन् ६७२ ), संस्कृत—कन्नड

मग्न जैन मन्दिरमें स्थित मूर्तिके पादपीठपर

[ इस लेखमें राष्ट्रकूट सम्राट् नित्यवर्ष ( इन्द्र ४ )-द्वारा शान्तिनाथके अभिषेकके लिए यह पादपीठ बनवानेका निर्देश है । ]

[ इ० म० कडप्पा १४८ ]

६०

विडिगनवले ( मैसूर )

शक ८९७ = सन् ९७५, कन्नड

पहली ओर

१ मद्रमस्तु जि-

२ नशासना-

३ य श्रीमत्

४ सकवर्ष ८-

५. ९७५ यु-

६ वसंवत्सर-

७ द आषाढ-

८ मासद शु-

९ द्द दशमियु

१० सोमवार

११ बुं स्वातिन-

दूसरी ओर

१२ अत्रमुमा

१३ गे अमृत-

१४ ब्बे कन्तिय

१५ रुद्रु नोन्तु

१६ समाधि

१७ यि (मुडिणि)

१८ दरवर म-

१९ ककलनिमि-

२० तपरोप-

२१ कारिगल् प-

२२ अनन्दिमहा-

तीसरी ओर

२३ रकरवर्ग

२४ नेय

२५ ....

२६ निलिसिद्ध

[ यह लेख एक स्तम्भके तीन बाजुओंपर खुदा है । इसमें अमृतम्बे-कन्ति नामक महिलाके समाधि-मरणका तथा उसके पुत्र पद्मनन्दिभट्टारक-द्वारा इस स्तम्भकी स्थापनाका उल्लेख है । तिथि आषाढ़ शु० १०, सोम-वार, शक ८९७, युवसंवत्सर, इस प्रकार दी है । ]

[ ए० रि० मै० १९३६ पृ० १९२ ]

९१

बेस्लट्टि ( धारवाड, मैसूर )

( शक ) ९११ = सन् ९९०, कन्नड

[ जोगीबण्डि नामक पाषाणपर यह लेख है । अज्जरय्यके पेगडे आयतवर्मा-द्वारा निर्मित बसदिका इसमें उल्लेख है । वर्ष ९११ दिया है जो सम्भवतः शकवर्षका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २०४ पृ० ३८ ]

९२

वेडल ( जि० उत्तर अर्काट, मद्रास )

सन् ९९९, तमिल

आण्डार् मडम् नामक पहाड़ीकी एक गुहाके भागे

[ यह लेख चोल राजा राजकेसरिवर्मन्के १४ वें वर्षका है । इसमें गुणकीर्तिभट्टारके शिष्य कनकवीर कुरट्टिका तथा मादेवी अरिन्दमंगलम्का उल्लेख है । ]

[ इ० म० उत्तर अर्काट ७४४ ]

९३

खण्डगिरि—ललतेंदुकेसरि गुहा

१०वीं सदी, संस्कृत-नागरी

१ ओं श्री उद्योतकेसरिविजयराज्यसंवत् ५

- २ श्री कुमारपर्वतस्थाने जिर्णवापि जिर्ण इत्यण
- ३ उद्योतित तस्मिन् याने चतुर्विन्सति तीर्थकर
- ४ स्थापित प्रतिष्ठा (का) ले ह (रि) ओप जसनंदिक
- ५ .....श्रीपारस्यनाथस्य कर्मस्वयः

[ यह लेख राजा उद्योतकेसरीके ५वें वर्षका है । कुमारपर्वतकी वापी तथा मन्दिरोंका जोर्णोद्धार करके चौबीस तीर्थकरोंकी मूर्तियोंकी स्थापना-का इसमें उल्लेख है । कुमारपर्वत खण्डगिरिका पुराना नाम है । अन्तिम भागमें जसनंदि ( यशोनन्दि )का उल्लेख हुआ है । ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६६ ]

६४

खण्डगिरि—नवमुनि गुहा

१०वीं सदी, संस्कृत—नागरी

- १ ओं श्रीमद्युद्योतकेसरिदेवस्य प्रवर्धमाने विजयराज्ये संवत् १८
- २ श्रीआचार्यसंवप्रतिवद्धग्रहकुलविनिर्गतदेशीगणाचार्य श्रीकुलचन्द्र-
- ३ भट्टारकस्य तस्य शिष्यशुभचन्द्रस्य

[ इसका सारांश जै० शि० सं० भाग २में क्रमांक २४५में दिया है । किन्तु उस समय मूल लेख प्राप्त नहीं हुआ था । इसमें राजा उद्योतकेसरी-के १८वें वर्षमें देशीगणके आचार्य कुलचन्द्रके शिष्य शुभचन्द्रका उल्लेख किया है । ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६५ ]

६५

खण्डगिरि—नवमुनि गुहा

१०वीं सदी, संस्कृत—नागरी

- १ ओं श्रीआचार्यकुलचन्द्रस्य तस्य
- २ शिष्य खल्लुशुभचन्द्रस्य
- ३ छात्र विजो

[ इस लेखमें आचार्य कुलचन्द्रके शिष्य शुभचन्द्रके शिष्य विजो (?) का निर्देश है । ] [ ए० ई० १३ पृ० १६६ ]

१६

ईचवाडि ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

- १ ....बूतुग पेर्माडि तदपत्यण् पुरेयपं तत्सुत वीर
- २ ....राचमल्लनह्तिरमल्ल । अन्ता राचमल्लनिन्देरेयंगनातन मगं
- ३ ....नातन पुत्रं सैगोट्ट....राचमल्ल....
- ४ ....मिडुकदिरलेडद कट्योल् मदमातंगमने पिडिडु निलिसिद ।
- ५ ....क्काणूरुगणद आचार्यावतारमेन्तेन्दोडे । दक्षिणदेशनिवासि ।  
गंगमहोमण्डलिक....
- ६ ....नन्दिमट्टारकरं बालचन्द्रमट्टारकरं मेघचन्द्र त्रैविद्यदेवरं....
- ७ ....पेम्पं तलेदं गुणनन्दिदेव शब्दब्रह्म । अवरिं बलिकं अकलंक  
सिंहासनम....
- ८ ....मदमातगरं बौद्धवादितिमिरपतंगरं सांख्यवादिकुलाद्रिवज्र-  
धरं नैयायिका....
- ९ सिद्धान्तवार्धिवर्धनसुधाकरं । सकलसाहित्यप्रवीणरं । मनोमव-  
मयरहितरं....
- १० श्रीमतु प्रमाचन्द्रसिद्धान्तदेवर शिष्यरु अनवद्याचार्यर माघनन्दि-  
सिद्धान्त....
- ११ अवरं शिष्यरु । चतुरास्यं चतुरोक्तियं प्रभुतेयिन्दीशं गुणव्याप-  
कस्थितियं विष्णु सुबुद्धि वि—
- १२ सिद्धान्तविभूषणगेनिसिदं श्रीमतुप्रमाचन्द्रमं । अवर सधर्मरु ।  
नुतसिद्धान्त—

- १३ मप्रतिमं तानेने पेम्पुवेत्तु मुदितोदात्तर् जगद्वन्धर् ऊजितरु-  
थोतित—
- १४ मनोमवविशालहरनिटिकाक्षं वादिमदरदनिबिदुवं मेदिषमृग-  
राज जयतु श्रुतकीर्तिबुधं । ....
- १५ बादिराजं दलेनिसिदं .... योलु । भवर सधर्मरु । चारित्रचक्रि  
सम्यमधारि क्राणूरगणा ....
- १६ शिष्यरु । वरशास्त्राम्बुधिवर्धनहरिणांकं .... वादिमद .... निरुतं  
तानेनलेसेदं—
- १७ वारणवागि कीर्ति नर्तिसुबुदु पेम्पुवेत्तु .... नतिमेरुगे .... दलागेसेबुदु  
सद्गुण ....
- १८ नीडि पिरिदुं निस्तेजमैदिदं .... नोडदे .... प्रभुतेयं ताल्दिपं ....  
करं ....
- १९ नुडिगलु सत्यसुवर्णभूषणगणं .... सुरलंगलं .... करण्डकं तनुतप ....
- २० धेनुव्रतिरूपमं तलेदुदो .... भूजातवी धरयोलु तापस ....
- २१ मुनिपं .... रत्नाकरं । इन्तेनिसि नेगल्दाचार्यं .... तिलकरुं जिन-  
सदा ....
- २२ वारिधिश्रीतरोचि .... स्तुत्यं .... जिनपदाब्जद्वयभृगं .... भुजबलगंगं ..
- २३ तम्म गंगान्वयदवर पडिसलिसुत्तुं .... मरवेस नागि माडिसि ....
- २४ दत्ति तट्टिकेरे सर्वबाधापरिहारा .... कंरेय केलगे तलवृत्ति ....
- २५ मारसिगननुजं .... सन्द नञ्जियगंगक्षितिपालकं तदनुजं ....
- २६ वलि येम्बूरुमं बसदि .... मूडलुगद्दे ....
- २७ गुड्डु नञ्जियगंगदेवं .... एम्बूरुमं .... आगद्देयि तें ....
- २८ सिद्धान्तदेवर गुड्डु रक्कसगंगं नञ्जियगंगं .... सीमेयि तेंक ....
- २९ मूडणदेसे .... नट कल्लुगलु ....
- ३० मुनिचन्द्रसिद्धान्तदेवर गुड्डु । भुजबलदिं शत्रुमहीभुज ....  
( ३१ से ३६ तक पञ्क्तियाँ चिस गयी हैं )

- ३७ तलप्रहारदोले....नू गुटदिन्दे मीण्डुवं....कवुंगु....  
 ३८ धर्ममहाराजाधिराजपरमेश्वरं । कोलालपुरवरेश्वरं । नन्दगिरिनाथं  
 मदगजेन्द्र....  
 ३९ मण्डलिकदंवेन्द्रं दर्पोद्धतारातिवनजवनवेदण्डं....  
 ४० देवं माडिसिद....तीर्थद बसदियं....  
 ४१ ....चन्द्रसिद्धान्तदेवर शिष्यर् मुख्यवागि बिट्ट दत्ति....  
 ४२ नन्नियगंगदेवनुं पट्टमहादेवि....  
 ४३ काणिकेयं नाडूरगलोलु पणवं कोट्टरा....

[ इस विस्तृत लेखकी पहली कुछ पक्तियाँ टूट गयी हैं तथा अन्य पंक्तियोंके बहुत-से अक्षर घिसे हैं । गंगवंशके राजा रक्कसगंग तथा नन्निय-गंगके समय यह लेख लिखा गया था । इनके द्वारा तट्टिकेरे ग्रामकी कुछ भूमि....चन्द्रसिद्धान्तदेवको दान दी गयी थी । लेखमें क्राणूरगणकी आचार्य-परम्परा इस प्रकार बतलायी है — ....नन्दिभट्टारक, बालचन्द्रभट्टारक, मेघचन्द्रत्रैविद्यदेव, गुणनन्दि शब्दब्रह्मा, अकलंक, प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेव, माघनन्दिसिद्धान्तदेव, प्रभाचन्द्र ( द्वितीय ), उनके गुरुबन्धु श्रुतकीर्ति, — (यहाँ कुछ नाम घिस गये हैं) । अन्तमें मुनिचन्द्र सिद्धान्तदेवके एक शिष्य-का उल्लेख है । राजा नन्नियगंगकी वंशावलीमें बूतुग पेमाडि, एरेयप्प, राचमल्ल, एरेयंग सैगोट्ट तथा राचमल्ल इनका उल्लेख किया है । ]

[ ए० रि० मै० १९२३ पृ० ११४ ]

६७

दानबुलपाडु स्तंभलेख (जि० कडप्पा, आन्ध्र)

१०वीं सदी, संस्कृत-कन्नड़

पहला भाग

- |                        |                        |
|------------------------|------------------------|
| १ पतिय बेसदिद—         | २ महितरनतिकोप—         |
| ३ दिनिकि गेल्लु परिपा— | ४ लि(सि)दं । चतुरुदधि— |



५ वलयमेलमन-	६ तिरथनी दण्ड(ना)य-
७ कं श्रीविजयं ॥(१)	८ तुरगधलंगल-
९ नाङ्गिद करिघटे-	१० यं पिरियनेर-
११ (वि)यं बल्लणियं ।	१२ धुरदेडे(यालि)रि-
१३ दु गेलगुं करद(सि)	१४ करमरिदु रण-
१५ दोलनुपमकविय ॥(२)	१६ कुपितवति श्रीवि-
१७ जये बलिकुलति-	१८ लके नरेन्द्रदण्डाधि-
१९ पनी । गिरिरिगि(रि)र्वन-	२० मवनं जलमज-
२१ ल रिपुम(मू)हव-	२२ लमबलं ॥(३)

## दूसरा भाग

२३ वसुमतियोल-	२४ गिल्देण्टुं (दे)सेगल
२५ कुसुकुमनेय्दि	२६ माणदे मत्तं । (बिस)-
२७ रुहगर्माण्डकं प-	२८ सरिसिदुदु(की)तिं ने-
२९ हननुपमकविय ॥(४)	३० आश्रितजनकल्पत-
३१ रुर्विश्रुतरि(पु)नृप-	३२ तितृणदवानलमूर्तिः ।
३३ श्रीवनितास्मरपाशः	३४ पातुस्तव बाहु मे-
३५ दिनीं श्रीविजय ॥(५)	३६ चतुरुदधिवलय-
३७ वलयितवसुन्ध-	३८ रामिन्द्रशासनात् सं-
३९ रक्ष(न्) । श्रीविजय	४० दण्डनायक (जी)व
४१ चिरं दानधमेनि-	४२ रतमनस्क ॥(६)
४३ मंगळ माहाश्रीः ॥	

## तीसरा भाग

४४ मद्रमस्तु भगवते (जि)नशासना(य) ॥	
४५ अष्टविधकर्ममेलमनदु-	४६ बरिगोण्डु कोडिपे(ने)बुदे वगेयिं ।

- ४७ (पु)ट्टिदनुदात्तसस्त्रं नेट्टने विबु ४८ धेन्द्रवन्दनरिविगोजम् ॥ (७)  
 ४९ तानरिदु तो(र)दु नेट्टने मानि- ५० सवालाबुद्धेदु संन्यासनदोक् ।  
 ५१ मानसिके गिहदे कोण्डो(न)नून- ५२ सुखास्पदमनलत्तियोक्  
 श्रीविजयं ॥ (८)  
 ५३ निर्गतमय नीनर(सं)सर्ग- ५४ म नानोल्लेनेन्दु पेसि विसु-  
 ५५ वं । सर्गद भोगमनुण्डपत्र- ५६ गंकड्डिविट्टोनरिदोननुप-  
 ५७ मकवियं ॥ (९) दण्डिन साम ५८ ग्रिगे परमण्डलमल्लाडे  
 ५९ (स)र्वविक्रमतुंगं । दण्डिन वी- ६० रश्रीगोलगण्डं आदण्डनायकं  
 ६१ श्रीविजयं ॥ (१०) (च)ण्डपराक्र ६२ मनुरदरिमण्डलिकरनट्टि पि-  
 ६३ डिदु पतिगोप्पिमुयोलगण्ड प्रच-६४ ण्डनीमूमण्डलदोल् दण्डनायकं  
 ६५ श्रीविजयं ॥ (११) अनुपम- ६६ कविय सेनबोवं गु-  
 ६७ णवर्म बरेदं ॥

[ यह शिलालेख दण्डनायक श्रीविजयकी प्रशंसामें लिखा गया है । अरिविगोज, अनुपमकवि तथा सर्वविक्रमतुंग ये इसके विरुद्ध थे । यह बलिकुलमे उत्पन्न हुआ था तथा इन्द्रराजकी सेनाका पराक्रमी सेनापति था । इन्द्रराज ( तृतीय ) ही सम्भवतः यहाँ उल्लिखित है जिसका राज्य सन् ९१४ से ९२२ तक था । लेखके तीसरे भागमें कहा है कि श्रीविजयने समस्त वैभव छोड़कर संन्यास धारण किया था । यह लेख श्रीविजयके सेवक गुणवर्मने लिखा था । ] [ ए० ई० १० पृ० १४७ ]

६८-६९

**चोलवाण्डिपुरम्** ( दक्षिण अर्काट, मद्रास )

१०वीं सदी, तमिल

[ यह लेख राजा गण्डरादित्य मुम्मूडि चोलके दूसरे वर्षका है । इसमें चेदि सिद्धवडवन् नामक शासककी प्रशंसा है । उसे कोवलका स्वामी तथा

मलयकुलोद्भव कहा है । स्थानीय पहाड़ीपर उत्कीर्ण मूर्तियोंकी पूजाके लिए उसने कुछ दान दिया था । कुरण्डिके गुणवीर भटारका भी इसमें उल्लेख है । उत्कीर्ण मूर्तियाँ महावीर, पार्श्वनाथ, गोम्मतदेव तथा पद्मावती की हैं । यहीके एक अन्य लेखमें १०वीं सदीकी लिपिमें कहा है कि इन मूर्तियों ( तेवारम् ) का निर्माण वेलि कोंगरैयर् पुत्तडिगलूने किया था । ]

[ रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० २५१-५२ पृ० ३४ ]

१००

### मसुलिपट्टम ताम्रपत्र ( आन्ध्र )

१०वीं सदी, संस्कृत-तेलुगु

- १ व्याकृष्टरत्नखचितायतशांगचापो यस्सेन्द्रकामुं कविनीलपयोद-  
वृन्दम् । निर्मल्ययस्त्रिव विमा—
- २ ति स कृष्णकान्तिर्विष्णुद्विशवन्दिशतु वोवधृतत्रिलोकः॥ ( १ )  
स्वस्ति श्रीमतां सकलभुवनसंस्तूयमानमा—
- ३ नव्यसरोवराणां हारीतिपुत्राणां कौशिकीवरप्रसादलब्धराज्याना-  
भ्मातृगणपरिपालितानां स्वामि—
- ४ महासेनपादानुध्यातानां भगवन्मारायणप्रसादसभासादितवरवराह-  
लालनेक्ष—
- ५ णवशीकृतारातिमण्डलानामश्वमेधावभृथस्नानपवित्रीकृतवपुषां  
चालुक्यानां कु—
- ६ लमलंकरिणोस्सत्याश्रयवल्लभेन्द्रस्य भ्राता कुब्जविष्णुवर्धननृप-  
तिरष्टादशवर्षाणि—
- ७ वैगीदेशमपालयत् । तदात्मजो जयसिंहस्त्रयस्त्रिंशतम् । तनुजे-  
न्द्रराजनन्दनो विष्णुवर्धनो न—
- ८ व । तस्मिन्मृगियुवराजः पञ्चविंशतिम् । तत्पुत्रो जयसिंहस्त्रयो-  
दश । तद्वर—

९ जः कोकिलिष्णमासान् । तस्य ज्येष्ठो भ्राता विष्णुवर्धनस्तमुच्चाठ्य  
सप्तत्रिंशतम् । तत्पुत्रो — वि

दूसरा पत्र : पहला भाग

१० जयादित्यमट्टारकोष्टादश । तत्सुतो विष्णुवर्धनषट्त्रिंशतम् ।  
नरेन्द्रमृगराजा ( ख्यो ) मृ—

११ गराज ( पराक्रमः । ) विजयादित्य ( भूपालः ) श्रुत्वारिं ( शत्समा )-  
॥ ( २ ) तत्पुत्रः कलिविष्णुवर्ध—

१२ नो ( ध्यर्धवर्षम् । तत्सु ) तो गुणगविजयादित्यश्चतुश्चत्वारिंशतम् ।  
तद्भ्रातुर्यौवराज्योन्नतमहि—

१३ ( मभृतो ) विक्रमादित्यभृपाज्जातश्चालुक्यमीमस्सकलनृपगु ( णो-  
त्कु ) छचारित्रपात्रः । दानी

१४ ..... रसकरः सार्वभौमप्रतापो राज्यं कृत्वा प्र ( या ) तः त्रिद-  
शपतिपदं

१५ ( त्रिंशदब्दप्रमा ) णं ॥ ( ३ ) तत्पुत्रः कलियत्तिगण्डविजयादित्य-  
ष्णमासान् । तत्सूनुरम्मराजस्स —

१६ ( स ) वर्षाणि । तत्सुतं विजयादित्यं कण्ठिकाक्रमायातपट्टामि-  
षेकं बालमुच्चाठ्य तालराजो राज्यम्मास—

१७ ( मे ) कं । चालुक्यमीमसुतो विक्रमादित्यस्तं हत्वा एकादश-  
मासान् । विजयादित्यो वेंगीनाथः कलियत्ति—

१८ गण्डनामा धोमा ( न् । ) तस्य सती मेलोबा तज्जश्रीराजमीम-  
नृपतिरजेयः ॥ ( ४ ) सत्यत्यागामिमानाद्यलि—

दूसरा पत्र : दूसरा भाग

१९ लगुणयुतो राजमार्ताण्डमाजौ । जित्वोग्रम्मल्लपाख्यं ससुतमधि-  
बलं द्रोहि ( णो ) प्यन्तकामो । द्विद्धोमो राष्ट्र

२० कूटप्रबलबलतमस्संहरो द्वादशाब्दं । राज्यं कृत्वागमत्स प्रणिहित  
( सुयशो ) धर्मसन्तानवर्गः ॥ ( ५ ) वि—

- २१ ण्णोः पण्णोव शंभोरिव गिरितनया यस्य देवी सपट्टा । संशुद्धा  
( हैह ) नाभिजकु ( लवि ) षथे पुण्यला ( व )—
- २२ ण्यगण्या । लोकांवा तत्सुतोभूद् विजितपरबलो वेगिनाथोम्मराजो ।  
राजद्राजाधिराजो ( जितरिपु ) म—
- २३ कुटोद्घुष्टपादारविन्दः ॥ ( ६ ) वेगा ( राज्याभिषिक्तो ) निजरिपु-  
विजयादित्यमुद्यत्समर्थ । जित्वा ( नेकाजिरंग )—
- २४ प्रजितपरबलं ( कण्ठिकादामकण्ठं । ) दायादद्रोहिवर्गानपि सकर-  
बलः क्षत्रि ( या ) दित्यदं—
- २५ वो । ध्वस्तारिध्वान्तराशिर्विलसितकमलस्सप्रतापो विभाति ॥  
( ७ ) यन्निर्मातुन्निमित्तं कृतमिदमखिलं विष्टपं हि
- २६ त्रिमूर्तेरात्मानं चात्मनास्मादिह सकलगुणै ( राजमी )-मोद्बहो-  
भूत् तेजोराशिः प्रजानां पतिरधिकव—
- २७ ( ल ) स्सप्रतापोष्टमूर्तिस्सोयन्देवोम्मराजो जनगुणजनकोन ( न्य )  
राजाप्रचिन्हः ॥ ( ८ ) स्वर्याताः पूर्व—

तीसरा पत्र : पहला भाग

- २८ नाथा नलनहुषहरिश्चन्द्ररामादयोपि प्रत्यक्षास्ते यशोभिर्गुणवपुर-  
चला स्वैरिदानी—
- २९ मद्दष्टाः । यस्त्योच्चैः कीर्तिरा ( शिर्म ) गण इव जगत्यद्वितीयो-  
दयोस्मिन् । राजद्राजाधिराजस्स ज—
- ३० यति विजयादित्यदेवोम्मराजः ॥ ( ९ ) गद्यम् । स जगतीपतिरम्म-  
राजो राजमहेन्द्र भोगीन्द्र सह—
- ३१ स्रभोगोपहासिदीर्घदक्षिणैकबाहुसान्द्रतविश्वविश्वंमरामारः ।  
नारायण
- ३२ इव निरन्तरानन्तभोगास्पदः । विधुरिव सुखचिराजितः । पिता-  
मह इव कम—

- ३३ लासनः । गिरिविष इव धराधरसुतारारिधतः । रत्नाकर इव समस्त—  
 ३४ शरणागतभूदश्रयः । सुवर्णाचल इव सुवर्णोत्तुंगोदयः । हिमाचल  
 ३५ इव सिंहासनोल्लासितचमरीवालव्यजनविराजमानलीलः ॥ स सम—  
 ३६ स्तभुवनाश्रयश्रीविजयादित्यमहाराजाधिराजपरमेश्वरपरम—

तीसरा पत्र : दूसरा भाग

- ३७ मट्टारकः । वेलनाण्डुविषयनिवासिनो राष्ट्रकूटप्रमुखान् कुटुम्बि-  
 नस्समस्त—  
 ३८ सामन्ता(न्तः)पुरमहामात्रपुरोहितामात्यश्रेष्ठिसेनापतिश्रीकरण -  
 धर्माध्यक्ष—  
 ३९ द्वादशस्थानाधिपतीन् समाहूयेत्यमाज्ञापयति विदितमस्तु वः ।  
 श्रीमानुदपा—  
 ४० दि महान्निर्णयनकुलसाधु.....श्रेष्ठ्याख्यो । गोत्रः सिंहासनतो  
 ४१ त्रिदितो नरवाहनश्चलुक्ये(शानाम् ॥ १० ) श्रीकरणगुरुर्गुरुवि  
 विबुधगुरु—  
 ४२ स्स(क)लरा(जसिद्धान्तज्ञः) । नरवाहन इत्यासीन्यककृतनरवाह-  
 (नः)प्रकाशित—  
 ४३ यशसा ॥(११) यस्याग्रसुतो गुणवान् मेळपराजो गुणप्रधानो  
 दानी । मानी मा—  
 ४४ नवचरितो मानवदेवो जिनेन्द्रपदपद्माक्षिः ॥(१२) तस्य सती  
 मेण्डाबा सीतेव पति—  
 ४५ अता जिनव्रतचरिता । सत्यवती (वि)नयवती सतताहारप्रदायिनी  
 पृतधर्मा ॥ (१३)तज्जौ

## चौथा पत्र : पहला भाग

- ४६ (सु)तौ प्रसिद्धौ बुद्धिपरौ सकलशास्त्रशिविवेकौ । भीमनरवाह-  
नाख्यौ विख्यातौ रा—
- ४७ मलङ्मणाविव लोके ॥ (१४) यौ भीमार्जुनसदृशौ बलयुतबलदेव-  
वासुदेव(समा)नौ । (न)—
- ४८ कुलसहदेवतुल्यौ तौ जातौ जैनधर्मनिरतचरित्रौ ॥ (१५) श्रीमत-  
चालुक्यभीम(क्षितिपतिकृप)—
- ४९ या लब्धसामन्तचिन्हौ श्रोद्धारौवंबरष्ठोवनपदविलस(न्ना)मरच्छत्र-  
(लोलौ) ।
- ५० .... रिकस्थौ शिखिरुहपटलच्छायसत्कर्करीकौ जातौ चालुक्य-  
(चूलौ)
- ५१ .... करिहयौ काहलाद्यभ्युपेतौ ॥ (१६) जैनाचार्यौ यदीयौ गुरुरखि—
- ५२ लगुणश्चन्द्रसेनाख्यशिष्यौ शास्त्रज्ञौ नाथसेनो मुनिनुतजयसेनो  
मुनिर्दोक्षितात्मा । सि—
- ५३ द्धान्तज्ञः कलाज्ञः परसमयपटुः सञ्ज्ञतोत्कृष्टवृत्तस्सत्पात्रः श्रावकाणां  
क्षपणकसु(ज)—
- ५४ नक्षुलकाज्याज्जिकानां ॥ (१७) तस्मै ताभ्यां राजभीमनरवाहनाभ्यां  
विजयवाटिकायां

## चौथा पत्र : दूसरा भाग

- ५५ जिनमवनयुगस्मिन्मिन्मेतद्धर्मार्थमस्मामिस्सर्वकरपरिहारं देव-  
भोगी—
- ५६ कृत्य पेद्गालिहिरुर् नाम प्राप्तो दत्तः । अस्यावधयः । पूर्वतः  
मण्ड्य—
- ५७ रिपोलगरुसुन यिसु कट्टलचेरुनुन नडिमि दूब । आग्नेयतः आल-  
पत्तियुं जूट्टरि—

- ५८ युं मुय्यल्लुकुट्टु (न) बूरुव पडुव । दक्षिणतः चूंदूरि प्रान्त(पतिं)  
युत्तरं बुन कुण्डि—
- ५९ विड्डिगुण्ठ । नैऋत्यतः चूंदूरियम्मपोटयन्वगुडि । ( पश्चिमतः )  
रेटि(प)डुमटिदरि । वा—
- ६० यव्यतः वलिवेरिपोलगरुसुन गारलगुण्ठ । उत्तरतः तप्पराळ  
प(डु)व । ई—
- ६१ शानतः कोडगालिडिपतिंयुं ( वलिवेरियुं मु )य्यल्लुकुट्टुन नडुपनि-  
गुण्ठ ॥ तस्य (स्थे)यादलं—
- ६२ ध्यं सुचिरमुरुतरं (शास)न राजकोक्तं । सत्कीर्तेवैगिपस्य प्रकट-  
गुणनिधेरम्मराजस्य पूज्यं ।
- ६३ तत्रेदं शा(स)नं (पालित)जिननिगमं शौर्यमीतान्यनाथव्रातो(च्चै)-  
मौलिमालामणिकमकरिकोमलि—

### पाँचवाँ पत्र

- ६४ कोल्लासितान्नेः ॥ (१७) अस्योपरि न केनचिद्वाधा कर्तव्या यः  
करोति स पंचमहापातकसं—
- ६५-६९ युक्तो भवति । तथा चोक्तं व्यासेन ॥ ( नित्यकं शापात्मक  
श्लोक )
- ७० आज्ञप्तिः कटकराजः जयन्ताचा—
- ७१ येण लिखितम् ॥

[इस ताम्रपत्रमें मदनूर तथा कलचुम्बूर लेखोके समान पूर्वोक्त चालुक्यों-  
की वंशावली कुब्ज विष्णुवर्धनसे प्रारम्भ कर अम्मराज ( द्वितीय ) विजया-  
दित्य तक दी गयी है । अम्मराजके पिता चालुक्य भीम ( द्वितीय ) का एक  
सामन्त नरवाहन था जो त्रिनयनकुलमे उत्पन्न हुआ था तथा जैनधर्मीय  
था । उसका पुत्र मेलपराज था । इसकी पत्नी मेण्डांवाको दो पुत्र हुए —  
राजभीम तथा नरवाहन ( द्वितीय ) । जैनाचार्य चन्द्रसेनके शिष्य नाथसेन



( जयसेनके गुरु ) इन दोनोंके गुरु थे । इनने विजयवाटिकामें दो जिनमन्दिर बनवाये थे । उनके लिए अम्मराजने वेलनाण्डु प्रदेशका पेद्गालिडिपर्ह नामक ग्राम दान दिया था । ] [ ए० ई० २४ पृ० २६८ ]

१०१

वरुण ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड़

१ श्री.....श्रीमत्पर.....यि राजगुरु—

२ मण्डलाचार्य विथमकर् अत्रिगोत्र परशुराम आचन चामुण्डरनु आ—

३ भठरकर वारुणद सांथिनाथस्वामिय माडिसिदर आवर प्रिय दुणदुचल—

४ दाचार्य मकलु विजय-अण बमण मडिदर—

[ इस लेखमें आचन चामुण्डर भट्टारक-द्वारा वरुण ग्राममें शान्तिनाथ-मूर्ति अर्पण किये जानेका निर्देश है । यह मूर्ति विजयण्ण और बमण्ण-द्वारा बनायी गयी थी । लेखकी लिपि १०वीं सदीकी प्रतीत होती है । ]

[ ए० रि० मै० १९४० पृ० १७१ ]

१०२

मण्णे ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड़

[ इस लेखमें देवेन्द्रपण्डित भट्टारकी शिष्या मारब्बेकन्तिके समाधि-मरणका तथा कलिगब्बे कन्ति-द्वारा इस निसिधिकी स्थापनाका उल्लेख है । लिपि १०वीं सदीकी है । ] [ ए० रि० मै० १९१७ पृ० ३९ ]

१०३

उम्भत्तूर ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

[ इस लेखमें विमलचन्द्रके शिष्य सोत्तियूरके शासक मारम्मयके पुत्र सिन्दय्यके समाधिमरणका उल्लेख है । लिपि १०वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९१७ पृ० ३९ ]

१०४

बुवनहल्लि ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख एक जिनमूर्तिके पादपीठपर है । इस मूर्तिकी स्थापना बालचन्द्र सिद्धान्तभट्टारके शिष्य क(म)लभद्रगुरु-द्वारा की गयी थी । लिपि १०वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१ ]

१०५

अंकनाथपुर ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख अंकनाथेश्वर मन्दिरके छतमें लगा है । प्रभावचन्द्र सिद्धान्त-भट्टारकी शिष्या देवियब्बेके समाधिमरणका यह स्मारक है । लिपि १०वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१ ]

१०६-१०७

अंकनाथपुर ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

[ यहाँके सुब्रह्मण्यमन्दिरके छतमें दो निसिधि लेख लगे हैं । एकमें दडिगसेट्टि तथा देवरदासय्यकी माता चामकब्बेका उल्लेख है । दूसरेमें

महानायक रेचय्यके पुत्र अय्यसामिका उल्लेख है जो चातुर्वर्ण भ्रमणसंघका सहायक था । लिपि १०वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१ ]

१०८

### होलैनरसीपुर ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख १०वीं सदीकी लिपिमें है । इसमें मुनिमुख्य महेन्द्रकीर्तिके समाधिभरणका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१ ]

१०९

### अंकनाथपुर ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख १०वीं सदीकी लिपिमें है । इसमें कदम्ब वंशीय बासबके पुत्र राचय्यके समाधिभरणका उल्लेख है । यह लेख बलदेवने स्थापित किया था । ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३२ ]

११०

### कोडिहल्लि ( माण्ड्या, मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

१ .....म-

२ य्य सन्य-

३ सनं गेटदु

४ एरह नों-

५ तु मुडिपि-

६ दन् आतन

७ मगलण्य

८ बिडक्क कल्ल

९ निक्कसिद्(ळ)

[ इस निसिधि-लेखमें किसी.....मय्यके समाधिभरणका निर्देश है । उसकी पुत्री बिडक्कने यह समाधि स्थापित की थी । लेखकी लिपि १०वीं सदीकी प्रतीत होती है । ]

[ ए० रि० मै० १९४० पृ० १६० ]

१११

कोनकोण्डल ( नान्तपुर, आन्ध्र )

१०वीं सदी, कन्नड़

[ यह लेख रसासिद्धलुगट्ट नामक पहाड़ीपर एक पाषाणपर खुदा है । यह श्रीनागसेनदेवका निसिदिलेख है । इसकी लिपि १०वीं सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५१ पृ० १२६ ]

११२

मथुरा

१०वीं सदी, संस्कृत-नागरी

[ इस लेखमें १०वीं सदीकी लिपिमें मूलसंघके किसी आचार्यका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ५२७ पृ० ७७ ]

११३

कीलक्कुडि ( जि० मदुरा, मद्रास )

१०वीं सदी, तमिल

समणरमलै पहाड़ीपर जैन मूर्तियोंके उत्तरकी ओर चट्टानपर

[ इस लेखमें गुणभद्रदेव तथा चन्द्रप्रभका निर्देश है । लिपिके अनुसार यह लेख १०वीं सदीका होगा । ]

[ रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० २४२ ]

११४

वैखर ( मन्दसौर, मध्यप्रदेश )

१०वीं सदी, संस्कृत-नागरी

[ इस लेखमें नन्दिदण्डसंघके जैन आचार्य शुभकीर्ति तथा विमलकीर्तिका उल्लेख है । लिपि १०वीं सदीकी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २०३ पृ० ४५ ]

११५

कमलापुरम् ( बेल्लारी, मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख १०वीं सदीको लिपिमें है । इसमें गुणचन्द्रमुनि, इन्द्रनन्दि-  
मुनि तथा एक महिलाका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० २२२ पृ० ४८ ]

११६

काशिवल ( बिजनोर, उत्तरप्रदेश )

संवत् १०६(१) = सन् १०००, संस्कृत-नागरी

[ यह लेख एक जैन मूर्तिके पादपीठपर है । इसमें भरतका उल्लेख  
है तथा संवत् १०६ यह तिथि दी है । सम्भवतः संवत्का अन्तिम अंक लुप्त  
हुआ है । ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ४३६ पृ० ७१ ]

११७

लक्षकुण्डि ( मैसूर )

शक ९२९ = सन् १००७, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् आहवमल्ल ( जो यहाँ सत्याश्रयका  
उपनाम होना चाहिए ) के सामन्त वाजिकुलके नागदेवके समयका है ।  
इसकी पत्नी अत्तियम्बेने लोक्किगुण्डिमें एक जिनालय बनवाकर उसे कुछ  
भूमि दान दी थी । यह दान उसके गुरु सूरस्थगण-कौरूरगच्छके अर्हणन्दि  
पण्डितको दिया गया था । दानकी तिथि फाल्गुन शु० ८, शक ९२९,  
प्लवंग संवत्सर ऐसी दी है । उस समय अत्तियम्बेका पुत्र पडेवल तैल  
मासवाडि प्रदेशका प्रमुख था । ]

[ मूल कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० ३९ ]

११८

कोण्यल ( रायचूर, मैसूर )

राज्यवर्ष १ = सन् १००८, कन्नड,

[ यह लेख चालुक्य राजा विक्रमादित्य ५ के राज्यवर्ष १ का है । इसमें सिंहनन्दि आचार्यके इंगिनीमरणका तथा उनकी स्मृतिमें कल्याणकीर्ति-द्वारा एक जिनेन्द्र चैत्यालयके निर्माणका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १९९ पृ० ३७ ]

११९

उष्काल ( जि० उत्तर अर्काट, मद्रास )

सन् १००९, तमिल

पेरुमाल मन्दिरके एक मण्डपकी उत्तरी दीवालपर

[ यह लेख चोल राजा राजराजकेसरिवर्मन् ( राजराज १ ) के २४वें वर्षका है । जो ब्राह्मण, वैखानस और जैन चोल, पाण्डल तथा तोण्ड-मण्डलके गाँवोंके अधिकारी हैं वे यदि भूमिकर दो वर्ष तक न दें तो उनकी जमीन जब्त करानेका इसमें आदेश दिया है । ]

[ इ० म० उत्तर अर्काट ३०८ ]

१२०

बेचारक बोमलापुर ( मैसूर )

शक ९३५ = सन् १०१३, कन्नड

- |                |                 |                |
|----------------|-----------------|----------------|
| १ सकवर्ष ९३५   | २ नेय प्रमादीच  | ३ संवत्सरद आ-  |
| ४ षाढ सु दसमि  | ५ सोमवारदोल्    | ६ माकब्बेगन्ति |
| ७ मडिबद बाँधग- | ८ बुड परोक्षवि- | ९ नय निसिधिगे- |
| १० य कल्लनिरि- | ११ सिदं         |                |

[ यह लेख माकब्बेगन्ति नामक महिलाके समाधिमरणका स्मारक है ]

जो बीचगवुडने स्थापित किया था । तिथि आषाढ शु० १०, सोमवार, शक ९३५, प्रमादी संबत्सर ऐसी दी है । ]

[ ए० रि० मै० १९४२ पृ० २०७ ]

## १२१

**तोण्डूर ( द० अर्काट, मद्रास )**

११वीं सदी पूर्वार्ध, तमिल

[ यह लेख चोल राजा परकेसरिवर्मन् ( सम्भवतः राजेन्द्र १ ) के राज्यवर्ष ३का है । विण्णकोवरैयन् वयिरि मलैयन् नामक शासक-द्वारा वज्रसिग इलपेरुमानडिगल् नामक जैन आचार्यको गुणनेरिमंगलम् अपरनाम वलुवामोलि आरान्दमंगलम् नामक ग्राम तथा तोण्डूर ग्रामके कुछ उद्यान आदि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ८३ पृ० १६ ]

## १२२

**उदयपुर ( राजस्थान )**

संवत् १०७६ = सन् १०१९, संस्कृत-नागरी

[ उदयपुरके वासुपूज्यमन्दिरकी एक मूर्ति । यह मूर्ति संवत् १०७६ में बाहिल सोडक-द्वारा स्थापित की गयी थी ऐसा इस लेखमें कहा है । ]

[ रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २२६ ]

## १२३

**मरोल ( मैसूर )**

शक ९४६ = सन् १०२४, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्ल (प्रथम) के समय शक ९४६, रक्ताक्षि संबत्सरके उत्तरायण-संक्रमणके अवसरपर लिखा गया था । इसमें

नोलम्बवाडि तथा करिविडि प्रदेशके सामन्त नोलम्बवंशीय घटेयंककार-द्वारा मरवोलल्की बसदिके लिए कुछ भूमि अर्पण किये जानेका उल्लेख है। यह ग्राम उस समय सत्तिग ( सत्याश्रय ) की पुत्री महादेवीके शासनमे था। जैन आचार्य अनन्तवीर्य, गुणकीर्ति सिद्धान्तभट्टारक तथा उनके शिष्य देवकीर्तिपण्डितका भी इसमे उल्लेख है। ]

[ मूल कन्नडमे मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० ५० ]

१२४

### हैदराबाद म्युज़ियम ( आन्ध्र )

शक ९४९ = सन् १०२७, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा जयसिंह २ के राज्यकालका है। इस राजाकी कन्या सोमलदेवी-द्वारा पिरियमोसंगिके बसदिके लिए कुछ दानका इसमें उल्लेख है। तिथि शक ९४९ प्रभव संवत्सर ऐसी दी है। ]

[ एन्शण्ट इण्डिया १९४९ पृ० ४५ ]

१२५

### होसूर ( मैसूर )

शक ९५० = सन् १०२८, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्ल (१) के समय शक ९५०, विभव संवत्सरकी उत्तरायणसंक्रान्तिके दिन पौष शु० १३, रविवारको लिखा गया था। केशवरसका पुत्र दण्डनायक वावणरस तथा उसका बन्धु महासामन्ताधिपति श्रीपादरस इनके शासनका इसमे उल्लेख है। वावणरस-की पत्नी रेवकम्बरसिके अधीन सिन्दरस पोसवूर नगरपर शासन कर रहा था। उस समय आय्चगावुण्डने पोसवूरमे अपनी पत्नी कंचिकम्बेके स्मरणार्थ एक बसदि बनायी और उसे कुछ भूमि तथा एक उद्यान अर्पण किया। आय्चगावुण्डके पुत्र एरकके पुत्र पोलेगने यह लेख स्थापित किया था। ये मोरक कुलमें उत्पन्न हुए थे। ]

[ मूल कन्नडमे मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० ५५ ]



१२६

मस्की ( रायचूर, मैसूर )

शक ९५३ = सन् १०३२, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लके राज्यकालमें फाल्गुन शु० ९, सोमवार, शक ९५३, प्रजापति संवत्सरके दिन लिखा गया था । इसमें देसिगणके जगदेकमल्लजिनालयके लिए राजा-द्वारा कुछ भूमि आदिके दानका उल्लेख है । अष्टोपवासि कनकनन्दिभट्टारके निवेदनपर वह दान दिया गया था । स्थान राजधानि पिरियमोसंगि यह था । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २४७ पृ० ४२ ]

१२७

कागिनेल्लि ( धारवाड, मैसूर )

(शक ९)५४ = सन् १०३२, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा जगदेकमल्लके राज्यमें ५४ ( शक ९५४ ) वर्षमें लिखा गया था । इसमें जिनधर्मके भक्त कामदेवके एक पुत्र तथा आयतवर्माका उल्लेख है । इन्होंने एक मन्दिरके लिए कुछ सुवर्ण आदि दान दिया था । ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० २३ पृ० १२० ]

१२८

रायबाग ( मैसूर )

शक ९६३ = सन् १०४१, कन्नड

[ यह लेख आदिनाथमन्दिरके मण्डपमें लगा है । तिथि चैत्र व० १४, शक ९६३, शुक्रवार, विक्रम संवत्सर ऐसी दी है । अन्य विवरण प्राप्त नहीं है । ]

[ रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५४ पृ० ३४ ]

१२६

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

११वीं सदी पूर्वार्ध, तमिल

[ इस लेखका कुछ भाग दीवालमें दबा है । इसके प्रारम्भमें राजेन्द्र-चोल प्रथमकी ऐतिहासिक प्रशस्ति है । तिरुमणंजेरि निवासी कलिमानन् विजयालयमल्लन्-द्वारा देवमन्दिरमें दीप प्रज्वलित रखनेके लिए ९६ भेड़ें दान दी जानेका इसमें उल्लेख है । यह लेख चन्द्रनाथमन्दिरके बरामदेके बाजूमें खुदा है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०० पृ० ६५ ]

१३०

इलि ( जि० बेलगांव, म्हैसूर )

शक ९६६ तथा १०६७ = सन् १०४४ तथा ११४५, कन्नड

१-२ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलालनं । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य  
शासनं जिनशासनं ॥ ( १ )

३ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज पर-  
मेश्वर परममहेश्वर-

४ कं सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्याभरणं श्रीमदाहवमल्लदेवर  
विजयराज्य-

५ मुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचंद्रार्कतारं सलुत्तमिरे ॥ तत्पाद-  
पद्मोपजीवि ॥ मेले-

६ र्दं पगेवरं निर्मूलिसि जसमं निमिच्चिं दिग्भित्तिवरं कालङ्घिय  
बोलगाडि तले पालिसिदं तोंबता-

७ रुमं भुजबलदि ॥ ( २ ) आतन पुत्रं विनयोपेतं पायिम्म-नृपति-  
गोप्पुव सति

८ विल्यातियुते हम्मिकब्बेगे सीतेगे सरि माणेणब्बे लच्छलेयोगे-  
दरु ॥ (३) इष्टज-

- ९ नक्के चट्टसमयक्के महाजनमोजनक्केयुत्कृष्टतपोधनगैयलिदायव-  
१० नक्के सकन्यकालिकाग्निष्टमेगेष्टे नाक्कुसमयक्कनुरागदे बेगवि-  
११ तु संतुष्टते लच्छियब्बरसिगार् सरियर् सच्चराच्चरोविंथोलु ॥ (४)  
१२ सकलधरित्रियोलु नेगर्द वंदिजनं सले रूपिनेल्लगेयं प्रकटतेवेत्त दा-  
१३ नगुणमं कुलदुनतियं जिनांघ्रिगल्लगकुटिलच्चित्तमं पोगल्लुतिपुं-  
१४ दु कूडिय लिक्कदंक्कपालकन कुलोत्तमांगनेयनयिये लच्छलदेवियं  
१५ जगं ॥ (५) शरनिधिमेखलावृत्तवसुंधरेयेंब विलासिनीमुखांशुरुह-  
दवोलविराजि-  
१६ सुव बेळवलनाल्के पोदल्लद शोभेगागरमेनि(सि)र्प पूलि तिलका-  
कृतिरिंदेसेदिपुंदा पुरं सुरपु-  
१७ रमं कुबेरनकापुरमं नगुगुं विलासदिं ॥ (६) अल्लि ॥ सकल-  
न्याकरणार्थशा-  
१८ खच्चयदोलु कान्यंगलोलु संद नाटकदोलु वर्णकवित्वदोल्लेनेगर्द  
वेदांतंगलोलु  
१९ पारमाथि(क)दोलु लौकि(क)दोलु समस्तकलेयोलु वागीशनिंदं  
यशोधि-  
२० करादर् पोगल्लवल्लिगारलवे पेलु सासिर्वर ल्यातियं ॥ (७) स्वस्ति  
शकनृपकालातीतसंवत्सर-  
२१ शतगल्ल ९६६ नेय तारणसंवत्सरद पुण्य सुद्ध १० आदिवार-  
मुत्तरायण-  
२२ संक्रान्तिर्यदु ॥ यजनयाजनाध्ययनाध्यापनदानप्रतिग्रहष्टकर्म-  
निरतहं श्री-  
२३ (म) खालुक्यचक्रवर्तिब्रह्मपुरिस्थानपितृपितामहमहिमास्पदरक्षणा-

- २४ थंकोविदहं विदग्धकविशमकवादिवाग्विस्वरुमतिथियभ्यागत-  
विशिष्ट-
- २५ जनपूजनप्रियहं हिरण्यगर्भब्रह्ममुखकमलविनिर्गतऋग्यजु-  
२६ स्सामाथर्वणसमस्तवेदवेदांगोपसांगानेकशास्त्राष्टादशस्मृतिपुराण-  
२७ काव्यनाटकधर्मागमप्रवीणहं सप्तसोमसंस्थावभृथावगाहन-  
पवित्रोक्त-
- २८ तगात्रहं कांचनक(ल)शसितषट्छत्रचामरपंचमहाशब्दघटिकाभेरी-  
रवनि-
- २९ नादितरुमाश्रित(तजन)कल्पवृक्षरुमहितकालांतकरुमेकवाक्यहं  
३० शरणागतवज्रपंज(रहं च)तुलसमयसमुद्धरणहं श्रीकेशवादित्यदेव-  
३१ लब्धवरप्रसादरुमप्य श्रीमन्महाप्रहारं पूल्यूरोडेयप्रमु-  
३२ ख सासिवर्महाजनंगल दिव्यश्रीपादपद्मगलं (ल)च्छिद्यब्बरसि-  
यरु स-
- ३३ हिरण्यपूर्वकमाराधिसि भूमियं पडेदु बसदियं माडिसि खं-  
३४ डस्फु(टि)तजीर्णोद्धरणक्के पडुवण पोलदलु शिवेयगेरियांरुमत्तव-  
३५ सुगेयं मत्तरिंगडुच्चिन्नलेक्कदिंदरुवणमं मूरु पणमं तेत्तुवं-
- ३६ तागि श्रीयापनीयसंघद पुत्तागवृक्षमूलगणद श्रीबालचंद्रम-
- ३७ द्वारकदेवर कालं कचिं विटलु ॥ स्वास्त समस्तभुवनाश्रय  
श्रीपृथ्वीवल्लभ महा-
- ३८ राजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारकं सत्याश्रयकुलतिलकं चालु-  
क्यामरणं
- ३९ श्रीमत्प्रतापचक्रवर्ति जगदेकमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्त-
- ४० रामिवृद्धिप्रवर्धमानचंद्रार्कतारंवरं सलुत्तमिरे । शकव-
- ४१ षं १०६७ नेय क्रोधनसंस्तरदुत्तरायणसंक्रान्तिर्यंदु यमनि-
- ४२ यमस्वाध्यायध्यानधारणमौनानुष्ठानजपसमाधिशीलसंपन्नरूप

- ४३ श्रीमन्महाग्रहारं पूलियूरोडेयप्रमुत्त सासिवर्महाजनंग(ल)  
 ४४ दिव्यश्रीपादपद्मगलं पेगडे नेमणं सहिरण्यपूर्वकमाराविसि(धा)  
 ४५ (रा)पूर्वकं माडिसि कौ(डु) तम्म मुत्तव्वे लच्छियव्वरसियरु  
 माडिसिद बस-  
 ४६ दिवलिपं ऋषियराहारदाननिमित्तमखिलयाचार्यरु रामचंद्र-  
 ४७ देवर कालं कच्चियवरु मुन्नवालुव पडुवणपोलद शिवेयगेरियारुमत्त-  
 ४८ वंसुगेयि पडु(व)ण (मा)गदलु कलशवल्लिगेरिय स्था(न)दोल-  
 गारु मत्तकैय्यं  
 ४९ मत्तरिंगडुचिन्न(लेक्कदिंदरु)वणमं मूर पणमं तेत्तुंबंतागि बिट्टरु ॥  
 ५० पतिमक्ते धेमा.....सति पायिम्मरसनप्रमुते सकलजनस्तुते मा-  
 ५१ गियव्वेराणिगे सुत्त.....दो (नेम)य्यनौदार्यगुणं ॥ (८) जिनदेवं  
 तनगासन-  
 ५२ (थिं)जनताकल्पद्रुमं.....य्यने तम्मय्यननूनदानि कळिदेवं साभरा-  
 ५३ प्रेसरं तनगण्णं गुणरत्नभूषणने-संदिदं नेमंगेनल्लनवधाच(रणं)-  
 ५४ गे भूवल्लयदोलु पेल्.....॥ (९)

[ इस लेखके दो भाग हैं । पहला भाग चालुक्य सम्राट् आहवमल्ल सोमेश्वर प्रथमके राज्यमें शक ९६६ की उत्तरायण संक्रान्तिके समयका है । इनका सामन्त कालडिय बोलगडि था । इसका पुत्र पायिम्म था जिसने हम्मिकब्बेसे विवाह किया । उसे भागिणव्वे तथा लच्छियव्वे ये दो कन्याएँ हुई । लच्छियव्वेका विवाह कूंडि प्रदेशके शासकसे हुआ था । इसने पूलि नगरमें — जहाँ एक हजार धर्मनिष्ठ ब्राह्मण रहते थे — कुछ जमीन खरीदकर एक जैन मन्दिर बनवाया और उसके लिए यापनीय संघ-पुद्गागवृक्षमूल गणके बालचन्द्रभट्टारकको कुछ दान दिया ।

दूसरा भाग चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्ल ( द्वितीय ) के राज्यमें शक १०६७ की उत्तरायणसंक्रान्तिके समयका है । इसमें नेमण नामक

स्थानीय अधिकारीका उल्लेख है जिसने पूल नगरमें कुछ और जमीन खरीदकर उक्त मन्दिरको दान दी। उस समय रामचन्द्र वहाँके भट्टारक थे। यह नेमण उपर्युक्त लच्छियब्बेका प्रपौत्र था। ]

[ ए. ई० १८ पृ० १७२ ]

१३१

मुगद ( मैसूर )

शक ९६६ = सन १०४५, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल आहवमल्ल ( सोमेश्वर १ ) के समय शक ९६६, पार्थिव संवत्सर, चैत्र शु० ५, रविवारके दिन लिखा गया था। इसमें नार्गावुण्ड चावुण्ड-द्वारा मुगुन्द ग्राममें स्वनिमित्त सम्य-क्त्वरत्नाकर चैत्यालयके लिए कुछ भूमि अर्पण किये जानेका उल्लेख है। चावुण्डके पौत्र महासामन्त मार्तण्डय्य-द्वारा इस मन्दिरको एक नाटकशाला अर्पण किये जानेका भी इसमें उल्लेख है। उस समय पलसिगे तथा कोकण प्रदेशपर कदम्ब कुलके महामण्डलेश्वर चट्टय्यदेवका शासन चल रहा था। लेखमें कुमुदि गणके जैन आचार्योंकी विस्तृत परम्परा भी बतलायी है। ]

[ मूल कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० इ० ३० ११ पृ० ६८ ]

१३२

जोन्नगिरि ( कुर्नूल, आन्ध्र )

११ वीं सदी, कन्नड

[ इस लेखमें चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लदेवके समय वेगंडे सोवरस तथा मल्लिसेट्टिका उल्लेख है। इन्होंने जोन्नगिरिकी बसदिके लिए कुछ भूमि दान दी थी। ]

[ रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ६१७ पृ० ६० ]

१३३

तिगकूर ( कोइम्बतूर-मद्रास )

शक ९६७ = सन् १०४५, तमिल

- |                       |                              |
|-----------------------|------------------------------|
| १ स्वस्तिश्री         | २ को नाट्टन् वि-             |
| ३ विकरमशोल-           | ४ देवकुं शे-                 |
| ५ ल्लानिण्ड-          | ६ याण्डु ना-                 |
| ७ रपदावदु             | ८ अरत्तुला-                  |
| ९ ण्देवन्             | १० पेरन् आण ना-              |
| ११ ण् कणित मा-        | १२ णिक्कच्चेट्               |
| १३ टि चन्द्रिवश-      | १४ तियिल् मुक-               |
| १५ मण्डगम्            | १६ एडुपित्ते-                |
| १७ न् (॥) शकर या      | १८ ण्डु ९ १०० (६) (१०) ७ (॥) |
| १९ शिंगला ( न्तक ) न् | २० एण् पुदु मुक-             |
| २१ मण्डगम् (॥)        |                              |

[ यह लेख शक ९६७ का है। इस वर्षको नाट्टन् विक्रमचोल राजाके ४०वें वर्षमे चन्द्रवसतिके मुखमण्डपके निर्माणका इसमे उल्लेख है। यह कार्य अरत्तुलान् देवन्के पौत्र कणित माणिकक् सेट्टि-द्वारा किया गया था। ]

[ ए० इ० ३० पृ० २४३ ]

१३४

अरसोबोडि ( जि० विजापुर, म्हासूर )

शक ९६९ = सन् १०४७, कन्नड

- १ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज-  
परमेश्वर प-

- २ रममट्टारक सस्याश्रयकुलतिलक खालुक्याभरण श्रीमत्रैलोक्यम-
- ३ ल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचंद्रार्कता-
- ४ रंवरं सलुत्तमिरे । स्वस्ति अरिनुपमकुटघटितचरणारविंदेयर्  
गंगास्नान-
- ५ पवित्रेयर् दीनानाथचिन्तामणिगलेकवाक्यर् गुणद बेडंगियरप्प  
श्रीमद-
- ६ क्कादेवि ( य ) र् गोकागेय कोटेय सुत्तिर्द बीडिनलु विक्रमपुरद  
गोणदबेडंगिय
- ७ जिनालयक्के खण्डस्फुटितसुधाकर्मक्कं गन्धधूपदीपक्कं सरुगिगं  
मूलसंव-
- ८ व (र) सेनगणद होगरिय गच्छद नागसेनपण्डितर्ग अल्लिर्प  
ऋषियर्ग अजिय-
- ९ गं आहारदानक्कं अजियर कप्पटक्कं कडुव भूमि सकवर्ष ९६९ नेय
- १० सर्वजित् संवत्सरद चैत्रदमास्ये आदिस्थवारदंदिन सूर्यप्र-
- ११ हणनिमित्तं धारापूर्वकं माडि नगरदनुभवने मुख्यमागि किमु-
- १२ काडेप्पत्तर बल्लिय सर्वनमस्यमागि बिट्ट बाडं गाणद हाल्लरौदु
- १३ विक्रमपुरद यीशान्यद देसेयि तौटं मत्तरोदु ऊरिं तेंक मुरुवदिन पा-
- १४ ल नैरित्यद देसेयि पण्डितनागदेवंगे सर्वनमस्य मत्तर पंनेरडु  
अल्लिं तेंक
- १५ परेकार केतोजंगे सर्वनमस्य मत्तरिपत्तनाक्कु ऊरिं बडग रायगट्टेयि
- १६ मूड परेकार केतोजंगे तौट मत्तरौदु अल्लि पडुव कल्लुटिग  
सूरोजंगे स-
- १७ वनमस्य मत्तर पंनेरडु तौट मत्तरौदु दडिगरसन कय्यलु  
माखगोण्डु देवर्गे कोट्ट



१८ भूमि कप्पडिय केरेयि तँक मन्नेयबोळदलु सर्वनमस्य  
मसरु ५० ॥

१९ ई धर्ममं स्वधर्मदिं रक्षिसिदवर् वारणासियलु ओन्दु कोटि  
कविलेयु-

२० मं वेदपाळनर्प ब्राह्मणरिगे कोट्ट फ ( क ) मं पडेवर् ई धर्ममन-  
लिदव

२१ रा स्थानदोळनितु कविलेयुमननिर्पे ( तु ) ब्राह्मणर—

२२ सा ॥ सामा—

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल ( सोमेश्वर प्रथम ) के राज्यकालमें शक ९६९ की चैत्र अमावास्याके दिन लिखा गया था । इस समय अक्कादेवी गौकाग किलेके समीप शिविरमें थी । उसने विक्रमपुरके गोणद बेडंगि जिनमन्दिरके लिए मूलसंघ-सेनगण-होगरि गच्छके नागसेन पण्डितको कुछ दान दिया था । ]

[ ए० ई० १७ पृ० १२१ ]

## १३५

### नन्दवाडिगे ( मैसूर )

११वीं सदी-मध्य, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लदेवके समयका है । उनकी रानी मैल्लदेवी थी । उनके एक सामन्त भावनगन्धवारणने कई मठ, मन्दिर, तालाब आदि बनवाये थे जो निम्न स्थानोंपर थे — कल्याण, अण्णिगेरे, मुलुगुन्द, ( कोल्वु ) गे, नन्दापुर, कोहल्लि, मण्डलिगेरे, बेल्गलि, बनवासेपुर, करिविडि, नविले, नन्दवाडिगे, पेरुह । उसने पोन्नगुन्दका त्रिभुवनतिलक जिनालय, महाश्रीमन्त बसदि, पुरगूरका वीरजिनालय, कुन्दरगेका जिनालय आदिका जीर्णोद्धार किया था । उसके द्वारा दिये गये

कई दानोंका उल्लेख लेखमें किया है । इसका समय उत्तरायण संक्रान्ति कहा है । वर्ष निश्चित नहीं है । ]

[ मूल कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० ९९ ]

१३६

कल्याण ( नासिक, महाराष्ट्र )

११वीं सदी-पूर्वार्ध, संस्कृत-नागरी

[ यह ताम्रपत्र परमारवंशोय महाराज भोजके सामन्त यशोवर्मन्-द्वारा दिया गया है । द्वावेतपद देशमें स्थित कल्कलेश्वर तीर्थके महीशबुद्धिके स्थानके मुनिसुव्रतमन्दिरके लिए कुछ जमीन, तेलधानियाँ, दूकानें, और १४ द्रम्म दान दिये जानेका इसमें निर्देश है । ]

[ रि० आ० स० १९२१-२२ पृ० ११८ ]

१३७

हेब्बैल्लु ( मैसूर )

शक ९७५ = सन् १०५३, कन्नड

- १ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वी-
- २ वल्लभ महाराजाधिराज परम-
- ३ श्वर परममहाराज सत्याश्रयकुल-
- ४ तिलक चालुक्याभरण श्रीमत् त्रैलोक्य-
- ५ मल्लदेवर विजयराज्यमुत्त-
- ६ रौत्तरामिबुद्धिप्रवर्धमानमाचं-
- ७ द्राकैतारं सलुत्तमिरे स्वस्ति स-
- ८ मधिगतपंचमहाशब्द महाम-
- ९ ण्डलेश्वरं पट्टिपोम्बुर्चपुरवरेश्वरं पञ्चा-

- १० बतीलब्धवरप्रसादं मृगमदामोदं  
 ११ कन्दुकाचार्य मन्दरधैर्यं सुमत्सस्तु-  
 १२ स्थं सान्तरादित्यं रिपुकरीद्रकंठोरवं रण-  
 १३ रंगभैरवं कीर्तिनारायणं सौर्यपा-  
 १४ रायणं रिपुमंडलिकगोत्रगोत्राचलवज्र-  
 १५ दण्डं बिरुदभेरुडं महोग्रान्वयनमस्त-  
 १६ लगमस्तिमालियतुलबलसौर्य-  
 १७ शालि वन्दिस्सन्दोहानन्दीकृतसुन्दरकल्प-  
 १८ तांकुरनरिमंडलिकपतंगदीपांकु-  
 १९ रं विसिसनविजयविपुलीकृतकृत-  
 २० प्रतिज्ञं बिरुदसर्वज्ञं नामाद्यनेकां-  
 २१ कमालासमलंकृतं श्रीमत्  
 दूसरी ओर

- |                                |                                 |
|--------------------------------|---------------------------------|
| २२ वीरसान्तरदेवर् सान्तकिगे-   | २३ सासिरमुमं निष्कंटकमा-        |
| २४ गि प्रतिपालिसि सुखसंक-      | २५ थाविनोददिं राज्यं गेय्युत्त- |
| २६ मिरे तत्पादपञ्चोपजीवि       | २७ स्वस्ति समस्तदुस्तरारा-      |
| २८ तीमकुंमस्थलीविदारुणदा-      | २९ रुणकरासिधारासक्तमुक्ता-      |
| ३० पलमालालंकार वीरनारीम-       | ३१ णिहारायितभुजादण्डनहि-        |
| ३२ तमहावाहिनीमहीधरव-           | ३३ ज्रदण्डं जिनधर्मप्राकारं     |
| ३४ निजगोत्रनिस्तारं धर्मरत्ना- | ३५ करं सुमटारिमीकरं पति-        |
| ३६ हितांजनेयं सौर्यगां-        | ३७ गेयं स्वामिद्रोहदिशाप-       |
| ३८ दृं बैरिकोटिषरदं रण-        | ३९ रंगक्षेत्रपालं मच्चरिसु-     |
| ४० वरेल्देयसूलं दलदिं          | ४१ मुञ्जिरिव आयुमं मे-          |
| ४२ रेवं सुकविकोकिलसह-          | ४३ कारनेकांगवीरं विलासवि-       |
| ४४ धाधरं धैर्यमहीधरन्          | ४५ उपायनारायणं नीतिपा-          |
| ४६ रायणं वीरानगरुड-            | ४७ नामादिसमस्तप्रशस्ति-         |

- ४८ हित श्रीमन् नकुलरसर् ४९ स्मररूपरुन्नतर् नकुलर-  
 ५० सन तनयर् जनक्के रा ५१ मन् लक्ष्मीधररेन्दे-  
 ५२ न्दडे चाकुण्डराय- ५३ जुं नागवर्मनुं कर-  
 ५४ मेसेदरे ॥ मंगल  
 तीसरी ओर  
 ५५ वृत्त ॥ केडेयद् पे ( म् ) महामहिमराज-  
 ५६ सुतप्रतिपत्तिर्येबिवं तडेयदे वीरसान्त-  
 ५७ रमहीपति ता दयेगेय्दु कोखोडं वि-  
 ५८ डे निजपुत्र नीं बरिसेनिपी नेगलूतेयनेय्दे  
 ५९ कोट्टनेन्दडे दोरेयार्परार् नगुलभूप-  
 ६० नोली वसुधातलाग्रदोलु । परम-  
 ६१ आजिननिष्टदैवमनेपोर् शास्त्राग-  
 ६२ मांभोधिगल् गुरुगल् भाविसे पु-  
 ६३ षप्सेनमुनिपर अत्तिप्रियं वीरसा-  
 ६४ न्तर भूमिपति तन्दे तां पडियरं  
 ६५ श्रीकाटि ताय् पॅपलंकरिसुत्तिल्दरे-  
 ६६ यब्बे ये ( ने ) नगुलभूपालं महा-  
 ६७ धन्यनो ॥ नगुलरसन चित्तिप्रिये  
 ६८ मृगलोचने दण्डनायकोडुम्भन  
 ६९ ऐदुं मन्दिन सासि- ७० वरकण्डु काप्प-  
 ७१ रक्के इदन्लिदं क- ७२ विलेयनलिदं  
 ७३ चित्तिारिकेतोजन मगं बहु ७४ गि आय्वोजं ई शासनद  
 ७५ गेय्दं कल्लं  
 चौथी ओर  
 ७६ पुत्रि गुणान्विते चट्ट- ७७ वरसिगे दोरेयार् दान-  
 ७८ धर्मशीलोक्तियोल् ७९ सकवर्ष ९७५ नेय दु-

- |                                  |                                    |
|----------------------------------|------------------------------------|
| ८० मर्तिसंबत्सरं प्रवर्तिते      | ८१ वैशाखमासदक्षिणप                 |
| ८२ अर्धेकादशि आदित्य             | ८३ वारदं दु श्रीमन्महा-            |
| ८४ मण्डलेश्वरं वीरसान्तर         | ८५ नगुलरसंगे पर्वय-                |
| ८६ ल् पन्नरडर किरुदेरे           | ८७ बिट्टियुमं कादु परिहा-          |
| ८८ रं बिट्टिकेगेडु कल्लाडिन्ती   | ८९ मयदियनलिदं वा-                  |
| ९० रणासियोल् कुरुक्षे            | ९१ त्रदोल् सासिरकविलेयुं           |
| ९२ पार्वरुमनलिद पातकन-           | ९३ ककुं । स्वदत्तां परदत्तां वा थो |
| ९४ हरेत वसुंधरां षष्टिर्वर्षस-   | ९५ हस्त्राणि विद्यायां जायते क्रि- |
| ९६ मिः । विप्रकुलांबरचंद्रं      | ९७ श्रीप्रतिमेय मारसिंग-           |
| ९८ तनयं विद्वद्विप्रं गंगननृपनि- | ९९ योगप्रभु कविराज वल्लभं गो       |
| १०० विन्दं                       | १०१ पर्वयल् पन्नरडु                |
| १०२ पौबुचैनाडोले                 | १०३ भक्तगावे हृदिगा-               |
| १०४ ल कदगोड मैसेपन्नर-           | १०५ डुम नेलिबयलुं पा-              |
| १०६ लिगारं । वीरसिनु नगुल-       | १०७ रसनुमेय्दिवेतं सासिर-          |
| १०८ गद्याणं ॥ मंगलं              |                                    |

[ यह लेख एक स्तम्भके चारों बाजुओंपर लिखा है । चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लके अधीन पट्टिपौबुचके महामण्डलेश्वर वीरसान्तरके समयका यह लेख है । इसके मन्त्रीका नाम नकुलरस था । ये दोनों जैन कहे गये हैं । इनके गुरु पुण्यसेनदेव थे । नगुलरसके पिता पडियर काटि, माता अरेयब्बे तथा पत्नी चट्टुरसि थीं । इनके दो पुत्र चावुण्डराय और नागवर्म थे । लेखमें वीरसान्तर-द्वारा अंकेगेडु ग्राम और पर्वयल् विभागके कुछ करोंका उत्पन्न नकुलरसको अर्पित किये जानेका उल्लेख है । इस लेखके पाठकी रचना गोविन्दने की थी जो मारसिंगका पुत्र था और गंगराजाओंके समयसे कवियोंमें प्रिय था । लेखको चित्तिारि केतोवर्जके पुत्र आय्वोजने उकेरा था । लेखनिर्दिष्ट दानकी तिथि वैशाख व० ११, रविवार, शक

९७५ दुर्मति संवत्सर है ( यह अनियमित है क्योंकि शक ९७५ विजय संवत्सर था ) । ]

[ ए० रि० मे० १९३१ पृ० १९० ]

१३८

मुलगुन्द ( मैसूर )

शक ९७५ = सन् १०५३, कन्नड

- १-२ श्रीमद्भक्तिभरानतामरकिरीटानर्घ्यरत्नप्रमाजालालीढपदारविन्द-  
युगलः कन्दर्पदर्पापहः । त्रैलोक्योदरवर्तिकीर्तिविशदश्चन्द्रप्रभः  
सुप्रभो मन्थानां निवहं निराकुलमलं पायादपायाज्जिनः ॥ १
- ३ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वावरुलभ महाराजाधिराज परमे-  
श्वर परमभट्टारकं सस्या-
- ४ श्रयकुलतिलकं चालुक्यामरणं श्रीमत् त्रैलोक्यमल्लदेवर विजय-  
राज्यमुत्तरोत्तरामिवृद्धिप्रव-
- ५ दुर्मानचन्द्रार्कतारं सलुत्तमिरे । तत्तनयं समधिगतपंचमहाशब्द-  
महामण्डलेश्वरं वेंगी-
- ६ पुरवरेश्वरं समप्रचण्डं कुमरमार्तण्डं परकरिमदनिवारणनम्भन  
गन्धवारणं परिवारनिधानं
- ७ दानकानीनं हयवत्सराज रूपमनोजं रिपुनृपतिहृदयसेकलं भुवने-  
कमल्लं मण्डलिकशिरो-
- ८ मणि चालुक्यचूडामणि विद्विष्टसंहारं कटकप्राकारं श्रीमत्-  
त्रैलोक्यमल्लदेवपादपंकजभ-
- ९ मरं श्रीसोमेश्वरदेवं बेल्लोळमूनूरुं पुलिगेरेमूनूरुं सुखसंक-  
थाविनोददिनालुत्तमि-

- १० रे तत्पादपक्षोपजोवि ॥ वृत्तं । विनयवकाधारभूतं पतिहितचरित-  
वकाश्रयं सद्दिवेकके निवास—
- ११ संपत्तिगे, कुलभवनं सन्ततानूनदानके निधानं मान्तनवकागर-  
मेने नेगलदं सद्दवचोभूषणं भूविनु ( तं ) ( बे- )
- १२ लदेवनुद्यद्विधुविशदयशोव्याप्तदिवक्चक्रवालं ॥२ ईव गुणं गुणं  
पतिहिताचरितं चरितं परोप ( का- )
- १३ रावसथार्थमर्थमघमिज्जनतत्त्वमे तत्त्वमेव सद्भावने तम्मोकोन्दि  
नेलेवेत्तिरे कीर्तिगे नोन्तरिन्तु
- १४ बेलदेवनुमोलपनाब्द बलदेवनुमंकद शान्तिवर्मनुं ॥३ वचनं ॥  
अन्तु सकलगुणगणोत्तुंगरं जिनधर्म-
- १५ निर्मलरं निखिलजोपकारनिरतरुमुदात्तकीर्तिलतानिकेतनरुम-  
गलदेवप्रियतनूमवरं गोजि-
- १६ कास्त्रिकाकृशोदरनिबिडनिबद्धपट्टरुमाणि पोगल्लेवेत्त तत्सहोदर-  
त्रयदोल् अग्रभवनप्प सन्धिचिग्र-
- १७ हाधिकारि ॥ वृत्तं । जिनपादोबुजभृंगनंगजनिमं गम्यार्थरत्नाकरं  
मनुमागं विनयाणवं कलिमलप्रध्वंस-
- १८ कं केशिराजन बंदि नयसेनसूरिपदपञ्चाराधनारक्तचित्तनुदात्तं  
नेगलदं विवेक—महोभाग-
- १९ दोल् ॥ ४ आ महानुमावं धर्मप्रभावप्रकटीकृतचित्तनागे ॥  
कन्दं । सिन्द—कनवलानन्दनकररु-
- २० पनसमसाहसनिलयं सिन्दनूपनन्दनं लसदिन्दुकरप्रतिमकीर्ति-  
कान्ताकान्तं ॥ ५ जिनधर्मनिर्मलं सत्यनिधा-
- २१ नननूनदान—अनन्दिन कंचरसं पंचेषुनिमं मुकुन्दसिन्ददेश-  
लकामं ॥ ६ एंव पॅपिंगं जसक्कमागरमा—

- २२ द कंचरसं तप्त सीवटदोलगे धर्मानुरागचित्तं सहिरण्यपूर्वकं  
कुडे कोण्डु ॥ श्रीमूलसंचवारा-
- २३ शौ मणीनामिव सार्चिषां । महापुरुषरत्नानां स्थानं सेनान्वयो-  
जनि ॥ ७ व । आ चन्द्रकवाटान्वयवरिष्ठ-
- २४ रजितसेनमट्टारकर् तदन्तेवासिगल् कनकसेनमट्टारकरवरशिष्यर् ॥  
कन्द । चान्द्रं कातंत्रं जैनेन्द्रं श-
- २५ व्दानुशासनं पाणिनि मत्तैन्द्रं नरेन्द्रसेनमुनीन्द्रं गेकाक्षरं पेरंगिवु  
मोगे ॥ ८ अन्तु जगद्विख्यातरादर
- २६ रवर शिष्यर् ॥ वृत्त । निनगेनेबेनो शाकटायनमुनीशनन्ताने  
शब्दानुशासनदोल् पाणिनि पाणिनीयदोले चन्द्रं चा-
- २७ न्द्रदोल् तज्जिनेन्द्रने जैनेन्द्रदोला कुमारने गडं कौमारदोल्  
पोलपरन्तेने पोलर् नयसेनपण्डितरोलन्यर्वाधि-
- २८ वीतोर्वियोल् ॥ ९ इन्तु समस्तशब्दशास्त्रपारावारपारगर् नयसेन  
पण्डितदेवर पादप्रक्षालनगे-
- २९ यदु । शकवर्षमोबयनूरेल्पत्तय्दनेय विजयसंवत्सरदुत्तरायण-  
संक्रान्तिथ्यंदु तीर्थद ब-
- ३० सदिगाहारदाननिमित्तं निर्जाबिकेयप्प गोजिकब्बेगे परोक्षविनयं  
नगरमहाजनमुं पंचमटस्था-
- ३१ नमुमरिये नगरेश्वरद् गडिबद कोलोल्लेदु किरुगेरेय केय्योलगे  
सर्वबाधापरिहारमा-
- ३२ गे बिट्ट केय्मत्तर पन्नेरदु । आ केय्गे गुड्डे ईशान्यदोल् कविलेय  
कल् आरनेयदोलादित्थन कल् नैक्क-
- ३३ त्यदोल् चन्द्रन कल् वायव्यदोल् पश्चावतिय कल् असगगेरेय  
तेंक सासिर बल्लिक्य तौटवोन्दु ॥ स्वदत्ता—



३४ ( परदत्तां वा ) यो हरेत वसुन्धरां । षष्टिर्वर्षसहस्राणि  
विष्ठायां जायते कृमिः ॥ १०

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् सोमेश्वर ( प्रथम ) त्रैलोक्यमल्लके राज्य-  
में शक ९७५ में लिखा गया था । उस समय बेल्वोल तथा पुलिगेरे  
प्रदेशपर सम्राट्का पुत्र सोमेश्वर ( द्वितीय ) शासन कर रहा था । वहाँके  
सन्धिबिग्रहाधिकारी बेलदेव थे । ये अगलदेव तथा गोज्जिकब्बेके पुत्र थे ।  
बलदेव तथा शान्तिवर्मा उनके बन्धु थे । बेलदेवकी प्रेरणासे सिन्दकुलके  
सरदार कंचरसने नयसेन पण्डितदेवको कुछ भूमि दान दी । नयसेनकी गुरु-  
परम्परा इस प्रकार थी — मूलसंघ-सेनान्वय-चन्द्रकवाट अन्वयके अजितसेन-  
कनकसेन-नरेन्द्रसेन-नयसेन । नरेन्द्रसेन तथा नयसेन दोनों व्याकरणशास्त्रके  
विशेषज्ञ थे ।

[ ए० ई० १६ पृ० ५३ ]

१३६-१४०

नन्दिबेचूर ( बेल्लारो, मैसूर )

शक ९७६ = सन् १०५४, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लके समय शक ९७६, उत्तरायण  
संक्रान्ति, रविवार, जय संवत्सरका है । इसमें नोलम्ब पल्लव पेर्मनिडिके  
राज्यकालमें देसिगगणके अष्टोपवासि भटारको रेन्चूरुके महाजनों-द्वारा  
भूमि, उद्यान आदिके दानका उल्लेख है । लेखमें जगदेकमल्ल नोलम्ब  
ब्रह्माधिराजका सामन्तके रूपमें उल्लेख किया है । इस लेखके पीछेकी ओर  
प्रायः ऐसे ही लेखमें अष्टोपवासिमुनिको बहुरुमें दिये हुए दानका वर्णन है ।  
इसमें वीरगण्डिसिद्धान्तिका भी उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९१८-१९ क्र० २०१ पृ० १६ ]

१४१

कोगलि ( जि० बेल्लारी, मैसूर )

शक ९७७ = सन् १०५५

जैन मन्दिरके आगे एक शोडमें, कन्नड

यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लके राज्यकालका है । इसमें कहा है कि इस मन्दिरका निर्माण गंग राजा दुर्विनीतने किया था । लेखके समय जैन आचार्य इन्द्रकीर्तिने इस मन्दिरको कुछ दान दिया था । इन्द्रकीर्तिका वर्णन इस प्रकार किया है—

श्रीमदरुहचरणसरसिहभृंग, कोण्डकुन्दान्वयसमूहमुखमंडन, देशीयगणकुमुदवनशरच्चन्द्र, कोकलिपुरेन्द्र, त्रैलोक्यमल्लसद.सरसिकलहंस, कविजनाचार्य, पण्डितमुखाम्बुरुहचण्डमार्तण्ड, सर्वशास्त्रज्ञ, कविकुमुदराज, त्रैलोक्यमल्लेन्द्रकीर्तिहरिर्मूर्ति ]

[ ६० ए० ५५, १९२६ पृ० ७४, ६० म० बेल्लारी १९६ ]

१४२

डम्बल ( मैसूर )

शक ९८१ = सन् १०५९, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लदेव ( सोमेश्वर १ ) के समय चैत्र शु० १३, रविवार शक ९८१, विकोरि संवत्सरके दिन लिखा गया था । इसमें धर्मबोलल्लके नगरजिनालयके लिए बाचग्यसेट्टिके जमात बीरय्यसेट्टि द्वारा कुछ सुवर्णदान दिये जानेका उल्लेख है । ]

[ मूल कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० ६० ६० ११ पृ० ८९ ]

१४३

भोरव ( धारवाड, मैसूर )

शक ९८१ = सन् १०६०, संस्कृत-कन्नड

[ यह लेख मार्गशिर शु० २ शक ९८१ विकारि संवत्सरका है। इसमें यापनीय संघके जयकीर्तिदेवके शिष्य नागचन्द्र सिद्धान्तदेवके समाधि-मरणका उल्लेख है। उनके शिष्य कनकशक्ति सिद्धान्तदेवने यह निसिधि स्थापित की थी। नागचन्द्रको मन्त्रचूडामणि यह विरुद दिया है। ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई० २३९ पृ० ५६ ]

१४४

लुब्बि ( जि० धारवाड, मैसूर )

शक ९८२ = सन् १०६०, कन्नड

[ इस लेखमें सच्चि नगरके धोरजिनालयके आचार्य कनकनन्दिके समाधिमरणका उल्लेख है। इनकी निसिधि भागियब्बे-द्वारा स्थापित की गयी। इस लेखकी रचना वज्रने की तथा नाकिगने उसे उत्कीर्ण किया। तिथि वैशाख शु० ५, रविवार शक ९८२ शर्वरी संवत्सर ऐसी थी। ]

[ रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० क्र० १५ पृ० २५६ ]

१४५

तोललु ( मैसूर )

शक ९८३ = सन् १०६२, कन्नड

इस लेखकी पहली ८ पंक्तियाँ धिस गयी हैं।

९....कम्बुकन्धरे केलेयव्वरिसि वीरगंग पोयिसलगं

१० पेम्पनवच्चु....विनयार्क पो-

११ यिसलज्जनपं....माडि ॥ श्रीवर्धमानस्वामि-

- १२ गल धर्मतीर्थं प्रवर्तिसुवलि गौतमस्वामिगलिं भद्रबाहुस्वामि-  
गलिबलि  
१३ पुष्पदन्तभट्टारकरि.....मेघचन्द्र  
१४ ...श्रीमूलसंघ-  
१५ द बेलवेय अभयचन्द्रपण्डितगो विनयादित्यहोयिसलदेवरु शक-  
वर्ष ९८३ शुभकृतसंवत्सरद  
१६ उत्तरायणसंक्रमणद दानार्थदेमण्ण धारापूर्वकं कोट्ट अदकें तेरे ह  
१७ णवट्ठु हणवारमत्तदि देवर चरुपिगे यिप्पत्तयरहु सलगेय  
धारापूर्वकं माडि  
१८ बिट्ट दत्ति तोल्ललहल्लिष मुद्दगौडनु तिप्पगौडनु वुरत्तेकलु  
यिरभुगाम्ब होर-  
१९ गेरिय मूदणभूमि विग्गुड्डेय भूमिय अभयचन्द्रपण्डितरिगे धारापू-  
२० वकं माडि बिट्टरु ईं धर्मवन् अवतोळ्ळनु.....

[ इस लेखमे होयसल राजा विनयादित्य-द्वारा शक ९८३ मे उत्तरा-  
यणसंक्रमणके अवसर पर मूलसंघके पण्डित अभयचन्द्रको कुछ भूमिदान  
दिये जानेका उल्लेख है। अभयचन्द्रको पूर्वपरम्परामें गौतमस्वामी,  
भद्रबाहुस्वामी, पुष्पदन्तभट्टारक तथा मेघचन्द्रका उल्लेख किया है।  
मुद्दगौड तथा तिप्पगौड द्वारा भी कुछ भूमिदान दी गयी थी। ये दोनों तोल-  
लहल्लिके निवासी थे। ] [ ए० रि० मै० १९२७ पृ० ४३ ]

१४६

पालियड ( गुजरात )

संवत् १११२ = सन् १०६६, संस्कृत-नागरी

१ सिद्धं विक्रम संवत् १११२ चैत्र सुदि १५ अद्यह आकाशिका-  
ग्रामावासे समस्त-

- २ राजावकीविराजितमहाराजाधिराजश्रीमीमदेवः ॥  
वायडाधिष्ठानप्रति-
- ३ वद्धवी (षो) ढकोत्तरग्रामशतान्तःपातिसमस्तराजपुरुषान् ग्रा(ह्य)  
णोत्त ( रान् ) ज-
- ४ नपदांश्च बोधयत्यस्तु वः संविदितं यथा अद्य सोमग्रहणपर्वणि  
चराचर-
- ५ गुरुं सर्वज्ञमभ्यर्च्य वायडाधिष्ठानीयवसतिकार्ये अत्रैव वायडा-  
(धि)ष्ठाने
- ६ (च) रीक्षेत्रान्तरितया गुडहुलापालिसंलग्नयावणिकसादाकभूमी-  
सं ( बध्य )-
- ७ मानया कलसिकाद्वयवापभुवा सहास्यैव सादाकस्य सत्का  
हकद्वयस्य २
- ८ भूः शासन (ने) नौदकपूर्वमस्माभिः प्रदत्तास्याद्भूतः पूर्वस्या  
दिशि कस्य
- ९ पालकेसरिसत्कं क्षेत्रं दक्षिणस्यां च राजकीया चरी । पश्चिमा
- १० यां च वाणिय (ज) कमामलीयं क्षेत्रमुत्तरस्यां च पालवाड-  
ग्राममा-
- ११ गं इति चतुराघाटोपलक्षितां भुवमेतामवगम्य एतन्निवासि-  
जनपदै-
- १२ यथा दीयमानभागभोगकरहिरण्यादि सर्वमाशा(श्रव)णविधेयै-
- १३ भूत्वास्यै वसतिकार्ये समुपनेतव्यं सामान्यं चैतत्पुण्यफलं  
मत्वास्म-
- १४ द्वंशजैरन्यैरपि भाविमोक्तभिरस्मत्प्रदत्तधर्मदायोयमनुमन्तव्यः
- १५ - १६ नित्य-के शापात्मकद्व्योक्त
- १६ लिखितमिदं कायस्थ-

१७ कांचनसुतवटेश्वरेण । दूतकोत्र महासांधिविग्रहिकश्रीभोगादित्य  
इ (ति)

१८ श्रीमीमदेवस्य ॥

[ इस ताम्रपत्रमें चौलुक्य राजा भोमदेव ( प्रथम ) द्वारा वायड  
अधिष्ठानकी एक बसतिका ( जिनमन्दिर ) के लिए चैत्र शु० १५ संवत्  
१११२ के दिन कुछ भूमिके दानका उल्लेख है । ]

[ ए० ई० ३३ पृ० २३५ ]

१४७

मोटे बेन्नूर ( धारवाड, मैसूर )

शक ९८८ = सन् १०६६, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लके समय शक ९८८, पुष्य  
शु० ५, सोमवार, पराभव संवत्सरके दिनका है । इसमें महामण्डलेश्वर  
लक्ष्मरस-द्वारा मूलसंघ-चन्द्रिकावाटवंशके शान्तिनन्दि भट्टारकको भूमि दान  
दी जानेका उल्लेख है । यह दान बेन्नूरमें आय्चिमय्य नायक-द्वारा  
निमित्त बसदिके लिए था । ]

[ रि० सा० ए० १६३३-३४ क्र० ई० ११३ पृ० १२९ ]

१४८

चांदकवटे ( बिजापूर, मैसूर )

शक ९८९ = सन् १०६७, कन्नड

[ इस लेखमें फाल्गुन व० ३ शक ९८९ प्लवंग संवत्सरके दिन सूरस्त  
गणके मध्वनन्दि भट्टारककी निसिधिका उल्लेख है । सिन्दिगे निवासी  
आकिमब्बेबे यह निसिधि स्थापित की थी । ]

[ रि० सा० इ० १९३६-३७ क्र० ई १४ पृ० १८२ ]

१४६

मत्तिकट्टि ( जि० धारवाड, मैसूर )

शक ९९० = सन् १०६८, कन्नड

[ यह लेख टूटा हुआ है । मत्तिकट्टि ग्रामकी कुछ जमीन पेगंडे कालि-  
मय्यने मत्तिसेन भट्टारकको दान दी इसका इसमें निर्देश है । ( यह नाम  
मत्तिसेन अथवा मल्लिसेन हो सकता है ) । यह दान कालिमय्य-द्वारा  
निर्मित एक जिनालयके लिए दिया था । कालिमय्यको ( चालुक्य ) सम्राट्  
त्रैलोक्य ( मल्लदेव ) का पादपद्मोपजीवी कहा है । ]

[ रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ४२ ]

१५०-१५१

करन्दै ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

सन् १०६८, तमिल

[ इस लेखमें चोल वंशके राजा राजकेसरिवर्मन् वीरराजेन्द्रदेवके राज्य  
वर्ष ५ में तिरुक्कामकोट्टपुरम्के निकट करन्दै ग्रामके जिन मन्दिरके लिए कुछ  
भूमि ग्रामसभाके तीन सदस्यों-द्वारा दान दिये जानेका उल्लेख है । यही-  
दूसरे लेखमें इस मन्दिरमें सततदीप रखनेके लिए कुछ बकरियोंके दानका  
उल्लेख है । इस लेखमें मन्दिरके देवताका उल्लेख अरुगर् देवर् वीर-  
राजेन्द्रपेरुम्बल्लि आल्वार् ऐसा किया है । यह दान कालियूर प्रदेशके  
परम्बूर ग्रामके तुगिलिकिलान् अरयन् उडैयान्-द्वारा दिया गया था । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १२९-१३० ]

१५२

मत्तावार ( मैसूर )

शक ९९१ = सन् १०६९, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादाभोषलांछ-

- २ नं । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जि-
- ३ नशासनं ॥
- ४ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द महामण्डलेश्व-
- ५ रं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलां-
- ६ बरधुमणि सम्यक्तचूडामणि मल-
- ७ परोलुगण्डाद्यनेकनामावलीविराजितरूप्य श्री-
- ८ मत्त्रै ( लो ) क्यमल विनयादित्य होय्सल-
- ९ देवर् गंगवाहितोभत्तस्सासिरमनाल्दु
- १० सुखदिं पृथ्वीराज्यं गेल्ये सकवर्ष १९१ ने-
- ११ य पिंगलसंवत्सरद् बैशाख शुद्धत्रयोदशि बृह-
- १२ चारदल् पिंदु देवसं होय्सलदेवर् मत्तवुरके
- १३ कालं तिर्वितंदु बिजयंगेय्दंदु बसदिगे वंदि
- १४ देवरं कंडि बेट्टदोले कल्द्रव विल्लियके माडि-
- १५ सिद्धरुल्लोके माडिसिवेंदडे माणिकसेट्टि
- १६ यिन्तेंदु बिन्नपंगेय्दम् देवर् नीवूरोल्लोंदु
- १७ बसदियं माडिसि भूमियं बिट्ट मा-
- १८ नमहिमेगलं कोंट्टडे बडवळवर् निर्मद-
- १९ द्दर्थक्के प्रमाणुंटे देवरर्थमं मल्लेय-
- २० रसुगल हडद मत्तमुं समानमदर
- २१ माणिकसेट्टिय माति मेखि नक्कु करवोल्लितें-
- २२ दु बसदियनूरोलगे माडिसि सामियं
- २३ माणिकसेट्टि राजगावुण्ड मुद्गगावुण्डरिं बे-
- २४ सायिदेन्नूरु (?) मत्तक्के बिडिसि ॥ तेरेयोल् प-
- २५ डं नाडिलियलि सिद्धायदल्लि मत्तनूल नेळ वि-
- २६ नयायितनू पम्पेल्लेरेगळ मत्तवूर व-
- २७ सदिगे बिट्टं ॥ अंतु बिट्टु बसदियवसदलिपळव-



- २८ मनेगल माडिसि रिषिहखिल्येंदु पेसरनिहु  
 २९ मनेदेरे मादुवेदेरे ऊरुट्टिगे तीदे सु-  
 ३० रंतु कयतें सेसे ओसगे मनकरे कूट क-  
 ३१ कन्दि बीरवण कोइतिवण कत्तरिवण अडेकलु-  
 ३२ वण हडवलेय हदियराय कुंभर बि-  
 ३३ ट्टि कंमर बिट्टि यिवोलगागि हलवु महिमे-  
 ३४ गलं विनयादित्यहोयसलदेवर् आचंद्रार्क-  
 ३५ तारंभरं सल्लो ॥ इन्ती धर्मदोलावनानुं तप्पिद-  
 ३६ वं गंगेयलु गंगेयं कौदु तिन्दं लिंगालि-  
 ३७ पं गेय्दनिस्थानवे कट्टेगल स्थानं जागवल्ल  
 ३८ मत्तावुर हल्लिय गावुण्ड तानित्तुदक्के पे-  
 ३९ न्दे नित्तुददक्के देवगृह  
 ४० वह नानवक—होलंहा-वागिर्प ॥ ४०००००

[ यह लेख होयसल वंशके राजा विनयादित्यके समय वैशाख शु० १३, बृहस्पतिवार, शक ९९१ पिंगल संवत्सरके दिन लिखा गया था । मत्तवूर ग्रामके लिए एक नहर बनवायी थी तब राजा विनयादित्य वहाँ गये थे । इस ग्रामकी बसदि ग्रामके बाहर एक पहाड़ीपर थी । उसे देखकर राजाने ग्रामीणोंसे पूछा कि ग्राममे बसदि क्यों नहीं है ? इसपर माणिक-सेट्टिने कहा कि ग्राममें बसदि बनानेकी हमारी इच्छा है किन्तु हम गरीब हैं । तब राजाने ग्राममें बसदि बनवाकर नाडलि ग्रामके कुछ करोंका उत्पन्न उसे दान दिया । माणिकसेट्टि, राजगावुण्ड तथा मुद्गावुण्डने भी बसदिके लिए कुछ भूमि दान दी । ]

१५३

सोरदूर ( मैसूर )

शक ९९३ = सन् १०७१, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्लदेव ( सोमेश्वर २ ) के समय माघ शु० १, रविवार, शक ९९३, विरोधकृत् संबत्सर, उत्तरायणसंक्रान्तिके अवसरपर लिखा गया था ( यहाँ माघ स्पष्टतः गलत है जो पौष होना चाहिए । ) उक्त समय महाप्रधान सेनाधिपति कडितवेगडे दण्डनायक बल-देवय्य-द्वारा सरटवुर ग्राममें स्थित बलदेवजिनालयके लिए कुछ भूमि अर्पण की गई थी । बलदेवय्यके पिता गंग कुलके अगलदेव थे, माता गोज्जिकब्बे थीं तथा उसके ज्येष्ठ बन्धुका नाम बेल्लदेव था । इस दानकी व्यवस्थापिका हुलियब्बाज्जिके सूरस्तगण-चित्रकूटान्वयके सिरिण्दिपण्डितकी शिष्या थीं । उक्त मन्दिरको सरटवुरके दो-सौ महाजनोंने भी कुछ भूमि, तेलधानी तथा घर अर्पण किये थे । सिरिण्दिपण्डितकी गुरुपरम्परा इस प्रकार दी है - चंदण्दि - दावण्दि - सकलचन्द्र - कनकनन्दि - सिरिण्दि । ]

[ मूल कन्नडमे मुद्रित ]

[ सा० इ० ३० ११ पृ० १०७ ]

१५४

गावरवाड ( जि० धारवाड, मैसूर )

शक ९९३-९४ = सन् १०७१-७२, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥
- २ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लभं महाराजाधिराजं परमे-श्वर परममहारकं स-
- ३ त्याश्रयकुलतिलकं चालुक्याभरणं श्रीमद्भुवनैकमल्लदेवर विजय-राज्यमुत्तरोत्तरामिवृद्धिप्रवर्धमानमाचं-

- ४ द्राक्तरं सलुत्तमिरे । तत्पादपञ्चोपजोवि समधिगतपंचमहाशब्द  
महामंडलेश्वरनुदारमहेश्वरं चलके बलुगंडं ( शौर्यमार्तंडं )  
पतिगे-
- ५ कदाडं संग्रामगरुडं मनुजमान्धातं कीर्तिविल्यातं गोत्रमाणिक्यं  
विवेकचाणाक्यं परनारीसहोदरं वीरवृकोदरं को-
- ६ दंडपार्थ सौजन्यतीर्थं मंडलीककंदीरवं परचक्रमैरवं रायदंडगोपालं  
मलेय मंडलीकमृगशार्दूलं श्रीमद्भुव-
- ७ नैकमल्लदेवपादपंकजभ्रमरं श्रीमन्महामंडलेश्वरं लक्ष्मरसरु  
बेल्वोलमूनूरुमं पुलिगेरमूनूरुमन्तेरडरुनूरु-
- ८ मं दुष्टनिग्रहशिष्टप्रतिपालनेयिं प्रतिपालिसुत्तमिरे ॥वृ॥ अणुगाल्  
कार्यद शौर्यदाल् विजयदाल् चालुक्यराज्यक्के कार-
- ९ णमादाल् तुलिलालतनक्के नेरेदाल् कट्टायदाल् मिक्कमन्नणेयाल्  
मान्तनदाल् नेगलत्तेवडेदाल् विक्रान्तदाल् मेळदाल् रणदाला-  
लदनेन-
- १० चुवावेडेयोळं विश्वासदोलु लक्ष्मण ॥ कलितनमिल्ल चागिगे  
वदान्यते मेय्गळिगिल्ल चागि मेय्गळियेनिपंगे शौचगुणमि-
- ११ ल्ल करं कलि चागि शौचिगं निले नुडिवोजेयिल्ल कलि चागि  
महाशुचिसत्यवादि मंडलिकरोळीतनेन्दु पोगल्लुं बुधमंड-
- १२ लि लक्ष्मभूपन ॥ कुदुरेय मेले बिल् परसु तीरिगे सूलिगे पिंडि-  
वालमेत्तिद करवालवार्दिडुव कर्कडे पारुव चक्रमेन्दोडेन्तो-
- १३ दरुवरेन्तु पायिसुवरेन्तु तरुम्बुवरेन्तु निलपरेन्तोदरुवरेन्तु लक्ष्मण-  
नोलान्तु बटुं कुवरन्यभूभुजर् ॥ एने ने-
- १४ गळद लक्ष्मभूपति जनपतिभुवनैकमक्षुदेवादेशं तनगेसदिरे माडि-  
सिदं [ जिनशा- ] सनवृद्धियं प्रवर्धनमागलु ॥ आ चैत्याळ-

- १५ यद् पूर्वावतारमेन्तेने ॥क॥ श्रीवसुधेशन बावं रेवकनिर्मडिय  
वल्लभं बुतुगनात्मावगतसकलशास्त्रनिलाविश्रुतकीर्ति
- १६ गंगमंडलनाथ ॥ वृ ॥ रुडिगे रुडिवेत्तेसेद बेल्वलदेशमनाल्द  
गंगपेर्माडिगलिन्दमण्णिगेरे नालकेरेवट्टेनिसिच्त् नाड नाडा-
- १७ डिगलुंयमैबिनेगमा पुरदोलु जयदुत्तरंग पेर्माडियिनाय्त्तु बुतुग-  
नरेंद्रनिनल्लि जि-
- १८ नैद्रमंदिर ॥ वृ ॥ संगतभागे माडि तलवृत्तियनल्लिगे मूडगेरि  
गुम्मुंगोलनादियागे नेगल्दिट्ट-
- १९ गें गावरिवाडमैव बाडंगल शासनं बेरसु सर्वनमस्यमिवेंदु बिट्टु  
कोट्टं गुणकीर्तिपंडितगें भक्ति-
- २० यिनुत्तमदानशक्तियि ॥क॥ उदितोदितमेने विमवास्पदमेने भुवन-  
यक्वन्धमेने संचलमागदे गंगा-
- २१ न्वयमुल्लिनमिदु सर्वनमस्यवागि नडेयुत्तमिरलु ॥ वृ ॥ परम-  
श्रीजिनशासनक्के मोदलादा मूलसंधं
- २२ निरन्तरमोप्पुत्तिरे नन्दिसंधवेमरिदादन्वयं पेंपुवेत्तिरे सन्दर्  
वल्लगारमुख्यगणदोलु गंगान्वयक्कि-
- २३ न्तिवर्गुस्सलु तामेने वर्धमानमुनिनाथर् धारिणीचक्रदोलु ॥  
श्रीनाथर् जैनमार्गोत्तमरेनिसि तपःख्यातियं
- २४ ताल्दिदर् सज्जानात्मर् वर्धमानप्रवरवर शिष्यर् महावादिगलु  
विद्यानन्दस्वामिगल् तन्मुनिपतिगनुजर् तार्किंका-
- २५ कर्मिधानाधीनर् माणिक्यनंदिव्रतिपतिगलुवर शासनोदात्त-  
हस्तरु ॥ तदपस्यर् गुणकीर्तिपंडितर् अवर् तच्छास-

- २६ नरुयातिकोविदरा सूरिगलात्मजर् विमलचन्द्रर् तत्पादांभोजषट्-  
पदर् उद्यद्गुणचंद्ररन्तवर शिष्यरु नोद्विशास्त्रा-
- २७ र्थदोलु विदितरु गण्डविमुक्तरिन्नमयनन्धाचार्यरायोंत्तमरु ॥  
वृ ॥ पोले चोलं नेलेगेट् तन्न कुल-
- २८ धर्माचारमं बिट्टु बेलवलदेशकडियिट् देवगृहसंदोहंगलं  
सुट्टु कय्यले पापं बेलेदेत्ति-
- २९ नल्के धुरदोलु त्रैलोक्यमल्लंगे पंदलेयं कोटसुवं बिसुट्टु निज-  
वंशोच्छित्तिं माडिद ॥क॥ श्रीपेर्मा-
- ३० नडि माडिसिदी परमजिनालयंगलं पोलेवदिदा पाण्डयचोलनंब  
महापातकतिवुकनलिदधोगतिगिलि-
- ३१ द ॥ वृ ॥ बलिकी बेलवलदेशमं पडेद दंडाधीशसामन्तमंडलिकर्  
धर्मद बट्टेगेट्टु नडेयुत्तिर्दल्लि तज्जं मन-
- ३२ गोले कालीयगुणेतर् कृतयुगाचारान्वितं लक्ष्ममंडलिकं निमल्ल-  
धर्मयत्तलेय नष्टोद्धारमं माडि-
- ३३ द ॥ ई नेलदोलु नेगहतेय पोगलतेय बाल्तेय पुण्यतीर्थ-  
सन्तानदोलिन्नविल्लेनिसि संदुट्टु दक्षिणगंगे तुंगभ-
- ३४ द्रानदि तन्नदीतटदोलोप्पुव कक्करगोण्डमेंबधिष्ठानदोलुवराधिपति  
चक्रधरं नेलसिर्द बीडिनोलु ॥
- ३५ वृ ॥ शक्रकालं गुणलब्धिरंगणनाविख्यातमागल् विरोधकृदकृदं  
बरे चैत्रमागे विधुवरसंकान्तिपोलु पु-
- ३६ प्यतारके पूर्णांगिरमागे चक्रधरदत्तादेशर्दि देशपालकचूडामणि  
धर्मवत्तलेयनस्युत्साहिर्दि

- ३७ माडिद ॥ क ॥ त्रिभुवनचन्द्रमुनीन्द्रनमिबंदिसि भक्तिरिधिदे  
कालगर्षि जगत्प्रभुवनि बेसदि लक्ष्मणविभु
- ३८ कोहं हस्तधारेयिं शासनम ॥ वृ ॥ परडनूर बाडदोलगी जिन-  
गेहवे पूज्यमैदक्करसर कां-
- ३९ के बिल्दु बियमुंबलमुंबलिदायमादियागेरडरुवत्त पोन्नरुवणं  
समकटेने माडि शासनं ।
- ४० बरेयिसि कोट्ट धर्मगुणमं मेरेदं नृपमेरु लक्ष्मण ॥ जिननाथा-  
वासमं वासवरितुनिममं कष्ट-
- ४१ कालेयदुर्भावनेयिं चांडालचोलं सुडिसि किडिसे विच्छित्तियागि-  
दुंदे नेहने नष्टोदारमं शाइवतमतिशय-
- ४२ माय्तेबिनं माडि तच्छासनमाचंद्रार्कतारं निले निलिसिदनें  
धन्यनो लक्ष्मभूपं ॥ भरसगे सेसेयेन्द-
- ४३ रसर काणिकेयेन्दु दायधर्मद तेरेयेन्दरुवणदिंदगलमेन्दरेवीसम-  
नविक कोंडवर् चांडालरु ॥
- ४४ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्दमहासामन्त भुजबलोपार्जित-  
विजयलक्ष्मीकान्तं समस्तारिविजय-
- ४५ दक्षदक्षिणदोर्दण्डं कत्तलेकुलकमलमातण्डं मयूरावतीपुरवराधोश्वरं  
ज्वालनीलवधवरप्रसाद क-
- ४६ पूरवर्षं जिनधर्मनिर्मलं नेरेकटियंककार नामादिसमस्तप्रशस्ति-  
सहितं श्रीमन्महासामन्त बे-
- ४७ ल्वलाधिपति भुजबलकाटरसरु ॥क॥ जगमेळलं देसेगे कय्मुगि-  
गेम कोट्टरियनोन्दु कागिणियुम-
- ४८ ना गगनदोलिर्पादित्यं बगेदुदनिस्तपने बेल्वलादित्यन वोळु ॥  
इन्तेनिसिद बेल्वलादित्य सकवर्ष ९९४ ने

- ४९ य परिधाविसंवत्सरद पुण्यसुद्ध पंचमि . बृहस्पतिवारदंद जग्णि-  
गेरेय गंगपेर्माडिय बस-
- ५० दिथ दानसालेगहिलगाळव गावरिवाडद तम्म सिवटद मत्तर-  
यवत्तुमन् भण्डिगेरेयोलु क्रयविक्रय-
- ५१ दिं यल्लियाचार्यरु त्रिभुवनचन्द्रपंडितर कालं कर्चि धारापूर्वकं  
माडि विट कोटुरु ॥
- ५२ स्वस्ति समस्तविनमदमरमकुटतटघटितशोणमाणिक्यमौक्तिक-  
मयूखकुं कुमलयजाभ्यर्चि-
- ५३ तश्रीमदहर्तपरमेश्वरप्रणीतपरमागमविक्षारदरुमनवरत्तपरमागमो -  
पदेशप्रसंगरुमप्य श्रीमदु-
- ५४ दयचन्द्रसैद्धान्तदेवर दिव्यश्रीपादपद्माराधकं श्रीमत्बलात्कारग-  
णांबुजसरोवरराजहंसरुमप्य श्री-
- ५५ मत्सकलचंद्रदेवरु श्रीमद्राजधानीबहणमण्णिगेरेय महास्थानं  
श्रीमद्गंगपेर्माडिय बस-
- ५६ दिगालव ग्रामादि वाडदलु याचार्यरुं चवुंडगावुंडमुख्यवागि  
हेगडे सहित मूवत्तुमनुष्य-
- ५७ देवपुत्रर्गे कोट वृत्तिय क्रम ॥ चंडव्वेय मगं हेगडे महल्लय्यनु  
यादिनाथस्वामिगेयल्लियाचा-
- ५८ रियर्गे बेसकेयडुंब वृत्ति मत्तर (प)न्नेरडु केतगावुड याचार्यर्गे पाद-  
पूजेयं कोटु
- ५९ तम्म सेनगणद बसदिगे हल्लिगोलद सीमेडिदु कुलुपल्लदिं  
पडुवल्लु मत्तरेंदु यरुवणं गद्याणं
- ६० नात्करिंदधिक कौंडवर् चांडाळरु ॥ एम्मेय केति सेट्टिय साम्यक्के  
मत्तरेंदु मने वौंदु भोगवाडगे गद्याणं ना-

- ६१ लकु कणबिय सेहिय बम्मि सेहिय साम्यक्के मत्तरेट्टु मने वौदु  
भोगवाडगे गद्याणं नाल्कु कत्ते-
- ६२ य दारि सेहिय साम्यक्के मत्तरेट्टु मने वौदु भोगवाडगे गद्याणं  
नाल्कु हब्बेय देवि सेहिय
- ६३ साम्यक्के मत्तरेट्टु मने वौदु भोगवाडगे गद्याणं नास्कु गोलिय  
चवुडि सेहिय साम्यक्के मत्त-
- ६४ रेट्टु मने वौदु भोगवाडगे गद्याणं नाल्कु रुड्डुलिय संकि सेहिय  
साम्यक्के मत्तरेट्टु मने
- ६५ वौदु भोगवाडगे गद्याणं नाल्कु कंदल मल्लि सेहिय साम्यक्के  
मत्तरेट्टु मने वौदु भोगवाडगे गद्याणं
- ६६ नाल्कु मल्लव्वेय पुत्ररु चण्डि सेहिय साम्यक्के मत्तरेट्टु मने  
वौदु भोगवाडगे गद्याणं नाल्कु माघ-
- ६७ वसेहिय साम्यक्के मत्तरेट्टु मने वौदु भोगवाडगे गद्याणं नाल्कु

[ इसी तरह ८३वीं पंक्ति तक बय्सर बोप्पि सेट्टि, नेमिसेट्टि, गोखर  
बम्मि सेट्टि, मयिलि सेट्टि, गोखर बोसि सेट्टि, चंदि सेट्टि, एम्मेयर चवुडि  
सेट्टि, होय्सर चवुडि सेट्टि, केल्लर गोरवि सेट्टि, तालबम्मि सेट्टि, कडबर  
देवि सेट्टि, मंचल बोसि सेट्टि, बेणिल मल्लि सेट्टि, बेण्णेय नालि सेट्टि,  
दोडुर केति सेट्टि, मंजडिय येचि सेट्टि, गंडि सेट्टि, मुरियर कलि सेट्टि,  
बयिसर बसवि सेट्टि, नूति सेट्टि, चिक्कि सेट्टि, इनके बारेमे निर्देश है ।]

- ८३ नाल्कु चिक्कि सेहिय साम्यक्के मत्तरेट्टु मने वौदु भोगवाडगे  
गद्याणं नाल्कु यिन्ती देवपुत्रिकरोळगे याव-
- ८४ नोव्वनु धम्मककं याचार्यगं विरोधियागि राजगामित्वं माडिदन-  
प्पडे वृत्तिच्छेदसमयबाह्य ॥
- ८५ स्वस्ति समस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमन्महाप्रधानं वसुधैकवान्धवं  
श्रीरेचिदेवदंडनाथ बहक्रे-



- ८६ य श्रीकलिदेवस्वामिजिनश्रीपादार्चनेगे कपूरकुंकुमश्रीगंधसहित  
यष्टविधार्चनेगे
- ८७ कोह केथियरकेरेथि मूडलु मत्तर् पम्नेरडुमं याचार्यरुं देवपुत्रि-  
करुं सर्वाबाधप-
- ८८ रिहारवागि प्रतिपालिपरु ॥ दक्षिण पेयाबोलेयुमप्य ग्रामादि  
वाडकके श्रीगंगपेर्माडि-
- ८९ य बसदिय पुरद मयांदिय घले भूवत्तेटु गेणु हस्त बेंगोल्लदंगे  
वृत्ति सक्कदु ॥ वर्धतां जिनशा-
- ९० सनं ॥
- ९१ गंगासागरयमुनासंगमदोलु बाणारसि गयेयेम्भी तीर्थगल्लोकात्म-  
कुलद्विजपुंगवगोकुलमनलिदरिन्तिदनलि-
- ९२ दुरु ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुंधरां । षष्ठिवर्षसहस्राणि  
विष्टायां जायते कृमिः ॥
- ९३ याचार्यर येक्कटिगनागि बेसकेय्दुंब वृत्ति कुरिबर केते....
- ९४ न्दु ॥ याचार्यरु चवुड गवुडन हेसरिट्टुदक्के मूगवाड रन....
- ९५ लद सीमेयलु कोह वृत्ति मत्तरु वोंदु यदु हांलगेरं ॥

[ इस बृहत् शिलालेखके चार भाग हैं । पहले भागमें (पंक्ति १-४३) अणिगरे नगरके गंगपेर्माडि जिनमन्दिरका वर्णन है । यह मन्दिर रेवकनिर्मंडिके पति बूतुगके स्मरणार्थ बेलवल प्रदेशके शासक गंगपेर्माडिने<sup>१</sup> बनवाया था तथा उसने उसे मूडगेरी, गुम्मुंगोल, इट्टगे और गावरवाड ये चार गाँव दान दिये थे । यह दान मूलसंघनंदिसंघ-बल्लगार नणके गुप्पकीर्त्ति पण्डितको दिया गया था । गुणकीर्तिकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी—गंग

१. रेवकनिर्मंडि राष्ट्रकूट सम्राट् कृष्ण ( तृतीय ) की बहन थी जो गंग राजा बूतुगको व्याही गयी थी । गंग पेर्माडि इनके पुत्र मारसिंह ( तृतीय ) ( सन् ६६०-७४ ) अथवा पौत्र राजमल्ल ( चतुर्थ ) होंगे ।

वंशके गुरु वर्धमान - विद्यानन्द स्वामी - उनके गुरुबन्धु तार्किकार्क  
माणिक्यनन्दि - गुणकीर्ति - विमलचन्द्र - गुणचन्द्र - गण्डविमुक्त - उनके  
गुरुबन्धु अभयनन्दि । कालान्तरसे चोल राजाने बेल्वल प्रदेशपर आक्रमण  
किया<sup>१</sup> तब इस मन्दिरको नष्ट-भ्रष्ट किया किन्तु शीघ्र ही इस चोल राजा-  
को अपने पापका प्रायश्चित्त करना पड़ा क्योंकि चालुक्य सम्राट् ब्रूलोक्य-  
मल्ल सोमेश्वर ( प्रथम ) द्वारा वह युद्धमें मारा गया ।<sup>२</sup> तदनन्तर बेल्वल  
प्रदेशके कई शासक हुए जिनने इस मन्दिरकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया ।  
चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्ल सोमेश्वर ( द्वितीय ) के समय बेल्वल तथा  
पुलिगोरे प्रदेशका शासन महामण्डलेश्वर लक्ष्मरसको सौंपा गया । उसने  
इस मन्दिरका जीर्णोद्धार किया तथा उसके लिए मुनि त्रिभुवनचन्द्रको  
समुचित दान दिया ।<sup>३</sup> इस दानकी अनुज्ञा देते समय सम्राट् सोमेश्वर  
तुंगभद्रा नदीके तीरपर कक्करगोंडके सेनाशिविरमें थे तथा शक ९९३ वर्ष  
चल रहा था ।

इस शिलालेखके दूसरे भागमें बेल्वलके अगले शासक काटरसका  
उल्लेख है जो मयूरावती नगरका स्वामी था । तथा ज्वालिनी देवीका  
उपासक था । इसने उपर्युक्त मन्दिरको शक ९९४ में कुछ दान दिया ।  
यह दान भी त्रिभुवनचन्द्रको दिया था ।

तीसरे भागमें इस मन्दिरके व्यवस्थापक उदयचन्द्रके शिष्य सकलचन्द्रका  
उल्लेख है । इनने मन्दिरकी जमीन जोतनेके लिए मल्लय्य आदि तीस  
श्रेष्ठियोंको सौंपी थीं ।

चौथे भागमें महाप्रधान रेचिदेव - द्वारा बटुकेरे नगरके जिन तथा  
कलिदेवकी पूजाके लिए कुछ जमीन दान दिये जानेका उल्लेख है ।

१. यह राजा चोल राजाधिराज होगा । ( सन् १०१८-५२ )

२. यह युद्ध सन् १०५२ के आरम्भमें हुआ था ।

३. पूर्वोक्त गुरुपरम्परासे त्रिभुवनचन्द्रका सम्बन्ध अगले लेखमें स्पष्ट किया है ।

यह शिलालेख अन्तिम रूपसे सन् ११५० के करीब लिखा गया होगा । ]

[ ए० ई० १५ पृ० ३३७ ]

१५५

### अणिगोरि ( मंसूर )

शक ९९३-६४ = सन् १०७१-७२, कन्नड

[ यह लेख अक्षरशः गावरवाड लेखके पहले दो भागों-जैसा ही है— सिर्फ़ चार श्लोक इसमें अधिक हैं । यथा— (१) मंगलाचरणमे—जगत्-त्रितयनाथाय नमो जन्मप्रमाथिने । नयप्रमाणवाग्रश्मिध्वस्तध्वान्ताय शान्तये ॥ (२) महामण्डलेश्वर लक्ष्मरसके वर्णनमें—मले यंतो (ट्ट) लतुलिदं मलेयोल् मारमलेव मलेपरं मगिसिदं मलेयेलुं कोपिदुमनलेदं जलनिधियोले प्रतापियो लक्ष्म ॥ (३-४) गुणकीर्ति पण्डितकी शिष्य परम्पराके वर्णनमें—कृतकृत्यरभयनन्दिमल तनूजर् सकलचन्द्रसिद्धान्तिकरप्रतिमर् सर्वांगमलान्वितगण्डविमुक्तदेवरा मुनिशिष्यर् ॥ एनिसिद गण्डविमुक्तर तनूभवर् चरणकरणपदविद्यापावन मन्त्रवाददो त्रिभुवनचन्द्रमुनीन्द्ररत्ने बुधजनवन्द्यर् ॥ इससे अभयनन्दि - सकलचन्द्र - गण्डविमुक्त - त्रिभुवनचन्द्र इस परम्परा का पता चलता है । इस लेखमें गावरवाड लेखके अन्तिम दो भाग नहीं हैं । अतः प्रतीत होता है कि यह शक ९९४ में ही खुदवाया गया होगा । ]

[ ए० ई० १५ पृ० ३४७ ]

१५६

### हैदराबाद म्युजियम ( आन्ध्र )

सं० ११ (२) ८ = सन् १०७२, संस्कृत-नागरी

[ इस मूर्तिलेखमें वीतरागकी उपासिका रावदेवी-द्वारा देवांगना तथा क्षोणीपतिकी मूर्तियोंकी स्थापना किये जानेका उल्लेख है । समय संबन्ध

११ (२) ८ है । इसका तीसरा अंक कुछ अस्पष्ट है । ]

[ रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १५३ ]

१५७

लक्ष्मेश्वर ( मैसूर )

शक ९९६ — सन् १०७४, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्लके समय चैत्र शु० ८, रविवार आनन्द संवत्सर, शक ९९६के दिन लिखा गया था । मणल कुलके महासामन्त जयकेसियरसने पुरिगेरेके पेर्माडिबसदिके दर्शन किये तथा मूलसंघ-बला-त्कारगणके गण्डविमुक्त भट्टारकके शिष्य त्रिभुवनचन्द्र पण्डितके निवेदनपर उसे पुरके रूपमे परिवर्तित किया ऐसा इसमे उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० २९ पृ० १६३ ]

१५८

इनगुन्द ( मैसूर )

शक ९९६ = सन् १०७४, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्लदेव सोमेश्वर (२) के समय पौष शु० ५, रविवार, शक ९९६, आनन्द संवत्सर, उत्तरायणसंक्रान्तिके अवसरपर लिखा गया था । इसमें सूरस्तगण-चित्रकूटान्वयके अरुहणंदि-भट्टारकके शिष्य आर्यपण्डितको पोन्नगुन्दकी अरसर बसदिके लिए कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है । यह दान श्रीकरण देवगण्य नायक, पेर्गडे नाकिमय्य, पेर्गडे रेवणय्य, करण आय्यप्पय्य, तथा पसायित काटि-मय्यने सर्व प्रधानों-द्वारा की गयी जिन पूजाके अवसरपर दिया था । उस समय बेल्लबल तथा पुल्लिगेरे प्रदेशोंपर महामण्डलेश्वर संग्रामगरुड लक्ष्मरस का शासन चल रहा था । ]

[ मूल कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० १११ ]

१५६

## सोमापुर ( धारवाड, मैसूर )

शक ९९६ = सन् १०७४, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा भुवनैकमल्लके समय शक ९९(६), आनन्द संवत्सर, पुष्य शु० ५, बुधवारका है। इसमें किसी सेट्टि-द्वारा एक जैन बसदिको दिये गये दानका उल्लेख है। ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० ७७ पृ० १२६ ]

१६०

## लक्ष्मेश्वर ( मिरज, मैसूर )

शक ९९९-१००० = सन् १०७७-७८, कन्नड

[ इस निषिधिलेखमें सूरस्थ गणके श्रीनन्दि पण्डितदेव तथा उनके बन्धु भास्करनन्दि पण्डितदेवके समाधिमरणका उल्लेख है। पुरिकर नगर ( लक्ष्मेश्वर ) के आनेसेज्जेबसदिमे इन्होंने सल्लेखना ली थी। मृत्युतिथियाँ क्रमशः आषाढ़ शु० १२, बुधवार, पिंगल संवत्सर, शक ९९९ तथा चैत्र अमावास्या, रविवार, कालयुक्त संवत्सर, शक १००० इस प्रकार दी हैं। ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ६ पृ० १६१ ]

१६१

## अक्कलकोट ( सोलापुर, महाराष्ट्र )

चालुक्यविक्रमवर्ष ४ = सन् १००८, कन्नड

[ इस लेखमें एक जैन मठके लिए कुछ उद्यान, भूमि आदिके दानका उल्लेख है। तिथि पुष्य व० २, रविवार, उत्तरायण संक्रान्ति, सिद्धार्थ संवत्सर, चालुक्य विक्रम वर्ष ४ ऐसी दी है। ( वस्तुतः उस वर्षका नाम कालयुक्त संवत्सर था। ) चालुक्य सम्राट् विक्रमादित्य ६ के समयका यह लेख है। ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ९६ पृ० ३५ ]

१६२

कोनकोण्डल ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

चालुक्यविक्रमवर्ष ६ = सन् १०८०, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा त्रिभुवनमल्लके राज्यवर्ष ६, पुष्य व० (६) गुरुवार, दुर्मतिसंवत्सरका है । इस समय महामण्डलेश्वर जोयिमठ्यरसकी पत्नी नाविकव्वेने कोण्डकुन्देयतीर्थमे चट्टिजिनालयका निर्माण किया तथा उसे कुछ भूमि दान दी थी । ]

[ रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० ५६५ पृ० ५५ ]

१६३

अलनावर ( धारवाड, मैसूर )

शक १००३ = सन् १०८१, कन्नड

[ यह लेख शक १००३ का है । कदम्ब राजा गोवलदेवके समय अलनावरके जैन वसदिके लिए नरसिगध्य सेट्टि द्वारा कुछ दान दिये जानेका इसमे उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ४७० पृ० ७८ ]

१६४

वनवासि ( मैसूर )

सन् १०८१, कन्नड

[ यह लेख कादम्बचक्रवर्ति वीरमके राज्यवर्ष १२, दुर्मति संवत्सरमें कार्तिक कृ० ५, सोमवारके दिन लिखा गया था । इसमे तिप्पिसेट्टि सातव्य की पत्नी भोगवेके समाधिमरणका उल्लेख है । इनके गुरु देसिगण - पुस्तक-गच्छ - कुण्डकुन्दान्वयके सकलचंद्रमट्टारक थे । ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० १४३ पृ० १७२ ]

१६५

## लक्ष्मेश्वर ( मैसूर )

चालुक्यविक्रमवर्ष ६ = सन् १०८१, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं(१)जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य  
शासनं जिनशासनं ॥१॥
- २ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज  
परमेश्वर परममहारकं सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्या-
- ३ मरणं श्रीमत्त्रिभुवनमहलदेव ॥वृत्त॥ धरेयं वाराशिपर्यन्त-  
मनवयदि दुर्विनीतावनीपालर बेरं कितुं नीरोल् गलगलनलेदी-
- ४ डाडि मुन्नित्तु चक्रेश्वरार् निष्कंटकं माडिदरेने महि निष्कंटकं  
माडि चक्रेश्वरखं सन्ततं पालिसिदनतिबलं विक्रमादित्यदेवं ॥२॥  
अन्तु श्रीम-
- ५ त्रिभुवनमहलदेव विजयराज्यमुत्तरोत्तरामिवृद्धिप्रवर्धमानमा-  
चंद्रतारं सलुत्तमिरे ॥ तदनुजं स्वस्ति समस्तभुवनसंस्तूयमान  
लो-
- ६ कविख्यातं पल्लवान्वयं श्रीमहीवल्लभ युवराज राजपरमेश्वरं  
वीरमहेश्वरं विक्रमामरणं जयलक्ष्मीरमणं शरणागतरक्षामणि  
चालु-
- ७ क्यचूडामणि कदन्ननेत्रं क्षत्रियपवित्रं मत्तगजांगराजं सहज-  
मनोजं रिपुरायसूरेकारनणनंकरारं श्रीमत्त्रैलोक्यमल्ल
- ८ वीरनोलंब पल्लवपेर्मानडि जयसिंहदेव ॥वृत्त॥ परचक्र-कालचक्रं  
नलनहुषनृगाद्यादिभूपाळकालीचरितं चालुक्य-चूडामणि  
सहजमनोजं नतारा-

- ९ तिभूमेश्वरसंघातोत्तमांगामरणमणिगणज्योतिरुत्तंसमास्वच्छरणं  
सामान्यने भूपरोलपगतविद्विट्कदंबं नोलंब ॥ ३ वचन ॥  
एनिसिद पोगहतेगं नेगहतेगं नेलेये-
- १० निसि ॥क॥ अरसुगुणंगल मेय्वेत्तिरे पगे मिगदिरे जनानुरागं  
पिरिदागिरे कीर्तिलतिके निमिरुत्तिरे वीरनोलंबन-वनतारिकदंबं  
॥४ व॥ एरड्ड[ मू ]नूरुमं वनवासेपनिछासिरसु-
- ११ मं सान्तलिगेसासिरसुमं कंडूर सासिरसुमं सुखसंकथाविनोददिं  
प्रतिपालिसुत्तमिरे । तत्पादपद्मोपजीवि । समधिगतपंचमहाशब्द  
महासामन्ताधिपतिं महाप्र-
- १२ चण्डदण्डनायकं रिपुमस्तकन्यस्तसायकं साहित्यविद्यांगनाभुजंग  
सरस्वतीमुखकमलभृंगनाराधितहरश्चरणस्मरणपरिणतान्तःकरणं ।  
सरस्वतीकर्णामरणं
- १३ श्रीमन्महाप्रधानं मनेवेगंडे दण्डनायकनेरेयमय्यं ॥कंद॥ सकल-  
कलाग्रहं ब्रह्मकुलार्कं वत्सगोत्ररत्नाकरशीतकरं किरियने भुवन-  
प्रकरदोल-
- १४ रिमृत्युभूपनेरेगचमूर्षं ॥ ५ वृ ॥ एलेयोलु सादृश्यमप्यदेरेगविभुगे  
बिण्पिगे गुण्पिगे तिण्पिगेले पारावारमिद्राचलमवसुरणि रामनिं  
कृष्णनिं संचलम—
- १५ श्लिष्टगंभीरसुमगुरुबुयागिल्दुवारय्ये बेरोंदंले बेरोन्दब्धि बेरोन्द-  
निमिषनगमेत्तानुसुंटप्पो डक्कुं ॥ ६ कंद ॥ परिकिपोडे हस्ति-  
मशकान्तरमेनिपुदु तञ्ज
- १६ गुणद नेगहदर गुणदन्तरमेने गुणेषु को मत्सर एंब बुधोको एरेग-  
विभुगे सदुक्तं ॥ ७ सदमलकीर्तिबल्लरि दिशान्तरमं तेरपिक्क-  
दन्तु पर्विदुदु पराक्रमं



- १७ .....समिट्टुदु विण्पेषमाणबाह्यमादुदु चरितं शिखापदमनेयदिदु-  
 दार्पिण सूनु मत्ते पुट्टिदनेनिपन्तुटायत्तेरिगनुत्तितियं पोगलल्  
 समर्थरार ॥ ८
- १८ एनिसिल्दी ख्याति विख्यातिगे सलुतिरे सन्तं बसन्तं तदीया-  
 वनिगंबुद्धानि पेत्तुत्तिरे पुलिगेरेमूनरूमं स्वामिसंपत्तिन पंपं ताल्दि  
 कैकोण्डनुमवि—
- १९ सुत्तमौदार्यदि सत्यदि कणंनुमं मिक्कुत्सवंपेत्तिरत्तेरिगचमूपं  
 बलींद्राज्यस्वरूपं ॥ ९ कंद ॥ तदनुजनपरिमित गुणास्पदनेसेदं  
 भुवनबुंभुकं सुरप—
- २० तिसंपदनतुलभुजबलं परसुदतीप्रकरप्रसूनबाणं दोणं ॥ १० ॥  
 कलितनदोल् कुरुकुलसंकुलमथनन तम्मननुपमानाकृतियोल्  
 बलदेवन तम्मं भुजबल—
- २१ दोल् यमसुतन तम्मनेरगन तम्मं ॥ ११ ॥ एरगनडिमोदलो-  
 लरिन्नुपरेरिगदोडदनरियेनेरगदिरल्लंबोदागेरगिसुगुं गृध्रादि गलेरे-  
 गल् पतिकार्य—
- २२ भरधुरीणं दोणं ॥ १२ वृत्तं ॥ केणमुदारदोल् कोरटे सज्जन-  
 वृत्तियोल्लेगु शीलदोल् काणले बारदेंदोडे पेरर् समनप्पर मात्त्य-  
 लोकदोल् दोणनो
- २३ लंगनाकुसुमबाणनोलिष्टविशिष्टसंकुलत्राणनोल् अज्जसंभव-  
 समानसमस्तकलाप्रवीणनोल् ॥ १३ परमाप्तस्वामीदेव्यं पशुपति  
 जितविट्टिकदंबं नोलंबं
- २४ पोरेदाल्दं तंदे शुभंमत्तरगुणगणदि मिक्क तिककं विभास्वच्चरिता-  
 लंकारे कल्वंभिके जननि तदीयाग्रजं दण्डनाथोत्तररत्नं रुडिवे-  
 तिलदेरकपनेने दोणं जसक्किक्केंदा-

- २५ णं ॥१४ (ई) कलिकालदोल् विषमकालदोल् उब्बट्टेयाय्त्तु धर्म-  
रत्नाकरनेर्विर्न पल्लु कालदिनीक्षिसलाहुर्वित्तु कोल्पोकुमे धर्म-  
मेन्दोसेदु तज्जन कौतुकमागे मे-
- २६ दिनीलोकमशेषमोदे कोरलोल् पोगलल् पडिचंदमप्पिनं ॥१५  
कमनीयक्रमविक्रमाब्दतत्तिषट्कं दुर्मतिप्राब्द पुण्यमशुक्लं  
भृगुषष्टियोप्पलवरोल् कूडलु
- २७ व्यतीपातमेंब महायोगमुमुत्तरायणमहासंक्रान्तिथुं मानवो-  
त्तमनन्दुज्वलकीर्ति दोणनुरुधर्मत्राणनुत्साहदिं ॥१६ कंद॥ परम-  
जिनसमयरत्ना-
- २८ करहिमकरमूलसंघसंभवशोमाकरसेनगणनमःस्थल- सरसिजबान्ध-  
वर सितयशःश्रीधवर ॥१७ वरमुनिपर विनतक्षितिपर निरवधर  
नरेंद्रसेन-
- २९ त्रैविधर पादप्रक्षालनपुरःसर दिव्यपुरदोली पुरिकरदोल् ॥१८  
चांद्रं कातंत्रं जैनेंद्रं शब्दानुशासनं पाणिनि मत्तैंद्रं नरेंद्रसेनमु-
- ३० नींद्रंगेकाक्षरं परंगिबु मोगे ॥१९ अवरग्राशण्यं॥ निनगेनेबेनो  
शाकटायनमुनीशं ताने शब्दानुशासनदोल् पाणिनि पाणिनीय-  
दोलु चांद्रं चांद्रदोलु तज्जिनेंद्र-
- ३१ ने जैनेंद्रदोला कुमारने गडं कातंत्रदोल् पोल्परन्तेने पोल्  
नयसेनपण्डितरोलन्यर् बाधिंवीतोविंयोल् ॥२० सरसतिथं  
मनोमुदडे ताल्दिदनेजनवज्जेगेय्दनानिरेनवलिके बि:-
- ३२ सवतियोल् पुटुवाल्लुटु कष्टमेन्दु निष्ठुरवचनंगलं नुडिदु  
दिक्करियं परिदेरि कीर्ति तां पुरुडिसि दूरिपल् वरतपोनिधियं  
नयसेनसूरियं ॥२१ अवरग्राशिण्यर् ॥ नतभू-
- ३३ पेंद्रकिरीटताडितपदाभोजद्वयं नूतनप्रतिमाभारवि तारहार-

- हरहासाकाशनीहारविभ्रुतकीर्तिप्रमदानभाञ्जमुकुरं हा बाप्पु  
सामान्यमे श्रुतवाराशि नरेन्द्र-
- ३४ सेनमुनिपं त्रैविद्यचक्रेश्वरं ॥२२ जितविद्विष्टप्रतापान्वितदिनधिक-  
शौर्यस्वदाटोपदिदूर्जितभास्वजैनधर्मापितदृढमतिथिं विप्रवंशा-  
बराहपतियेबांदुदघतेजस्तवदिनतु-
- ३५ लल्लैश्वर्यदिं त्यागदौदुक्कतिथिदं सस्यदिदं दिनकरनतिशोभाकरं  
पुण्यपुंज ॥२३ दिनकरनोदयदोल् तममनितुं तूल्दोडुवन्ते  
मिथ्यात्वतमं दिनकरनुदयिसे निजकुल-
- ३६ वनदिं तूल्दोडि किडुवुदें विस्मयमे ॥२४ आतन तनयर्  
जनविख्यातर् जिनपदपयोजभृंगर् विनयान्वितरने नेगक्षदर-  
खिलक्षमातलदोल् राजिमय्यनुं दूढमनुं ॥२५ वृत्त॥
- ३७ जिनपादांभोजभृंगं सुजनजनमनोरंजनं विश्वधात्रीविनुतं दिग्द-  
न्तिदन्ताश्रितविशदयशोभासि शिष्टेष्टकल्पावनिजं सत्पात्रदाना-  
धिकनेनुते मनोरागदिं कर्तुं विद्वज्जनमे-
- ३८ ललं बणिणकुं राजननमललसत्तेजनं निच्चनिच्च ॥ २६ मनुमुनि-  
मागंनेम जिनपूजेयोल्तिगनेंदु दानियेंदनुपमतेजनेंदु शुचियेंदु  
दयापरनेंदु निच्चलुं मनमो(से)-
- ३९ दक्करिं बिडदे बणिणसुगुं जगमेय्दे कूडे राजननिनतेजनं पसुगे  
गोजननाश्रितकल्पभूजन ॥ २७ तत्प्रियानुजन शौर्यदलवं  
पेलबडे ॥ कडुपिन्द
- ४० धरणीश्वरं बेससे चौरासीशनं बन्दिथं पिडिदं साहसदिन्दमं  
मुगेयनिन्दोर्बीशनं कोपदिं पिडिदुय्दा सेरंयिट्ट सोमननस्याश्चर्यदिं  
बन्दिथं पिडि
- ४१ दं तानेने शौर्यदोन्दलबदे सामान्यमे दूडन ॥ २८ निजपतियं

सेरेविडिदोडे भुजबलदि बन्दिविडिदु बिडिसिदनेन्दी त्रिजगं  
बणिणसुगुं सद्दिजकुलनं शौर्य-

४२ शाखियं दूडमन ॥ २९ इन्तेनिसिद दूडन वरकान्ते मनोभवन  
कान्तेगं रूपिनोलत्यन्तं मिगिलेने पोगललक्केन्तुं नेरेयरियर्  
एचिकब्बेय रूप ॥ ३० अन्तवरर्गे पुट्टिदल् सुरका-

४३ न्तोपमे विचलदलिकुलालके विलसन्मान्तनसमेते बुधजनचिन्ता-  
मणि हम्मिकब्बे ललनारस्त ॥ ३१ आ नेगल्द हम्मिकब्बेगनूल-  
प्रियवल्हमं मनोमवरूपं दानदेडे-

४४ गन्दिना कानीनन वोल् नेगल्दनरसिमय्यं जगदोल् ॥ ३२  
अनुपमदानशीलगुणभूषणभूषितेयाद् हम्मिकावनितेगमत्युदार-  
हरसय्यमहाविभुगं विनी-

४५ तनोल्पिन कणि बैद्यशास्त्रकुशलं सुजनाग्रणि बैद्यकक्षपं तनय-  
नेनल्के नोन्तनेन कन्नन वोल् कृतपुण्यनावनो ॥ ३३ जिनपद-  
पंकजभ्रमरनिन्दपनुद्धगुणाब्धियीश्वरं वि-

४६ नयविलासि राजि सुजनं कलिदेवनगण्यपुण्यवर्धनकरनादिनाथ-  
नधिकं शुचि शान्ति नेगर्तेवेस पार्श्वनुमिवरात्मजातरने कन्नन  
वोल् कृतपुण्यनावनो ॥ ३४

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ) त्रिभुवनमल्लके छठवें वर्षमें अर्थात् सन् १०८१ में लिखा गया था। उस समय बेल्वोल, पुलिगेरे, बनवासि, सान्तलिगे, तथा कण्डूर प्रदेशोंपर सम्राट्के पुत्र जयसिंह शासन कर रहे थे। इन्हे त्रैलोक्यमल्ल, वीरनोलम्ब, पल्लवपेर्मानडि ये उपाधियाँ दी हैं। इनके अधीन महासामन्त एरेमय्य पुलिगेरे प्रदेशका अधिकारी था। इसे एरेग या एरेकप भी कहा है। इसका बन्धु दोण था जिसकी लेखमें बहुत प्रशंसा की है। इसने मूलसंघ-सेनगणके नरेन्द्रसेनके प्रशिष्य

तथा नयसेनके शिष्य नरेन्द्रसेन ( द्वितीय ) को पौष कृष्ण ६, शुक्रवार, उत्तरायणसंक्रान्तिके अवसरपर कुछ दान दिया । इसके बाद लेखमें दिनकर, उसके पुत्र राजिमय्य तथा दूडम, दूडमकी पत्नी एचिकम्बे तथा पुत्री हम्मिकम्बे, हम्मिकम्बेका पति अरसय्य तथा पुत्र वैद्य कन्नप एवं कन्नपके पुत्र इन्दप, ईश्वर, राजि, कलिदेव, आदिनाथ, शान्ति, एवं पार्श्वका वर्णन है । संभवतः इन लोगोंकी प्रार्थनापर दोणने उक्त दान दिया था । ]

[ ए० इ० १६ पृ० ५८ ]

१६६

अरसीबीडि ( बिजापुर, मैसूर )

चालुक्यविक्रम वर्ष १० = सन् १०८५, कन्नड

[ इस लेखकी तिथि आषाढ शु० १, बुधवार, शोधन संवत्सर, चालुक्य वर्ष १० ऐसी है । इस समय सुंकवेर्गडे मन्तर बर्मणने विक्रमपुर ( वर्तमान अरसीबीडि ) स्थित गोणद बेडंगि जिनालयके ऋषि-अजिकाओं-को आहारदान देनेके लिए कुछ करोंका उत्पन्न दान दिया था । सिन्द वंशके सिन्दरसके पुत्र बर्मदेवरसके अधीन प्रान्तीय शासकके रूपमें सुंकवेर्गडे नियुक्त था । ]

[ मूल लेख कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० इ० ११ पृ० २३९ ]

१६७

मरुत्तुवक्कुडि ( तंजोर, मद्रास )

तमिल, सन् १०८६

[ यह लेख ऐरावतेश्वर मन्दिरके आगे मण्डपकी दक्षिणी दीवालपर है । त्रिभुवनचक्रवर्ति कुलोत्तुंग चोलदेव, जिसने मदुरा जीतकर पाण्ड्य

राजाका शिरच्छेद किया था—के १६वें वर्षमें यह लेख लिखा गया था । इसमें जननाथपुरम्के दो जैन मन्दिर चेदिकुलमाणिक्य पेरुम्बल्लि तथा गंगहलसुन्दर पेरुम्बल्लिका उल्लेख हैं । ]

[ इ० म० तंजोर १००३ ]

१६८

दोणि ( धारवाड, मैसूर )

चालुक्यविक्रम वर्ष २० = सन् १०९६, कन्नड

[ यह लेख फाल्गुन शु० १३ गुरुवार, चालुक्यविक्रम वर्ष २० के दिन लिखा गया था । सम्राट् त्रिभुवनमल्ल ( विक्रमादित्य षष्ठ ) के राज्यका यह लेख है । इस समय यापनीय संघ-वृक्षमूल गणके मुनिचन्द्र त्रैविद्य भट्टारकके शिष्य चारुकीर्ति पण्डितको सोविसेट्टि द्वारा एक उद्यान दान दिया गया था । ]

[ मूल लेख कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० १६९ ]

१६९-१७०

तुम्बदेवनहल्लि ( मैसूर )

चालुक्यविक्रम वर्ष २१ = सन् १०९६, कन्नड

- १ श्रीमद्रेयंगदेवर असवब्बर(सि)माडिसिद बसदि मंगल महा श्री
- २ स्वस्ति समस्तसुरासुरमस्तकमणिमकुटरश्मिरंजितचरणप्रस्तुत-  
जिनेन्द्रशासन-
- ३ मस्तु चिरं सकलमव्यचन्द्रजनानां ॥ (१) मद्रमस्तु जिनशासनाय  
संभद्रतां प्रति-
- ४ विधानहेतवे अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फाटनाय घटने पटी-  
यसे ॥ (२)

- ५ जयवर्मं मुददिन्दं हस्तु नियतं पट्टल्लिगेयं राज्यल्लोथिनाल्-  
दुक्कतिथिं मन-
- ६ गोल्लिसि विट्ठिष्टप्रजक्केय्दे भीतियनित्तायमनप्पुकेय् दु चळमं  
कैकोण्डु लोकप्रसि-
- ७ द्वियुतं माण्डदनावगन् निले कदम्बाम्नायविख्यातियं ॥ (३)  
श्रीमत्कदम्बवंशलकामा-
- ८ वनिनाथरोल्लगे रणकिक्षितिपं भीमपराक्रमनेनिसिदनी महियोल्ल  
अरातिनृपजयोद-
- ९ यदिदं ॥ (४) आतन मगनमल्लगुणोपेतनतिप्रबलजलदधनपवन-  
नेनिप्पाततय-
- १० शोविलासबिन्नूततेगेडेयागि नेगल्द कलि ह्दुवनृपं ॥ (५) तत्त-  
नेयनतुलबलनुद्वितरिपु-
- ११ क्षितिपकुधरवज्रं धारोदातनेने नेगल्दनकुटिलचित्तं पोचायिन्नूत-  
पूतं बूत ॥ (६)
- १२ आतंगे पुट्टि बलवदरातिमहांभुजरनिरिदु गेल्ल्दर्मिनोल्लुवोत्तल्लमे  
पोगले तोरिदनात-
- १३ तसित्तीति नोसलकण्णं चिण्ण ॥ (७) एने नेगल्द चिण्णनृपतिगं  
अनवच्छलतांगि सुगियच्चरसिग-
- १४ मुर्विनदोसगे पुट्टे पुट्टिद तनेयनतिप्रकटविशदयशनेरेयंग अक्कर  
नेगल्द नृ-
- १५ परत्तनाल्लवरनेवेट्टे भीतिथिं बन्धु पोगले तन्ननवर पट्टियोडेयनं  
पेरिगिक्कि काटुनिन्दाल्लवरनं बगेय्द-
- १६ आन्तरिसेनेयनोडिसि गेल्ल्दर्मिनेसकदिं सिन्धुजंगं मिगिल्लुदप्र-  
बलावलेपनं भुजादण्डनी नन्निमातण्डदेव ॥ (८)
- १७ मल्लेदिदिरनान्त चोलिकबल्लमेत्तदोडान्तुमदिरदेरेयंगन दोबल्ल-  
दल्लवनेवोगल्लुदो जक्कल्लदेवननेय्दे

- १८ कादुकलिपिद चलयं ॥ (९) अन्तु नेगल्देरेगनृपतिगनन्तसुखास्य-  
देयेनिष्प येचाबिकेगं कन्तुवेनिष्प
- १९ चिण्णं कान्तं पुट्टिदनुदारतेजोनिलय ॥ (१०) पुट्टलोडं निन्नये  
पेसरिट्टपरी जगद मनुजरेन्दोडे पेसरो-
- २० दिट्टलमादडे कोल्लु पट्टल्लिगेय चिण्णनेम्ब मयरसदिदं ॥ (११)  
आतंगे बुट्टिदं विख्यातितशितकीर-
- २१ तिं नेगल्द गण्डतरण्डं भूतलके कण्णवृक्षसमोपेतनेनिष्प दानि  
येरेगमहीश ॥ (१२)
- २१ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द महामण्डलेश्वरं बनवासिपुर-  
वराधीश्वरं कादम्ब-
- २३ चक्रेश्वरं नुदारमहेश्वरं नुमयबलगण्डं नक्षिमार्तडं तनगिल्लदीवं  
कर्गसहादे-
- २४ वं मानिनोमनोहर हरघरणशेखरं हरिपादसरसीरुहोत्तंसं  
सरस्वतीक-
- २५ णावतंसं विकलकुलनृपतिहृदयसंतापकरं विवेकविद्याधरं भृगुमता-
- २६ चार्यं मन्दरधैर्यं कादम्बकुलकमलविकाशनादित्यं विजातिराजता-  
रागणतरुणादि-
- २७ त्थं विक्रमप्रक्रमकिशोरकण्ठीरवं कादम्बकण्ठीरवं मागधिकमा-  
निनीमदहरिषु-
- २८ लक लाटवधूटीमाललीलातिलकं विरुदन्निनेत्रं हयशालिहोत्रं तूगितु-
- २९ सिद्धुव विरुदरपेण्डरगण्डं गण्डतरण्डं अरिविरुदरबायोले सुरि-  
गेयं किरिषु
- ३० व दोडुंकंबडिव गीतप्रगीतं गेयविनोदं निजकुलोत्तंगं श्रीमदेरे-  
यंगदे-
- ३१ व स्थिरं जीयात् ॥ कन्द ॥ गंगेगडल्लगल नोरेगं तिगल बेल्ल-  
पिंगमोदवलडकिल्लेल्पिं



३२ संगलिसि तीविदत्तेरेयंगन जसमखिलभुवनांतरदोलु । नटनित-  
लेक्षणा-

३३ गि नृगणगण उज्वलकीर्तिपाण्डुरभू.....कुल्लु जडेयागे जगक्के

३४ देवनादरिबिरुदत्रिनेत्रनेमगी.....कोण्डकुन्दान्वयो-

३५ स्पन्ने विरुयाते देसिगे गणे रविचन्द्राख्यसै.....यमनियम-

३६ स्वाध्यायपराणेरप्प माचवेगन्तिय.....तावरेयकेरेय केलग-

३७ ण आङ्गमण्ण धारापूर्वकं कोट्टर् चालुक्यविक्रमकालद २१ ने  
धातुसंवत्सरद कार्तिक न-

३८ न्दीश्वरदृष्टमियन्दु मंगलमहाश्री स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत  
वसुन्धरां षष्टिर्वर्ष-

३९ सहस्राणि विष्टायां जायते क्रिमि ॥

[ यह लेख स्थानीय जिनमन्दिरके निर्माणके समयका है । यह बसदि एरेयंगदेवकी रानी असवब्बरसि द्वारा बनवायी गयी थी । लेखमे एरेयंगका वंशवर्णन इस प्रकार दिया है—कदम्ब कुलमे रणकि राजा—तत्पुत्र हृदुव-तत्पुत्र बूत-तत्पुत्र चिण्ण-तत्पुत्र एरेयंग-तत्पुत्र चिण्ण २-तत्पुत्र एरेयंग २ । इस मन्दिरके लिए कोण्डकुन्दान्वय-देसिग गणके रविचन्द्र से (द्वान्तदेव) के उपदेशसे माचवेगन्ति द्वारा कुछ भूमि दान दी गयी थी । लेखकी तिथि कार्तिककी नन्दीश्वर-अष्टमी ( शुक्ल ८ ), चालुक्य विक्रम वर्ष २१, धातु संवत्सर इस प्रकार दी है ।

इसी मन्दिरकी एक प्रतिमाके पादपीठपर ११वीं सदीकी लिपिमें निम्न वाक्य खुदा है—

बस(दिगे) वासवुरदे विद् ग २ भत्त ५०

अर्थात्—इस बसदिके लिए वासवुर ग्रामके उत्पन्नसे २ गद्याण ( मुद्राएँ ) और ५० भत्त (चावलके परिमाण) दान दिये गये हैं । ]

[ ए० रि० मे० १९३९ पृ० १४५-१४२ ]

१७१

इनगुन्द ( बिजापूर, मैसूर )

कन्नड, ११वीं सदी उत्तरार्ध

[ इस लेखमे चालुक्य सम्राट् त्रिभुवनमल्लदेव ( विक्रमादित्य षष्ठ ) का उल्लेख है । तिथि शक ९००० दी है । मूलसंघ-देशीय गण-पुस्तक गच्छ-कुन्दकुन्दान्वयके ( इन्द्र ) णंदिके शिष्य बाहुबलि आचार्य द्वारा एक जिन-मन्दिर बनवानेका तथा उस मन्दिरके लिए कुछ भूमिदान प्राप्त करनेका इसमें उल्लेख है । ]

[ मूल लेख कन्नडमे मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० १४१ ]

१७२

तोललु ( मैसूर )

कन्नड, ११वीं सदी उत्तरार्ध

- १ स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर.....त्रिभुवनमल्ल तलका-
- २ कमाडि बिट्टन्दु                      ३ नडसुविरि
- ४-७ ( ये पंक्तियाँ घिस गयी हैं )
- ८ स्वस्तिश्रीमनु तोलल बसदिगेनाडु..... ९.....
- १० हिरिय मुद् गनुण्ड.....गनुण्ड बिलग
- ११ वुण्ड वूलुवनड.....वुण्ड वूरयवर् ओक्कल
- १२ ....उत्तराण संक्रान्तियन्दु नविल-
- १३ रं नेमिचन्द्रपण्डितगे धारापूर्वकं माडि कोट्टरु आ-
- १४ नविल्लूरोलगे आवनागि-बदुकुववनु.....हण
- १५ वेन्दु हिडिसिदव.....हन्नोन्दु
- १६ तलेयं नरकदल्लिलिवरु गंगेयतडियलि कविले-

१७ यं ब्राह्मणं नोयसिद फलमन् एन्दुवरु

१८ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुधरां ष-

१९ द्विर्वर्षसहस्राणि विद्यायां जायते क्रिमिः ॥

[ इस लेखमें तोललके जिनमन्दिरके लिए नेमिचन्द्र पण्डितकी नविलूर ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है । यह दान हिरियमुद्गौण्ड, बिलिगौण्ड तथा अन्य ५२ निवासियों द्वारा दिया गया था । लेखमें प्रारम्भमें त्रिभुवन-मल्ल ( विक्रमादित्य षष्ठ ) के किसी माण्डलिकका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९२७ पृ० ४४ ]

१७३

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

तमिल, ११वीं सदी उत्तरार्ध

[ इस लेखके प्रारम्भमें कुलोत्तुंग चोल ( प्रथम ) की ऐतिहासिक प्रशस्ति है । राजेन्द्रशोलचेदिराजन् द्वारा देवमन्दिरमें दीपके लिए कुछ धान अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है । उडैयार् मल्लिवेणका उल्लेख है जो स्पष्टतः कोई जैन आचार्य थे । लेख चन्द्रनाथ मन्दिरके मुख्य द्वारके पास खुदा है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०१ पृ० ६५ ]

१७४

ऊन ( मध्यप्रदेश )

११वीं सदी, संस्कृत-नागरी

[ इस स्थानमें कई जैन मन्दिरोंके ध्वस्त अवशेष हैं । इनमें एक मन्दिरके एक छोटे-से लेखमें मालवराज उदयादित्यका उल्लेख है । अतः यह मन्दिर ११वीं सदीका बना है यह स्पष्ट होता है । ]

[ रि० आ० स० १९१८-१९ पृ० १७ ]

१७५

## सागरकट्टे ( मैसूर )

११वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमद्राविलसं	२ घद अरुंगला-
३ न्वयद नन्दिगण	४ द शान्तिमु-
५ निगल शिष्यसन्त-	६ ति श्रीवादिरा-
७ जदेवर शिष्यरु	८ श्रीवर्धमानदे-
९ बरु होयसल-	१० कारालियदलु
११ अग्रगण्यरु स-	१२ न्यसनदि मुडि(पि)
१३ दरवर सध-	१४ मरु कमलदे-
१५ बरु निसिधियं	१६ निरिसिदर

[ इस लेखमे द्राविल संघ-अरुंगल अन्वय-नन्दिगणके शान्तिमुनिकी परम्पराके वादिराजदेवके शिष्य वर्धमानदेवके समाधिमरणका उल्लेख किया है । वर्धमानदेवके गुरुबन्धु कमलदेवने उनकी यह निसिधि स्थापित की थी । वर्धमानदेवको होयसल राज्यमें प्रमुख कार्यकर्ताका स्थान प्राप्त था । लेखकी लिपि ११वीं सदी की है । ]

[ ए० रि० मै० १९२९ पृ० १०८ ]

१७६

## वेणगि ( जि० बेलगाव, मैसूर )

११वीं सदी, कन्नड

[ इस लेखकी लिपि ११वीं सदीकी है । लेखके समय ( रट्ट वंशके ) कार्तवीर्य ( द्वितीय ) का शासन कूण्डि ३००० प्रदेश पर था । इसे जिनेन्द्रपादसरोजभृंग तथा सेननसिग कहा है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० ८४ पृ० २४७ ]

१७७-१७८

चिक्कहनसोगे ( मैसूर )

कन्नड, ११वीं सदी

[ यह लेख आदिनाथमूर्तिके पादपीठपर है । इसमें हनसोगेके तीर्थ-बसदिकी स्थापना रामचन्द्र-द्वारा की जानेका तथा कालान्तरमें शक, नल, विक्रमादित्य, गंग एवं चंगाल्व राजाओं-द्वारा उसकी सहायताका उल्लेख है । प्रस्तुत लेखके समय नागचन्द्रदेवके शिष्य समयाभरण भानुकीर्ति पण्डितदेवने इस बसदिका जीर्णोद्धार किया था । इसी पादपीठके दूसरे लेखमें जयकीर्ति भट्टारकके शिष्य बाहुबलिदेव-द्वारा बसदिके निर्माणका उल्लेख है । इन लेखोंका समय ११वीं सदी प्रतीत होता है । ये आचार्य मूलसंघ देसिगण-पुस्तकगच्छके प्रमुख थे । ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ५० ]

१७६

चिकमगलूर ( मैसूर )

कन्नड, ११वीं सदी

- १ स्वस्ति श्रीमतु बूचव्वे-
- २ गन्तिथर सिष्य नेचटिम-
- ३ ताय.....निसिधिगेय नि-
- ४ लि.....मज बरेद ॥

[ यह निषिधि लेख बूचव्वेके समाधिभरणका स्मारक है जो उसके शिष्य नेचतिमतायि-द्वारा स्थापित किया गया था । इसकी लिपि ११वीं सदीकी प्रतीत होती है । ]

[ ए० रि० मै० १९३२ पृ० १६२ ]

१८०

कोप्पल ( रायचूर, मैसूर )

कन्नड, ११वीं सदी

[ यह लेख ११वीं सदीकी लिपिमें है । इसमें कोण्डकुन्द अन्वयके मलघारिदेव तथा अन्य आचार्योंका वर्णन है । एक गृहस्थ जैनका भी वर्णन है । ]

[ रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १९८ पृ० ३७ ]

१८१

मदचित्तगम् ( बेल्लारी, मैसूर )

कन्नड, ११वीं सदी

[ यह लेख ११वीं सदीकी लिपिमें है । किसी जैन मन्दिरके लिए दानशाला, उद्यान आदिकी व्यवस्थाका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२४-२५ क्र० ३९२ पृ० ५७ ]

१८२

बेलूर ( हासन, मैसूर )

११वीं सदी, कन्नड

- १ ....युतं जिनेद्रप्रगुणि-
- २ ....द दर्प.....सले महे-
- ३ .....
- ४ नेय्दिवं.....नें....
- ५ पूर्वकमन् एख्वं.....माणद.....य
- ६ महीतलकति मुददि....
- ७ विलोक बुध बोध.....माग्य....

- ८ न्तं दिविजविमवमं सन्द मासावि बम्मं ॥ पतिहितवृत्तियो-  
 ९ लिबन् अप्रतिमन् एनल् दिविज पद्मं....महीपतियोद्धने  
 १० कूडि पोक्कं चतुरं मासावि बम्मंन....आ नेगल्द भूमि-  
 ११ य मुन्नाल्दगं सले....काक्षियं माध्य देनैताल्दनोद्धने सग्गम-  
 १२ न् आल्द....य्यन्दु बम्मं

[ इस लेखमें मासावि बम्मं नामक व्यक्तिके देहत्यागका वर्णन है । अपने स्वामीकी मृत्युपर खेद व्यक्त करनेके लिए उसने सम्भवतः देहत्याग किया था । यह प्रथा होयसल राजाओंके समय रूढ थी । लेखकी लिपि ११वीं सदीकी प्रतीत होती है । ]

[ ए० रि० मै० १९४३ पृ० ५९ ]

### १८३

#### हृदण ( मैसूर )

१२वीं सदी-प्रारम्भ, कन्नड

[ इस लेखमें होयसल राजा बल्लाल १के समय मरियाने दण्डनायक द्वारा एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । आचार्य शुभचन्द्रका भी इसमें उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९१८ पृ० ४५ ]

### १८४

#### चिकमगलूर ( मैसूर )

शक १०२२ = सन् ११०१, कन्नड

- १ सञ्चत सकवर्ष १०२२ नेय
- २ विक्रमसंवत्सरद फाल्गुन शु (४)
- ३ सोमवारदंडु द-विन....

- ४ सनंगेदु दिवक्के सुन्दरव(र)सद
- ५ मिं मालेयब्बगन्तियप्परो...वि(ने)
- ६ यमं माडि निसिदिगेय माडि
- ७ अवर गुडु जगमणचारि व-
- ८ रेद

[ यह लेख फाल्गुन शु० ४, सोमवार, शक १०२२ विक्रमसंवत्सरमें लिखा गया था। एक व्यक्तिके ( जिसका नाम लुप्त हुआ है ) समाधि-मरणके बाद उसके सहाध्यायी मालेयब्बेगन्ति-द्वारा इस निषिधिकी स्थापना का इसमें उल्लेख है। उसके शिष्य जगमणचारिने यह लेख उत्कीर्ण किया था। ]

[ ए० रि० मै० १९३२ पृ० १६१ ]

१८५

टोंक ( राजस्थान )

संवत् ११५८ = सन् ११०२, संस्कृत-नागरी

[ इस मूर्तिलेखमें आलाक नामक व्यक्तिका उल्लेख है। तिथि वै ( शाख ) शु० ७, संवत् ११५८ ऐसी दी है। ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४७२ पृ० ६९ ]

१८६

होसूर ( जि० बेलगाँव, मैसूर )

शक १०३० = सन् ११०८, कन्नड

[ इस लेखकी तिथि सोमवार, पौष शु० ५, शक १०३०, सर्वधारि संवत्सर, उत्तरायण संक्रान्ति ऐसी है। ( रट्ट वंशके ) लक्ष्मीदेव-द्वारा एक बसदिके लिए राजधानी बेणुपुरसे कुछ जमीन दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। यह बसदि लक्ष्मीदेवने ही बनवायी थी। ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० १५ पृ० २४१ ]



१८७

## मुडिगोण्डम् ( मैसूर )

शक १०३ (१) = सन् ११०९, कन्नड

[ इस लेखमें मुडिगोण्डचोलपुरके नगरजिनालयको हदिताडुका एक गाँव दान दिये जानेका उल्लेख है । यहाँकी मुख्य मूर्ति चन्द्रप्रभस्वामीकी थी । तिथि शक १०३ (१) ]

[ रि० सा० ए० १९१० क्र० १० पृ० ५४ ]

१८८

## श्रवणनहल्लि ( मैसूर )

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छ-
- २ नं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं स्वस्ति
- ३ श्रीमन्महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमवल तल-
- ४ काडुगोण्ड भुजबलवीरगंग विष्णुवर्धन होय्स-
- ५ लदेवर पिरियरसि चन्तलदेवियरु त्रिभुवनतिल-
- ६ .....तीर्थद वीरकोंगाल्वजिनालय-
- ७ द देवर अंगमोगक्कं रिषियराहारदानक्कं त-
- ८ म्म बप्प पृथ्वीकोंगाल्व देवर वग बलिवलि बि-
- ९ द मन्दगेरेय श्रितियोलगे कावनहल्लिय तम्म
- १० तम्म दुद्दमल्लदेवनु तातुं इष्टु श्रीमूलसंच
- ११ देसिगगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वयद श्रीमेघ-
- १२ चन्द्रत्रैविद्यदेवर शिष्यरु प्रभाचन्द्रसिद्धा (न्तदेव-)
- १३ र कालं कचिं धारापूर्वकं माडि स(र्वबाधा-)
- १४ परिहारं माडि बिट्ट दत्ति मं(गल महा-

१५ श्री ॥ इदन् आवन् ओर्वं प्रतिपालिसिद

१६ (क) विलेय कोडुं कोळगमं

१७ गंगेय....

[ इस लेखमें होयसल राजा विष्णुवर्धनकी रानी चन्तलदेवी-द्वारा तथा उसके बन्धु दुहमल्ल-द्वारा वीरकोंगाल्व जिनालयके लिए कावनहल्लि ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है । यह दान मूलसंघ-देसिगगणके मेघचन्द्र-त्रैविद्यदेवके शिष्य प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवको दिया गया था । ]

[ ए० रि० मै० १९२७ पृ० १०३ ]

१८६

अंकनाथपुर ( मैसूर )

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड

[ इस लेखमें एक जिनमन्दिरके जीर्णोद्धारके लिए राजा दुहमल्ल-द्वारा हेण्णेगडंग नगरसे अय्यवल्लि ग्रामके दानका उल्लेख है । यह दान प्रभाचन्द्रदेवको दिया गया था । लिपि ११वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३३ ]

१६०

कण्णूर ( मैसूर )

चालुक्यवर्ष ३७ = सन् १११२, कन्नड

[ चालुक्यसम्राट् विक्रमादित्य ( षष्ठ ) के समय चालुक्यविक्रम वर्ष ३७ ( सन् १११२ ) में कालिदासदण्डनाथ-द्वारा कन्नवुरीके पार्श्वनाथ-बसदिके लिए कुछ भूमि दान दिये जानेका इस लेखमें निर्देश है । मूलसंघ-देशिगण-पुस्तकगच्छके आचार्य वर्धमानमुनिके प्रशिष्य तथा बालचन्द्रव्रतीके शिष्य अर्हणन्दिबेट्टदेवको यह दान दिया गया था । ]

[ रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २४२ ]

१९१

जङ्गलि ( बिजापूर, मैसूर )

चालुक्यविक्रमवर्ष ४१ = सन् १२१६, कन्नड

[ इस लेखमें चालुक्यविक्रमवर्ष ४१ में उत्तरायण संक्रान्तिके समय एक जैन मन्दिरके जीर्णोद्धारके लिए कुछ दानका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० १९६ पृ० १७ ]

१६२

कोल्हापुर ( महाराष्ट्र )

शक १०३७ = सन् १११५, संस्कृत-कन्नड

पहला पत्र

- १ स्वस्ति । जयत्याविष्कृतं विष्णोर्वाराहं क्षोमितार्णवं (१) दक्षि-  
णोन्नतदंष्ट्राग्रविभ्रा-
- २ न्तभुवनं वपुः ॥ (१) जयति जगति रुढो राजलक्ष्मीनिवासः  
प्रविजितरिपु-
- ३ वर्गस्वीकृतोत्कृष्टदुर्गं (:) सकलसुकृतवासो वीरलक्ष्मीविलासो  
जनितसुजन-
- ४ रागः श्रीशिलाहारवंशः (॥२) श्रीमत्शिलाहारनरेन्द्रवंशे श्री-  
कीर्तिकान्ताः कमनी-
- ५ यरूपाः (१) विख्यातशौर्या बहवो नृपेन्द्राः संपाकयामासुरिमां  
धरि-
- ६ त्रीं (॥३) तद्वंशे नृपतिर्बभूव जतिगो गोमन्थदुर्गाधिपो मामः  
श्रीवनितापतिस्सु-
- ७ चरितो गंगस्य पेर्मानडेस्तस्याभूत्तनयः प्रतापनिलय (:) श्री-  
नाथिमां-

८ को नृपः कर्णाटीकुचकुङ्कुमांकिततनुर्विद्याधराधीश्वरः (॥४)  
तस्यात्म-

- ९ जस्सुपरिवर्धितराज्यलक्ष्मीः प्रादुर्बभूव समुपार्जितपुण्यपुञ्जः (१)  
१० चन्द्राह्वयो जगति विश्रुतकीर्तिकान्तस्यागार्णवो बुधनुतो नयनाभि-  
११ रामः (॥५) तस्यापि पुत्रो जतिगो नरेन्द्रो जातः प्रवीरो गज-  
यूधनाथः (१) तस्या-  
१२ त्मजौ गोकलगूबलाख्यौ जाताबुभौ बैरिकुलाद्रिवज्रौ (॥६) तद्-  
गोकलस्य तनुजौ रिपुदन्ति-  
१३ सिंहः श्रीमारसिहनृपतिमैस्त्वक्कसर्पः (१) प्रादुर्बभूव समरां-  
गणसूत्र-  
१४ धारो विख्यातकीर्तिरिह पण्डितपारिजातः (॥७) तस्याग्रसूनुर्जग-  
देकवीरो वी-  
१५ रांगनाबाहुलतावगूढः कीर्तिप्रियो गूबलदेवनामा बभूव भूपाल-  
१६ वरो नरेन्द्रः (॥७) तस्यानुजस्सकलमंगलजन्मभूमिरासीन्नृपाल-  
तिलको भुवि भोज-  
१७ देवः (१) प्रोक्तुंगवीरवनिताश्रयबाहुदंढश्चंडारि-मंडलशिरोगिरि-  
वज्रदंढः (॥९)  
दूसरा पत्र : पहला भाग  
१८ श्रीमत्कदंबांबरतिग्मरश्मेद्विशरस्सरोजं खलु शान्तरस्य (१) पूजां  
प्रचक्रे स च चक्रवर्तिश्रीविक्र-  
१९ मादित्यनृपेन्द्रपादे (॥१०) किं वण्यते जगति वीरतरः प्रसिद्धः  
कोपात्तु कोंगजनृपोपि-  
२० पपात यस्य (१) सूर्यान्वयांबररविस्स च बिज्जणोपि चक्रे गृहं  
सुरपतेर्भुवि य-  
२१ स्य कोपात्तु (॥११) यत्प्रतापप्रदीपेस्मिन् कोक्कलशालभायितः  
(१) पलायिता न गण्यन्ते सोयं

- २२ भोजनृपासकः (॥१२) वेणुग्रामदवानलो विजयते वैरीमकण्ठीरधो  
गोविंदप्रलयान्त-
- २३ कः शिखरिणो वज्रः कुरंजस्य च (१) भोजः स्वीकृतकौकणो  
भुजबलात् तद्मिल्लमोदबन्ध-
- २४ कृत् सोयं कर्णदिशापटो रिपुकुभृद्दोर्दण्डकण्डूहरः (॥१३)  
तस्यानुजातो गुणराशि-
- २५ रासीत् बल्लालदेवो जितवैरिभूपः (१) जीमूतवाहान्वयरत्नदीपो  
गंभीर-
- २६ मूर्तिभुवि शौर्यशाली (॥१४) अजनि तदनुजातस्तिग्मरश्मि-  
प्रतापो दिविजयतिवि-
- २७ भूतिस्सर्वलक्ष्मीनिवासः (१) कृतरिपुमदमंगो राजविद्याप्रसंगो  
भुवनवि-
- २८ नुतमूर्तिगण्डरादित्यदेवः (॥१५) चक्रे चालुक्यचक्रेशो विक्रमा-  
दित्यवस्लमः (१) निश्चं-
- २९ कमल इत्याख्यां गण्डरादित्यभूपतेः (॥१६) धन्यास्ते मान-  
वास्सर्वे धन्याश्च मृगजात-
- ३० यः (१) स देशस्सफलो यत्र गण्डरादित्यभूपतिः (॥१७) यत्-  
खड्गाद्भुततीव्रघा-
- ३१ तचक्रितस्तत्कूण्डदेशाधिपो दण्डब्रह्मनृपो जगाम सदनं संसेव्य-  
मानं सुरै-
- ३२ स्यक्त्वा राष्ट्रमतीवरम्यमतुलां लक्ष्मीं भुजोपार्जितां सोयं गण्डर-  
देवम-
- ३३ ण्डलपतिस्संशोमते भूतले (॥१८) रत्नानि यत्नेन ददाति तस्मै  
रत्नाक-
- ३४ रो मंगमयाज्जडात्मा (१) आपूर्य सम्यक् सततं वह्निं सूक्ष्माणि

- ३५ वासांसि हयाश्च तस्मै (॥१९) किमिह बहुमिरुक्तैरल्पगमैर्वं-  
चोमिर्भुवन-  
दूसरा पत्र : दूसरा भाग
- ३६ विदितवीरः क्रूरसंग्रामधोरः (१) अपरनृपतिकोशं देशमत्यन्तशोभं  
यदि स कुपितचित्तः
- ३७ कारयत्यात्मकीयं (॥२०) समधिगतपंचमहाशब्द महामण्डलेश्वरः  
तगरपुरवरा-
- ३८ पीश्वरः । श्रीशिलाहारनरेंद्रः । जीमूतवाहनान्वयप्रसूतः सुव-  
र्णगरुड-
- ३९ ध्वजः । मवक्कशसर्पः । अच्यनसिंहः (१) रिपुमण्डलिकभैरवः  
(१) विद्विष्टगजकण्ठी-
- ४० रवः । गणिकामनोजः । हयवत्सराजः । शौचगांगेयः । सत्पराधेयः ।
- ४१ इडुवरादित्यः रूपनारायणः । कलियुगविक्रमादित्यः । शनिवार-
- ४२ सिद्धिः । गिरिदुर्गलंघनः श्रीमन्महालक्ष्मीलब्धवरप्रसादादि-  
समस्तराजाव-
- ४३ लीविराजितः श्रीमन्महामण्डलेश्वरः श्रीगण्डरादित्यदेवः श्रीम-  
द्वलय-
- ४४ वाडशिविरे सुखसंकथाविनोदेन राज्यं कुर्वाणः । सप्तत्रिंशदु-  
त्तरसह-
- ४५ खेषु शकवर्षेषु १०३७ अतीतेषु मन्मथसंवत्सरे कार्तिकमासे  
शुक्लपक्षे ।
- ४६ अष्टम्यां बुधवारं मिरिजदेशे । मिरिजेगम्पणमध्ये । अंकुलगे श्रोप्पे-
- ४७ यवाड इति ग्रामद्वयं आदगेनामग्रामस्य प्रविष्टं कृत्वा तद्ग्राम-
- ४८ मारुवण त्यक्त्वा तत्रत्यनार्गावुण्डा यदि नाथकत्वं कुर्वन्ति तेषां  
शरी-

- ४९ रजीवितार्थं सुवर्णं न ददाति यदि नायकत्वं नेच्छन्ति स्वेच्छया तिष्ठन्ति त-
- ५० दा कोदेवणं नास्ति । एवमनेन क्रमेण ० श्रीमत्पवित्रेन निगुंब-  
तीसरा पत्र
- ५१ वंशे जातः पुमान् होरिमनामधेयः (१) कीर्तिप्रियः पुण्यधनः  
प्रसिद्धः श्री-
- ५२ जैनसंघांजुजतिगमरश्मिः (॥२१॥) तस्यात्मजोभूदिह वीरणाख्यस्त-  
स्यानुजोभू-
- ५३ दरिकंसरोति (१) तद्बीरणस्यापि तनूमवोयं बभूव कुंदातिरिति  
प्रसिद्धः (॥२२॥)
- ५४ तस्यानुजस्सुपरिपालितबन्धुवर्गः श्रानायिमो जिनमतान्धुधिचं-
- ५५ द्र एषः (१) त्यागान्वितस्सुचरितस्सुजनो बभूव प्रख्यातकीर्ति-  
रिह धर्मप-
- ५६ रः प्रसिद्धः (॥२३॥) तस्यापि वीरः सुजनोपकारी नोलंबनामा  
तनयो बभूव (१)
- ५७ श्रीगण्डरादित्यपदाब्जभृंगो धर्मान्वितो वैरिमतंगसिंहः (॥२४॥  
तस्मै
- ५८ समस्तगुणालंकृताय निगुंबकुलकमलमार्तण्डाय । सुवर्णम-
- ५९ त्स्योरगेंद्रध्वजविराजिताय सम्यक्स्वरत्नाकराय पद्मावतीदेवी-  
लब्धवर-
- ६० प्रसादाय नोलंबसामन्ताय सर्वानमस्यं सर्वबाधापरिहारं पुत्र-
- ६१ पौत्रकमाचन्द्रार्कं दत्तवान् ०

[ यह ताम्रपत्र चालुक्य सम्राट् विक्रमादित्य ( षष्ठ ) के माण्डलिक शिलाहार राजा गण्डरादित्यदेव-द्वारा कार्तिक शुक्ल ८, बुधवार, शक १०३७ के दिन दिया गया था । निगुंब वंशके सामन्त नोलंबको मिरिज

प्रदेशके अंकुलगे तथा बोण्येवाड इन दो ग्रामोंका अधिकार अर्पण करनेका उल्लेख इसमें किया है । नोलंबकी वंशावली इस प्रकार थी—होरिम-बीरण-कुंदाति—उसका बन्धु नायिम-नोलंब । नोलंबको सम्यक्त्वरत्नाकर तथा पद्मावतीलब्धवरप्रसाद ये विशेषण दिये हैं ।]

[ ए० ई० २७ पृ० १७६ ]

१६३

होले नरसिपुर ( मैसूर )

१२वीं सदी : पूर्वार्ध ( सन् १११५ ), कन्नड़

[ इस लेखमें महामण्डलेश्वर वीर कोंगावदेव-द्वारा मूलसंघ-देसिगण-के मेघचन्द्र त्रैविद्यके शिष्य प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवके उपदेशसे सत्यवाक्य जिनालयके निर्माणका तथा उसे हेण्णेगडलु ग्राम दान देनेका उल्लेख है । ( समय लगभग सन् १११५ । ) ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३३ ]

१६४

करन्दै ( उत्तर अर्काटि, मद्रास )

सन् १११५, तमिल

[ यह लेख चोल सम्राट् कुलोत्तुंग राजकेसरिवर्मन्के ४५वें वर्षमें लिखा गया था । तिरुप्परम्बूरकी ग्रामसभा-द्वारा तिरुक्काट्टाम्पल्लि आल्वार जिनमन्दिरके लिए कुछ भूमि विक्रय किये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३५ ]

१९५

तिरुप्परुत्तिकुण्डम् ( चिगलपेट, मद्रास )

राज्यवर्ष ४६ = सन् १११६, तमिल

[ यह लेख राजकेसरिवर्मन् कुलोत्तुंग चोलके ४६वें राज्यवर्षका है ।



इसमें तिरुप्परुत्तिकुण्डुके ऋषिसमुदायके लिए एक नहर बनवानेके लिए क़ैतडुप्पूरकी ग्रामसभा-द्वारा कुछ भूमि करमुक्त रूपमें बेची जानेका उल्लेख है। यह लेख त्रिकूटबसदिके छतमे लगा है। ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ३८२ पृ० ३७ ]

१६६

पुढुपट्टु ( चिगलपेट, मद्रास )

११वीं-१३वीं सदी, तमिल

[ स्थानीय जैन मन्दिरके मण्डपके एक स्तम्भपर यह लेख है। अस्पष्ट और अधूरा है। इसमें चोल राजा परकेसरिवर्मन्का उल्लेख हुआ है। ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० ७९ पृ० १२ ]

१६७

अनमकौंडा स्तम्भ लेख ( वरंगलके समीप, आन्ध्र )

चालुक्य विक्रम वर्ष ४२ = सन् १११७, कन्नड़

पूर्वकी ओर

- |                                |                                   |
|--------------------------------|-----------------------------------|
| १ श्रीमज्जिनेन्द्रपदपद्म-      | २ शेषमव्यानव्यात् त्रिलोकनृ-      |
| ३ पतीन्द्रमुनीन्द्रवंधं निः-   | ४ शेषदोषपरिवर्तनचन्द्रका-         |
| ५ ण्डं रत्नत्रयप्रभवमुद्भव-    | ६ गुणैकतानं॥ (१) स्वस्ति समस्त-   |
| ७ भुवनाश्रयश्रीपृथ्वीवल्लभ-    | ८ महाराजाधिराजपरमेश्वर-           |
| ९ परममहाराज सत्याश्रयकु-       | १० कतिलकं चालुक्यामरणं श्रीम-     |
| ११ त्रिभुवनमल्लदेवरविजयरा-     | १२ जयमुत्तरोत्तरामिवृद्धिप्रवर्ध- |
| १३ मानमाचन्द्रार्कतारं सलुत्त- | १४ मिरे। तत्पादपद्मोपजीवि समधि    |
| १५ गतपंचमहाशब्द महामं (ड)      | १६ लेश्वरनन्मकुंडापुरवरेश्वरं     |
| १७ परममाहेश्वरं प्रतिहितच-     | १८ रितं विन(य)विभूषणं श्रीम-      |

- १९ न्महामण्डलेश्वरं काकतीबेत(भू) २० पालकुलकमागतं तदीयरा-  
 २१ ज्यमरनिरूपितमहामात्यप- २२ दवीविराजमान मानोज्ञत प्र-  
 २३ भुमंत्रोत्साहशक्तित्रयसं- २४ पञ्चना(गि)॥धनशौचाटोप(दिं)  
 २५ मान्तनदमहियेयि चारुचारि- २६ अदि(दो)ल्पिन तेलर्पि सत्क-  
 २७ लदिनोदविदाश्चर्य(सौ)- लाकौश-

## उत्तरको ओर

- २८ दर्यदिद(धिं)निकायप्रार्थितार्थ-  
 २९ (प्र)द वितरण(वि)ख्यात- ३० (वि)नुत श्रीकाकतीबेतरसन  
 नादं धरित्रो सचि-  
 ३१ वं बैज दंडाधिनाथ ॥(२)अगणितशौर्य-  
 ३२ दि नेगल्द काकतिबेतनरेंद्रनं जगं  
 ३३ पोगले चलुक्यचक्रिचरणं सले का-  
 ३४ णिसि तत्प्रसाददिं बगेगोले सल्लिप्सा-  
 ३५ यिरमनालिसि(दु)दधयशो- ३६ धिनाथनं पोगलदरारो मंड(लिं)  
 ३७ ककाकतिबेतन मंत्रि बैजन ॥- ३८ तंगं विकसितकंजातानने या-  
 (३)आ-  
 ३९ कमब्बेगं जनियिसिदं ख्यातं ४० धरेयोलु पेगंडे बेतं मं-  
 ४१ त्रिजनमकुटचूडारत्न ॥(४) ४२ आतं मां(धा)तरामोपम-  
 ४३ नेविसिदं श्रीकाकतीप्रोलभू- ४४ पख्यातामात्यं विवेकाग्रणि  
 ४५ सकलकलाकोविदं सञ्चरित्र- ४६ प्रीतं साहित्यविद्यानिधि बु-  
 ४७ धविबुधोर्वीरुहं सत्यधर्मो- ४८ पेतं स्वग्रामदोल माडिदनत्तिमु  
 ४९ दिदिं हत्तु देवालयंगलु ॥(६) ५० अतिशयजैनधर्मसमयोचित-  
 ५१ शासनदेवि मारतोसति शशिबिंबव(क्त्र)-  
 ५२ दशनच्छदे शुद्धसुवर्णकुंभसन्नुतत-

५३ नुवर्णपीवरपयोधरि मैल (म था-)

५४ कमांबिकासुततदमास्थबेतह-

५५ दयेश्वरि निश्चललक्ष्मि भाविसलु ॥ (६)

पश्चिमकी ओर

५६ पददिंदालुकितालकं बेरेग (मं) गो-

५७ पांगमं पंचरत्नदिनांगोचितमागे ५८ निर्मिसि सुरस्त्रीभास्यसौभाग्य-

५९ सम्म (द) सौंदर्यमनाय्दु तीवि ६० पदेदं कंजातसंजातनी  
सु(दती)-

६१ रत्नमनेंदु मैलमननारार् वणिगस-६२ लौकदोल ॥ (७) नुतरूपवति  
कला (व)-

६३ ति रतिरति श्रोसतिघटान्तकी- ६४ णीसतिथेदमास्थबेतन सतिथं  
सति वा-

६५ क्षितियेक्लमेय्दे नुतियिसुतिकुं- ६६ मुददिंदेने नेगल्द रमास्पदे मै-  
॥ (८)

६७ लम भक्तिथिदे माडिसि तन- ६८ यकरमागिरलु बेट्टद (मे) गण  
गभ्युद-

६९ कदलालयबसदियनेसेयलु ॥ (९) ७० अदकें नित्यपूजेगं धूपदीप  
(नि) वेद्य-

७१ ककं पूजारिगाहा (र) वस्त्रादि- ७२ श्रीमत्रिभुवमल्लमंडलिकभू-  
गल्गं (पा)-

७३ लपुत्रनप्प काकतियपोलरसन रा- ७४ ज्यमुत्तरोत्तरामिवृद्धिप्रवर्ध  
मानमा-

७५ गमम्मकुन्देयलाचंद्रार्कतारं स- ७६ लुत्तमिरे श्रीमच्चालुक्य-  
विक्रमवर्ष-

- ७७ द नाल्वत्तेरेडेनेय हेमलंबि(सं)- ७८ वत्सरपौष्यबहुल १५ सोमवा-  
 ७९ रदंदिनुत्तरायणसंक्रांतिनिमि- ८० त्त धारापूर्वकमागि तन्न  
 वल्लमनप्य  
 ८१ बेतन-पेगांडे तन्न पेसरिंदं माडि- ८२ सिद् केरेयेरिय केलगनेरडुं  
 ८३ हासरेगल्लुगल नडुवण गर्दे(य) ८४ मत्तरेरडुं मत्तमाकेरेय प-  
 ८५ डुवण नेल दोणेय तँकलेरेय ८६ मत्तनीलुकुं करंबं मत्तरारु-  
 ८७ मं कोट्टु निरिसिदलीशासनगंम ॥

दक्षिणकी ओर

८८ मत्तमी धर्मक्के तेल्लटियागे ॥

- ८९ अ(ष्टौ) दन्तिसहस्राणि दशको- ९० टी च वाजिनामनन्तं पादसं-  
 ९१ घातमित्येते माधववर्म- ९२ वंशोद्भववरप्य श्रीमन्महा-  
 ९३ मण्डलेश्वरनुग्रवा (डि)- ९४ य मेलरसं तन्ना (लि) के-  
 ९५ योरंगल कूचिकरे- ९६ येरिय केलगे कालुवेय  
 ९७ मोदल गर्देय मत्तरोन्दा स- ९८ मीपदले करंबं मत्त-  
 ९९ रु हत्तुमनित्त ॥ निरुतमि- १०० दनलिदवं सासिरकवि (ले)-  
 १०१ यनलि (द) पापमं (पो) दुं- १०२ गुमादरदिं रक्षि (सि) दं सा-  
 १०३ सिरयज्ञद पलमनेयदि १०४ शुम (मं) पडेगु॥ (१०) स्वद-  
 १०५ त्तां परदत्तां वा यो हरेत १०६ वसुंधरां । षष्टिवर्षसहस्रा-  
 १०७ णि विष्टायां जायते १०८ बहुमिर्वसुधा दत्ता राजमिस्स-  
 कृमिः ॥ (११)

- १०९ गरादिभिः । यस्य यस्य य- ११० दा भूमिस्तस्य तस्य तदा  
 फलं ॥ (१२)

- १११ अहिक बसदिय कसं गलेव बो- ११२ यपहंगे पाग वोंदु ॥

[ यह स्तम्भ चालुक्यविक्रमवर्ष ४२ ( सन् १११७ ) में पौष अमा-  
 वस्याको उत्तरायण संक्रान्तिके समय स्थापित किया था । उस समय

चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्ल विक्रमादित्य (षष्ठ) के माण्डलिक काकतीय बेतका पुत्र पोलरस ( प्रोल ) सन्धि प्रदेशपर शासन कर रहा था । बेतका महामात्य वैज था । वैजकी पत्नी याकमन्बे थी तथा पुत्र बेत पेगडे था । बेत पेगडे प्रोलका मन्त्री था । इसकी पत्नी मैलम थी । इसने अन्नकुन्द पहाड़ीपर कदललायदेवीका मन्दिर बनवाया तथा उसे उक्त तिथिको कुछ जमीन दान दी । इसी मन्दिरको उग्रवाडिके मेलरसने जो माधववर्मके कुलमें उत्पन्न हुआ था—भी कुछ जमीन दान दी । कदललायदेवी सम्भवतः पद्मावतीका नाम है । इस समय यह मन्दिर ब्राह्मणोंके अधिकारमें है तथा वे उसे पद्माक्षी देवी कहकर पूजा करते हैं ।]

[ ए० ई० ९ पृ० २५६ ]

१६८

कोविलंगुलम् ( रामनाड, मद्रास )

सन् १११८, तमिल

[ एक भग्न मन्दिरके दक्षिण तथा पश्चिमकी आधारशिलापर यह लेख त्रिभुवनचक्रवर्ति कुलोत्तुंगचोलदेवके ४८वें वर्षका है । कुम्बनूरके २५ जैनों-द्वारा मुक्कुडैयारके लिए एक मण्डप तथा सुवर्ण विमान बनवानेका इसमें निर्देश है । कुम्बनूर गाँव वेम्बुवलनाडु प्रदेशके शेगाट्टिरुक्कै विभागमें था । इसी लेखमें त्रिछत्राधिपति देव तथा एक यक्षीकी तांबेकी मूर्तियोंकी स्थापनाका भी उल्लेख है । इस मन्दिरके लिए जमीन और प्याऊके लिए भी दान दिया गया था । इस लेखकी तमिल भाषा साहित्यिक दृष्टिसे बहुत अच्छी है ।]

[ इ० म० रामनाड १७ ]

१६९

पेहोले ( बिजापुर, मैसूर )

चालुक्य विक्रमवर्ष ४४ = सन् १११९, कन्नड

[ यह लेख त्रिभुवनमल्लदेव विक्रमादित्य षष्ठके समय वंशाख शु० ३, १०

सोमवार, विकारी संवत्सर, चालुक्य विक्रमवर्ष ४४ के दिन लिखा गया था । इसमें जेमपार्य तथा जातियक्कके पुत्र केशवय्य सेट्टिका उल्लेख है जिसने स्थानीय जिनमन्दिरमें पूर्व और पश्चिमकी ओर बसदिर्या, एक पट्टशाला तथा कूपका निर्माण कराकर लोकपाल-मूर्तियोंकी स्थापना की थी और देवपूजाके लिए कुछ भूमि आदि दान दिया था ।]

[ मूल लेख कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० २१९ ]

२००

### कुमारबीडु ( मैसूर )

शक १०४४ = सन् ११२२, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं (१) जीयात्
- २ त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं (॥) स्वस्ति समधिग (त)
- पंच-
- ३ महाशब्द महामण्डलेश्वरं कुलोत्तंगचोलभुजब-
- ४ लवीरगंगहोयसलदेवरु गंगत्राडि तौमट्टरु-
- ५ सासिरमनेकच्छत्रदि तलकाडलिदुं सुखसकृतावि-
- ६ नोददिं राज्यं गेयुत्तमिरे शकवर्ष १०४४ ने-
- ७ य ण्डवसंवत्सरद मार्गसिर सुध ५ सोमवार-
- ८ दंदु महाप्रधान दण्डनायक गंगपर्य-
- ९ गलु तम्म सोवणदण्डनायकंगे हादरिचागिर-
- १० बीडिनलु परोक्षविनयक्कं माडिसिद बसदिगे
- ११ विट्ट दत्ति मैसेनाड चन्दवनहल्लियुं बीडिंद
- १२ मूडण कम्माडिय केरेय गहे ३० सकगेयुं
- १३ आ केरेयि बडगलु एरिय बेदले बेळि २
- १४ आ केरेय हडुवण कट्टद केलगे तोंट
- १५ ५०० गुळियुं बीडिन २ गाणद एण्णेयुं

- १६ सोडरिंगे सल्लुबुदु ॥ बसदिगे बिट्टीधर्मम-  
 १७ नोसदु करं सलिसुतिर्दगक्कुं पुण्य असव-  
 १८ सदि केडिसिदवर्गलु पसुबुं ब्राह्मण-  
 १९ न कौंद वधे समनिसुगु ॥ स्वदत्तां पर-  
 २० दत्तां वा यो हरेत वसुंधरां षष्टिवर्षस-  
 २१ हस्त्राणि विष्टायां जायते क्रिमि (ः)

[ यह लेख होयसल राजा विष्णुवर्धनके राज्यमे मार्गशिर शु० ५, सोमवार, शक १०४४, प्लव संवत्सरके दिन लिखा गया था । दण्डनायक गंगपट्टय-द्वारा सोवणदण्डनायककी स्मृतिमे हादरवागिलु ग्राममे एक जैन मन्दिरकी स्थापनाका तथा उसे दिये गये दानका उल्लेख इस लेखमे किया है । ]

[ ए० रि० मै० १९३८ पृ० १६६ ]

२०१

बेलूर ( मैमूर )

१२वीं सदी — पूर्वार्ध, कन्नड

- १ पुणिसचमूपनेम्बेसेव शासनवाचकचक्रवर्तिगिन्तेनिसलोडं पोगर्ते  
 तनगागिरे पुट्टिद चामराज नाकण कुमारय्यनेम्ब रत्नत्रयमू-  
 २ तिगे पुत्रनोप्पिद पुणिसमदण्डनाथनुदितोदितचामचमूपसंभवं (॥)  
 नमः सिद्धेभ्यः (॥)

[ यह लेख किसी जैन मन्दिरके स्तम्भपर था । वह स्तम्भ बादमें केशवमन्दिरमे लगाया हुआ पाया गया । इसमे सेनापति पुणिस तथा उसके तीन पुत्र चामराज, नाकण तथा कुमारय्यकी प्रशंसा की है । यह पद्य अन्य लेखोंमें भी पाया गया है । पुणिस राजा विष्णुवर्धनका जैन सेना-पति था । ]

[ ए० रि० मै० १९३४ पृ० ८३ ]

२०२

अरताल ( जि० धारवाड़, मैसूर )

शक १०४५ = सन् ११२३, कन्नड

[ यह लेख चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लके समयका है । उस समय बनवासि तथा पार्नुगल प्रदेशोंपर कदम्ब कुलका महामण्डलेश्वर तैलपदेव शासन कर रहा था । मूलसंघक्राणूरगणके कनकचन्द्रके शिष्य गंगर बम्बि-सेट्टिने कोन्तकुलि विभागके प्रमुख नगर पयिट्टणमे एक मन्दिर बनवाया । बम्बिसेट्टि बट्टकेरेका निवासी था । इस लेखकी तिथि पौष अमावास्या, सूर्यग्रहण, रविवार, शक १०४५, शुभकृत् संवत्सर ऐसी दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९४३-४४ एफ् १ ]

२०३

हिरेशिगनगुत्ति ( बिजापुर, मैसूर )

११वीं-१२वीं सदी, कन्नड

[ इस खण्डित लेखका समय चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लदेव (विक्रमादित्य पष्ठ) के राज्यका है । देसिगगण-पुस्तक गच्छके आचार्य बालचन्द्रका इसमे उल्लेख है । किसी मन्दिरके लिए उन्हे कुछ भूमि अर्पण की गयी थी । ]

[ मूल लेख कन्नडमे मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० २६२ ]

२०४

तोगरकुण्ट ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

११वीं-१२वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख चालुक्यराजा त्रिभुवनमल्लके समय एक सूर्यग्रहणके अवसरपर लिखा है । इसमे तोगरकुण्टके चन्द्रप्रभदेवबसदिके लिए दण्डनायक



कोम्मणार्थ-द्वारा कुमारतैलपदेवकी पुण्यवृद्धिके लिए कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान मूलसंघके पद्मनन्दिदेवके शिष्यको अर्पित किया गया था।]

[ रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ३४४ पृ० ६६ ]

२०५

उगरगोल ( बेलगाँव, मैसूर )

११वीं-१२वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख जिनशासनकी प्रशंसासे प्रारम्भ होता है। चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लदेवके किसी महाप्रधानका इसमें उल्लेख है। लेख खण्डित है।]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० ८२ पृ० २४७ ]

२०६

सिरसंगि ( जि० बेलगाँव, मैसूर )

१२वीं सदी, कन्नड

[ चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लके समयका यह लेख है। तिथि पौष शु० १३, रविवार, उत्तरायण संक्रान्ति ऐसी है। ऋषिशृंगीके छह गावुण्डों-का इसमें उल्लेख है। बाचि गावुण्ड तथा अन्य व्यक्तियों-द्वारा किसी बसदिको जमीन आदिके दानका उल्लेख है। गण्डवि ( मुक्त ) सिद्धान्तदेव, अत्तिमब्बे, देवरस, तथा कलिदेवसेट्टिका भी उल्लेख है।]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० ७६ पृ० २४६ ]

२०७

हूलि ( जि० बेलगाँव, मैसूर )

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, संस्कृत-कन्नड

१ ( श्रीमत्परमगंभी)रस्यादवादामोघलाञ्छनं । जीयात् त्रैलोक्य-

नाथस्य शासनं जिनशासनं ॥(१) श्रीवीरनाथस्य गणेश्वरोभूत्  
सुधर्मनामा प्रविधूत....

२ यापनीये सं(धे) पुनस्तत्र च चारुमार्गे ॥(२) कण्डूरुविल्यातगणे  
बभूवुः पुरा मुनीन्द्रा बहवो महा....

३ ....दैकसिंहो मुनीश्वरो बाहुबली बभूव ॥(३) जयतु शुभचंद्रदेवः  
कण्डूरगणपुंडरीकवनमार्तडश्चंडत्रिदंड....

४ ....पारगोबुधविनुतः ॥(४) नुतयापनीयसंघप्रतीतकण्डूरगणाब्धि-  
चंद्रमरेंदी क्षितिवल्लयं पोगल्विनमुनतिवेत्तर् मोनि (दे-

५ वदिव्यमुनीन्द्र) रु ॥(५) श्रीमाघनंदिव्रतिनाथमीडे कामारिमीमो  
(र) गवैनतेयं । नम्रावनीपालकविद्धर्कातिं सि(द्धा)त त(त्त्वा)  
र्णवपूर्णचंद्र) ॥(६)

६ ( स्वस्ति । समस्तभुव ) नाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लमं महाराजाधि-  
राज परमेश्वरं परममट्टारकं सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्यामरणं  
श्रीमत्त्रिभुवनमल्ल-

७ ( देवर विजय ) राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचंद्राकंतारं-  
वरं सलुत्तमिरे । क्षितिगेल्लं तन्न तेजं तोलगि बेलगे तन्नाज्ञे चोला  
( वनी )-

८ ....लु नर्तिसुतिरे सले तन्नापुं लोकककेकल्पक्षितिजातं कूडे पण्त्तिरे  
कलियुगदोलु पुट्टियुं राघवादिक्षितिपालानीकरोलु पा....

९ ....(विक्र)मादित्यदेव ॥(७) जलधिपरीतभूतलवधूटिगे कुंतलदंददि  
मनंगोलिसुबुदंतु नोर्पडमे कुंतलदेशमदकके चिन्नपूगल तेरदंते  
रंजि' ..

१० ....ट मौक्तिकावलियपोदल्दहारद वोलिपुंदु नोर्पडे पूलि लीलेंयि  
॥(८) मत्तं । पोंगलसंगलिदेसेव देवगृहंगलिनोप्पुवेत्त वारांग-  
नेयर्कल्....

- ११ ....पोद) लुद् वेदंगले मूर्तिगोंडु देनिपंददलोप्पुव विप्ररिंदे ग्रामंगल चक्रवर्तियेसेदिर्दुदु नोपंडे पूलि कीलेयिं ॥(९) मत्तमल्लिय विप्रर महिमेये (न्तेदोडे) ।
- १२ ....पोंठनेनिप श्रीकृष्णदेवं सविस्तरदिं तन्न सहस्रमप्प पेसरं रूपा-  
गिरलु माडि साक्षरवेदाक्षरजीवमंत्रचयमं तीविट्ट पुलीमहापुर....
- १३ ....( एसेदर् ) सासिर्वरितुर्वियोलु ॥(१०) उपमातीतमेनिप्प पेंपु  
गुणमौदार्यं चलं साहसं जपहोमं नियमं महोन्नतिकसत्थं  
शौचमा....
- १४ ...शास्त्रदोदविं श्रीकेशवादित्यदेवपादांभोजवरप्रसादरंसेदर् सासि-  
वरितुर्वियोलु ॥(११) हरि किलेनेलेयिं चलिसिद हरिबद्वेष्टिं
- १५ ....क्केंदु निराकरिपुदु सासिर्वरुचितदे चलितवचनं ॥(१२) स्व-  
स्थनवरतविनमदम (र) राजत्किरीटकोटिताडितजिनेंद्रचरणा-  
रविंदम—
- १६ ....(चल) दुत्तरंग। वीरविद्विष्टसंहरणप्रतापकार्तिकेय । गंगगांगेय ।  
चपलबैरिवाहिनीसंहननप्रतापलंकेश्वरं । कोलालुपु(रवराधीश्वरं ।)
- १७ ....(पुंते) दोडे । मंडलिकजगदलं मार्कोडर जवनार्थिजनके कल्प-  
महीजं गंडर तीर्थ सितगर गंडं मार्कोल भैरवं पिट्टनृपं ॥(१३)  
मत्तं....
- १८ ....पुट्टिदरोप्पे पेर्मनृप बिज्जमहीपति कीर्तिभूपनुं जेट्टिग गोमंनुं नेगदं  
(वद) मैललदेवियुमंते रूपिनिधिट्टलवागि....
- १९ ....॥(१४).... लिंकदंकदरिभूभुजरं तवे कोंडु गूर्जराष्ट्रद जयसिंहदेव  
धरणीश्वरनं निजराज्यलक्ष्मियोलु पदु....
- २० ....पोगलुतिर्पुदु बिज्जलभूमिपालनं ॥(१५) मत्तं । रेवकनिमंडि  
कन्हरदेवंगंतक्कनंते भूनुते सिरिया (देवि)

- २१ ....॥(१६)....दु दलत्ताय्वनेयेदु बिज्जलनृपं चउवीसतीर्थरकलं  
मुददिं माडिसि कल्वेसं समेसि....
- २२ ....दिं बिट्ट—बेल्वलदोलिंतोप्पिप्प पेगुम्मियं ॥(१७) हरलारु-  
वाडकंसि....
- २३ ....चालुक्यचक्रवर्ति पेमाडिरायन् कटथोल्....
- २४ ....माडिसिद माणिक्यतीर्थ....

[ यह लेख चालुक्यसम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ) के राज्यकालका है । इसमें प्रथम मुधर्म गणधरकी परंपरामे यापनीय संघ—कण्डूर् गणके बाहुबली, शुभचंद्र, मौनिदेव तथा माघनंदि इन आचार्योंका उल्लेख है । इनका परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट नहीं है । अनन्तर एक पूल नगरके पिट्ट नृपका उल्लेख है जो गंगवंशमें उत्पन्न हुआ था । इसके चार पुत्र थे—पेर्म, बिज्जल, कीर्ति, गोर्म—तथा एक कन्या थी—मैल्लदेवी । बिज्जलके सम्बन्धमें गूर्जराष्ट्रके जयसिंहका उल्लेख किया है किन्तु इसका ठीक अर्थ स्पष्ट नहीं क्योंकि यहाँके कई अक्षर घिस गये हैं । इसी तरह कृष्णराजकी बहिन रेवकनिर्मडिकी एक श्लोकमें सिरियादेवीसे तुलना की है उसका पूर्वापर सम्बन्ध भी स्पष्ट नहीं है । अनन्तर कहा है कि बिज्जलने एक जैन मन्दिर बनवाया तथा उसे पेगुमि ग्राम दान दिया । लेखके अन्तिम भागमें माणिक्यतीर्थका उल्लेख है । इसका सम्बन्ध भी स्पष्ट नहीं है । ]

[ ए० ई० १८ पृ० २०१ ]

२०८

बेलवत्ति ( धारवाड, मैसूर )

१२वीं सदी - पूर्वाध, कन्नड

[ इस लेखमें सवणूरके बम्मिसेट्टि-द्वारा एक ब्रह्मजिनालयके निर्माणका उल्लेख है । इस जिनालयके लिए बम्मिसेट्टिने बेलवत्तिके ३०० महाजनों-

को कई दान दिये थे । इस स्थानके कुछ आचार्योंके नाम भी लेखमें दिये हैं । तिथि आषाढ़ शु० प्रतिपदा, सोमवार, उत्तरायणसंक्रान्ति, शोभकृत संवत्सर ऐसी दी है । उस समयके चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लदेवके राज्यका उल्लेख किया है । ]

[ रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० २१६ ]

२०६

बैल होंगल ( बेलगाँव, मैसूर )

११वीं - १२वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा त्रिभुवनमल्लदेवके समयका है । शक वर्षके अंक अस्पष्ट हुए हैं । इसमें रट्टवंशीय महासामन्त अंक, शान्तियक्क तथा कूण्ड प्रदेशका उल्लेख है । अनन्तर यापनीयसंघ-मैलाप अन्वय-कारेय-गणके मुल्लभट्टारक तथा जिनदेवमूरिका उल्लेख हैं । यह सम्भवतः किसी जिनमन्दिरको दिये गये दानका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५१-५२ क्र० ३३ पृ० १२ ]

२१०

गोलिहल्लि ( जि० बेलगाँव )

सिद्धेश्वरमन्दिरके समीप शिलापर

१२वीं सदी, कन्नड

[ मेल्लदेवी तथा जयकेशिन्के पुत्र वीर पेर्माडि तथा विजयादित्यके शासनका इस लेखमें निर्देश है । अंगडिय मल्लिसेट्टि-द्वारा किरुसंपगाडिमें बनवाये गये जैन मन्दिरके लिए भूमिदान देनेका इसमें उल्लेख है । मूलसंघ, बलात्कारगणके नेमिचन्द्र भट्टारकके शिष्य वासुपूज्य भट्टारकको यह दान दिया गया । वासुपूज्यकी गुरुपरम्परा कुछ विस्तारसे दी है । लेखके समय फाल्गुन शु० १५, गुरुवार, मन्मथ संवत्सर था तथा चालुक्य भूलोकमल्ल सम्राट् थे । ]

[ रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० १५ ]

२११

चरांग ( मैसूर )

१२वीं सदी-मध्य, कन्नड

[ यह लेख आलुप राजा कुलशेखरके समयका है । इसमें माधवचन्द्र, प्रभाचन्द्र, तथा श्रीचन्द्र इन आचार्योंका उल्लेख किया गया है । ]

[ रि० आ० सं० १९२८-२९ पृ० १२७ ]

२१२

दडग ( माडया, मैसूर )

१२वीं सदी - पूर्वार्ध, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ( । ) जी-

२ यात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ( ॥ )

३ कुलरत्नाकरदोलु कौस्तुभादिगल वोलु पलरुं लोकोपकारपरिणतर्  
एकीकु-

४ तसकलराजगुणरुं स० कलजनोक्ति यादवकुलदोलु पुलि पाये

५ सलेयिं पुलियं पोय् सल येने पोय्दुदरिं पोयसणवेसरवनिंद  
वादुद-

६ लिलिंदे नयं प्रदारण नना युरदि जग-

७ नयनिसि पोरेंदं विनयादित्यं समस्तभुवनस्तुत्यं आतंगतिमहिम-

८ समाख्यातकीर्ति सन्मूर्तिमनोजात मर्दितरिपुनृपजातं तनुजात-  
नादन् एर्यंग-

९ नृपं ॥ च धर्मार्थकामसिद्धिबोल् अवनीवल्लभर् आतन तन-

१० यर् बल्लालं बिट्टिदेवन् उदयादित्यं ॥ म्वर् तनयरोलं तां  
माविसे म

११ ध्यमनागियुं सदगुणसद्भावदिन् उत्तमनादं विनुतविमवद्भूत-  
जिष्णु वि-

१२ ण्णुमहीशं । स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द महामंडले-

१३ श्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलांबरद्युमणि सं-

१४ म्यक्त्वचूडामणि मलपरोलुगण्डं गण्डभेरुण्ड शशकपुरनिवास

१५ वासंतिकादेवीलब्धवरप्रसाद दानसन्मानसंपादितविप्रप्रगामोद

१६ नामादिसमस्तप्रशस्ति सहितं तलकाडु कोंगु नंगलि गंगवाडि नो-

१७ णंबवाडि बनवासे हानुंगलु गोंड भुजबलवीरगंग प्रताप

१८ होयसणदेवर् पृथ्वीराज्यं गेयुत्तमिरे तत्पादपञ्चोपजीविगलप्प ॥  
भीम भ-

१९ जुनलवकुशरी माल्केयेनल् अंते पुट्टिये मेरेदरु श्रीमन्मरियाने-

२० युं उद्दामगुण भरतराजदण्डाधिपक ॥ करिगति सिंहमध्ये कल-

२१ सस्तनि दोस्त्रजपुण्यवार्धि मित्ररुचिरकटाक्षे वलिमुखि वेण्यहि

२२ गेहविलासलक्षिम भासुरे सुमनोविमाने गुणरत्नयशोहारि की-

२३ तिगोपति स्थिरसत्त्वे जक्कियक्कनेने पोलवर् आर् अमलकान्त  
तनुवं ॥

२४ बल्लेशनधीशं चरितार्थं नेगलद् तन्दे मारायर् ॥ तत्परमजिन-  
देव्यमेन्दि

२५ हरियबेयन्तेय्दे नोन्त कान्तेयरोलरे ॥ श्रीमूलसंव कुण्डकुंदान्व-

२६ य काणूरुगण निन्निणिगच्छद् जवलिगेय मुनिमद्रसिद्धान्तदेवर  
शिष्य

२७ मेवचन्द्रसिद्धान्तदेवर्गे श्रीमन्महाप्रधान दण्डनायक मरिया-

२८ नेयुं श्रीमन्महाप्रधान दण्डनायक भरतिमय्यगलुं दडिग-

२९ नकेरेय पंचबसदियालगे बाहुबलिकूटम धारापूर्व-

३० कं माडि कोट्टरु मरियानेसमुद्रद् बयलुमं

- ३१ मलेहल्लिय मुंदण किरुकरेयं अल्लिय होलगुत्त-  
 ३२ गेयुं कोडियहल्लिय मुंदण किरुकरेयं आबेदलेय  
 ३३ हिरियकरेय केलगण अडकेय तोटमुं ॥ अन्तु सर्वाय सुद्धवागि  
देशियगणद बसदि ४ वकं काणूरगणद ब-  
 ३४ सदि वोन्दक्कं अन्तु पंच बसदिगे समानवागे इल्लि हट्टि-  
 ३५ द माचिगौडनु कसवगौडनु ॥  
 ३६ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरंत वसुंधरा षण्टिवर्ष सह-  
 ३७ साणि विष्टायां जायते क्रिमि

[ इस लेखमे होयसल राजा विष्णुवर्धनके महाप्रधान दण्डनायक मरि-  
 याने तथा भरतिमय्य-द्वारा दडिगनकेरे स्थानकी पाँच बसतियोंमें बाहुबलि-  
 कूट नामक बसतिका दान तथा कुछ भूमिके दानका निर्देश है । यह दान  
 काणूरगण-तिविणिगच्छके मुनिभद्र सिद्धान्तदेवके शिष्य मेघचन्द्रदेवको दिया  
 गया था । ] [ ए० रि० मै० १९४० पृ० १५६ ]

२१३

कम्बदहल्लि ( मंसूर )

१२वीं सदी - पूर्वार्ध ( सन् ११३० ), कन्नड

१ (द्रोह)घरट्ट दण्डनायक गंगराजन मग बोप्पदेवरिगे रूवारि

२ द्रोहघरट्टाचारि कस्सेवसदिमं माडिद ॥ मंगल महाश्री

[ यह लेख स्थानीय शान्तीश्वर बसदिके भग्नावशेषोंमें है । यह बसदि  
 दण्डनायक गंगराजके पुत्र बोप्पदेवके लिए द्रोहघरट्टाचारि नामक शिल्पकार-  
 ने बनवायी ऐसा लेखमे कहा गया है । यह कस्सेवसदि अर्थात् निर्माता-  
 द्वारा बनवायी पहली बसदि थी । अतः इसका समय लगभग सन् ११३०  
 है क्योंकि बोप्प-द्वारा सन् ११३३ मे हलेबिडमें निर्मितया दीश्वरबसदि  
 विद्यमान है । ]

[ ए० रि० मै० १९३९ पृ० १९३ ]



२१४

सालूर ( मैसूर )

सन् ११३०, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादाभोषलाञ्छनं जीयात् त्रलोक्य-
- २ ( नाथस्य शासनं जिन ) शासनं ॥ स्वस्ति समस्तभुवना-
- ३ ....(म)हाराजाधिराजं परमेश्वर पर-
- ४ ....(सत्या)श्रयकुलतिलक चालुक्याभरणं
- ५ श्रीम(द्भूलोकमल्ल)देवर विजयराज्यमुत्तरोत्तरामिवृ-
- ६ ( द्विप्रवर्धमान ) माचंद्रार्कतारं सलुत्तमिरे । समधिगतपंचम-
- ७ ( हाशब्द महामं )डलेश्वरं बनवासिपुरवराधीश्वर त्रिश्रयक्ष्मा-
- ८ ( संभव चतुराशीतिनग )राधिष्ठितल( लाटलोचन )चतुर्भुजं
- ९ श्रीजयंतीमधुकेश्वरदेवलब्धवरप्रसादं नामादि-
- १० समस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमन्महामण्डलेश्वरं मयू-
- ११ रवर्मदेव तत्पादपद्मोपजीवि श्रीमन्महामण्डलेश्वरं
- १२ मगर कारगरसर् सान्तलिगेसाथिरमुमं दुष्टनि-
- १३ ग्रहविशिष्टप्रतिपालनदिनालुत्तिरे ॥ श्रीमूलसंघको-
- १४ (ण्ड) कुन्दान्वय काणूरगणद मेष(पा)षाणगच्छद श्रीप्रमाचं-
- १५ द्रसिद्धांतदेवर शिष्य कुलचंद्रपं(डिब)देवर गुड्डं(म)-
- १६ द्ररायिसेट्टि श्रीमदनादियग्रहार सालियूर सासिर्ब-
- १७ र ब्रह्मजिनालयद बसदिय निवेद्यक्के भूलोकवर्षद
- १८ ५ नेय साधारणसंवत्सरद पुष्य सुद्ध ३ सोमवारद बुत्त....

[ यह लेख चालुक्यसम्राट् भूलोकमल्लके ५वें वर्षमें पीष शु० ३ सोमवारको लिखा गया था । उस समय कदम्बवंशीय मण्डलेश्वर मयूरवर्मा-के शासनान्तर्गत सान्तलिगे प्रदेशपर मगर कारगरसर् शासन कर रहा था । उक्त तिथिको सालियूर अग्रहारमें स्थित ब्रह्मजिनालय बसदिको भद्र-

रायसेट्टिने कुछ दान दिया था । मूलसंघ-काणूरगण-मेषपाषाणगच्छके प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेवके शिष्य कुलचन्द्रपण्डित भद्ररायि सेट्टिके गुरु थे । ]

[ ए० रि० मै० १९३० पृ० २४५ ]

२१५

तिरुप्परुत्तिकुण्डम् ( चिंगलपेट, मद्रास )

राज्यवर्ष १३ तथा १७ = सन् ११३१ तथा ११३५, तमिल

[ यह लेख चोल राजा परकेसरिवर्मन् विक्रमचोलके राज्यवर्ष १३का है । इसमें विलशार्की ग्रामसभा-द्वारा त्रैलोक्यनाथजिनमन्दिरके लिए कुछ भूमि करमुक्त रूपमें बेची जानेका उल्लेख है । इसीके बाद इसी राजाके १७वें वर्षमें तिरुप्परुत्तिकुण्डकी कुछ भूमि आरम्बनन्दिको बेची जानेका भी उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ३८१ पृ० ३७ ]

२१६

लक्ष्मेश्वर ( मैसूर )

सन् ११३२, कन्नड

[ इस लेखमें गोमिगयबसदिके इन्द्रकीर्ति पण्डितका उल्लेख है । उन्होंने तथा पेगडे मल्लियण्ण आदिने बसदिकी भूमिमें घर आदि बनवानेके कुछ नियम बनाये थे । हेमदेव-द्वारा बसदिके पुजारीको कुछ भूमि दान दी जानेका भी उल्लेख है । तिथि ज्येष्ठ पूर्णिमा, परिधावि संवत्सर, भूलोक-वर्ष ( चालुक्यसम्राट् भूलोकमल्लका राज्यवर्ष ) ७, बुधवार इस प्रकार दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ४८ पृ० १६४ ]

२१७

बहुरीबंद ( जि० जबलपुर, मध्यप्रदेश )

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, संस्कृत-नागरी

स्वस्ति....वदि ९ मौमे श्रीमद्गयाकर्णदेवविजयराज्ये राष्ट्रकूटकुलोद्-  
भवमहासामंताधिपतिश्रीमद्गोलहणदेवस्य प्रवर्धमानस्य ॥ श्रीमद्गोल्हा-  
पूर्वाभ्नाये वेल्लप्रमाटिकायामुरुकृताभ्नाये तर्कतार्किकचूडामणिश्रीमन्माधव-  
नंदिनानुगृहीतः साधुश्रीसर्वधरः तस्य पुत्रः महाभोजः धर्मदानाध्ययन-  
रतः । तेनेदं कारितं रम्यं शान्तिनाथस्य मंदिरं ॥ स्वलात्थमसंजकसूत्रधारः  
श्रेष्ठिनामा वितानं च महाश्वेतं निर्मितमसिंदरं ॥ श्रीचंद्रकराचार्या-  
भ्नायदेशीगणान्वये समस्तविद्याविनयानंदितविद्वज्जनाः प्रतिष्ठाचार्य-  
श्रीमत्सुभद्राश्चरं जयंतु ॥

[ यह लेख कलचुरि राजा गयाकर्णके सामन्त राष्ट्रकूट गोल्हणदेवके राज्यकालमें लिखा गया है । वेल्लप्रमाटिका गाँवमें गोल्हापूर्व जातिका महाभोज नामक श्रावक था जो माधवनन्दिके शिष्य सर्वधरका पुत्र था । उसने शान्तिनाथका एक सुन्दर मन्दिर बनवाया । इस मन्दिरकी प्रतिष्ठा चन्द्रकराचार्याभ्नाय-देशीगणके आचार्य सुभद्रके हाथों हुई थी । ]

[ इन्स्क्रिप्शन्स ऑफ दि कलचुरि-चेदि एरा पृ० ३०९ ]

२१८

आदिनाथमन्दिर, नाडलाई ( जि० देसूरी, राजस्थान )

संवत् ११८९ = सन् ११३३, संस्कृत-नागरी

१ ओं ॥ संवत् ११८९ माघसुदि पंचम्यां श्रीचाहमानान्वय श्री-  
महाराजाधिराज ( रायपा ) ल

- २ देव तस्य पुत्रो रुद्रपालश्चमृतपा (लौ) ताभ्यां माता श्रीराज्ञी मा (न) लदेवी तथा (नदू) ल (डा) गिका-
- ३ यां सतां परजतीनां (रा)ज कुलपल (म) ध्यात् पलिकाद्वयं घाण (कं) प्रति धर्माय प्रदत्त । मं० वागसि-
- ४ वप्रमुखसमस्तग्रामोणक । रा० तिमटा वि० सिरिया वणिक पोसरि । लक्ष्मण पुते सा ।
- ५ खिं कृत्वा दत्तं । लोपकस्य यदु पापं गोहत्यासरसूणे । ब्रह्म-हत्यासतेन च । तेन
- ६ पापेन लिप्यते सः ॥ श्री ॥

[ यह लेख संवत् ११८९ मे चाहमान राजा रायपालके राज्यमे लिखा गया था । इसके दो पुत्र थे—रुद्रपाल तथा अमृतपाल । इनकी माता मानलदेवीने नदूलडागिका आनेवाले यतियोके लिए कुछ दान दिया था । ]

[ ए० ई० ११ पृ० ३४ ]

२१६

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

सन् ११३४, तमिल

[ यह लेख परकेसरिवर्मन् विक्रम चोल राजाके १६वें वर्षमे लिखा गया था । इसमें वैशाख मासमें उत्सवोंके अवसरपर अरुमोलिदेव (अर्हत्) तथा नित्यकल्याण देवकी पालकी-यात्राकी व्यवस्थाके लिए मलैयन् मल्लन् अर्थात् विक्रमचोलमल्लन-द्वारा कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१० पृ० ६६ ]

२२०

शेरगढ़ ( कोटा, राजस्थान )

संवत् ११६१ = सन् ११३५, संस्कृत-नागरी

- १ माहिहलमार्यान्तिमा—स्य तिलके सूर्याश्रमे ष (त्त) ने । श्रीपालो गुणपालकश्च विपु-
- २ ले खण्डि (लुवा) ले कुले सूय (यी) चन्द्रमसाविवाम्बरतले प्राप्तौ क्रमान्मालवे ॥१॥ श्रीपालादिह देवपालतनयो दानेन चिन्नामणि(ः) शा-
- ३ ( न्तः श्री ) गुणपालककुरसुताद् रूपेण कामोपमान् । पूनीमर्थ-जनेह्लुकप्रभृतयः पुत्राश्च येप्रा नव तैः सर्वैरपि कोशवर्धनत-
- ४ ले रत्नत्रयः कारित(ः) ॥२॥ वर्षे रुद्रशतैर्गतिः शुभतमैरेकानव-स्याधिकैर्वैशाख(खे) धवले द्वितीयदिवसे देवान् प्रतिष्ठा-
- ५ पितान् । वन्दन्ते नतदेवपालतनया मालहसधान्वादयः पूनी-शान्तिसुतश्च नेमिभरताः श्रीशान्तिसङ्कुन्धवरान् ।
- ६ ॥३॥ दादिसूत्रधारोत्पन्नः शिलाश्रीसूत्रधारिणा । शान्तिकुन्धवरना-मानो जयन्तु घटिता जिनाः ॥४॥ देवपालसु-
- ७ तेल्लुकः गोण्डिवीसलल्लुकः मौकः हरिश्चन्द्रादिः गागासुपुत्र (ः) अल्लुकः ॥५॥ संवत् ११९१ वैसाख सुदि २ (मं)-
- ८ गलादिने प्रतिष्ठा कारापिता ॥

[ यह लेख वैशाख शु० २, मंगलवार, संवत् ११९१ का है । इस समय खण्डिल्लवाल कुलके शान्तिके पुत्रोने रत्नत्रय अर्थात् शान्ति, कुन्ध तथा अर इन तीन तीर्थकरोंकी मूर्तिया स्थापित की थीं । इनका निर्माण सूत्रधार दादिके पुत्र शिलाश्रीने किया था । ]

[ ए० इ० ३१ पृ० ८३ ]

२२१

## कोल्हापुर ( महाराष्ट्र )

शक १०५८ = सन् ११३५ कन्नड़

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य  
शासनं जिनशासनं ॥ (१) स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द  
महाम-
- २ ण्डलेइवरं । तगरपुरवराधीश्वरं श्रीशिलाहारनरेंद्रं । जीमूत-  
वाहनान्वयप्रसूतं । सुवर्णगरुडध्वजं मरबोक्कसर्पं । अय्यन
- ३ सिंगं । रिपुमण्डलिकभैरवं । विद्विष्टगजकण्ठीरवं । इडुवरादित्यं ।  
रूपनारायणं । कलियुगविक्रमादित्यं । शनिवारसिद्धि गिरिदु-
- ४ गैलंबनं । श्रीमहालक्ष्मीदेवीलब्धवरप्रसादादिसमस्तसाजावली-  
विराजितस्य श्रीमन्नहामण्डलेइवरं गण्डरादित्यदेवरु वल-  
वाहद ने-
- ५ लंबोडिनल् सुखसंकथाविनोददिं राज्यंगेय्युत्तमिरे । तत्पादपद्मोप-  
जीवि समधिगतपंचमहाशब्द महासामन्तं । विजयल-
- ६ क्ष्मीकान्नं । रिपुसामन्तसीमन्तिनीसोमन्तभंगं । वीरवरांगना-  
प्रियभुजंगं । बैरिसामन्तमेघविघटनसमीरणं । नागलदेविय  
गन्धवा-
- ७ रणं विद्विष्टसामन्तविलयकालं । सामन्तगण्डगोपालं । दायादसा-  
मन्ततारासुरवीरकुमार । सामन्तकेदारं । तोण्डसामन्त-  
पुण्डरीक-
- ८ षण्डप्रचण्डमदवेदण्डं । गण्डरादित्यदेवदक्षदक्षिणभुजादण्डं ।  
याचकजनमनोमिलषितचिन्तामणि । सामन्तशिरोमणि । जिन-  
चरणसरसिरु-

- ९ हमधुकरं सम्यक्स्वरत्नाकरनाहाराभयमैषज्यशास्त्रदानविनोदं  
पद्मावतीदेवीलब्धवरप्रसादं । नामादिसमस्तप्रशस्तिसहितं श्री-  
मन्महा ।
- १० सामन्तं । निवदेवरसरु । कवडेगोल्लद वलिय सन्तेय मुद्गोडे-  
यल माडिसिद् बसदिय पाश्चैनाथदेवरष्टविधार्चनकमा बसदिय  
जीर्णोद्धारक-
- ११ मल्लिप्प ऋषियराहारदानकं । स्वस्ति । समस्तभुवनविल्यात-  
पंचशतवीरशासनलब्धानेकगुणगणालंकृत सत्यशौचाचारचारु-  
चारित्रनयविनय-
- १२ विज्ञान वीरवल्लभधर्मप्रतिपालन विशुद्ध गुडुध्वजविराजमानानून-  
साहसोत्तुंग कीर्त्यङ्गनालिंगित निजभुजोपाजितविजयलक्ष्मी-  
निवासवक्षस्थलरुं
- १३ भुवनपराक्रमोन्नत वासुदेवखण्डलीमूलमद्रवंशोज्ज्वरुं । भगवती-  
लब्धवरप्रसादरुं । तावु काडि सोलदरुं । मरुवकमारिगलुं  
परस्त्रीपर
- १४ धनवर्जितरुं चतुष्पष्टिकलेगलोल् प्रवीणरप्पुदरिं । ब्रह्मनञ्जरुं ।  
चक्रमुल्लुदरिं नारायणनञ्जरुं । दृष्टियोल् नोडि कोल्लुदरिं ।  
कालाग्निरुद्रनञ्जरुं । को-
- १५ न्दरनरसि कोल्लुदरिं । परशुरामनञ्जरुं । तुलिदु कोल्लुदरिं ।  
मदान्धगन्धसिन्धुरदञ्जरुं । गिरिदुर्गमं मरेवोक्करं तेगेदु कोल्ले-  
डेयोल् सिंहदञ्जरुं ।
- १६ पातालमं पोक्करं कोल्लेडेयोल् वासुगियञ्जरुं । आकाशदोलिदरं  
कोल्लेडेयोल् गरुडनञ्जरुं । पैपिनल् पृथ्वियञ्जरुं । बिण्पिनल्  
कुलगि-
- १७ रियञ्जरुं । गुण्पिनल् महासमुद्रदञ्जरुं । उद्योगदल् रामनञ्जरुं ।

पराक्रमदोल् पार्थनन्नरं । शोचदोल् गांगेयनन्नरं । साहसदोल्  
मामनन्न-

१८ रं । धर्मदोल् धर्मपुत्रनन्नरं । ज्ञानदोल् सहदेवनन्नरं । भोगदलि-  
द्रनन्नरं । त्यागदोल् कर्णनन्नरं । तेजदलादित्यनन्नरं । अहिच्छत्र-  
मेनिसुवय्यबोलेपुरप-

१९ रमेश्वररुमप्पयन्पूर्वस्वामिगलुं गवरेयरं । गात्रियरं । सेट्टियरं ।  
सेट्टिगुत्तरं । गामण्डरं । गामण्डस्वामिगलुं । वीर

२० रं । बीरवणिगरं । कोल्लापुरद बिलपाणसेट्टियुं । गोविन्दसेट्टियुं ।  
कोमर अण्णमय्यनुं । मिरिजेय बिज्जसेट्टियुं । बाप्पिसे-

२१ ट्टियुं । गण्डरादित्यदेवर राजश्रेष्ठ वेसपय्यसेट्टियरं । आ मण्ड-  
लेद्वरन बांदिन बम्मिसेट्टियुं । कूडिपट्टनदादित्यगृह-

२२ द सासनिरं हेग्गडे रावसेट्टियुं । चौधोरे बोप्पिसेट्टियुं । तारं-  
बगेय प्रभु कन्नपय्यसेट्टियुं । मयिसिगेय काजगारं चौधो-

२३ रे गोरविसेट्टियुं । बलेयवट्टणद शान्तिसेट्टियुं । अय्यबोलेय-  
नूर्वर सिंगं हालियसेट्टियुं । कवडेगोल्लद प्रभु खप्परय्यना-

२४ दियागि समस्तदेशं नेरेदु । शकवर्षद सासिरदय्वत्तेनेय  
राक्षससंवत्सरद कार्तिकबहुल पंचाम सोमवारदंदु श्रीमूलसंघ-

२५ देसायगण-पुस्तकगच्छद कोल्लापुरद श्रीरूपनारायणधसदिया-  
चार्यरप्प आश्रुतकीर्तित्रैविद्यदेवर् कालं कर्चि । धारापू-

२६ र्वकमागि कोट्टायमेन्तेदोडे अडके हेरिगे अय्वत्त । जवलक्किर्पत्त  
हसरकरदु । एले हेरिगे नूरु । तलेवोरेगरवत्तु । हसरकिर्प-

२७ त्तदु । तुप्पमेण्णेर्येबिबु कोडक्के सोल्लगे सिद्धिगेगरवाणं संगडि-  
गोर्माणं दूसिगवसरक्कमक्कसालेगं हांगे हणं । हत्ति मलवेग-

२८ य्वलं । मण्डिय करुसेय मलवेगेरडु बीसिगे । जवलक्के पलं



पत्त । लंकरोक्कलल्लि आरु तिगल्लगे मणेतिविगे मरवियेबिबो-  
न्दक्कुं । वर्षक्के मं-

२९ चवोन्दक्कुं । अल्लवरिसिनं शुण्ठि बेक्कुल्लि बजे मद्रमुस्तेय्येबिबु  
मोदल्लगि तूगि मारुव मण्डगल्लगे हेरिंगय्वलं जवलक्किप्पलं  
इस-

३० रकोप्पलं जीरगे मेलसु सासवियेबिबु हेरिंगोम्मानं जवलक्क-  
रवनं हसरक्के सोल्लगे । उप्पु मोदल्लगि हदिनेदु ध्यानं-

३१ गल्लगं मंडिगे कोल्लगवोदु हेरिंगे मानवेरडु तलेवोरेगोमनिं बाडु  
कार्येबिबु मंडिगं हत्तु तलेवोरेगे नाक्कक्कुं । मण्डिगे दण्डिगे  
वोदु ।

३२ सेवेय्यदु हूयेरडक्क दण्डिगे वोदु सेवेय्यरडु हूविन हेडल्लिगेगे  
माले वोन्दु कुबेररल्लि हसरक्के मडके वोन्दु ॥ इन्तीया-

३३ यमनलिदातांते बाणराशिकुरुक्षेत्रादिगल्लोल् पंचमहापातकमं  
माडिद फलमक्कुं ॥

[ इस लेखका सारांश द्वितीय भागमें क्र० ३०२ में दिया है किन्तु उस समय मूल लेख प्रकाशित नहीं हुआ था । यह लेख शिलाहार वंशके महामण्डलेश्वर गण्डरादित्यके समय शक १०५८ में लिखा गया था । इसका सामन्त निम्बदेव था जिसने तोण्डमण्डलके युद्धमें शूरता प्रदर्शित की थी । निम्बदेवने कवडेगोल्ल नगरमें एक जिनमन्दिर बनवाया था । इसके बाद वीरबल्लज लोगोंके संघका विस्तृत वर्णन है । उसके प्रतिनिधियोंने कोल्हापुरके रूपनारायण जिनमन्दिरके व्यवस्थापक मूलसंघ-देशीय गणके श्रुतकीर्ति श्रैविद्यको कवडेगोल्ल जिनमन्दिरके लिए उक्त तिथिको कुछ करोंका उत्पन्न दान दिया । ]

२२२

कोल्हापुर ( महाराष्ट्र )

१२वीं सदी-पूर्वार्ध कन्नड

महालक्ष्मी मन्दिरमें छतके खम्भोंपर

[ यह लेख शिलाहार राजा गण्डरादित्यके समयका है । इनके सामन्त निम्बने एक चैत्यालय बनवाया था । नाकिराजकी कन्या कर्णदेवीका भी उल्लेख है जो एक रानी थी । कोण्डकुन्दान्वयके माघनन्दि आचार्यका भी उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० ३५१ ]

२२३

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

सन् ११३७, तमिल

[ यह लेख कुलोत्तुंग चोलदेव ( द्वितीय ) के राज्यवर्ष ४ में लिखा गया था । आलप्पिरन्दान् मोगन् उपनाम कुलोत्तुंगशोलकाडवरायन्-द्वारा कच्चिनायनारू (चन्द्रप्रभ) की पूजाके लिये जननाथमंगलम् गाँवके उत्पन्न-से ४२० कलम् ( नापका प्रकार ) चावल अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३११ पृ० ६६ ]

२२४

गणपवरम् ( गुण्टूर, आन्ध्र )

११वीं-१२वीं सदी, तेलुगु

[ यह लेख श्रावण शु० ३ का है - शकवर्षके अंक लुप्त हुए हैं । कुलोत्तुंग राजेन्द्रके पुण्यवृद्धिके लिए अक्कसाल कामोजु-द्वारा कुछ दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । अन्तमें चन्द्रप्रभजिनालयका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९१५-१६ पृ० ४३ क्र० ४५८ ]

२२५-२२७

तिरुक्कोल ( उ० अर्काट, मद्रास )

११वीं-१२वीं सदी, तमिल

[ इस लेखमें तण्डपुरम्की पल्लि ( जैनवसति ) के लिए एरणन्दि उपनाम नरतोंग पल्लवरैयन्-द्वारा कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है । यह ग्राम पोन्नूरनाडुमें सम्मिलित था । यहीके एक अन्य लेखमें शेम्बियन् शेम्बोत्तिलाडणार्-द्वारा कनकवोर शित्तडिगल्को कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है । यह चोल राजा परकेसरिवर्मन्के १२वे वर्षका लेख है । तीसरा लेख स्थानीय वर्धमानमन्दिरके दो स्तम्भोंपर है । ये स्तम्भ अरुमोलिदेव-पुरम्के इडैयारन् आट्कोण्डान् मावीरन्-द्वारा स्थापित हुए थे । ]

[ रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० २७६-२८० पृ० ९१ ]

२२८-२३०

वस्तिहल्लि ( मैसूर )

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड

[ यहाँ तीन लेख हैं । एक जिनमूर्तिके पादपीठपर मूलसंघ-देसियगणके-कुक्कुटासन-मलधारिदेव के शिष्य शुभचन्द्र सिद्धान्तिदेवके शिष्य दण्डनायक गंगपट्टयका नामोल्लेख है । एक दूसरे मूर्तिके पादपीठपर मूलसंघ-देसियगणके दिनकरजिनालयमे हेगडे मल्लिमय्य-द्वारा मूर्तिस्थापनाका उल्लेख है । इस मन्दिरके द्वारके लेखमे इस मन्दिरकी स्थापनाका वर्ष सन् ११३८ दिया है । ]

[ ए० रि० मै० १९११ पृ० ४४ ]

२३१

नाडलाई ( जि. देमूरी, राजस्थान )

संवत् ११९५ = सन् ११३९, संस्कृत-नागरी

१ ओं नमः सर्वज्ञाय ॥ संवत् ११

- २ ९५ आसउज वदि १५ कुजे ।  
 ३ अद्येह श्रीन (इ) लडर (गि) कायां महा-  
 ४ राजाधिराजश्रीराय (पा) लदेवे । विज -  
 ५ यी राज्यं कुर्वतीत्येतस्मिन् काले  
 ६ श्रीमदुजिततीर्थः श्री (ने)मिनाथदेव-  
 ७ स्य दीपधूपनैवे(द्य)पुष्पपूजाद्यर्थे गू -  
 ८ हिलान्वयः राउ० ऊधरणसूनु  
 ९ ना भोक्तारि ठ० राजदेवेन स्वपु-  
 १० ण्यार्थे स्वीयादानमध्यात् मार्गे[ग]  
 ११ च्छत्तानामागतानां वृषभानांशेके (पु)  
 १२ यदाभाव्यं भवति तन्मध्यात् विं(श)  
 १३ तिमां भागः चंद्राकं यावत् देवस्थ  
 १४ प्रदत्तः ॥ अस्मद्वंशीयेनान्येन वा  
 १५ केनापि परिपंथा न करणीया  
 १६ अस्मद्वत्तं न केनापि लोप(नी)यं ॥  
 १७ स्वहस्ते परहस्ते वा यः कोपि लोप -  
 १८ यिष्यति तस्याहं करे लग्नो  
 १९ न लोप्यं मम शासनमिदं । लि०-  
 २० (पां)सिलेन ॥ स्वहस्तोयं सामि -  
 २१ ज्ञानपूर्वकं राउ० रा(ज)देवे-  
 २२ न मतु दत्तं ॥ अत्राहं साक्षि-(णा)-  
 २३ ज्योतिषिक (दूदू)पासूनुना गूगि-  
 २४ ना । तथा पळा० पाला० । पृथिं  
 २५ वा १ मांगु(ळा) ॥ देपसा । रा  
 २६ पसा ॥ मंगलं महा (श्रीः) ॥

[ उक्त लेख संवत् ११९५ मे चाहमान राजा रायपालके राज्यमें लिखा गया था । इसमें नदूलडागिकाके नेमिनाथमंदिरके लिए ठा० राजदेव द्वारा कुछ दान दिये जानेका निर्देश है ]

[ ए० ई० ११ पृ० ३६ ]

२३२

नाडलाई, ( जि. देसूरी, राजस्थान )

संवत् १२०० = सन् ११४४, संस्कृत-नागरी

- १ ओं संव(त्) । १२०० जेष्ट (सु)दि ५ गुरौ श्रीमहाराजाधिराज-  
श्रीरायपालदेवराज्ये—हास -
- २ समये रथयात्रायां आगतेन रा० राजदेवेन आत्म-पाइलामध्यात्  
( सर्वसाउतपुत्र ) विंसी-
- ३ पको दत्तः । आत्मीयघाणकतेलव(ल)मध्यात् । मातानिमित्तं  
पलिकाद्वयं । प्ली २ दत्तः ॥ म-
४. हाजनप्रमीण । जनपदसमक्षाय । धर्माय निमित्तं विंसीपको  
१ पलिकाद्वयं दत्तं ॥ गोह -
- ५ त्यानां सहस्रेण ब्रह्महत्यामतेन च । स्त्रीहत्याभ्रूणहत्या च जतु  
पापं तेन पापेन लिप्यते सः ॥

[ यह लेख संवत् १२०० मे राजा रायपालके राज्यमे लिखा गया था । यात्राके लिए आये हुए रा० राजदेव-द्वारा कुछ दान दिये जानेका इसमे निर्देश है । ]

[ ए० ई० ११ पृ० ४१ ]

२३३

कम्बदहल्लि ( मैसूर )

सन् ११४५, कन्नड

[ इस लेखमें होयसल राजा नरसिंहके दो दण्डनायक मरियाने तथा

भरतिमय्य-द्वारा शान्तीश्वरबसदिके लिए मोदलियहल्लि ग्रामके दानका उल्लेख है। यह दान क्रोधनसंवत्सरका है। तदनुसार सन् ११४५ का यह लेख है। ये दण्डनायक आचार्य गण्डविमुक्तदेवके शिष्य थे। ]

[ ए० रि० मै० १९१५ पृ० ५१ ]

२३४

बालेहल्लि ( धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष ८ = सन् ११४५, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लदेवके राज्यवर्ष ८, क्रोधन संवत्सरमें फाल्गुन शु० १, रविवारके दिन उत्कीर्ण किया गया था। बम्मिसेट्टिने बालेहल्लिमें पार्श्वनाथमन्दिरका निर्माण किया तथा उसकी रक्षाके लिए देसिगण, पुस्तकगच्छ, ( कोण्डकुन्द ) अन्वयके मलधारिदेवको कुछ दान दिया ऐसा इसमें उल्लेख है। मन्दिरको दिये गये कुछ अन्य दानोका भी इसमें उल्लेख है। ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १७६ पृ० २२ ]

२३५

नाडलाई ( जि० देसूरी, राजस्थान )

संवत् १२०२ = सन् ११४६, संस्कृत-नागरी

- १ ओं ॥ संवत् १२०२ आसोज वदि ५ शुक्रे श्रीमहाराजाधिराज-  
श्रीरायपालदेवराज्ये प्रवर्त(माने)
- २ श्रीनदूलडागिकायां रा० राजदेवठकुरेण प्रवर्त(माने) श्रीमहा-  
वीरचैत्ये साधुत-
- ३ पोधननि(छार्धे) श्रीअभिनवपुरीय वदार्था अ(त्रे)पु स(म)स्त-  
वणजारकेषु देसी मिलित्वा वृ -

४ (ष) म (म) रित जतु पाहललगमाने ततु बीसं प्रति रुभा २  
किराडडभा गाडं प्रति रु १ वण -

५ जारकै धर्माय प्रदत्तं ॥ लोपकस्य जतु पापं गोहत्यासहस्रेण  
ब्रह्महत्यासत्तेन पापेन लिप्यते सः ॥

[ यह लेख संवत् १२०२ मे चाहमान राजा रायपालके राज्यमें  
लिखा गया था। इसमें नदूलडागिकाके महावीर मन्दिरमें आये हुए साधुओं-  
के लिए ठ० राजदेव-द्वारा कुछ दान दिये जानेका निर्देश है। ]

[ ए० इ० ११ पृ० ४२ ]

२३६

कुण्टन होसल्लि ( जि० धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष १० = सन् ११४८, कन्नड

बसवण्ण मन्दिरके समीप शिलापर

[ यह लेख खराब हुआ है। चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लके समय  
दसवें वर्ष, प्रभव संवत्सरमे यह लिखा गया था। नागिसेट्टि-द्वारा किसी  
जैन देवताको कुछ जमीन दान दिये जानेका इसमें निर्देश है। कदम्ब-  
वंशीय तैल मण्डलेश तथा आचलदेवीका भी इसमे उल्लेख है। ]

( रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० ६८ )

२३७

नीरलगि ( धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष १० = सन् ११४८, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा जगदेकमल्लके राज्यवर्ष १० मे पुण्य शु०  
१३, गुरुवार, उत्तरायण संक्रान्तिके दिनका है। इसमें नेरिलगेके नाल्प्रभु  
मल्लगावुण्ड-द्वारा स्वनिर्मित मल्लिनाथ-जिनालयके लिए कुछ भूमि मूलसंघ-

सूरस्थ गण-चित्रकूट गच्छके हरिणन्दिदेवको अर्पित की जानेका उल्लेख है ।  
मल्लगावुण्ड चतुर्थज्ञातिका व्यक्ति था । ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० ६१ पृ० १२४ ]

२३८

**करगुदरि** ( जि० धारवाड, मैसूर )

सन् ११४८, कन्नड

[ यह लेख पौष शुक्ल १, सोमवार, प्रभव संवत्सर, के दिन लिखा गया था । महावहुव्यवहारि कल्लिसेट्टि-द्वारा करेगुदुरेमे विजयपार्श्वजिनेन्द्र मन्दिर बनवाया गया उसे कुछ जमीन दान देनेका इसमें निर्देश है । यह दान सूरस्थ गण, चित्रकूट अन्वयके वामुपूज्यके शिष्य हरिणन्दिके शिष्य नागचन्द्र भट्टारकको दिया गया था । उस समय महाप्रचण्डदण्डनायक सोवरसका शासन हानुंगल ५०० के प्रदेशपर चल रहा था तथा उसके एक भागपर मण्डलेश कदम्बवंशीय तैलका अधिकार था । इस समय चालुक्य प्रतापचक्रवर्ती जगदेकमल्ल सम्राट् थे । ]

[ रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० ६७ ]

२३९

**हुलगूर** ( जि० धारवाड, मैसूर )

१२वीं सदी - मध्य, कन्नड

[ यह लेख अधूरा है । चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लके समय पुरिगेरे तथा बेलवोल प्रदेशोपर महाप्रचण्डदण्डनायक वावणरस शासन कर रहा था । इसका सामन्त मणलेर कुलका जयकेशी था जो पुरिगेरेके राष्ट्रकूट पदका अधिकारी था । इसके समयकी एक जैन श्राविका नीलिकब्बेका इस लेखमे निर्देश है । ]

( रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ३२ )



२४०

## शृंगेरी ( मैसूर )

शक १०७१ = सन् ११५०, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलां-
- २ छनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं
- ३ स्वस्ति श्री(म)तु सकवरुषंगलु १०७१ ने प्रमोदू-
- ४ तसंवत्सरद चयिसाखमासद....शुद्ध सप्तमि
- ५ स दन्दु श्रीकाणूरगण मूलसंघ....
- ६ पुस्तकगच्छद....हरिय
- ७ मंगल

[ यह लेख पार्श्वनाथदसदिके मुखमण्डपके एक पाषाणपर है । वैशाख शु० ७, शक १०७१, प्रमोदूत संवत्सर इस तिथिका तथा मूलसंघ-काणूर-गण-पुस्तकगच्छका इसमें उल्लेख है । लेख अस्पष्ट होनेसे इसका उद्देश आदि विवरण ज्ञात नहीं हो सकता । ]

[ ए० रि० मे० १९३४ पृ० ११३ ]

२४१

## अरसीवीडि ( बिजापूर, मैसूर )

चालुक्यविक्रम वर्ष ७६ = सन् ११५१, कन्नड

[ इस लेखमें चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लदेवके सामन्त वीरचाण्डेरस तथा उसको पत्नी देमलदेवी-द्वारा पौष व०-२, बुधवार, चालुक्य विक्रम वर्ष ७(६)के दिन मूलसंघ-देशियगणके आचार्य नयकोर्ति सिद्धान्तदेवके शिष्य नेमिचन्द्र पण्डितदेवको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई ३३ पृ० ४३ ]

२४२-२४३

छतरपुर ( मध्यप्रदेश )

सं० १२०८ = सन् ११५१, संस्कृत-नागरी

[ ये दो लेख लखनऊ म्युजियमकी दो मूर्तियोंके पादपोठोंपर हैं । ये मूर्तियाँ छतरपुरसे प्राप्त हुई थीं । सुविधिनाथ तथा नेमिनाथकी इन मूर्तियोंकी स्थापनातिथि आषाढ शु० ५, गुरुवार, सं० १२०८ थी ऐसा लेखमे कहा है । ]

[ मे० आ० सं० ११ ( १९२२ ) पृ० १४ ]

२४४

स्टेट म्युजियम, भरतपुर ( राजस्थान )

सं० ११०९ = सन् १०५३, संस्कृत-नागरी

[ इस लेखमे ज्येष्ठ शु० (?) रविवार, संवत् ११०९ के दिन पार्श्व-नाथमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । लेख मूर्तिके पादपीठपर उत्कीर्ण किया है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १६३ पृ० २१ ]

२४५

शेडवाल ( बेलगाँव, मैसूर )

शक १०७५ = सन् ११५३, कन्नड

[ यह लेख बसवण्णमन्दिरमे लगा हुआ है । इसमें सेणिग कोत्तलि-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरके लिए कुछ करोके उत्पन्नके दानका उल्लेख किया है । तिथि चैत्र शु० ५, रविवार, श्रीमुख संवत्सर शक १०७८ ऐसी दी है । किन्तु तिथि आदिकी गणनानुसार यह शक १०७५ का लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १८७ पृ० ३६ ]

२४६

बेलूर (मैसूर)

शक १०७६ = सन् ११५३, कल्लड

- १ निःशेषशास्त्रवाराशिपारमैः । श्रीवर्धमानस्वामिगल धर्मतीर्थ प्र -
- २ मद्रबाहुमट्टारकरिंदं । भूतबलिपुष्पदंतस्वामिगलिंदं । एकसंधि-  
सु(मतिगलिंदं अ) -
- ३ कलंकदेवरिंदं । वक्रग्रीवाचार्यरिंदं । वज्रणदिमट्टारकरिंदं  
सिंहणं(दि कनक-)
- ४ सेन वादिराजदेवरिंदं । श्रीविजयदेवरिंदं । शांतिदेवरिंदं पुष्प-  
सेन(देवरिंदं ।)
- ५ अजितसेनपंडितदेवरिंदं । कुमारसेनदेवरिंदं । मल्लिषेण मलधा-  
रिंदं(वरिंदं)
- ६ (श्रु)तकीर्ति श्रीपालं वरवाणिश्रीपालं बिरुदवादिमदविस्फालं ॥  
तमगे -
- ७ (अ)मर्देत्ति धरंगेरुदे तम्म मुखदोल् षट्त्तर्कवाराशिविभ्रममापो....
- ८ रुमं कील्पडिसित्तु पेंपिनेसकं श्रीपालयोगीन्द्र ॥ आवन  
विषयमो....
- ९ (ग)द्यपद्यवचोविन्यासं निसर्गविजयविलासं । कश्चिद् वाद-  
विनोदकोविद....
- १० दक्षः कश्चन कश्चनापि गमको वाग्मी परः कश्चन । पांडित्ये  
सुचतुर्विधेपि निपुणः श्रीपालदेवः पुनस्तर्कव्याकरणागम-
- ११ प्रवणधीस्त्रैविद्यविद्यानिधिः । अवर सधर्मर् । वर्गत्यागद  
सूचितमार्गोपन्यासदलम मानुंडियत्कामर्गगवरिदे-
- १२ नरुके निरर्गलमादत्तनन्तवीर्यप्रतियोल् ॥ आ श्रीपालत्रैविद्यदेवर  
शिष्यर् ॥ श्रीमत्त्रैविद्यविद्यापतिपदकमलारा-

- १३ धनालब्धबुद्धिः सिद्धांतामोनिधानप्रविसरदमृतास्वादपुष्टप्रमोदः ।  
दीक्षाशिक्षासुरक्षाक्रमकृतिनिपु-
- १४ णः सन्ततं भव्यसेव्यः सोयं दाक्षिण्यमूर्तिर्जगति विजयते  
वासुपूज्यव्रतोद्भूतः ॥ सत्यशौचकरुणागुणोत्करैरस्य-
- १५ क्तलोभमदमानरोषणैः । शुद्धवृत्तियुतवाधदर्शनैर्वादिराज मुनिराज  
राजसे ॥ श्रीपालत्रैविद्यश्रीपादप-
- १६ मान्तरंगसंगतभृंगं श्रीपरिपूर्ण होय्सलभूपालकर्मन्नि माचदण्डा-  
र्धाशं ॥ जिननासं पोरेद नृपालतिलक श्री-
- १७ विष्णु (भूपा)लकं जनकं सं एरेयंगवेगडे जगद्विख्याते राजव्वे  
ताय् तनगिअम्मडिदण्डनायकने तां मावं महामन्त्रि
- १८ येम्मेनला माचिणदण्डनायने वलं धन्यं पेरं धन्यने ॥ सुरगुरु-  
मन्त्रक्रमदोल् धुरदोल् सिंहप्रतापनप्र-
- १९ तिमतेजं सुरतरु वितरणगुणदिं नरसिंहमहीशमन्त्रि माचचमूपं ॥  
स्वस्ति समस्तप्रशस्तिसहितं श्री-
- २० मन्महाप्रधानं माचियणदण्डनायकं तनगे व्रतगुरुगलु श्रुतगुरु-  
गलुमेंनिसिद परवादिमल्ल-
- २१ वादीमसिंह महामण्डलाचार्य श्रीपालत्रैविद्यदेवर् माडिसि-  
दादिदेवर बसदिय केरसद कोरतेगं देवर्
- २२ अष्टविधार्चनेग ऋषियराहारदानक्कवागि शकवर्ष १०७६ नेय  
श्रीमुखसंवत्सरदुत्तरायणसंक्रमण-
- २३ दंदु महादानगलं माडु तिर्पा समयदोले माचिणदण्डनायकं  
विश्वपं गेय्यल् होय्सलश्रीनारसिं-
- २४ हदेवर् कम्भुणाड नागरहालं सर्वबाधापरिहारवागियादिदेवर्गे  
धारापूर्वकं माडि कोट्ट दत्तिर्य-
- २५ तु देवदानवादा नागरहाल चतुर्सीमेयप्पुदु मूडलु कडलु दोणे  
संचरिवल्ल । आग्नेयदलु कडवदको

- २६ लद हंगेयणि मागवागि बन्द हेब्बेट्टे । तेंकल् जालदहल्ल वल्लि  
हडुवलु केंदलिरहल्ल । नैऋत्यदलु हुलियक-
- २७ रळाल हडुवलु हुलियहल्ल । वायव्यदलु सुलद हिरियकणि ।  
बडगल् मागेडेगे होह हेंदारियव-
- २८ डगण मोरडि । ईशान्यदोल् कोडेयाळवल्लि तेंकलु नद कल्लु ।  
इंता चतुःसीमे वेरसु नागरहालं बल्लजिना (ळ)य-
- २९ क्के सर्वनमस्यवागि पडिसलिसुववर्गे गंगेय तडियल् सायिर  
कविलेयं कोडुं कोळगुमं होन्नलु कट्टिसि चतु-
- ३० ....गुंत्तरायणसंक्रमणग्रहणव्यतीपातदंडु दानं माडिद फलवी  
धर्ममं कि-
- ३१ ....यला कविलेयुमना ब्राह्मणरुमना तिथिवारदलु-
- ३२ ....मेमं प्रतिपालिसुबुदु ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यां हरेत....
- ३३ ....जायते क्रिमिः ॥ मंगळ महा श्री श्री पालित
- ३४ ....जालोलं विशदयशोलीलं गुणसेनपंडितं बुधनिं....
- ३५ ....पुरंदरं गुणसेनपंडित....

[ यह लेख केशवमन्दिरके छतमे लगा पाया गया । इसमे पहले वर्ष-  
मानस्वामी ( महात्री ) से प्रारम्भ कर कई आचार्योंकी परम्परामे श्रीपाल  
त्रैविद्यदेवका वर्णन किया है । इनके द्वारा निर्मित आदिदेवकी बसदिके  
लिए होयसल राजा नरसिंहके सेनापति माचियणने नागरहाल ग्राम दान  
दिया था । दानकी तिथि शक १०७६ की उत्तरायणसंक्रान्ति थी । लेखमे  
श्रीपाल त्रैविद्यके गुरुबन्धु अनन्तवीर्य तथा शिष्य वासुपूज्य एवं वादिराज-  
का भी वर्णन है । अन्तमे गुणसेन पण्डितका भी उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९३८ पू० १०२ ]

२४७

बलगेरि ( बेलगाँव, मैसूर )

शक १०७८ = सन् ११५६, कन्नड

[ इस लेखमें चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लके राज्यकालमें कलचुरि वंशके बिज्जल ( द्वितीय ) तकके सामन्तोंकी वंशावली दी है । बिज्जलके बन्धु मैलुगि तथा उसकी पत्नी लक्ष्मादेवीका शासन बेलवल ३०० प्रदेशपर चल रहा था उस समय राजाके मन्त्री कालिदास चम्पूने पार्श्वनाथतीर्थकी यात्रा कर एक मन्दिर बनवाया तथा उसके लिए कुछ दान दिया । इसकी तिथि पुष्य शु० (१२), धातु संवत्सर, शक, १०७८, उत्तरायण-संक्रान्ति ऐसी दी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १७५ पृ० ३५ ]

२४८

करन्दै ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

सन् ११५६, तमिल

[ यह लेख चोल सम्राट् राजराजदेवके १०वे वर्षमें लिखा गया था । इस मन्दिरमें सन्ध्यासमय दीप प्रज्वलित रखनेके लिए मन्दिर-अधिकारी-द्वारा ३०० काशु स्वीकार किये जानेका इसमें निर्देश है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १४१ ]

२४९-२५०

करन्दै ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

सन् ११५६-५७, तमिल

[ इस लेखमें जयंगोण्डशोलमण्डलम् प्रदेशके ऊरुक्काडु ग्रामके एक वेल्लाल-द्वारा करन्दैस्थित जिनमन्दिरमें दीप प्रज्वलित रखनेके लिए कुछ

गायें दान दी जानेका उल्लेख है । यह चोल सम्राट् राजराजदेवके १०वें वर्षमें दिया गया था । राजराजदेवके ११वें वर्षका एक लेख यहीं है ! इसमें पनैयूरनाडु प्रदेशके अरुमोलिदेवपुरम् स्थानके नगरत्तार् लोगों-द्वारा तिरुप्परम्बूरके जिनमन्दिरमें प्रबोधन समारोहके अवसरपर दिये गये दीप-दानोंका विवरण दिया है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३१-१३२ ]

२५१

करडकल ( रायचूर, मैसूर )

शक १०८१ = सन् ११५९, कन्नड

[ यह लेख कलचुर्य राजा त्रिभुवनैकवीर विज्जलके राज्यकालमें आषाढ, दक्षिणायन संक्रान्ति, शक १०८१, प्रमायि संवत्सर, गुरुवारके दिन लिखा गया था । इसमें एक सेनापति तथा पद्मलदेवीका उल्लेख है तथा मूलमंघ-देसिगण-पुस्तकगच्छके किमी आचार्यको दान दिये जानेका उल्लेख है । इस समय यह लेख वीरभद्रमन्दिरमें लगा है । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २३८ पृ० ४१ ]

२५२

केरेसन्ते ( कडूर, मैसूर )

१२वीं सदी ( सन् ११५९ ), कन्नड

- १ बहुधान्यसंवत्सरद माघ सु १५ रतु
- २ श्रीमत् प्रतापचक्रवर्ति होयसण श्री
- ३ वीर नारसिंहदेवरसह भडकेय पा-
- ४ रिशदेवन मग चिक्कमलणंगे केरेयसंथे-
- ५ य द्रविलसंचद आदिनाथदेवर पाद्वंदेवर
- ६ बसदिगलिंगे आ केरेयसंथेय हिर्यंकेरेय

- ७ केलगुलंतह थलवृत्तिय तोट गढे बेइलु म-  
 ८ ने आ देवहगलिगुलंतह समस्ततेजस्वा-  
 ९ म्यवनु आ श्रीवीरनारमिहदेवरसरु आ मल-  
 १० ण्णगे दानवागि धारापूर्वकं माडि आचद्रार्क-  
 ११ तारंवरं सत्वंतागि कोट्टरु मंगल महा श्री

[ इस लेखमे होयसल राजा नरसिंह-द्वारा केरेयसंथे स्थित द्रविलसंघकी आदिनाथ-पार्श्वनाथ बसदिके लिए चिक्कमल्लण्णको कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। लिपि १२वीं सदीकी है तदनुसार यह लेख बहुधान्य संवत्सर = सन् ११५९ का होगा। तब नरसिंह प्रथमका राज्य चल रहा था। इस समय यह लेख जनार्दनमन्दिरमे लगा है। ]

[ ए० रि० मै० १९४५ पृ० ११२ ]

२५३

हुलियार ( मैसूर )

१२वीं सदी-मध्य, कन्नड

[ इस लेखमे होयसल राजा नरसिंह १ के समय चान्द्रायण देवके शिष्य सामन्त गोवकी पत्नी श्रीयादेवी-द्वारा एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। इस समय यह पादपीठ विष्णुमूर्तिके लिए उपयोगमे लाया जाता है। ]

[ ए० रि० मै० १९१८ पृ० ४५ ]

२५४

हरिद्वार ( उत्तरप्रदेश )

सं० १२१६ = सन् ११५९, संस्कृत-नागरी

[ यह लेख पीतलकी चौबीसी-मूर्तिके पीठपर है। इसमे मूर्तिकी स्थापनातिथि आषाढ़ ९, सं० १२१६ दी है। मूर्ति इस समय लखनऊ म्युजियममे है। ]

[ मे० आ० सं० ११ ( १९२२ ) पृ० १५ ]



२५५

शृंगेरी ( मंसूर )

शक १०८२ = सन् ११६०, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोचलाञ्छनं (i)
- २ जायात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं (ii)
- ३ स्वस्ति श्रीमत् सकवर्षं द १०८२
- ४ विक्रमसंवत्सरद कुम्भ शु-
- ५ द् दशमि बृहदारदन्दु श्रीमन्निडुगोड
- ६ विजयनारायण शान्तिसेट्टिय पुत्र बा-
- ७ सिसंट्टियर अक्क सिरियबेसेट्टियर म-
- ८ गलु नागबेसेट्टियर मगलु सिरिय-
- ९ लेसेट्टितिंगं हेम्माडिसेट्टिंगं सुपुत्रन-
- १० प्प मारिसेट्टिगे परोक्षविनयक्के मा-
- ११ डिसिद बसदिगे बिट्ट दत्ति केरेय केलग-
- १२ ण हिरिय गदेय बसदिय बडगण होस-
- १३ थुं मंडियुं होलेयुं नडुवण हुदुविन होरद
- १४ मण्णु कण्डुग सुल्लिगोड अरुगण्डुग मण्णु
- १५ ....बणजमुं नानदेसियुं बिट्टय
- १६ ....मलवेगे हाग हंज हात्तिय मल
- १७ ....ले मेलसिन मारक्के हागमुं
- १८ मत्तं पोत्तोब्बलुप्पु हेरिगय्वत्तेले अरिसिनद मलवेगे वीसक्के बिट्टं  
तपिदडे तप्पिदवनु गंगेय-
- १९ लु साइर कविलेय कोण्ड पातक

[ यह लेख पार्श्वनाथमन्दिरके सभागृहमें है । इसकी तिथि शक

१०८२, विक्रमसंवत्सर, कुम्भ मास शु० १० गुरुवार ऐसी है। इस दिन इस मन्दिरके लिए कुछ भूमि तथा व्यापारियों-द्वारा कुछ करोंका उत्पन्न दान दिया गया था। यह मन्दिर हेम्माडिसेट्टिकी पत्नी सिरियबेके पुत्र मारिसेट्टिकी स्मृतिमें बनवाया गया था। मन्दिरके गर्भगृहकी पार्श्वनाथ-मूर्तिके पादपोठपर इसी समयकी लिपिमें निम्न वाक्य खुदा है—श्रीमत्-पारिसनाथाय नमः। ]

[ ए० रि० मै० १९३३ पृ० १२२, १२५ ]

२५६

**बाबानगर ( बिजापूर, मैसूर )**

शक १०८३ = सन् ११६१, कन्नड

[ यह लेख कलचुर्य राजा द्विज्जणदेवके समय शक १०८३, विक्रम संवत्सरका है। इसमें मूलसंघ-देसिगणके मंगलिवेडके आचार्य माणिक्य-भट्टारकका तथा मैलुगि नामक शासकका उल्लेख है। इसने कन्नडिगेके जैन बसदिको कुछ दान दिया था। ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ पृ० १३० क्र० ई १२० ]

२५७

**गुत्तल ( धारवाड, मैसूर )**

शक १०(८४) = सन् ११६२, कन्नड

[ यह लेख गुत्त वंशके महामण्डलेश्वर विक्रमादित्यरसके समय पौष शु० १५, सोमवार, शक १०(८४) का है। इसमें केतिसेट्टि-द्वारा निर्मित पार्श्वदेवमन्दिरके लिए राजा-द्वारा भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। पुस्तकगच्छके मलधारिदेव तथा सोमेश्वरपण्डितदेवका भी उल्लेख है। ]

[ रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई ५१ पृ० ९६ ]

२५८

## हालुगुड्डे ( मैसूर )

शक १०८४ = सन् ११६२, कन्नड

- १ नमस्तुंगशिश्नुम्बिचन्द्रचामरचारवे । त्रैलोक्यनगरारम्भमूलस्त-  
म्माय शम्भवे ॥ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द
- २ अशेषमहामण्डलेश्वरनुत्तरमधुराधीश्वरं पट्टिपोम्बुच्चपुरवरेश्वरं  
पञ्चावतीलब्धवरप्रसाद मृगमदामोद सन्तत-
- ३ सकलजनस्तुत्यं नीतिशास्त्रज्ञ-विरदसर्वज्ञ-नामादिप्रशस्तिसहितं  
श्रीमन्महामण्डलेश्वरं प्रतापभुजबल
- ४ शान्तरदेवरु सान्तलिलेसायिरमं सुखसंकथाविनोददि राज्यं  
गेयुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि समधिगतपंच-
- ५ महाशब्द महाप्रचण्डकुमार वेदण्डपंचानन रिपुकुमारतारक-  
षडाननं अरसंकगाल विजयलक्ष्मीलोक श्रीमतु-
- ६ होसगुन्दद बीररसरु मेलुसान्तलिलेयुमं अग्रहारमुमं सुखदि-  
नालुत्तमिरे शकवर्ष १०८४ नेय चित्रमानुसंवत्सरद
- ७ वैशाख सुद १० वडुवारदन्दु कटद दण्डु अलिय बम्भणेयनुं  
पाण्ड्यरसनुम्बलिगारनुं समस्तसाधन बेरसि.....वूरलु बिट्ट
- ८ वत्ति बहलि नेल्लिवडेयलु जिनपादशेखर मन्निधावग्रहि माचि-  
राजन ॥ कं० तलपारिनायकगे एलेयल् बोप्पेयब्बे नायकित्ति
- ९ मगं भूवलयदोल् अधिकं पुट्टिद कलिगल मुखतिलकं गोगिग-  
मण्टरदेव । रूपिनालु कामसन्निभ कूर्पिनोला नरतनूज अभिमन्यु
- १० तां बेर्प जनक्कीवेडेयोलु नोर्पडे कलि गोगि कत्तवृक्षं जगदोल्  
धुरदोल् अरातिभूभुजरनन्तघट्टिदरसंकगाल वीर
- ११ नल्लुर्केयि बेससे गोग्गणन्तिरिवलि चिद बीरर नोरेनेत्तरि नेणन  
खण्डद दिण्डेगरुल्लि भयंकरं एने विक्रमं कलिग...

- १२ ना जगदेकवीरन । अणियरमोड्ढिदड्ढणद वीररनान्तिसुत्तिपं बिल्ल  
बल्लणिय तुरंग साधनमनान्तिरिवलि महामयं
- १३ (ने)णमय खण्ड दिण्डि नोरेनेत्तर कार्पुर्मन्दु नोपेडेणकमो  
गोगियान्तिरिद विक्रममाहवरंगभूमियो (ल्)
- १४ कलहदोलान्त वीरचतुरंगबलगलनान्तु गोमिग तोल्वालघटिन्दे  
तूल्दिरिये बिहरिसेनेय लांहिताम्बुवि पल्लु सिरंगल....
- १५ रसद बोलोप्पिरे वीररट्टेगल् तोलतोलगेन्दु तल्लतिरिव सम्भ्रम  
संगररंगभूलियोल
- १६ ....णमय लोहितवारि नेणद केसरुगल कुणिवट्टेगल् एन्दडिदेन-  
णकमो विक्रमद
- १७ ....वागलोन्दु तिरुवि बिडुवागल् नूरु परिये सायिरवरियं  
नेडुवलि कोटियेने पोडवियोल....
- १८ ....रु ॥ तरिसन्दोड्ढिदरातिय मरुवक्कमनान्तु गोमिग यिरियल्  
धुरदोलु परिदलेयोलु मह....
- १९ ....दलव ॥ नायकतन मुम्बरिसिद नायकरिदिरागि गोमिगयोलु  
तागुउदुं सायकदिनेच्चु तू....
- २० ....देवरदेन पेलुवे ॥ मामलेदोड्ढिदन्यनृपसैन्यपयोधिगे वीरभूभुजं  
नूर्मडि बाडबानल
- २१ ....नोपुंदुं कूर्मनखास्त्रमेम्बुरिय नालगेगल् बिडेयट्टिबेवेदुं मुम्म-  
लियाय्तु बैरिव....
- २२ ....कृतास्त्रनो ॥ धुरदालरिसेनेयं निर्भरमिरियल् गोमिग बैरिवि-  
क्रान्तसरल् भरदिन् तनुवनुच्चा
- २३ ... दोला सिन्धुसुतनं पाल्तं ॥ सन्ततमोड्ढि निन्दरिबलालगल-  
नान्तिरिवाल् बैरिविक्रान्तसरालगल् तनुवनुच्चा
- २४ ....प्रदोल ॥ सन्तनसूनुवेन्तु सरसैयेथोलोप्पिदनन्ते गोमिग  
विक्रान्तमनासेवट्टु सरलोट्टिदनाह....

- २५ ...योल् ॥ संगरदोलिरिद बीरमे शृंगारममेक्केवत्त गोगिगय  
तम्मुत्संगदोल् इट्टुय्द निळिपांगनेयर्
- २६ ... (अ) मरावतियं ॥ अन्तु तलप्रहारिनायकन मग गोगिगय-  
नायक कटकमनान्तिरिटु तुमुल् ...
- २७ .. मसान्तरनेनिसिद श्रीवल्लभदेवनप्रपुत्र प्रतापभुजवल्ल सान्तर-  
मेनिसिद तैलपदेवरु बिदियम्मरसन पुत्र श्रीमत्तु
- २८ रु तम्मरसर हेसरलु (?) गोट्टनेन्दु (?) हालुगुड्डेय त्रिमोगा-  
भ्यन्तरसिद्धियागि कल्लु नट्टु कारुण्यं गेट्टु कोट्ट होस ...
- २९ ... वरं मने वडि (?) ढविन कैयोलगे होद कैय मक्कि (?)  
सहितमागि कोट्टरु ॥ मंगल महा श्री श्री

[ यह लेख वैशाख शु० १०, बुधवार, शक १०८४, चित्रभानु संवत्सरके दिन लिखा गया था । पट्टिपोम्बुच्चके सान्तरवंशीय राजा श्रीवल्लभदेवके पुत्र तैलपदेव-द्वारा हालुगुड्डे ग्राम दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । तलप्रहारि नायकके पुत्र सेनापति गोगिकी पाण्ड्यरसके विरुद्ध लड़ते हुए मृत्यु हुई थी । गोगिके कुटुम्बियोंको यह ग्राम दान दिया गया था । लेखमें तैलपदेवको पद्मावतीलब्धवरप्रसाद यह विशेषण दिया है तथा गोगिको जिनपादशेखर कहा है । तैलपदेवके अधीन मेलु-सान्तलिगे प्रदेशके शासक बीररसका भी उल्लेख किया गया है । ]

[ ए० रि० मै० १९२३ पृ० ७४ ]

२५९

एकसम्बि ( वेलगाँव, मैसूर )

शक १०८७ = सन् ११६५, कन्नड

[ यह लेख शिलाहार राजा गण्डरादित्यके पुत्र विजयादित्यके समय-का है । रट्टवशीय कत्तम (कार्तवीर्य) का सेवक मारगौड था । इसकी

वंशपरम्परा इस प्रकार दी है - मारगौड - आचगौड - होल्लिगौड - जिन्नण, कालण तथा मटुवण । इनमें जिन्नण गण्डरादित्यका सेनापति था तथा कालण विजयादित्यका । कालणकी पत्नी लच्छले थी तथा उसे तीन पुत्र थे - जिन्नण, आचण तथा रामण । कालणने एकसम्बुगेमें नेमिनाथबसदि बनवायी तथा उसके लिए यापनीय संघ - पुन्नागवृक्षमूलमणके महामण्डलाचार्य विजयकीर्तिको कुछ भूमि दान दी । ~~विजयकीर्तिकी~~ गुरु-परम्परा यह थी - मुनिचन्द्र-विजयकीर्ति-कुमारकीर्ति त्रैविद्य-विजयकीर्ति ( प्रस्तुत ) । इस मन्दिरकी कीर्ति मुनकर राजा कार्तवीर्यने भी इसके दर्शन किये तथा फाल्गुन शु० १३ शक १०८७ को विजयकीर्तिको कुछ भूमि दान दी । ]

[ ए० रि० मै० १९१६ पृ० ४८ ]

२६०

**मन्तगि** ( धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष १० = सन् ११६५, कन्नड

[ यह लेख कलचुर्य राजा बिज्जणदेवके राज्यवर्ष १०, पाथिव संवत्सरमे (?) मासके शु० ५, गुरुवारके दिन लिखा गया था । पान्थिपुर ( वर्तमान हनगल ) के कलिदेवसेट्टि-द्वारा चतुर्विंशति तीर्थकरमूर्तिकी प्रतिष्ठा तथा मन्दिरके निर्माणका इसमें उल्लेख है । इसके लिए नागचन्द्र भट्टारकको कुछ दान दिया गया था । हानुंगल नगर तथा कलिदेवसेट्टिकी विस्तृत प्रशंसा की है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २०७ पृ० २५ ]

२६१

**अरसीवीडि** ( विजापुर, मैसूर )

राज्यवर्ष १२ = सन् ११६७, कन्नड

[ इस लेखमें कलचुर्य राजा भुजबलमल्लके राज्यवर्ष १२, सर्वजित

संवत्सरमे पुष्य शु० १४, सोमवारके दिन सिन्द कुलके विट्टरसके पुत्र होलरस द्वारा गुणवेडंगिय बसदिके लिए कुछ करोके उत्पन्न दान देनेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई ४० पृ० ४४ ]

२६२

**नदिहरलहलि ( धारवाड, मैसूर )**

शक १०९० = सन् ११६८, कछड

[ इस लेखमे कलचुर्य राजा विज्जणदेवके समय शक १०९०, सर्वधारि संवत्सर, चैत्र पूर्णिमा, सोमवारके दिन जैन साधु-साध्वियोंके आहारदानके लिए कुछ भूमि दान दी जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ई ५८ पृ० १५२ ]

२६३

**हलसंगि ( विजापूर, मैसूर )**

शक १०९० = सन् ११६८, कछड

[ इस लेखमे शक १०९० मे चन्द्रग्रहणके समय धोरजिनालयके लिए कुछ भूमिदानका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३७-३८, क्र० ई० २५ पृ० २०१ ]

२६४

**हिरमन्नूर ( धारवाड, मैसूर )**

शक १०९१ = सन् ११७०, कछड

[ यह लेख पुष्य शु० ५, गुरुवार, शक १०९१ विरोधि संवत्सरका है । इसमे सिन्द कुलके महामण्डलेश्वर चावुण्डरस-द्वारा हिरियमणियूरके जैनशालाके अधिष्ठापक दासबोवकी प्रार्थनापर कुछ भूमिके दानका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२७-२८ क्र० ई ४ पृ० २० ]

२६५

## बिजोलिया ( राजस्थान )

संवत् १२२६ = सन् ११७०, संस्कृत-नागरी

- १ सिद्धम् ॥ ॐ नमो वीतरागाय । चिद्रूपं सहजोदितं निरवधिं  
ज्ञानैकनिष्ठापितं नित्योन्मीलितमुल्लसत्परकलं स्यात्कारविस्फा-  
रितं । सुच्यवत् परमाद्भुतं शिवसुखानन्दास्पदं शास्त्रतं नौमि  
स्तौमि जपामि यामि शरणं तज्ज्योतिरात्मो(स्थि)तं ॥१॥ नास्तं  
गतः कुग्रहसग्रहो न नो तीव्रतेजा...
- २ ...नैव सुदुष्टदेहोऽपूर्वो रविस्तात् स मुदे वृषो वः ॥२॥ [स]  
भूयाच्छीशांतिः शुभविभवमंगोभवभृतां विमोयस्यामाति  
स्फुरितनखरोचिः करयुगं । विनम्राणामेषामखिलकृतिनां मंगल-  
मयीं स्थिरीकर्तुं लक्ष्मीमुपरचितरज्जुं व्रजमिव ॥३॥ नासाश्वा-  
सेन येन प्रबलबलभृता पूरितः पांचजन्यः
- ३ ...वरदलमलि(नीपाद)पद्माग्रदेशैः । हस्तांगुष्ठेन शांगं धनुरतुल-  
बलं कृष्टमारोप्य त्रिणोरंगुल्यां दोलितोयं हलभृदवनितं तस्य  
नेमेस्तनोमि ॥४॥ प्रांशुप्राकारकांतात्रिदशपरिवृढयूहरुद्धावकाशां  
वाचालां केतुकोटि(क्व)णदनणुमणीर्किंकिर्णाभिः समंतात् । यस्य  
व्याख्यानभूमीमहह किमिदमित्याकुलाः कौतुकेन प्रेक्षंते  
प्राणमाजः
- ४ ( स भुवि ) विजयतां तार्थकृत् पाश्र्वनाथः ॥ ५ ॥ वर्धतां  
वर्धमानस्य वर्धमानमहोदयः । वर्धतां वर्धमानस्य वर्धमान-  
( महो ) दयः ॥६॥ सारदां सारदां स्तौमि सारदानविमारदां ।  
भारतीं भारतीं भक्तभुक्तिमुक्तिविशारदां ॥७॥ निःप्रत्यूह-  
मुपास्महे जिनपत्नीनन्यानपि स्वामिनः श्रीनाभेयपुरःसरान् पर-  
कृपाणीयूषपाथोनिधीन् । ये ज्योतिःपरमागमाज-



५ नतया मुक्तात्मतामा(श्रि)ताः श्रीमन्मुक्तिनितंविनीस्तनतटे  
हारश्रियं विभ्रति ॥८॥ मय्यानां हृदयामिरामवसतिः सद्धर्म-  
(मर्म)स्थितिः कर्मोन्मूलनसंगतिः शुभततिः निर्बाध(बो)धो-  
द्धृतिः । जीवानामुपकारकारणरतिः श्रेयः श्रियां संसृतिः  
देवान्मे भवसंभृतिः शिव(म)तिं जैने चतुर्विंशतिः ॥ ९ ॥  
श्रीचाहमानक्षितिराजवंशः पौर्वोप्यपूर्वो न जडावनद्धः । मित्रो  
न चां-

६ ( गो न च ) रंध्युक्तो नो निःफलः सारयुतो नतो नो ॥१०॥  
लावण्यनिर्मलमहाज्वलितांगयष्टिरच्छोच्छलच्छुचिपयःपरिधानधा-  
(श्री । उक्तुं)गपर्वतपयोधरभारभुगना शाकंभराजनि जनीव  
ततोपि विष्णोः ॥११॥ विप्रः श्रीवत्सगोत्रेभूदह्निच्छत्रपुरे पुरा ।  
सामंतोततसामन्तः पूर्णतल्लो नृपस्ततः ॥१२॥ तस्माच्छ्री-  
जयराजविग्रहनृपो श्रीचन्द्रगोपेन्द्रकौ तस्माद्(लं)मगूवकौ शशि-  
७ नृपो गृत्राकसच्चंदनौ । श्रीमद्बप्पयराजविंध्यनृपती श्रीसिंह-  
राडविग्रहौ । श्रीमदुल्लंभगुंद्वाकपतिनृपाः श्रीवीर्यरामोऽनुजः  
॥१३॥ ( चामुंडो ) वनिपोऽतिदिव राणकवरः श्रीसिंघटो दूस्-  
लस्तआताथ ततोपि वीसलनृपः श्रीराजदेवीप्रियः । पृथ्वीराज-  
नृपोथ तत्तनुमवो रासल्लदेवीविभुस्तत्पुत्रो जयदेव इत्यवनिपः  
सोमल्लदेवीपतिः ॥१४॥ हत्वा चच्चिगसिंधलाभिधयसोराजादि-  
वीरत्रयं ।

८ क्षिप्रं क्रूरकृतांतवक्त्रकुहरे श्रीमार्गदुर्हान्वितं । श्रीमत्सो(ल्ल)ण-  
दण्डनायकवरः संग्रामरंगांगणे जीवन्नेव नियंत्रितः करमके  
येन... (क्षि)सात् ॥१५॥ अण्णोराजोस्य सूनुर्धृतहृदयहरिः सत्त्व-  
वांशिष्टसीमो गांमीर्यौदार्यवर्यः समभवद्(चि)रालब्धमध्यो न  
दीनः । तच्चित्रं जं न जाड्यस्थितिरवृत्त महापंकहेतुर्न मध्या न  
श्रीमुक्तो न दोषाकररचितरतिर्न द्विजिह्वाधिसेव्यः ॥१६॥

९ यद्वाज्यं कुशवारणं प्रतिकृतं राजाकुशेन स्वयं येनात्रैव नु  
विघ्नमेतत् पुनर्मन्यामहे तं प्रातः । तच्चित्रं प्रतिभासते सुकृतिना  
निर्वाणनारायणन्यक्काराचरणेन भगवतः श्रीदेवराजं प्रति ॥१७॥  
कुवलयविकासकर्ता विप्रहराजोऽजनि (स्तु) नो चित्रं । तत्तनयस्त-  
च्चित्रं य(ज्ञ) जडश्रीणसकलकः ॥१८॥ मादानत्वं चक्रे मादान-  
पत्रेः परस्य मादानः । यस्य दधत्करवालः करतलाकलितः

१० करतलाकलितः ॥१९॥ कृतांतपथमज्जोभूत् सज्जनो सज्जनो  
भुवः । बैकुण्ठं कुंतपालोगा(द्यत) बैकुं(त)पालकः ॥२०॥  
जाबालिपुरं ज्वाला(पु)रं कृता पल्लिकापि पल्लिव । नद्वल-  
तुल्यं रोषाक्षदूल येन शौर्येण ॥२१॥ प्रतोल्यां च बलभ्यां च  
येन विश्रामितं यशः । दिविलिकाग्रहणश्रांतमाशिकालामलमितं  
॥२२॥ तज्ज्येष्ठभ्रातृपुत्रोऽभूत् पृथ्वीराजः पृथूपमः । तस्माद-  
जितहेमांगो हेमपर्वतदानतः ॥२३॥ अतिधर्मरतेना-

११ पि पार्श्वनाथस्वयंभुवे । दत्त मोराक्षराग्रामं भुक्तिमुक्तिश्च  
हेतुना ॥२४॥ स्वर्णादिदाननियहैर्दशभिर्महद्भिस्तोलानरैर्नगर-  
दानचर्यैश्च विप्राः । येनाचिताश्चतुरभूपतिवस्तुपालमाक्रम्य  
चारुमनसिदिकरी गृहीतः ॥२५॥ सोमेश्वराल्लब्धराज्यस्ततः  
सोमेश्वरो नृपः । सोमेश्वरनतो यस्माज्जनः सोमेश्वरोभवत्  
॥२६॥ प्रतापलंकेस्वर इत्यमिल्यां यः प्राप्तवान् प्रौढपृथुप्रतापः ।  
यस्याभिमुख्ये वरवैरिमुख्याः केचिन्मृता केचिदभिद्रुताश्च ॥२७॥  
येन श्री-

१२ पार्श्वनाथाय रेवार्तरै स्वयंभुवे । सासने रेवणाग्रामं दत्तं स्वर्गाय  
काक्षया ॥२८॥ छ ॥ अथ कारापकवंशानुक्रमः ॥ तीर्थे श्रीनेमि-  
नाथस्य राज्ये नारायणरय च । अंसंधिमथनाद्देवबन्धिभिर्बल-  
शालिभिः ॥२९॥ निगंतः प्रवरो वंशा देववृंदैः समाश्रितः ।  
श्रीमालपत्तने स्थाने स्थापितः शतमन्त्रुना ॥३०॥ श्रीमालशैलप्र-

वरावचूलः पूर्वोत्तरसत्त्वगुरुः सुवृत्तः । प्राग्वाटवंशोस्ति बभूव तस्मिन्  
मुक्तोपमो वैश्रवणामिधानः ॥३१॥ तडागपत्तने येन कारितं

१३ जिनमंदिरं । ( तीर्त्वा ) आत्वा यशस्तत्त्वमेकत्र स्थिरतां गतं  
॥३२॥ योचोकरब्धंदसुचिप्रमाणि व्याघ्रेरकादौ जिनमंदिराणि ।  
कीर्तिद्वभारामसमृद्धिहेतोर्विमांति कंदा इव यान्यमंदाः ॥३३॥  
कल्लोलमांसलितकीर्तिसुधासमुद्रः सद्बुद्धिबन्धुरवधूधरणे  
ध(रेशः) । ...पांकारकरणप्रगुणांतरात्मा श्रीचञ्चुलस्वतनयः...  
पदभूत् ॥३४॥ शुभंकरस्तस्य सुतोजनिष्ट शिष्टैर्महिषैः परि-  
कार्यकार्तिः । श्रीजासटोसूत तदंगजन्मा यदंगजन्मा खलु  
पुण्यराशिः ॥३५॥ मंदिरं वर्ध-

१४ मानस्य श्रीनाराणकसंस्थितं । भाति यत्कारितं स्वीयपुण्य-  
स्कंधमिवोज्वलं ॥३६॥ चत्वारश्चतुराचाराः पुत्राः पात्रं शुभ-  
श्रियः । अमुप्यामुप्यधमणिोर्वभूवुर्भार्ययोर्द्वयोः ॥३७॥ एकस्यां  
द्वावजायेतां श्रीमदाम्बटपद्मटौ । अपरस्यां (सुतौ जातौ श्रीमल्ल)-  
क्ष्मटदेसलो ॥३८॥ पाकाणां नरवरे धीरवेशमकारणपाटवं ।  
प्रकाटितं स्वीयवित्तेन धातुनेव महीतलं ॥३९॥ पुत्रौ पवित्रौ  
गुणरत्नपात्रौ विशुद्धगात्रौ ममशीलसत्त्वौ । बभूवतुलक्ष्मटकस्य  
जैत्रौ मुनीदुरामेद्वभिधौ प्रशस्तौ ॥४०॥

१५ षट्खंडागमबद्धसौहृदमराः षड्जीवरश्चेश्वराः षड्भेदेप्रियवश्यता-  
परिकराः षट्कर्मकृतसादराः । षट्खंडावनिकीर्तिपालनपराः षड्-  
गुण्यचिन्ताकराः षडृष्टयंबुजमास्कराः समभवः षट् देशलस्यां-  
गजाः ॥४१॥ श्रेष्टी दुश्कनाथकः प्रथमकः श्रीमोसलो वीगाडि-  
देवस्पर्श इतोपि सीयकवरः श्रीराहको नामतः एते तु क्रमतो  
जिनक्रमयुगांभोजैकभृगोपमा मान्या राजशतैर्वदान्यमतयो  
राजंति जंबूत्सवाः ॥४२॥ हर्म्यं श्रीवर्धमानस्याजयमेरोर्विभूषणं  
कारितं यैर्महामार्गैर्वि-

१६ मानमिव नाकिनां ॥४३॥ तेषामंतः श्रियः पात्रं (सीब)कः  
 श्रेष्ठभूषणं । मंडलकरमहादुर्गं भूषयामास भूतिना ॥४४॥  
 यो न्यायाङ्कुरसेचनैकजलदः कोर्तेर्निधानं परं सौजन्यांबुजिनो  
 विकासनरविः पापाद्रिभेदे पविः । कारुण्यामृतवारिधेर्विलसने  
 राकाशशांकोपमो नित्यं साधुजनांपकारकरणव्यापारबद्धादरः ॥४५॥  
 येनाकारि जितारिनेमिभवन् देवाद्रिशृङ्गोद्धुरं चंचत्कांचन-  
 चारुदंडकलशश्रेणाप्रभामास्वरं । खेलत्-खेचरसुन्दरीश्रममरं  
 मंजद् ध्वजोद्ग्राजनैर्धत्तेष्टापदशैलशृङ्गजिनभृतप्रोद्गमसश्रियं  
 ॥४६॥ श्रीसीयकस्य मार्ये द्वे

१७ सौनागश्रीमामटाभिधे । आद्यायास्तु त्रयः पुत्राः द्वितीयायाः  
 सुतद्वयं ॥४७॥ पंचाचारपरायणात्ममतयः पंचांगमंत्रोज्ज्वलाः  
 पंचज्ञानविचारणासुचतुराः पंचेन्द्रियार्थोजयाः । श्रीमत्पचगुरु-  
 प्रणाममनसः पंचाणुशुद्धव्रताः पंचैते तनया गृही(तवि)नयाः  
 श्रीसीयकश्रेष्ठिनः ॥४८॥ आद्यः श्रीनागदेवोऽमूललोकाकश्रोज्व-  
 लस्तथा । महीधरो देवधरो द्वावेतावन्यमातृजो ॥४९॥ उज्ज्वल-  
 स्थांगजन्मानो श्रीमद्दुर्लभलक्ष्मणौ । अभूतांभुवनोद्भासित्यशो  
 दुर्लभलक्ष्मणौ ॥५०॥ गांभीर्यं जलधे. स्थिरत्वमचलात्तेज-

१८ म्वितां मास्वतः सौम्यं चंद्रमसः शुचित्वममरस्रोतस्विनांतः परं ।  
 एकैकं परिगृह्य विश्वविदितो यां वेधसा सादरं मन्ये बीजकृते  
 कृतः सुकृतिना सलालकश्रेष्ठिनः ॥५१॥ अथागमन्मं (दिरमे)  
 षकीर्तेः श्रीविं(ध्यव)ल्लीं धनधान्यवल्लीं । तत्रालु(लोके ह्यमितल्प-  
 सुसः) कचिन्नरेशं पुरतः स्थितं सः ॥५२॥ उवाच कस्त्वं  
 किमिहाभ्युपेत. कुतः स तं प्राह फणोश्चरोहं । पातालमूलोत्तव  
 देशनाय (श्री) पाशर्वनाथः स्वयमेप्यतीह ॥५३॥ प्रातस्तेन  
 समुत्थाय न किंचन विवेचितं । स्वप्नस्यांतर्म्मनोभावा यतो  
 वातादिदूषिताः ॥५४॥ लोला-

१९ क(स्त्र) प्रियास्तितो बभूवुर्मनसः प्रियाः । कलिता कमलश्रीश्च  
 लक्ष्मीलक्ष्मीसनामभः ॥५५॥ ततः स भक्तां कलितां वभाषे  
 गत्वा प्रियां तस्य निशि प्रसुतां । शृणुष्व मग्ने धरणीहमेहि  
 श्री (पाश्वर्णनाथं खलु द)शयामि ॥५६॥ तथा स चोक्तो....  
 ( यत्त्वं न हि ) सत्यमेतत् । श्रीपाश्वर्णनाथस्य समुद्घृतिं स  
 प्राप्तादमर्चां च करिष्यतीह ॥५७॥ गत्वा पुनर्लौकिकमेवमूचे  
 भो भक्त शक्तानुगतातिरिक्त । देवे घने धर्मविधां जिनोद्यौ श्री-  
 रेवतीतारमिहाप पाश्वर्णः ॥५८॥ समुद्धरेनं कुह धर्मकार्यं त्वं  
 कारय श्रीजिनचै-

२० त्यगेहं । येनाप्यस्यसि श्रीकुलकर्तिपुत्रपौत्रोत्संतान-सुखादिवृद्धिं  
 ॥५९॥ त(देतज्जी) माख्यं वनमिह निवासो जिनपतेस्त एते  
 ग्रावाणः शठकमठमुक्ता गगनतः । सदारा(मः) (शश्वत्स)  
 दुपचयतः कुहसरितोस्तदत्रैतत् स्थानं....(नि)गमं प्रायपरमं ॥६०॥  
 भत्रास्त्युत्तममुत्तमाद्रिसिखरं साधिष्ठमंचोच्छ्रितं तीर्थं श्रीवर-  
 लाङ्कात्र परमं देवोत्तिमुक्ताभिधः । सत्यश्चात्र षडेश्वरः  
 सुरनतो देवः कुमारेश्वरः सौभाग्येश्वरदक्षिणेश्वरसुरो मार्कण्ड-  
 रिच्छेश्वरो ॥६१॥ सत्योर्वरेश्वरो देवो ब्रह्ममहेश्वरावपि कुटि-

२१ लेशः कर्करेशो यत्रास्ति कपिलेश्वरः ॥६२॥ महानाल-महा  
 का(लम)रथेश्वरसंज्ञकाः श्रीत्रिपुष्करतां प्राप्ताः(संति) त्रिभुवना-  
 विताः ॥६३॥ कीर्तिनाथश्च (केदारः)....मिस्वामिनः । संगमेशः  
 पुटीशश्च मुखेश्वरवटेश्वराः ॥६४॥ नित्यप्रमोदितो देवो सिद्धेश्वर-  
 गणेश्वराः । (गंगाभेदश्च) लोमेशः गंगानाथत्रिपुरांतकाः ॥६५॥  
 संस्नात्री कोटिलिंगानां यत्रास्ति कुटिला नदी । स्वर्णजालेश्वरो  
 देवः समं कपिलधारया ॥६६॥ नाल्पमृत्युर्न वा रोगा न  
 दुर्मिक्षमवर्षणं । यत्र देवप्रभाषेन कलि-

२२ पंकप्रधर्षणं ॥६७॥ षण्मासे जायते यत्र शिवलिंगं स्वयंभुवं ।

तत्र कोटीश्वरे तीर्थे का श्लाघा क्रियते मया ॥६८॥ इत्येवं...  
 कृत्वावतारक्रियां । कर्ता पार्श्वजिनेश्वरोऽत्र कृपया सोषाद्य वासः  
 पतेः शक्तेर्वैक्रियिकः श्रियस्त्रिभुवनप्राणिप्रबोधं प्रभुः ॥६९॥ इत्या-  
 कर्ण्य वचो विभाव्य मनसा तस्योरगस्वामिनः स प्रातः प्रतिबुध्य  
 पार्श्वमभितः क्षोणीं विदार्य क्षणात् । तावत्तत्र विभुं ददर्श  
 सहसा निःप्राकृताकारिण कुंडाभ्यर्णत एव धाम दधत् स्वार्थभुवं  
 श्रीश्रितं ॥७०॥

२३ नासीद्यत्र जिनेन्द्रपादनमनं नो धर्मकर्मजैनं ( न स्नानं ) न  
 विलेपनं न च तपो ध्यानं न दानार्चनं । नो वा सन्मुनिदर्शनं  
 ( न ) ..... ॥७१॥ तत्कुंडमध्यादथ निर्जंगाम श्रीसीयकस्यागमनेन  
 पद्मा । श्रीक्षेत्रपालस्तदथांबिका च ( श्रीज्वा ) ल्लिनी श्रीधरणोर-  
 गेंद्रः ॥७२॥ यदावतारमकार्षीदत्र पार्श्वजिनेश्वरः । तदा नागहृदे  
 यक्षगिरिस्तंबः पपात सः ॥७३॥ यक्षोपि दत्तवान् स्वप्नं  
 लक्ष्मणब्रह्मचारिणः । तत्राहमपि यास्यामि यत्र पार्श्वविभुर्मम  
 ॥७४॥ रेवतीकुण्ड-

२४ नीरेण या नारी स्नानमाचरेत् । सा पुत्रं मर्तुसौभाग्यं ( लक्ष्मीं  
 च ) लभते स्थिरं ॥७५॥ ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि वैश्यो वा शूद्र  
 एव वा । रेवतीस्नानकर्ता यः स प्राप्नोत्युत्तमां गतिं ॥७६॥  
 धनं धान्यं धरां धाम धैर्यं धौरेयतां धियं । धराधिपतिसन्मानं  
 लक्ष्मीं चाप्नोति पुष्कलां ॥७७॥ तीर्थाश्रयमिदं जनेन विदितं  
 यद्गायते सांप्रतं कुष्ठप्रेतपिशाच-कुञ्जररुजाहीनांगगंडापहं ,  
 संन्यासं च चकार निर्गतमयं धूकसृगालाद्वयं काली नाकमवाय  
 देवकलया किं किं न संवद्यते ॥७८॥ इच्छास्यं जन्म कृतं धनं  
 च सफलं नीता प्रसिद्धिं मतिः ।

२५ सद्धर्मोपि च दर्शितस्तनुरुहस्वप्नोपितः सत्यतां म.....रदृष्टिदूषित-  
 मनाः सदृष्टिमार्गे कृतो जै(ने).....ना श्रीलोककश्रेष्ठिनः ॥७९॥

किं मेरोः शृंगमेतत् किमुत हिमगिरेः कूटकोटिप्रकांडं किं वा  
कैलासकूटं किमथ सुरपतेः स्वर्विमानं विमानं । इत्थं यच्चक्यते  
स्म प्रतिदिनममरैर्मर्त्यराजोत्करैर्वा मन्ये श्रीलोलकस्य त्रिभुवन-  
भरणादुच्छित्तं कीर्तिपुञ्जं ॥८०॥ पवनधुतपताकापाणिनो भव्य-  
मुख्यां पटुपटहनिनादादाह्वयत्येष जैनः । कलिकलुषमथोच्चैर्दूर-  
मुत्सारयेद्वा त्रिभुवनाव-

२६ (भुला) भान्नृत्यतोवालयोयं ॥८१॥ (काश्चित् स्था) नकमाधरंति  
दधते काश्चित्च गीतोत्सवं काश्चिद् बिभ्रति तालकं सुकलितं  
कुर्वति नृत्यं च काः । काश्चिद् वाद्यमुपानयंति निभृतं वीणास्वरं  
काश्चन यत्रोच्चैर्ध्वजकिंकिणीयुवतयः केषां मुदे नामवन् ॥८२॥  
यः सद्बृत्तयुतः सुदीप्तिकलितस्त्रासादिदोषोज्झितश्चित्ताख्यात-  
पदार्थदानचतुरश्रितामणेः सोदरः । सोभूच्छूजिनचंद्रसूरिसुगुरु-  
स्तत्पादपङ्केरुहे यो भृङ्गायत एव लोलकवरस्तीर्थं चकारैष सः  
॥८३॥ रेवत्याः सरितस्तटे तरुवरा यत्राह्वयंते शृशं

२७ शाखाबाहुलतोत्करेनं ( रसु ) रान् पुंस्कांकिलानां रुतैः । मत्पुष्पो-  
च्चयपत्रसम्फलचयैरानि(र्मलै)र्वारिमिर्मो मोभ्यर्चयतामिषेकयत  
वा श्रीपादर्वनाथं विभुं ॥८४॥ यावत्पुष्करतीर्थसैकतकुलं यावच्च  
गंगाजलं यावत्तारकचंद्रमास्करकरा यावच्च दिक्कुजराः । याव-  
च्छूजिनचंद्रशासनमदं यावन्म(हं) द्रं पदं तावत्तष्टु तत्  
प्रशस्तिसहितं जैनं स्थिरं मंदिरं ॥८५॥ पूर्वतो रेवतीसिंधुर्देव-  
स्यापि पुरं तथा । दक्षिणस्यां मठस्थानमुदीच्यां कुण्डमुत्तमं  
॥८६॥ दक्षिणोत्तरतो वाटी नानावृक्षैरलंकृता । कारितं

२८ लोलिकनैतत् सप्तायतनसयुतं ॥८७॥ श्रीमन्मा(धु) रसंघेभूद्  
गुणमद्रो महामुनिः । कृता प्रशस्तिरेषा च कवि (कं) ठ (वि)  
भूषणा ॥८८॥ नैगमान्वयकायस्थलितगस्य च सूनुना । लिखिता  
केशवेनेदं मुक्ताफलमिवोज्ज्वला ॥ ८९ ॥ हरसिंगसूत्रधाराय

तत्पुत्रो पालहणो भुवि । तदंगजेमाहडेनापि निर्मापितं जिनमंदिरं  
॥६०॥ नानिगः पुत्रगोविंदपालहणसुतदेहणौ । उत्कीर्णा प्रश-  
स्तिरेषा च कीर्तिस्तम्भं प्रतिष्ठितं ॥६१॥ प्रसिद्धिमगमद्देवः कालं  
विक्रममास्वतः षड्विंशे द्वादशशते फाल्गुने कृष्णपक्षके ॥६२॥

२६ (तृ)तीयायां तिथौ चारे गुरुस्तारे च हस्तके । श्रुतिनामनि योगे  
च करणे तैतिले तथा ॥६३॥ (सं) वत् १२२६ फाल्गुन वदि ३  
कांवारेवणाग्रामयोरंतराले गुहिलपुत्र रा० दाधरमहं घणसीहाभ्यां  
दत्त क्षेत्र डोहली १ खदुंबराग्रामवास्तव्य गौडसोनिगवासुदेवा-  
भ्यां दत्त डोहलिका १ आंतरीप्रतिगणके रायताग्रामीय महंतम-  
लीबडिपोपलिभ्यां दत्त क्षेत्र डोहलिका लघुवीक्षोलिग्राम संगुहिल-  
पुत्र राय्याहरूमहंतममाहवा—

३० (भ्यां द) त क्षे (ग्र) डोहलिका १ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभि-  
र्भरतादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥छ॥

[ इस लेखका निर्देश जै० शि० सं० के तृतीय भाग में क्र० ३७४ पर  
हुआ है किन्तु उस समय इसे श्वेताम्बर लेख समझकर मूल पाठ नहीं दिया  
गया था । इसमें पहले २८ श्लोकोंमें साभरके चौहान राजाओंकी वंशावली  
चाहुमानसे सोमेश्वर तक दी है । इसमें कुल ३१ राजाओंके नाम हैं । इनमें  
अन्तिम दो राजाओंने इस स्थानके पार्श्वनाथ मन्दिरको दो गाँव दान दिये  
थे—पृथ्वीराज ( द्वितीय ) ने मोराक्षरी गाँव और सोमेश्वरने रेवणा गाँव  
दिया था । तदनन्तर इस मन्दिरके निर्माताकी वंशावली विस्तारसे ५१वें  
श्लोक तक दी है जो इस प्रकार है —

प्राग्वाटवंशोय वैश्रवण ( इसने तडागपत्तन, व्याघ्रेरक आदि स्थानोंमें  
मन्दिर बनवाये ) — उसका पुत्र चच्चुल — उसका पुत्र शुभंकर—उसका  
पुत्र जासट ( इसने नाराणक स्थानमें वर्धमान मन्दिर बनवाया )—उसको  
दो स्त्रियोंसे दो दो पुत्र हुए — आम्बट, पद्मट, लक्ष्मट तथा देसल ( इनने



नरवर नगरमें वीरजिनमन्दिर बनवाया ) - लक्ष्मणके पुत्र मुनीन्दु तथा रामेन्दु - देसलके पुत्र दुवक, मोसल, वीगडि, देवस्पर्श, सीयक तथा राहक - सीयकने मण्डलकर दुर्ग विभूषित किया और नेमिनाथ मन्दिर बनवाया - उसकी स्त्रियां नागश्री तथा मामटा - नागश्रीके पुत्र नागदेव, लोलक तथा उज्ज्वल - मामटाके पुत्र महीधर तथा देवधर - उज्ज्वलके दो पुत्र दुर्लभ तथा लक्ष्मण । इनमें सीयकके पुत्र लोलकने यह मन्दिर बनवाया । मन्दिरके निर्माणका वर्णन ८७वें श्लोक तक किया है । कहा है कि लोलक तथा उसकी पत्नियां ललिता, कमलश्री और लक्ष्मी विष्णुवल्ली नगरमें थे उस समय घरणेन्द्रने स्वप्नमें लोलाक श्रेष्ठीको इस मन्दिरके निर्माणका आदेश दिया । तदनुसार जमीन खोदते हुए एक पार्श्वनाथमूर्ति मिली और उसके लिए लोलकने यह मन्दिर बनवाया । इस स्थानको वरलाइका तीर्थ कहकर यहाँके कई शिवमन्दिरोंका माहात्म्य भी इस लेखमें दिया है । यहाँके रेवतीकुण्डमें स्नान करनेसे कोढ़ आदि रोग दूर होनेका भी वर्णन है । लोलाकके गुरु जिनचन्द्रसूरि थे । इस लेखकी रचना माधुर संघके महामुनि गुणभद्रने की । इसे केशवने शिलापर लिखा और गोविन्द तथा देवहर्षने उत्कीर्ण किया । यह कार्य फाल्गुन कृ० ३ संवत् १२२६ को सम्पन्न हुआ । अन्तमें इस मन्दिरको दानरूपमें प्राप्त कुछ जमीनोंका विवरण दिया है । ]

( ए० इ० २६ पृ० १०२ )

२६६

### इन्दौर म्युजियम ( मध्यप्रदेश )

संवत् १२२७ = सन् १९७१, संस्कृत-नागरी

[ इस लेखमें शंख चिह्न है जिससे प्रतीत होता है कि यह नेमिनाथकी मूर्तिका पादपीठ होगा । इसमें देशीगणके गुणचन्द्र, श्रीकीर्ति, रत्नचन्द्र तथा भावचन्द्रका उल्लेख है और गुर्जर जातिके वीर नामक व्यक्तिका भी उल्लेख है । समय संवत् १२२ (७) । ]

[ रि० इ० ए० क्र० ( १९५०-५१ ) १६१ ]

२६७

नदिहरलहलि ( धारवाड, मैसूर )

शक १०९(५) = सन् ११७३, कन्नड

[ यह लेख कलचुर्य राजा रायमुरारि सोविदेवके समय श्रावण शु० (?) गुरुवार, शक १०९ (५), नन्दन संवत्सरका है। इसमें उल्लेख है कि दण्डनायक महेश्वरदेवके अधीन कर संग्रह करनेवाले अधिकारियोंने गोट्टगडि स्थित नागगावुण्डकी बसदिके लिए कुछ करोका उत्पन्न दान दिया। उस समय वनवासि प्रदेशपर कासिमय्य दण्डनायकका शासन चल रहा था। ]

[ रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ई० ५९ पृ० १५२ ]

२६८

बोगाडि ( मांड्या, मैसूर )

शक १०९५ = सन् ११७३, कन्नड

- १ श्रीमत् पार्थिवकुलचंद्र यदुवंशबाधिवर्धनचंद्रं मीमभुजं ललना-  
जनकामाभिरामन् बल्लालं ॥ दिगिभंगलु मदविहलंगलु मलुंकलु  
कूर्मनिन्तोर्मैयुं मोगमीयं भुजगाधिपं बहुमुखं सारल्लु यार्संग-  
मेन्दुगुणोदग्रसमग्रलक्षणलसद्दोर्दण्डदोलं संतोषं मिगे भूकामिनि  
यिर्दल्ल आपदुलदिं बल्लालभूपालन ॥ आ नृपनगण्यपुण्यं  
मानसरूपादुर्देबिनं भुवनजनं मानोन्नतकनकाचलन् आनतरक्षैक-  
दक्षरत्ननिधानं ॥ महंगमन्त्रकमनीयालंबितसुरराजपृज्यचरणा-  
क्यन् एनलु सचित्तकीर्तिपराक्रमप्रभावनन् एनिति
- २ माचिराजं नेगल्लदं ॥ तनुविं कामन(न)र्थिगीव गुणदिं कल्पाद्रियं  
हेमाचलमं चारुचरित्रदिंदुदधियं गांभीर्यदिं स्थैर्यदिं कनकाव्रीन्द्र-

मर्निद्वर्न विभवदिं गेखिद्वर्नना माचिराजनम् आर्मणिण ( सखापरं  
ई ) विश्वंभराभागादोलु ॥ आ बिभु माचिराजन मावं बल्लय्यन्  
अय्यन् ई धरेगेल्लं काव गुणदिन् आदन् अदाव गुणगणदिन्  
आतन् एणेयप्पनं ॥ अभिगमसय्यग्दष्टियन् अभिगतसकलाग-  
मार्थनं कविबुधमागधदीनजैनजनतानिधियं पोगललुके बल्लर्  
आर् बल्लय्यनं विरिदवन् ईयलु बल्लं सरणेंदडे करुणदिंदे कायलु  
बल्लं पुरुषांतरमं बल्ल परिकिपदन्तत्ते...

३ ल नादं बल्लं ॥ परकान्तालकजालकवके पर...दाराहरलवके...  
पानतरोत्तुंगस्तनद्वन्द्वसुंदरसंगवके परांगनाभुजलतासंश्लेषणको-  
डिसं निरुत श्री...बल्लदेव...निदं परिहृतपरदारः दीनांधनाथ...  
विदितविशदकीर्तिविश्रुतोदारमूर्तिः स जयतु बल्लदेवः श्रीजिने-  
न्द्रांश्रिसेवः ॥ अन्ता बल्लालमहीकांतन वरमन्त्रिवल्लमं बल्लय्यं  
सन्ततजिनपूजनेगागन्तुकमं भो(ग)वदिय बसदिगे बिट् ॥  
नीचेकी ओर

४ होरवारु ओलवारु मग्गदेरे कालबोवनहल्लिय...यिनितर मत्तंतु  
मनेसुंक् नेरे मलवत्तियसुंक् विनितं...॥...॥ वनपालम सुंक्-  
वनितं मनुमार्गं मदनमूर्ति बिभु बल्लय्यं मनमोसदु भोगवसदि-  
योलु जिनपूजेगे मक्तिथिदिदा...

५ दिंदिन्तिदनेय्दे काव पुरुषंगायुं जयश्री...दं कायदे काव्य  
पापिगे वारणासियोल् एक्कोटिमुनीन्द्रं कविलेयं वेदाध्यरं  
कोन्दुदोदयशं पोदुंगुमेदु सारिदपुदीशैलाक्षरं धात्रियोल् ॥ विषं  
न विषमित्याहुः देव-

६ स्वं विषमुच्यते विषमेकाकिनं हन्ति देवस्वं पुत्रपौत्रकं ॥  
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत् वसुंधराः षष्टिर्वर्षसहस्राणि  
विष्टायां जायते क्रिमिः ॥ मंगल

७ सामान्योयं धर्मसेतुनृपाणां काले-काले पालनीयो मवदमिः  
 सर्वानेतान् माविनः पार्थिवेन्द्रान् भूयो-भूयो याचते रामचंद्रः ॥  
 एवस्ति श्रीमन्महामंडलेश्वरं त्रिभुवनमल्ल वीरगंग बल्लालदेवरु  
 दोरसमुद्रदलु सुखसंकथाविनोददि राज्यं गेयुस्त विरलु तत्पाद-  
 पश्चोपजीवि महाप्रधान सर्वाधिकारि हेग्गडे बल्लय्य शककालं  
 सासिरद् तौमसैदनेय विजयसंवत्सरद् कार्तिक शुद्ध पंचमि  
 सोमवारदंदु कालबोवनहल्लिसहितवागि भोगवदियलुल्ल समस्त-  
 सुंकवं श्रीकरणजिनालयद् श्रीपाश्वदेवर् अष्टविधार्चनेगेंदु  
 श्रीमदकलंकदेव(सिद्धा-)

८ हासनस्थितरूप श्रीपद्मप्रमस्वामिगलगे धारापूर्वकं माडि कोइरु

( इस लेखमे होयसल राजा बल्लालके महाप्रधान हेग्गडे बल्लय्य-द्वारा  
 भोगवदिके पार्श्वजिनालयके लिए अकलंकदेवकी परम्पराके पद्मप्रभ स्वामी-  
 को कुछ करोंका उत्पन्न दान दिये जानेका निर्देश है। यह दान कार्तिक  
 शु० ५, शक १०९५, विजयसंवत्सरके दिन दिया गया था। हेग्गडे  
 बल्लय्य महाप्रधान माचिराजका माव ( ससुर या चाचा था )

[ ए० रि० मै० १९४० पृ० १५० ]

२६६

सोगि ( जि० बेल्लारी, मैसूर )

१२वीं सदी, कन्नड (वीरप्पके घरके आगे एक शिलाखण्डपर)

[ इस लेखमे होयसल राजा विष्णुवर्धन वीरबल्लाल-द्वारा कार्तिक  
 कृ० ५, गुरुवारको किसी जैन मंस्थाको भूमिदान दिये जानेका  
 निर्देश है। ]

[ इ० म० बेल्लारी २३७ ]

२७०

## चिक्कहन्दिगोल ( धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष ८ = सन् ११७५, कन्नड

[ इस लेखमें कलचुर्य राजा सोविदेवके राज्यवर्ष 'जयसंवत्सरमें शंख-जिनालयको दिये गये दानका वर्णन है । इस लेखकी रचना 'अनुपमकवि-कालिदास' हित्तिन सेनबोव-द्वारा की गयी थी । ]

[ रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० १५० पृ० १२ ]

२७१

## कलसापुर ( कडूर, मैसूर )

शक १०६८ = सन् ११७६, कन्नड

१ ( चिस गयी है )

२ कैवल्यबोधेन्द्रिराधामं षोडशतत्त्व(तीर्थ)कर्तुं विमलज्ञानासिधं  
सत्सुखारामं माल्के विनेयसन्ततिगे नित्यं शान्ति-

३ तीर्थेश्वरं ॥ (१) श्री स्वस्ति होयिसल्लवंशाय प्रतापार्जितकीर्तये ।  
यदुवंशनृपान.....भूभृ-

४ ते ॥ (२) तदन्वयावतारमेन्तेन्दोडे ॥ सरसीजोदरनानिपन्नजनजं  
तत्पुत्रनन्तत्रियत्रिरुहोद्भूतबु-

५ धं पुरुरवने तज्जं तत्तनूजायुवायुरपत्यं नहुषं यथातिमहिषं  
तत्सममवं नरेश्वरजा-

६ तं । यदु तत्कुलं सल्लनृपं लोकोत्तमं पुष्टिदं । (३) यादवरोले  
होयिसल्लवेमरादुदु सल्लनिन्दे हुलि-

७ य सेल्लेयुण्डिगेयादुदु चिह्नं वरमन्तादुदु सल्ले शशकपुरद  
वासन्तिकेयिं ॥ (४) सल्लनृपनिं ब-

- ८ लिपिं यदुकुलदोल् पलम्बरोगेदर् अवरन्वयदोल् । बलवद्-  
विरोधकुलिशं जनिथिसिदनेसेयेवि-
- ९ नयादित्यं ॥ (५) वनमार्गानुगतं जगत्प्रणुतमित्रं मण्डलाग्र-  
प्रतापनियुक्तं रिपुभूपसन्तम-
- १० सभेदं सज्जनं...नसन्तोषकरं स्वबन्धुजनचक्राह्लादकं पुष्टिदं  
विनयादित्यनृपाल-
- ११ कं यदुकुलोत्तुगोदयाद्रीन्ददि ॥ (६) विनयादित्यनृपालन कुल-  
वधुवेनिमि सिरियोल्-
- १२ वाणियोलं तनगे केलेयोलन्दु बुधजनवेने केलियन्बरसि  
सरसिजानेनेयेसेदल् ॥ (७) सति केलियन्बरसिगमा-
- १३ विनयादित्यनृपतिगं पुष्टिदमुद्धतवैरिदर्पदलनोद्यतमयनयशौर्य-  
शालियेरेयंगनृपं ॥ (८)
- १४ विनयादित्यावनिपालन सुतनेरेयंगं सगवितं भू...निरव्ये  
धर्मर्दाक्षागुरुविनतमहीभृत्समू-
- १५ हैकरक्षावनधिप्रियं समस्ताश्रितनटनटीसिन्धमू कलनिव निजतं-  
सत्यवाणिमुखमणि मा-
- १६ पुरनिर्मलाबोधसुतं हिमरुचियन्ते सेवादरवियं लतियं सरसिजमं  
मनोरमकुसुमंगलं कद-
- १७ नयं मदनं बिदियागि ताने तोयदमृतदिनेष्टे निर्मिसिदनेज्ञदे  
केलदेयं...भूरमणन कान्तेयं पेरत-
- १८ नेज्ञदिर् एचलदेविराणियं ॥ (९) अन्तेरेयंगमहीशन कान्तेगे  
जनिथिसिदरेसेव बल्लालमहीकान्तं विष्णुमहिपननन्तगुणं
- १९ नृपलकामनुदयादित्यं । (१०) अवरोधद्रुमनागियुं बुधनिकाय-  
स्तूयमानि श्री...विशेषोन्नतियिन्दमु -
- २० तमनेनिप्यं सच्चरिताद्रि वगगाजलधौतनिमलकुलदृष्टारिदर्पापहं  
भुव...विमवं...श -

- २१ श्रीविष्णुभूपालकं ॥ (११) जनिथिसिदं विष्णुमहीशन ल...  
विदनुपमं नरसिंहावनिप नतरिपुभूपाल-निकायलला -
- २२ टटटविघटितचरणं देवनृसिंहन प्रियमहिषीपट्टदोकरेत्त पट्टमहि-  
षिये...देवलदेवा लसल्लतांगि
- २३ राजीवदलाक्षि पल्लवनिभाधरे पाटलकण्ठि कोकिलारावे...राजीव-  
नल...य । यनेयं ताल्दिदल् ॥ (१२) कालनिमप्रत -
- २४ जनरसिंहमहीपतिगं मदेमलालालसयानेकम्बुनिमकन्धरे येचल-  
देविगं...श्रीलकनेशन्तानेने पुट्टिदनूर्जित -
- २५ पुण्यमूर्ति बल्लालनृपालं समदवैरिमहीभुजदर्पमंजनं ॥ (१३)  
क्रा...वादिधरावनितेय चातुर्यंदि नीढी (?)
- २६ निरमणि रमणाशकुलमं श्रायोलायशनुरत्यागदिं वन्दिबृन्द-  
मनित्यानतसत्यदिं चरितदिं सन्ततमुं तन्मोल कमदिं निश्चल -
- २७ मपूर्वं...तलेदं बल्लालभूपालकं ॥ (१४) निजपादानत...दित-  
लक्ष्मीवल्लभ - ला...मूर्ति विबुधाराध्य
- २८ जगन्नेत्र नीरजमित्र स...दे कान्तनेनिपं प्रतापदेवं समस्त-  
जगद्वन्धपदारविन्द...रारा...नल ॥ (१५) पुरुहू (त)
- २९ ख्यातमोगं शिखिनिमघनतेजं यमावार्यशौर्यं नरवाहातोष...वायु-  
सत्रं धनाधीश्वरसं -
- ३० घर महेशप्रकटितमहिमं लोकपालप्रभावान्तरनादं दिग्बधूमण्डन-  
विशदयशं वीरबल्लालदेवं ॥ (१६) भृगुगेनि वत्सराजं
- ३१ हयदिनिमसमारूढप्रौढियिन्दं मगदत्तं वेषदिन्दं दिविजपति...कं  
सत्त्वगुण प्रभूति
- ३२ राघवन् इनतनयं त्यागदिं वादिभूपाल...नदिदतप्रतिमनेनिसिदं  
वीरबल्लालदेवं ॥ (१७) स्वरित्त समधिगतपच -
- ३३ महाशब्दमण्डलेश्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बर-  
धमणि सम्यक्त्वचूडामणि तलकाडुकौणिक -

- ३४ नवामिषुच्छंगिहानुंगलगोण्ड भुजबलवारंगंगनसहायशूर निश-  
कप्रताप होयसलवीरबल्लालदेवरसर् द्वारसमु -
- ३५ द्रदोल् सुखदि राज्यं गेयुतिरे तत्पादपधोपजीविगल् एनिसिद  
श्रीमन्महावड्डव्यवहारि कवडेमर्थं नति
- ३६ द्यवर गुरुकुलान्वय क्रममेन्तेन्दाडे ॥ विमलश्रीजैनधर्मकमल-  
तोऽविनन्तोप्पुगुं मूलसंघं कमनीयं
- ३७ कोण्डकुन्दान्वयमे वरगणं देशि... गच्छ...क्रमदि तत...वधं...  
गेसेये श्रीवधूटीरम -
- ३८ ण देवेन्द्रसैद्धान्तिक मुनियेसेदं महोत्साहधामं ॥ (१८) तच्छिष्यं  
नाडे विधृतगुण वृषनमन्दि मुनि कायो -
- ३९ त्सर्गगोण्डुपवासदिन्द...चतुर्मुखाख्येयनान्दम् । (१९) भवरप्र-  
शिष्यरोलभ्रन्तर्दि द्विजराजिकुमतवादमदपद -
- ४० नावर्तिकीर्तिवृक्षनुं श्रीगोपनन्दिपण्डितदेवर् ॥ (२०) जिनसमय-  
यशश्चन्द्रं जिनागमाम्भोनिधिप्रवर्धनचन्द्रं जिनमुनिकु -
- ४१ वलयचन्द्रं जिनचन्द्रं बिबुधनिकरराकाचन्द्रं ॥ (२१) निरवद-  
यबोधदर्शनचरणयुतर् माघनन्दिस्सैद्धान्तिकदेवरशि -
- ४२ प्यरार् शमान्वितनिरुपमधर्मेन्द्र रत्ननन्दिमुनीन्द्रर् ॥ (२२)  
तत्सधर्मर...संहिताद्यखिलागमार्थनिपुणव्याख्यानसंशुद्धि -
- ४३ यि...रु सैद्धान्तिकतत्त्वनिर्णयवचाविन्यासदि श्रुतिसम्बद्ध...  
तथनार्थशास्त्रमरतालंकारसाहित्यदिरुद्धानूह
- ४४ बालचन्द्रमुनियं विद्याधर... (२३) चक्रे श्रीमूलसंघ...पद्माकर-  
राजहंसो...निपुणप्रवरावतंसः जीया -
- ४५ जिजेनेन्द्रसमयार्णवपूर्णचन्द्रः...क्रुधाः । (२४) अन्तेनिसिद  
श्री...हलाचार्यर गुड्डं देदी -
- ४६ उत्तयान्वयवारिधिचन्द्रमनु...र् अर्हन्त्य...चरितनुं वरजैनसमय-  
कुमुदेन्दु...अन्यायार्जितधनम -



- ४७ नेयदे कवडेमय्यन् अणुवन्तय्यम् ॥ (२५) वरसुगुणसमन्वित  
कवडेमय्य तन्न...पूज्ययशःसद्गुणि केतिसेट्टियुमुदात्त -
- ४८ प्रणयरेचिसेट्टिगमन्ता पूणुससेट्टिगमिलासंस्तुत्य देकब्बेगं प्रियपुत्रं  
प्रभु वास...सम्पूर्णमव्योदय
- ४९ अनुपम...सेट्टि...यदा कान्ते...अनूनशौर्य निधि
- ५० ...नामादि...अपूर्व...जनविनुत जक्किसेट्टिय वनिते सु -
- ५१ ...हामे...तिय तलेदल् ॥ (२७) अवराहमीयोद्यपुण्योदय
- ५२ ...निखिलगुणक्कास्थान चर्मन पुण्य...कुलवधु दंक-
- ५३ ...दितादात्तलक्ष्मीनिवासं ॥ (२८) नीतिलता...दानधर्मपयो-
- ५४ धिचन्द्रम...राहिमनु...बंददानकल्पभूजं विरो-
- ५५ तनुजोज्जत...णिसेट्टिय ॥ (२९) स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर  
भुजबलवीरगंगनसहायशूर निःशंकप्र-
- ५६ ताप...होय्मलदंवरसर शकवर्ष १०१८ नेय दुमुंखिसंवरसरद  
उत्तरायणसक्रमणदौल् अमरदानव-
- ५७ माहुवल्लि...श्रीमन्महावहुव्यवहारि कवडमय्यन देविसेट्टिय  
तां माहिसिद आर्बीरबल्लालजिनाल-
- ५८ यद...यकैलाहारदानक्कं खण्डस्फुटितजीर्णोद्धारक्कमेन्दु विज्ञपं  
गेय्यळवर
- ५९ ...गणद...तद श्रीमन्महामण्डलाचार्य बालचन्द्रसिद्धान्त-  
देवर्गे धारा-
- ६० पूर्वकं...बालचन्द्र...होसनाडोलगण कोरटिकेरयनदर कात्वा-  
ल्लिगलो-
- ६१ लनादि...नाचहल्लि मडवद मरियहल्लियोलगाद हल्लिगल  
सामासम्बन्धमेन्तेन्दोडे म्-
- ६२ वनाल...ण्डु - रि - वकय हलेयिलेय मोरडि तेंकलारडिगेरे  
नैरित्य-

- ६३ ....यदोल् वायव्यदोल् नेरिलकेर्योलगण भाविनमर....देवर  
अरगल्लो...
- ६४ ....वडमुं नगर मुन्ता वायव्य....
- ६५ ....लाल तिगुल तेलुंग कर्नाडिग देश मुख्यमाद सु-
- ६६ ....व्रद नेरेपुलिय चिकहसिन्ध केतलदेविय गडिय बाचलेश्वरदे  
सम-
- ६७ स्तनख....श्रीशान्तिनाथदेवर....कर कैकर्यक्के बिट्टायमेन्तेन्दोडे  
होयमल नाडोल
- ६८ ....त्ति हेरिंगे हागवेरदु कत्तिय हेरिंगे हाग ओन्दु कुदुरे
- ६९ ....कर्पूरपट्टनूलण्ड-क्के हणवोन्दु श्रीगन्धद मालवेगे
- ७० ....हणनयव ....वडिय मलवेगे हण नाल्कु येत्तिन मलवेगे हण  
वोण्
- ७१ ....हसुबेगे हाग वोन्दु पडसालेय गडिगे बरिसके हण वोन्दु  
आबिडिव....
- ७२ ....रल देविय गडिगे बरिसवके हाग वोन्दु निच्च सेडिव...  
दवसद हेरिंगे मान वोन्दु
- ७३ ....मेलसु दड हेरिंगे मान वोन्दु....गणदोल् धारेयेर
- ७४ ....गेय तडियोल् शतसहस्रब्राह्मणगर्लंकारसमन्वित शतसहस्र-  
कविलेगलं
- ७५ ....क्षेत्रदोलनिबर् ब्राह्मणरुमननितुकविलेगलं कोन्द महापत्ताक-  
नक्कु परिपालिपु
- ७६ ....गन्ते वर....निनारे धरंगे शिलाशासनाक्षरावलिथेसेगुं ॥  
स्वदत्तां
- ७७ ....हरंते वसुन्धरां षष्टिवर्षसहस्राणि विष्टायां जायते क्रिमिः ॥  
सामान्योयं धर्मसे -

७८ ...लनीयो भवसि : । सर्वानेतान् भाविनः पार्थिवेन्द्रान् भूयो-  
भूयो याचते राम -

७९ ...य स्थलद चतुस्सीमेय निवेशनमेन्तेन्दोडे मूडलु हिरिय  
राजबीडि मोदल्...

८० ...य घलेयलु पश्चिमके नीलविप्पत्तु बडगण...मोदलोक  
तैकलु अ...

[ यह विस्तृत लेख दुर्मुखि संवत्सर, शक १०९८ में लिखा गया था । इसके प्रारम्भमें होयसल वंशके राजाओंका कुलवर्णन वीरबल्लालदेव (द्वितीय) तक किया है । इनके समय देविसेट्टि नामक धनिकने वीरबल्लालजिनालय नामक मन्दिर बनवाया । मूलसंघ-देसिगण-कोण्डकुन्दान्वयके आचार्य बालचन्द्रकी प्रेरणासे यह कार्य हुआ । इस मन्दिरके लिए राजा वीरबल्लाल-ने कुछ गाँव तथा कुछ करोका उत्पन्न अर्पण किया था । बालचन्द्रकी गुरुपरम्परा देवेन्द्र सैद्धान्तिक - वृषभनन्दि-चतुर्मुख-गोपनन्दि-जिनचन्द्र-माघनन्दि-रत्ननन्दि-उनके गुरुबन्धु बालचन्द्र इस प्रकार दी है । ]

[ ए० रि० मै० १९२३ पृ० ३६ ]

२७२

कुर्चंगि ( तुंकूर, मैसूर )

१२वीं सदी ( सन् ११८० ) कन्नड

[ यह लेख एक जिनमूर्तिके पादपीठपर है । इसकी स्थापना मूलसंघ-देशीगण-पनसोगे शाखाके नयकीर्तिसिद्धान्त चक्रवर्तिके शिष्य अघ्यात्मि बालचन्द्रके उपदेशसे बम्मिसेट्टिके पुत्र केसरिसेट्टिने बेलूरमें की थी । (समय लगभग ११८० ई०) । ]

[ ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८३ ]

२७३

पाटशेवरम् ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

शक ११०७ = सन् ११८५, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा वीर सोमेश्वरके समय शक ११०७ विश्वा-  
वसु संवत्सरका है । इसमें राजाके सामन्त भोगदेव चोल महाराजाका तथा  
वीरणन्दिसिद्धान्तचक्रवर्ति और उनके शिष्य पद्मप्रभमलधारिदेवका  
उल्लेख है । [ रि० सा० ए० १९१७-१८ क्र० २८ पृ० ७२ ]

२७४

लक्षकुण्डि ( धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष ४ = सन् ११८५, कन्नड

[ यह लेख त्रिभुवनमल्ल वीरसोमेश्वरके राज्यवर्ष ४, विश्वावसु  
संवत्सरमें पुष्य शु० २ बुधवारका है । इसमें कुछ सेट्टियों द्वारा अष्ट-  
विधार्चनके लिए नोम्पियबसदिको कुछ दान देनेका उल्लेख है । कुछ  
शिल्पकारों द्वारा गान्तिनाथदेवको दिये हुए दानोका भी उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० ५५ पृ० ५ ]

२७५-२७६

कुमट ( उत्तर कनडा, मैसूर )

१२वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख कदम्ब राजा वीर कावदेवरसके राज्यकालमें चैत्र व० १,  
मंगलवार, श्रीमुख संवत्सरके दिन लिखा गया था । चन्द्रकीर्ति भट्टारकके  
शिष्य तथा वर्धमानसेट्टिके पुत्र सातिपेड्के समाधिमरणका इसमें उल्लेख है ।  
यही एक अन्य लेखमें एक सेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० ई० रा० १९४७-४८ क्र० २३८-२४० पृ० २७ ]

२७७-२७८

बम्बई ( महाराष्ट्र )

१२वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख भायखलाके जैन मन्दिरमें है । कदम्ब राजा कावदेवके राज्यवर्ष ४४, ईश्वर संवत्सरमें भाद्रपद शु० १२, सोमवारके दिन नागव्य-  
के समाधिमरणका इसमें उल्लेख है । यही एक अन्य समाधिलेखमें दी  
हुई तिथि इस प्रकार है — भाद्रपद शु० ७, सोमवार विक्रम संवत्सर । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १९९-२०० पृ० ३७ ]

२७६

नागपुर म्युजियम ( महाराष्ट्र )

संवत् १२४५ = सन् ११८८, संस्कृत-नागरी

[ यह लेख एक मूर्तिके ऊपर है । माणिकसेनदेव, वीरसेनदेव तथा  
बाजसेन (?) देवका इसमें उल्लेख है जो सम्भवतः जैन आचार्य थे । तिथि  
संवत् १२४५ दी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २६७ पृ० ५० ]

२८०

बिलिगिरि रंगनबेट्ट ( मैसूर )

शक १११२ = सन् ११६०, कन्नड

- |                               |                             |
|-------------------------------|-----------------------------|
| १ शुभमस्तु श्रीमत्परमगंभी-    | २ रस्याद्वादामोघलांछनं जी-  |
| ३ यात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं  | ४ जिनशासनं स्वस्ति श्रीप्र- |
| ५ तापचक्रवर्ति होयिसल श्रीवी- | ६ रबल्लाकदेवरसरु पृथुविरा-  |
| ७ ज्यं गेरुयुत्तिरलु सकवरुस   | ८ १११२ साधारण संवरद बै-     |
| ९ साकसुद्ध पंचमि ब्रिह        | १० .....                    |

[ यह लेख रंगतबेट्टके समीप जंगलमें श्रवणनअरे नामक पाषाणपर खुदा है । होयसल राजा वीरबल्लाल ( द्वितीय ) के राज्यमें वैशाख शु० ५, गुरुवार, शक १११२, साधारण संवत्सरके दिन यह लिखा गया था । लेख टूटा होनेसे इसका उद्देश ज्ञात नहीं हो सकता । किन्तु प्रारम्भमें जिनशासनकी प्रशंसा है अतः यह किसी जैन व्यक्तिका निसिधिलेख या किसी जैन मन्दिरको दिये गये दानका उल्लेख प्रतीत होता है । ]

[ ए० रि० मै० १९३८ पृ० १९३ ]

२८१

होसनगर ( मैसूर )

शक १११२ = सन् ११९०, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोबलाच्छनं

२ जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं

३ स्वस्ति श्रीबल्लालदेवरसर-

४ ...

५ जेयं उत्तरोत्तरामिरुद्धमिरलु सक वरुष

६ १११२ एरडनेय सर्वधारिसंवत्सरद

७ ज्येष्ठ सुध एकादशि बहुवारदलु गु-

८ णसंपन्नरूप पुष्पसेनदेवर गुड्डि श्री-

९ मनु सर्वाधिकारि बम्माचारिय हेण्डति ह-

१० व्वक्कनु सुरलोकप्राप्तेयादलु

[ इस लेखकी तिथि ज्येष्ठ शु० ११, शनिवार, शक १११२, सर्वधारि संवत्सर है ( यह तिथि अनियमित है क्योंकि शक १११२ साधारण संवत्सर था ) । उक्त समय होयसल राजा बल्लाल ( द्वितीय ) का राज्य था । सर्वाधिकारी बम्माचारिकी पत्नी हव्वक्काके समाधिमरणका इस लेखमें निर्देश है । इनके गुरु पुष्पसेनदेव थे । ]

[ ए० रि० मै० १९३१ पृ० १७२ ]

२८२

## सोमपुर ( मैसूर )

शक १११४ = सन् १९९२, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जितशासनं ॥ (१) जयति सकलविद्यादेवता -
- २ रत्नपीठं हृदयमनुपलेपं यस्य दीर्घं स देवः (१) जयति तदनु शास्त्रं तस्य यत् सर्वमिध्यासमयतिमिरघ्नातिज्योतिरेकं नराणां (॥२)
- ३ ...द्राग्रिं सलनेम्बनाग पुलियं पोयद् सल पोय्सक बांगं
- ४ ...पलम्बरुं राज्यं गेयुत्तिपिनं । (३) विनयप्रतापमेम्बी जननाथो-चितचरित्रयुगदि जगमं जननयनवेविसि नेगल्दं विनया-
- ५ दित्यं समस्तभुवनस्तुत्यं । (४) आतंगतिमहिमं हिमसेतुसमा-
- ६ ख्यातकीर्ति सन्मूतिमनोजातं मर्दितरिपुनृपजातं तनुजातनादने-रेयंगनुपं । (५) बल्लिदरवनीपतिसम्पादितधर्मार्थ-
- ७ कामसिद्धिबोलवनीवल्लभरातन तनयर् बल्लालं त्रिट्टिदेवमुदया-दित्यं । (६) भूवररमुगलोलं तां भाविसे मध्यमनदागियुं
- ८ नृपगुणपदमावदिनुत्तमनाद भाविभवद्भूतजिष्णु विष्णुनृपालं । (७) मलेयं साधिवि माण्डने तलवनं कांचीपुरं कोयत् -
- ९ र् मलेनाडा तुलुनाडु नीलगिरिया कोलालमाकोंगु नन्गलियु-च्छंगि विराटराजनगरं वल्लूरिवेल्लं दुर्वारिदोर्बलदि
- १० लीलेयि साध्यमाहुवेणैयार् विष्णुक्षमापालनोल् । (८) ...येन-लाल्दं ...चूडामणि ... हारमेने
- ११ किन्नरेश्वरशिरःप्रोत्तंग ... फण्णि ... गुणमणिः
- १२ सम्यक्तचूडामणिः आ विष्णुवर्धनंगं ... येनिसिद् लक्ष्मादेविगमुद्-भविसिदनी भूविभुत वरसिहनाहब-

- १३ सिंहं ॥ (६) पडेमातेम्बन्दु कण्डंगमृतजलधि तां गर्वादिं गण्ड-  
वातं नुडिवातगेननेम्बै प्रलयसमयदोल् मेरेयं मोरि बर्पा  
कडलन्-
- १४ नं कालनन्नं मुलिद कुलिकनन्नं युगान्ताग्नियन्नं सिद्धिल्लं  
सिंगदन्नं पुरहरनुरिगण्णनज्जती नारसिंहं । (१०) रिपुसर्पदृढप-  
दावानलबहलशि-
- १५ खाजालकालाम्बुवाहं रिपुभूपालप्रदीपप्रकरपटुतरस्फारझंझासमीरं  
रिपुनागानीकताक्ष्यं रिपुनृपलिनी-
- १६ षण्डवेत्तण्डरूपं रिपुभूभृद्भूरिवज्रं रिपुनृपमदमातंगसिंहं नृसिंहं ॥  
(११).....पोगल्द तीव्रप्रताप.....गिदु पोगल्दुदं मा-
- १७ ण्डोडं शत्रुगात्रप्रगलद्रक्तप्रवाहप्रबलगुरुध्वानमुं शत्रुभूभृद्भूरि-  
सन्दोहदाहप्रचुरचिटिचिटिध्वानमुं निर्विक-
- १८ षणं पोगलुत्तिकुं नृसिंहप्रबल भुजबलाटोपमं धात्रिगेल्हं ॥ (१२)  
आ विभुविन पट्टमहादेविगे सद्गुणचरित्रादिन्दं सीतादेविगे मि-
- १९ गिलादेचलदेविगे बल्लालदेवनुदयंगेय्दं ॥ (१३) कलिकाल-  
क्षत्रपुत्रप्रबलतरदुराचारसन्दोहदिन्दं-पोले पोर्दल् पेसि बेसत्तलव-
- २० लिद महाकान्तेयं रक्षिसल्ला जलजाक्षं ताने बन्दिन्तवतरिसि-  
द्वोल् वीरयल्लालदेवं कुलजात्याचारसारं नृपवरनुदयंगेय्दं-
- २१ नाश्चर्यशौर्यं ॥ (१४) विनयश्रीनिधियं विवेकनिधियं ब्रह्मण्यनं  
पूर्णपुण्यननुदामयशोर्थियं जितजगत्प्रत्यर्थियं सर्वसज्ज-
- २२ नसंस्तुत्यननुदमवद्वितरणश्रोविकमादित्यनं मनुजेशर् मलेराज-  
राजननदं बल्लालनं पोल्वरे । ( १५ ) उरिगण्णिं बेन्द चण्डा  
तिपुर-
- २३ मुदिद्वोल् चुर्चुरिल्दारुगार्ग.....रि दन्दर धगिल धन्धग धग  
चेते चेल्चेल्चिटिलगट्टु पोर्देम्बरवं कैगण्मे दिक्पालकर् भलवलिय-



- २४ ल् वीरबल्लालनि ( दिं ) दुरिदतुच्छंगियोडे रिपुनृपति....पेल-  
लुण्टे ॥ ( १६ ) रणरंगांगणशूद्रक नडेदोडिन्तुच्छंगि नुचलित्त
- २५ तत्क्षणदि नोडे विराटराजपुर वोत्तुत्तायत्तु मुक्कान्न सेवुणरापोश-  
नमात्रकं नेरेदरिल्लेन्दन्दु बल्लालदोगुणवं बाणिसलण्ण
- २६ बल्लवरदारी भूरिभूचक्रदोल् ॥ ( १७ ) विलयाद्रि येनिप सेवुण-  
बलन ... निचयाविल मकराकुलवी यदुकुलपरितलग-
- २७ तवायत्तु बन्दु..... ॥ ( १८ ) कन्दनदृष्टारिरक्तं कूडे हयखुर-  
दिन्दा ... गेलिगेत्तगद या ... दोल् मुम्पेण ... पेणन वेत्ति-
- २८ ... भूतालि पुण्यराशिकृतविपुलतलं वीरबल्लालदेवं ॥ ( १९ )
- २९ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ राजाधिराजपरमेश्वर  
परममहाराक द्वारावतीपुरवराधीश्वरं वासन्तिकदंवीलब्ध-
- ३० वरप्रसाद रिपुसम्मर्दनविनोद यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्व-  
चूडामणि शत्रुक्षत्रिय-
- ३१ मानमर्दनं वीररिपुदर्पशर्पज्ञानिल श्रीमद्वीर्यं ... पराक्रमैक-  
प्रभाव । निरुपमात-
- ३२ क्यप्रताप नयविनयस्वभाव । सकलजनसत्याशोर्वाद् । ... सुदगर-  
समरकेलिसंस-
- ३३ क्त ... रिपुविजितादित्यप्रताप । सप्तांग ... विलास ... सरस्वती  
... स्तम्भेरम राज-
- ३४ कण्ठीरव । पाण्ड्यकुल ... दण्ड । पल्लवकुलयशोविपिनदावानल ।  
... सिंहलसपालकुरंगकुलपलायनकार-
- ३५ ण कठोरनिजविजयदोर्दण्ड ... । सकलरिपुनृपकुल ... इत्यादि-  
नामादि-
- ३६ समस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमत्सार्वभौम संग्रामराम मिल्लमदिशा-  
पट्ट ... धरित्रोपट्ट मल्लेराजराज मल्लेपरोल्गण्ड

- ३७ तलकाहु-गंगवाडि-नोलम्बवाडि-वनवासे - पाभुंगल-हुकिगेरे-इल-  
सिंगे-बेल्वल-तलवल-तलियगोण्ड भुजबलवीरगं-
- ३८ गनेकांगवार सनिवारसिद्धि गिरिदुर्गमल्ल लदंकरामनसहाय-  
शूर निशंकप्रतापचक्रवर्ति श्रीवीरबल्लालदेवनसंख्यातनिजचतु-  
रंगबलं
- ३९ बेरसु सेवुणबलमेलमं वीरविलासनेम्ब पट्टमानदिं ताल्दुलदुलिये ।  
सेवुणबलजलधि-बडवानलनेकांगदिं सप्तांगसा-
- ४० आज्यमनलवडिसि राष्ट्रकूटकर निर्मूलमं माडि कल्याणपर्यन्त-  
मागि सुखसंकथाविनोददिं राज्यं गेयुत्तमिरे
- ४१ तदराज्यपूज्यमप्प राजधानि दौरसमुद्रदोलु श्रीमद्वादीमसिंह  
तार्किकचक्रवर्ति श्रीपालत्रैविद्यदेवरमवर गुडुगल मा-
- ४२ रिसेट्टियुं कण्णिसेट्टियुं भरतिसेट्टियुमिन्ती नालवरं नानादेसियुं  
नगरसु श्रीमदमिनवशान्तिनाथदेवर मव्यजिनालयमेनि-
- ४३ प नगरजिनालयमं माडिसिद राजसेट्टियन्वयमुमाचार्यवलियु-  
मेन्तेन्दोडे(१)श्रीमद्द्रमिलसंघेस्मन् नन्दिसंघोस्त्य-
- ४४ रंगलः(१)अन्वयो माति निशेषशास्त्रवाराशिपारगैः(१)श्रीवर्ध-  
मानस्वामिगल धर्मतीर्थं प्रवर्तिसुवलि गौतमस्वामिगलि मद्रवा-
- ४५ दुस्वामिगलि भूतबलिपुष्पदन्तस्वामिगलि...सुमतिमटारकरिन-  
कलंकंदवरिन्दं वक्रप्रवाचार्यरिं वज्रनन्दिगलि सिंहनन्दिगलि  
परवादिमल्लरिं
- ४६ श्रीपालदेवरिं श्रीहेमसेनरिं दयापालमुनीन्द्ररिं श्रीविजयदेवरिं  
शान्तिदेवरिं पुष्पसेनदेवरिं चक्र-
- ४७ वर्ति श्रीवादिराजदेवरिं श्रीशान्तदेवरिं शब्दब्रह्मस्वामिदेवरिं  
अजितसेनपण्डितदेवरिं मल्लिषेणमलधारिस्वामिगलिं
- ४८ श्रीपालत्रैविद्य गद्यपद्यवचोविन्यासं निसर्गं विजयविलासं । तद-  
नन्तरं श्रीमत्त्रैविद्यविद्यापाति-पदकम-

- ४६ लाराधनालब्धबुद्धिः सिद्धान्तोन्मोनिधानं सृतास्वाददीक्षा-  
शिक्षासुरक्षा... क्रवाकपतिनिपुणः सन्ततं मन्त्रसेव्यः सौम्यं
- ५० दक्षिण्यमूर्तिर्जगति विजयतेवासुपूज्यव्रतीन्द्रः (११) तदनन्तरं  
सुरराजेन्द्रमदेमदन्तचयदोल् दिग्गामि... मन्दिरदोल् म-
- ५१ रङ्गराल वि... लतमो हिमाद्रिकूटगलोल् धरणोन्द्रोद्वकिरीटकूट-  
तलदोल् वाग्देवि... येन्द्रिवल् श्रीमुनि वज्र-
- ५२ नन्दिय गभीरोदार... वलसित... जं-
- ५३ गल कोडिनोल् पोदल्देसेदु मन्दरमनेयदे... यशोलतेये मुनि  
वज्रनन्दिय
- ५४ इंगडलज्जरुवलि... वज्रनन्दित्रतिया । तत्स-
- ५५ मयदोल् कुमारनन्दु समस्तप्रभुगावुण्डगलि नाड कायु... प्रताप-  
चक्रवर्ति वीरबल्लाल
- ५६ देवनं काणल्वेडि वन्दिर्दलि अभिनवश्रीशान्तिनाथदेव... ममष्ट-  
विधाचर्चनेयुमं पूजेयुमं ऋषियराहारदानमुमं
- ५७ कण्डु पिरिदुं सन्तसं माडि देवर श्रीकार्यक्के... नाडगौण्डुगल्  
तम्मोलैकमत्यवागि प्रतापचक्र-
- ५८ वर्ति वीरबल्लालदेवं वन्दु... शान्तिदेवरष्ट-विधाचर्चनेरां खण्डरुफु-  
टितजीर्णोद्धारक्कं ऋषियराहारदानक्कवागि
- ५९ शकवर्षं १११४ नेय विरोधिक्कृतसंवत्सरद उत्तरायणसंकवाण-  
दन्दु... वज्रनन्दिस्सैद्धान्त-देवरिगे धारापूर्वकं... नाड मैसेनाड
- ६० गुम्मनवृत्तियोलु... मुच्चण्डियं कडलहल्लियं... कडलहल्लिय ईशा-  
न्यद तारेना-
- ६१ ड सन्तेनाडा गण्णिनाड... नडदु येलुवलद सीमेय नट कल्लु  
अल्लि गुरविनगुण्डिये... मरनितालेयमो --
- ६२ रडि... मोरडि चंचरिवल्लद तडि कडलेयहल्लिय आग्नेयदल्लुरिद-  
वालिकेय लविवल्लिय गुम्मनवृत्तिय ना-

६३ गव...य मोरडि चंचरिवल्लं मत्तवी कडलेयहल्लिय नैऋत्यद  
बल्लरेम कणि--

६४ यकलु...खडेय...कोलबूरबल्लं मत्तिय मरन...गल्लुतट्टु  
मत्तवी कडलेयहल्लिय वायव्य-

६५ द तोरेनाड हल्लियबीडिन त्रिसन्धियोलु...कगल्लमोरडि अल्लि  
चंचरिवल्लं तेन्तट्टु वट्टवृक्ष अ

६६ लिं मत्तवी कडलेयहल्लिय ईशान्य गुम्भनवृत्तिय त्रिसन्धिय  
नडुगणेय कूडित्तु इन्तिट्टु सीमाक्रम । मंगल महाश्री

६७ भूमिदानात् परं दानं...॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो

६८ हरंत वसुन्धरां षष्टिवर्षसहस्राणि विद्यायां जायते क्रिमिः

[ इस लेखके प्रारम्भमे होयसल राजाओंकी वंशावली वीरबल्लाल ( द्वितीय ) तक दी है । वीरबल्लालने मैसेनाड प्रदेशके दो ग्राम-मुच्छण्डि तथा कडलेहल्लि अभिनवशान्तिनाथमन्दिरको अर्पण किये थे । इस दानकी तिथि शक १११४ की उत्तरायणसंक्रान्ति थी । यह मन्दिर कई नाडुगौण्डोंने तथा सेट्टियोंने मिलकर बनाया था । मन्दिरके कार्यका निरीक्षण कर युव-राजके प्रसन्न होनेपर राजाने यह दान दिया था । वासुपूज्य व्रतीन्द्रके शिष्य वज्रनन्दि सिद्धान्तदेव इस मन्दिरके प्रमुख थे । इनकी गुरुपरम्परामे द्रमिलसुध-नन्दिसंघ-अरुंगलान्वयके निम्नलिखित आचार्योंके नाम दिये हैं- गौतम, भद्रबाहु, भूतबलि, पुष्पदन्त, सुमति, अकलंक, वक्रग्रीव, वज्रनन्दि, सिंहनन्दि, परवादिमल्ल, श्रीपाल, हेमसेन, दयापाल, श्रीविजय, शान्तिदेव, पुष्पसेन, वादिराज, शान्तदेव, शब्दब्रह्म, अजितसेन, मल्लिपेण, श्रीपाल ( द्वितीय ) । श्रीपाल त्रैविद्यके शिष्य वासुपूज्यव्रतीन्द्र ही वज्रनन्दिके गुरु थे । वर्तमान समयमे यह लेख सोमपुरके निकट नंजेदेवरगुडु नामक पहाड़ीपर है । वहाँके मन्दिरका रूपान्तर शिवमन्दिरमें हो गया है । ]

[ ए० रि० मै० १९२६ पृ० ४७ ]

२८३

इंगलेश्वर ( बिजापूर, मैसूर )

शक १११७ = सन् ११६५, कन्नड

[ इस लेखमें तीर्थ चन्द्रप्रभदेवकी शिष्या पेण्डर वाचि मुत्तव्वेके समाधिमरणका उल्लेख है । शक १११७ का उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३०-३१ क्र० ई १४ पृ० ८५ ]

२८४

ताडपत्री ( जि० अनंतपुर, आन्ध्र )

शक ११२० = सन् ११६८, कन्नड

रामेश्वर मन्दिरके प्राकारके उत्तर पश्चिम कोनेपर

[ इस लेखमें सोमिदेव तथा कांचेलादेवीके पुत्र उदयादित्यका उल्लेख है जो जैन था और ताडिपर ताडपत्रीमें रहता था । ]

[ इ० म० अनन्तपुर २०३ ]

२८५

बेलगामि ( मैसूर )

सन् ११६९, कन्नड

[ इस लेखमें होयसल राजा वीरबल्लालके समय सन् ११९९ में महाप्रधान मल्लियण दण्डनायकके अधीन हेगाडे सिरियण्ण-द्वारा मल्लिका-मोदशान्तिनाथजिनालयके लिए आचार्य पद्मनन्दिको कुछ करोंका उत्पन्न दान दिये जानेका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९११ पृ० ४६ ]

२८६

## कान्तराजपुर ( मैसूर )

१२वीं सदी, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोष-
- २ लांछनं (१) जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शा-
- ३ सनं जिनशासनं ॥
- ४ स्वस्ति श्रीमन्महाप्रतापचक्रवर्ति गण्डभेरुण्ड मलपरोल्
- ५ गण्ड शनिवारसिद्धि गिरिदुर्गमल्ल चलदंकराम होयसल्लवी-
- ६ रबल्लालदेवरु सुखसंकथाविनोददिं पृ(ध्वी) राज्य गेयुतु-
- ७ तमिरे ॥ तत्तुश्रीपादसेवकरु कब्बहिनवृत्तिय अधिष्टा-
- ८ यकरु महापमायतरु परमविइवामिगल् सामिसन्-
- ९ तोषकरु सेवुणकटक सूरकारुं शरणागतवज्रपंजर-
- १० रुमप्प बेहूरमोतद् सुगियनहल्लिय भरकरेय बो-
- ११ कंयनायक होनहल्ल मादेयनायक कलियनायक
- १२ बाचिहल्लिय बोक्कयनायक बेल्लूर माचयनायक मॉन्-
- १३ गलाचार्य केसवेयनायक च्लुवन माचयनाय-
- १४ क अरसयनायक बरजियन माचयनायक मसणेय-
- १५ नायक कोलेयादिनायक वचन मारेयनायक कोलेयत-
- १६ न माचयनायक बलेयन मारेयनायक हलवनाय-
- १७ कन वचैयनायक बोम्मर कयिदालद् बंयक कमविय-
- १८ नायक हेगडेनायक मैलेयनायक मारदेव बालना-

- १९ यक काचिनायक पम्पणनायक माविनाय (क)
- २० सावुकनायक चिकवनायक मादियनायक बडचर बिज-
- २१ पनायक बडुगेयनायक सनियमनायक हे-
- २२ माडिनायक हरियणनायक पूमयनाय-
- २३ क जवनेयनायक मैलयनायक वैजयणनायक मा-
- २४ केयनाय (क) बमेय नायवेयनायक गुडेयनायक
- २५ मारतमनायक मल्लेयनायक हरियवूर माचगौड सिं-
- २६ गगौड सोमगौड बडियगौडन मादिगौड उत्तगौड बयचिगौड
- २७ मारगौड मादिगौड अबिगौड हलुवाडिगट्टद कुदरंय के-
- २८ चगौड सकरंनायकर नायक मल्लिगौड केसिय-हल्लिय वा-
- २९ हुबल्लिसेट्टि पारिससेट्टि बिजेसेट्टि अवर पुत्रक बल्लगौड ब-
- ३० सवगौड माचेय भरतय मादय आलय माचयउत्त-
- ३१ गौडन मारय पापय चिककम्म बिरिशेट्टिय मग आळगौ-
- ३२ ड चिकगौड सोमगौड चिणयगौड मारगौड कसवगौड  
श्रीमन्महा(मं)ण-
- ३३ डकाचार्यरु राजगुरुगलु नयकीर्तिसिद्धांतदेवर शिष्यरु नेमि-
- ३४ चंद्रपंडितदेवरु बालचंद्रदेवरु नयकीर्तिदेवरगुड-
- ३५ गलु बाहुबल्लिसेट्टि पारिससेट्टि माडिसिद एककोटिजिनालय-
- ३६ द पद्मप्रभदेवर अष्टविधार्चनगे वूर मुन्दे आरिय मारे-
- ३७ यनायक कट्टिसिद केरं आ कीलेरिय गद्दे आ मूडलु सुत्तलु नट्ट
- ३८ ....बेद्लेय हिरियकेरंय मोदलेरि-
- ३९ ....गदेय श्रीमुखसंवत्सरद वयि....

४० बोम्म नातिवेय सा....सेनबोव सामन्त....

४१ पूर्वकं माहि बिट्ट दसि यिधर्मवं प्रतिपालिसिद् गंगे

४२ .....

[ यह लेख होयसल राजा वीरबल्लालदेवके राज्यकालमें वैशाख, श्रीमुखसंवत्सरमें लिखा गया था । बाहुबलिसेट्टि तथा पारिससेट्टि-द्वारा निर्मित एक्कोटि जिनालयके पद्मप्रभदेवकी पूजाके लिए अरेय मारेयनायक-द्वारा एक तालाब तथा अन्य कई नायको, गौडो तथा सेट्टियों-द्वारा जमीन दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । इनमें नयकीतिसिद्धान्तदेवके शिष्य नेमिचन्द्र तथा बालचन्द्र पण्डित भी सम्मिलित थे । ]

[ ए०रि० मै० १९२७ पृ० ४५ ]

## २८७

### वेरावल ( सौराष्ट्र, गुजरात )

१२वीं सदी, अन्तिम चरण संस्कृत-नागरी

१ ....ज्वम्प्रति नित्यमद्यापि वारिधौ ॥ १ भूयादभीष्टसंसिद्ध्यै सु-

२ ....पाटकाख्यं पत्तनं तद्विराजते ॥ ३ मन्त्रं वेधा विधायैतद्विधित्सुः  
पुनरीदृश-

३ ....रैद्वैर्ज्यमन्त्रजैर्यत्र लक्ष्मीः स्थिराकृता ॥ ५ तन्निःशेषमहीपाल-  
मौलिघृष्टांदि....

४ ....सौ नृपः । तेनोत्खातासुहृन्मूलो मूलराजः स उच्यते ॥ ७  
एकैकाधिकभूपालाः सम - -

५ ....जिज्वजसुराहतं । अतुच्छमुच्छलत्सूर्यपर्वभ्रममजीजनत् ॥ ६  
पौरुषेण प्रतापेन पुण्येन--



- ६ ...रन्ध्रनविक्रमः । श्रीमीमभूपतिस्तेषां राज्यं प्राज्यं करोत्यथ ॥११  
मालाक्षराण्यनन्नाणां यो बभञ्ज म--
- ७ नन्दिसंघे गणेश्वरा । बभूवुः कुन्दकुंदाख्याः साक्षात्कृत-  
जगत्त्रयाः ॥१३ येषामाकाशगामित्वं स्या--
- ८ ...तपंचकमुज्ज्वलं । रचयित्वाथ जल्पन्ति येऽन्यस्त्रियमपूर्वकं ॥१५  
कालेऽस्मिन् भारते क्षेत्रे जाता--
- ९ ...रीणास्तत्त्ववर्त्मनि तेषां चारित्रिणां वंशे भूरयः सूरयोऽभवन्  
॥१७ सद्गेषा अपि निर्द्वेषाः सकला भव-
- १० भावस्वारोह तत् । श्रीकीर्तिं प्राप्य सत्कीर्तिं सूरिं सूरिगुणं ततः  
॥१९ यदीयं देशनाचारि सम्यग्वि-
- ११ कश्चित्कूटाक्षचाल सः । श्रीमन्नेमिजिनाधीशतीर्थयात्रानिमित्ततः  
॥२१ अण्डहिल्लपुरं रम्यमाजगाम-
- १२ ...नीद्राय ददौ नृपः । विरुदं मंडलाचार्यः सछत्रं ससुखासनं  
॥२३ ॥२३ श्रीमूलवसतिकार्यं जिनमवर्नं तत्र
- १३ ...संज्ञयैव यतीश्वरः । उच्यतेऽजितचंद्रो यस्ततोभूत्स गणीश्वरः  
॥२५ चारुकीर्तियशःकीर्तिं ध-
- १४ ...मुक्तो यो रत्नत्रयवानपि । यथावद् विदितार्थोभूत् क्षेमकीर्ति-  
स्ततो गणी ॥२७ उदेत स्म लसज्ज्योति
- १५ ...लेपि वासिते हेमसूरिणा । वस्त्रप्रावरणाय-
- १६ कीर्तिर्यत्कीर्तिर्नर्तकीव नरिनर्ति । त्रिभुवनरंगे वासुकिनूपुरशशि-  
तिलकनेपथ्या ॥३१ ते
- १७ ...ति ॥ ३२ समुद्धृतसमुच्छन्नार्णजोर्णजिनालयः । यः  
कृतारंमनिर्वाहसमुत्साहशिरोम ( गिः ॥३३ )

- १८ .....च यैरवगम्यते ॥३४ वादिनो यत्पदद्वन्द्वस्वचन्द्रेषु विविक्ताः ।  
कुर्वते विगतश्रीकाः कलंक-
- १९ .....दं तीर्थभूतमनादिकं ॥३६ सीतायाः स्थापना यत्र सोमेशः  
पक्षपातकृत् । त्रामत्रैलोक्य-
- २० तदुद्धृतं तेन जातोद्धारमनेकशः ॥३८ चैत्यमिदं ध्वजमिषतो  
निजभुजमुद्धृत्य सक-
- २१ .....षतो मंडलगणिकलितकीर्तिसस्कीर्तिः । चतुरधिकविंशतिलस-  
द्वध्वजपटपटुहस्तक-
- २२ .....मेतदीयसद्गोष्ठिकानामपि गल्लकानां ॥४१ यस्य स्नानपयो-  
नुल्लिप्तमखिलं कुष्ठं दनी-
- २३ चंद्रप्रभः स प्रभुस्तोरे पश्चिमसागरस्य जयताद् दिग्वाससां शासनं  
॥४२ जिनपतिगृह-
- १४ चार्यवर्यो ब्रतविनयसमेतैः शिष्यवर्गैश्च सार्द्धं ॥४३ श्रीमद्विक्रम-  
भूपस्य वर्षाणां द्वाद (श)-
- २५ कर्कातिलघुबन्धुः । चक्रे प्रशस्ति मनघा (मतिदिव्यां) प्रवरकीर्ति-  
रिमां ॥४५ सं १२.....

[ यह लेख टूटा है तथा उसका आधा भाग मिल नहीं सका है । गुजरातके चौलुक्य राजा भीमदेव ( द्वितीय ) के समय बारहवीं सदीके अन्तिम चरणमें यह उत्कीर्ण किया गया है । पश्चिम समुद्रके तीरपर चन्द्रप्रभ तीर्थकरका पुरातन मन्दिर था । यहाँकी मूर्तिके गन्धोदकसे कुष्ठरोग दूर होता था । इस मन्दिरके जीर्णोद्धारका इस लेखमें वर्णन है । आचार्य कुन्दकुन्दकी परम्परामें नन्दिसंघमें श्रीकीर्ति मुनि हुए । ये चित्रकूटसे नेमि-तीर्थकरके तीर्थ ( गिरनार ) की यात्राके लिए जाते हुए गुजरातकी राजधानी अणहिल्लपुरमें आये । वहाँ राजाने उनका सत्कार कर उन्हें

मण्डलाचार्य यह विरुद दिया । इस नगरके मूलवसतिका नामक जिन-मन्दिरका भी यहाँ उल्लेख है । अनन्तर क्रमशः अजितचन्द्र, चारुकीर्ति, यशःकीर्ति, तथा क्षेमकीर्ति इन मुनियोंका नामोल्लेख है । किन्तु इनका परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट नहीं है । इसी तरह आगे मण्डलगणि ललितकीर्तिका उल्लेख है जिनने सम्भवतः यह जीर्णोद्धार कार्य कराया था । इस लेख की रचना प्रवरकीर्तिने की थी । इसका ४२वाँ पद्य मदनकीर्तिकृत शासन-चतुस्त्रिशिकासे लिया गया है । ]

[ ए० ई० ३३ पृ० ११७ ]

२८८

### कुमारबीडु ( मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

- १ श्रीमतपरमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं (॥) जयाति स-
- २ कलविद्या ( देवसारस्वतीठं हृदयमनुपलेपं यस्य दीर्घं स देवः ) जयति तदनु शास्त्रं तस्य यत्स ( वंमिथ्या )
- ३ समय ( निभिरहारि ज्योतिरेकं नराणां ) स्वस्ति समधिगतपंच-महाशब्द महामण्डलेश्वरं द्वारावर्तायु-
- ४ रवराधीश्वरं यादवकुलावरक्षुमणि सम्यक्स्वचूडामणि मलेराजराज मलपरोलुगंडाद्यन्तक-
- ५ नामावलांसमलंकृतस्त्व श्रीमत् त्रिभुवनमल तलेकाडु कौण्डुनंग-लेगंगत्राडिनोलंबवाडिवनवासि ( मुंदे बरवणणेयिल्ल )

[ यह लेख किसी जैन सैनिककी मृत्युका स्मारक है । होयसल वंशके किसी राजाके विरुद प्रारम्भमें दिये हैं । किन्तु राजाका नाम तथा सैनिकके नामादिका विवरण नहीं मिलता क्योंकि लेख अधूरा है । ]

[ ए० रि० मै० १९३८ पृ० १६८ ]

२८६

ग्राम ( हासन, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ इस लेखमें किसी होयसल राजाके सेवक पेगंडे वासुदेवके पुत्र जिनभक्त उदयादित्यका वर्णन है । इसने सूरस्थगणके चन्द्रनन्दि गुरुके उपदेशसे वासुदेवजिनवसतिका निर्माण किया था । यह लेख इस समय केशवमन्दिरमें लगा है । ]

[ ए० रि० मै० १९१७ पृ० ४४ ]

२६०

ग्राम ( हासन, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ इस लेखमें शान्तिग्रामके होन्निसेट्टि तथा अन्य भव्यो-द्वारा देसियगण-इंगलेश्वर शाखाके हरि...आचार्यके उपदेशसे सुमतिभट्टारककी मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । लिपि १२वी सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९१७ पृ० ६० ]

२६१

कुप्पटूर ( मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ यह लेख पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर है । मूलसंघकाणूरगण-तित्रिणीक गच्छके पर्वतमुनिका इसमें उल्लेख है । लिपि १२वी सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९११ पृ० ४० ]

२६२

माचिनकेरे ( कडूर, मैसूर )

संस्कृत-कन्नड, १२वीं सदी

- १ श्रीमूलसंघपनसोगवतीप्रसिद्धदेशीयविदितपु-  
 २ स्तकचारुगच्छे । यः कुण्डकुन्दमुनिव-  
 ३ शललामभूल्ललितकीर्तिमहा-  
 ४ मुनीन्द्रः ॥ तत्पादयुगलांभोजशेखरी-  
 ५ भूतमस्तकः जिनदत्तान्वयः स्वामी योभूत...  
 ६ नन्दनः ॥ स्वस्तिश्रीशकवत्सरे...  
 ७ पृथ्वीपतिः सो-                      ८ यं श्रीकलशा-  
 ९ ख्यचारुनगरे श्रीचं-              १० व्रनाथप्रमो(ः)प्रि(प्री)-  
 ११ त्या साधयदुत्स-                    १२ वेन महता बिब-  
 १३ प्रतिष्ठापितं ॥ श्री              १४ श्रीदेवचं-  
 १५ ब्रदेवरु मे                            १६ यि ओदु

[ यह लेख स्थानीय बसदिके चन्द्रनाथमूर्तिके समीप है । मूलसंघ-  
 देशीयगण-पनसोगा शाखाके ललितकीर्ति मुनिके शिष्य देवचन्द्र-द्वारा यह  
 मूर्ति स्थापित की गयी थी । जिनदत्तके वंशके किसी राजाका इसमें उल्लेख  
 है । शकवर्षके अंक लुप्त हुए हैं । लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९४६ पृ० ३६ ]

२६३-२६४

निट्टूर ( मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ यह लेख शान्तीश्वरबसदिके द्वारपर है । मालवेके पुत्र मलेय-द्वारा  
 यहाँके मूर्तियोंके निर्माणका इसमें उल्लेख है । लिपि १२वीं सदीकी है ।  
 यहाँके एक अन्य लेखमें शिवनहसेट्टिकी निषिधिका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९१९ पृ० ५१ ]

२६५

कोनकोण्डल ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

कन्नड, १२वीं सदी

[ यह लेख रसासिद्धलगुट्ट नामक पहाड़ीपर एक पाषाणपर खुदा है । इसमें गुम्मिसेटिके पुत्र ब्रमदेवका उल्लेख किया है । लिपि १२वीं सदी-की है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५७ पृ० १२६ ]

२६६

हूलि ( जि० बेलगाँव, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ इस लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है । नेमिचन्द्र सिद्धान्त-चक्रवर्ती-के शिष्य नविलूरुके गोवरिय कलिगावुण्ड, तावरे महादेविशट्टि आदिके द्वारा इस दरवाजेके बनवाये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ ई क्र० २४ पृ० २४२ ]

२६७

गोरूर ( हासन, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ इस लेखमें मलवसेट्टि, कटकद बम्मिसेट्टि तथा केसिसेट्टि इन तीन व्यक्तियों-द्वारा गोरवूर ग्रामकी बसदिके लिए पाँच खंडुग भूमि दान दिये जानेका वर्णन है । मल्लियक्का नामक स्त्रीकी भी प्रशंसा की है । लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है । इसका बहुत-सा भाग घिसनेसे नष्ट हो गया है । ]

( मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित )

[ ए० रि० मै० १९४३ पृ० ७४ ]

२६८-३००

मनोली ( जि० बेलगांव, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ इस लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है। यापनीय संघके आचार्य मुनिवल्लिके मुनिचन्द्रदेवकी समाधि कुल्लेयकेतगावुडकी पुत्री गंगेवेन्द्वारा स्थापित की गयी थी। ये मुनिचन्द्र सिरियादेवी-द्वारा स्थापित बसदिके आचार्य थे।

इसी समयके दूसरे लेखमें मुनिचन्द्रके शिष्य पाल्यकी(ति) देवके समाधिमरणका उल्लेख है। तिथि आश्विन कृ० ५, शुक्रवार, साधा(रण) संवत्सर, ऐसी है।

यहाँके तीसरे लेखमें इसी परम्पराके एक और आचार्यके समाधिमरणका उल्लेख है। ]

[ रि० सा० ए० १६४०-४१ ई० क्र० ६३-६५ पृ० २४५ ]

३०१

कीलक्कुडि ( जि० मदुरा, मद्रास )

कन्नड, १२वीं सदी

समणरमलै पहाड़ीपर पाषाणके दीपस्तम्भके समीप

[ इस लेखमें आरियदेव, बेलगुलके मूलसंघके बालचन्द्र देव, नेमिदेव, अजितसेनदेव तथा गोवर्धनदेवका निर्देश है। लिपिके अनुसार यह १२वीं सदीका लेख होगा। ]

[ रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० २४४ ]

३०२

बेहार ( नरसिंहगढ़, मध्यप्रदेश )

प्राकृत-नागरी, १२वीं सदी

- १ .....अं घणोममं सुंदरं
- २ सि.....
- ३ । तिहुअणतिलअं सी-
- ४ री- शावडस्स अमराल-
- ५ अं रम्मं ॥ श्रीआण-
- ६ देवेन गाथा वि-
- ७ रचिता

[ यह लेख सोलखंभ नामक उध्वस्त जैन मन्दिरमे एक स्तम्भपर है । इसमे श्री आणदेव-द्वारा लिखित एक गाथा है जो किसी तिहुअणतिलअ ( त्रिभुवनतिलक ) मन्दिर तथा उसके स्थापक शावडके बारेमे है । इसी स्तम्भपर कुछ अन्य व्यक्तियोंके नाम भी खुदे हैं । गाथाकी लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १७४ ]

३०३

सवणूर ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ यह निसिधि लेख मलधारि आचार्यके समाधिमरणका स्मारक है । तिथि शुचि व० ८, सोमवार, विश्वावसु संवत्सर ऐसी दी है । लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ५९ पृ० ३३ ]



३०४

अम्मिनभावि ( धारवाड, मैसूर )

[ यह लेख वर्धमानमूर्तिके पादपीठपर है । बहुत अस्पष्ट हुआ है ।  
लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ७० पृ० ३४ ]

३०५-६

मण्डूर ( धारवाड, मैसूर )

[ यहाँ १२वीं सदीकी लिपिमें दो लेख हैं जो जैनोंसे सम्बन्धित  
प्रतीत होते हैं । ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ९४-९५ पृ० ३६ ]

३०७

सालिग्राम ( मैसूर )

कन्नड. १२वीं सदी

[ यह लेख अनन्तनाथकी मूर्तिके पीठपर है । मूलसंघ-बलात्कारगणके  
माघनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्तिके शिष्य शम्भुदेवकी पत्नी बोम्मव्वे-द्वारा अनन्त-  
व्रतकी समाप्तिपर यह मूर्ति स्थापित की गयी थी । लिपि १२वीं सदी  
की है । ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३६ ]

३०८

गोरूर ( हासन, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

१ ओं श्रीमत् परमगंभीरस्याद्वादामोचलाञ्छनं(१)जीयात् त्रैलोक्य-  
नाथस्य शासनं जिनशासनं(॥)

- २ ओं मेलेनिसिपुं दी मलगे धात्रियोळं किसुवल्लियन्तद पालिसि  
संततं सुखदिन् इर्पिनेगं सिरि
- ३ पुट्टे पुट्टिदं हेरियवासेवेगडेगवातन वलभे निजिकब्बेगं लीलेयोल्  
एंदे वण्णिपुदु पे-
- ४ गंडे सत्यमनं जगजनं ॥ स्थिरने बाप्पमराद्रियिदधिकगंमीरने  
बाप्पु सागरदिंदगळद-
- ५ न्तु दानिये सुरोर्वीजके मारण्डलं सुरराजंगेणेयेण्डे कीर्तिपुदु  
कैकोण्डकरिं संततं
- ६ धरेयेल्लं सळे सत्यवेगंडेयोल् औदार्यमं सौर्यमं ॥ कोट्टपेनेंदोड्  
ईश्वरन कोट्ट वर
- दूसरा
- ७ सरणेंदु बंदरं नेट्टने.....डे वज्जि.....पूण्डु कोट्टि विरो.....
- ८ तरिवन् एन्दोडे ताने कृतान्त.....यि.....पेगंडे....
- ९ आतन मावं सकल मही.....जवल्लि.....वेनिसि नेगल्वं भूतल
- १० दोलगेसेये कच्छवेगंडेय.....ण्णु.....य विण्णु
- ११ नाडे केसरिय पोड्पु.....मनो.....यनि
- १२ सिर्द बीरनोल् अदेंदु करं नलि.....तरिपुदु क.....ले पलरं निरन्तरं  
तीसरा भाग
- १३ एने नेगल्द कच्छवेगंडेगनुपम कुल.....गे धोरे
- १४ यलु विनुत.....तं बगे
- १५ रेनिप्परु.....मणिय-
- १६ न्तवरीवरीतन यं.....सन्तत जस.....
- १७ यल् अखिल भूमण्डलदे.....ख्यातंगे सळे नेगल्द गंगेगं गौरिगं वेम्म
- १८ .....नो दोरेयेनिप्पर भूतलदोलु.....यं ॥ .....गत्यंतंवरि-
- १९ य समर समयदोल.....वस.....मन पोललितर.....आ विभुविन

- २० कुलवधु ता भूविनुत श्रीगे नेलेयेनिप्प...गनेबर् पलहं...  
पेण्डतिगेनेगे वपरं
- २१ ...योलु ॥ आतन किरिय पेण्डति रतियं पोस्वलु तूपिपति-  
चरियोल् अतियब्बे
- २२ प्रोस्वलनिधि तत यशोवल्सरिय मतिहोनर् अदेनु वणिणप्  
बाचवेय ॥ अवरीवर गु-
- २३ (रु)गल् अवर् भुवनजनाराध्यरखिलगुणगणनिलयर् कडि...वर  
नयकीर्ति-
- २४ देवसिद्धान्तेशरु ॥ आ महानुभावनर्धागियरवसान कालदालु ॥  
बोधिसुत जिनपदमं बा-
- २५ ...व सिद्धपदमन् अक्षय पदमं विनुतं मुनिपदमं बाचवे वेग्गडि-  
तियर् सुरगतियं
- २६ ...परम जिनेस्वर पदपंकरुहमनानंददि नेनेयुतागलु पिरिदोंदु  
मक्तिरियि
- २७ तियं बाचियक्कन् एय्दिदल् आगलु ॥ अवर परोक्षदोल् आर्दं  
सविनयदि केल....
- २८ यिन्ति कल्ल भुवनजन्वरिये निरिखिदल् अविचलमप्पन्तु  
चंद्रतारंवरं ॥

[ इस लेखमे किसुवल्लि ग्रामके शासक सत्यवेग्गडेका उल्लेख है । यह हेरियबासेवेग्गडे तथा उनकी पत्नी निजिकब्बेका पुत्र था । इस सत्यवेग्गडेकी पत्नी बाचवे थी । वह कच्छवेग्गडेकी पुत्री थी । इसके गुरु नयकीर्ति सिद्धान्तदेव थे । लेखमे बाचवेके देहत्यागका उल्लेख है जो सम्भवतः सत्यवेग्गडेकी मृत्युके कारण किया गया था । लेखकी लिपि १२वीं सदीकी प्रतीत होती है । ]

३०६

हलेबोड ( मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

- १ स्वस्ति श्रीमन्मयकीर्तिसिद्धांतचंद्रयतिदेवर्गे कवडेयर जकव्वेयर माडिसि कोट्ट पट्टशालेय शान्तिनाथदेवर अष्टविधार्च(ने)गं खंडस्फुटितजीर्णोद्धारकं....
- २ शिष्यरु सुरभिकुमुदचंद्रापरनामधेयरप्प नेमिचंद्रपण्डितदेवरु जीवंगल् हिरियकेरेय बोलवगट्ट दोलगरेय हुणसेय....
- ३ ल्लगे मूरु गंगवुरद उत्तमवागि ? मूनूरु बेहलेयं सर्वबाध-परिहारवागि चंद्रार्कतारंबरं सत्त्वतागि कोट्टरु ई धर्मवं अवर शिष्यसंतानगल्लु नडेसुवरु

[ यह लेख १२वीं सदीकी लिपिमें है । कवडेयर जकव्वे-द्वारा निर्मित पट्टशालाके शान्तिनाथदेवकी पूजा आदिके लिए कुछ भूमि बोलवगट्ट तालाबके समीप और गंगवुर ग्रामके समीप दान दी गयी ऐसा इसमें निर्देश है । यह दान सुरभिकुमुदचन्द्र अपरनाम नेमिचन्द्र पण्डितदेवने दिया था । जकव्वेके गुरु नयकीर्ति सिद्धान्तचन्द्र थे । ]

[ ए० रि० मै० १९३७ पृ० १८५ ]

३१०

अथनी ( बेलगांव, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ इस लेखमें बम्मण-द्वारा देसिगण-इंगलेश्वरबलिके सामन्तण बसदिते सम्बद्ध रत्नत्रयमन्दिरके जीर्णोद्धारका उल्लेख है । लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १७३ पृ० ३४ ]

३११

मरसे ( मैसूर )

संस्कृत-कन्नड, १२वीं सदी

- १ श्रीमद्द्रविलसंघेस्मिन् नन्दिसंघेस्त्यरुंगलः अ-
- २ न्वयो भाति योशेषशास्त्रवा-
- ३ राशिपारगैः

[ यह लेख एक खेतमे मिली पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर है । इसमे द्रविलसंघ-नन्दिसंघके अन्तर्गत अरुंगल अन्वलकी प्रशंसा है । यह श्लोक अन्य कई लेखोंमें पाया जाता है । लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है । मूर्तिके वारेमें अन्य कुछ विवरण नहीं दिया है । ]

[ ए० रि० मै० १९२९ पृ० १०६ ]

३१२

मावलि ( मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वा(दा)-
- २ मोघलांछनं जीयात् त्रैलोक्य-
- ३ नाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ श्री ( मृ )-
- ४ लसंग कुण्डकुन्दान्वयद्
- ५ काणूरगण माधवचंद्रदेव(र गु)-
- ६ ङ्गि नागव्वे गोकव्वेय भगलु स(मा)-
- ७ धिविधियिंद मुडिपि स्वर्ग-
- ८ स्तेयादलु भंगलु महा
- ९ श्री श्री

[ इस निसिधिलेखमें मूलसंघ-कुण्डकुन्दान्वय-काणूर गणके माधवचन्द्र-  
देवकी शिष्या तथा गोकवेकी कन्या नागव्वेके समाधिमरणका उल्लेख है ।  
लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९४१ पृ० १९२ ]

### ३१३

**हम्पी ( बेल्लारी, मैसूर )**

**कन्नड, १२वीं सदी**

[ यह लेख एक भग्न स्तम्भपर १२वीं सदीकी लिपिमें है । इसमें  
गोलाचार्य, उनके शिष्य गुणचन्द्र तथा उनके शिष्य इन्द्रनन्दि, नन्दिमुनि ..  
तथा कन्तिका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० ३३५ पृ० ५० ]

### ३१४

**कलकत्ता ( नाहर म्यूजियम )**

**कन्नड, १२वीं सदी**

**१ देमायपगलानन्तियनोंपि निमित्त-**

**२ वागि माडिसिद प्रतिष्ठे**

[ यह लेख पीतलकी चौबीस तीर्थकरमूर्तिके पिछले भागपर खुदा है ।  
यह मूर्ति देमायप्प नामक व्यक्तिने अनन्तव्रतकी समाप्तिके समय स्थापित  
की थी । लिपि १२वीं सदीकी है । लिपिसे पता चलता है कि इसका  
निर्माण कर्नाटकमें हुआ था । ]

[ ए० रि० मै० १९४१ पृ० २५० ]

३१५

रुगि ( बिजापूर, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ यह लेख किसी जैन आचार्यके समाधिमरणका स्मारक है । लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई० ७९ पृ० १८८ ]

३१६

शेरगढ ( कोटा, राजस्थान )

संस्कृत-नागरी, १२वीं सदी

[ इस लेखमे आचार्य वीरसेन तथा सागरसेन पण्डितका उल्लेख है । लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ४३१ पृ० ७० ]

३१७

रायबाग ( बेलगांव, मैसूर )

कन्नड, शक ११२४ = सन् १२०१

[ यह लेख रट्ट वंशके कार्तवीर्य ४ के समयका है । इस राजाने वैशाख पूर्णिमा, शक ११२४, शुक्रवारको एक जिनमन्दिरके लिए कूण्डि ३००० प्रदेशका चिचलि ग्राम दान दिया था । ]

[ रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५१ पृ० ३३ ]

३१८

बेलगाँव ( क्रमांक १ ब्रिटिश म्यूजियम )

कल्लड, शक ११२७ = सन् १२०४

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनम् । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य  
शासनं जिनशासनम् ॥ नमो वीतरागाय शान्तये ॥
- २ श्रीजिनसमयनवांशुधि राजिसुतिकर्मथमोर्जितामृततरुन-श्रीजननगृहं  
सत्त्वदयार्जावनमपरिमितगभीरमपारं ॥ नवमौक्तिकहारं
- ३ श्रीयुवतिगिदेनिसिर्दं कृष्णनृपवंशजपार्थिवचयदोल् सेनरसं  
भुवननुतं मिसुपनेसेव नायकमणिबोल् ॥ वरकू-
- ४ डिमडलार्धाश्वरानेनिपा सेनविभुगे सुतनादं दुर्धरवैरिभूप-  
मीकरपराक्रमं कार्तवीर्यननुपमशौर्यं ॥ आ विभुगादल् सति पद्मा-
- ५ वति जिनसमयवृद्धिकरणापरपद्मावति बुधामिमतपद्मावति वज्रा-  
युधंगे पौलोमिय बोल् ॥ अवरिवरंगं पुट्टिदनवनीश्वरमौ-
- ६ लिमंडनं लक्ष्मनृपं परिमलमुक्ताफलमोसेव वार्धिगं ताम्रपर्णगं  
पुट्टुववोल् ॥ एनेवें लक्ष्मदेवक्षितिभुजन भुजाटोपमं विद्विषद्वा-  
त्रीनाथर् संजे-
- ७ गंपं मटपदहतिथिंदाद केंदूलियेंदालीनाभ्रध्वानमं तानयतुरग-  
सुरोद्घोषमंदंजि नानास्थानस्थायित्वमं केलपडेयदे बिडदो-
- ८ हुसमिदंपरिन्नुं ॥ अपराधिगलने नोल्पुदु नृपालकरदंडनीति  
वाप्पु घनाज्ञाधिपनागे लक्ष्मभूविभुवपराधं दंडमंवि-  
विल्लें कृतियो ॥
- ९ अमृतांभोराशियोल् पुट्टिद सिरियनणं द्यन्तु धात्रं स्वमायाक्रमदिं  
बेरोर्वलं निर्मिसि चपलेयना कृष्णनोल् कूडि मत्ता विम-



- १० लोखद्भाग्येयं सुस्थिरेयनोसेदु कोटं महीभृशिकाथोत्तमनप्पी  
लक्ष्मिदेवंगेने मिगे तलेदल् चंद्रिकादेवि चेल्वं ॥ प्रणुतश्रीनिधि  
चंद्रिका-
- ११ सतिय शीलव्रातमं कूडे धारिणियोल् वणिगसलारुमातपरे  
लक्ष्मोर्वीशनं क्षत्रियामणिं शीलदे मंघिसल् फणिपनं पूण्डे-
- १२ ते तां तख कय्गुणमं कंडुदरिंदवं पोगल्लारुपं विश्वजिह्वालियं ॥  
नरपतिलक्ष्मिदेवसति चंदलदेवि निजोद्वहस्तदिं धरंगेसेयल्के
- १३ संक्रमणदोल् कुडे कांचनमं बेरलगलोल् बेरसेद हेमकालिकेय कपे-  
सेदिपुंदु बाहुकल्पवहलरिय तलप्रवालद नखप्र-
- १४ सवक्केलसिर्द तुंबिवोल् ॥ श्रीवसुदेवनंतेस्व लक्ष्मनृपंगवनिंघ-  
देवकीदेविबोल्पुर्वा विनुतचंदलदेविगमादरात्मजर् भूत्रलय-
- १५ प्रबद्धवल्केशवरेंदेने कार्तवीर्यधार्मीवरमल्लिकार्जुनकुमारकरुजित-  
शौर्यशालिगल् ॥ दृढशौर्य कार्तवीर्य तल-
- १६ रे बलयुतं दिग्जयक्कन्यधात्रीपतिगल् बेञ्जितु नीरं पुगलवर शरी-  
रोष्णदिं बत्ति चित्तोद्गतमीत्युत्कर्षवृत्तिप्रसरणविसरद्व-
- १७ मंतोयोर्मिधिं विस्तृतमागल हानियुं वृद्धियुमदु निजमंमोधिगेंव-  
विमूढर् ॥ ई कमनयवाजिचयमी क-
- १८ रिसंकुलमी विलासिनीलांकमिवेम्मवा कविय कालेगदोल् बयला-  
जियोल् पुराणीकद युद्धदोल् पिडिदंनितिवनी कलिकातंवीर्यनेंदा-
- १९ कुलमाणि नोडुवुदु बन्धनशालेयोल् इदंरिब्रजम् ॥ श्रीरट्टवंशमेंब  
सुमेरुवनाश्रयिसि कल्पकुजननमेनलें राराजि-
- २० पुदुदो विबुधाधारं श्रीमत्कुलं प्रमोदनिवासं ॥ आ महनीय-  
कुलक्के शिरोमणि मण्यांबुजक्के तेजोमणि रक्षामणि बुधविततिगे

- २१ चिंतामणि बेलपुर्गेनस्के रंजिपनुदयं ॥ ललितगुणौघं लक्ष्मीनिलयं  
संश्रितमधुव्रतं तलेदं निर्मलमपुदयसरोवरदोल् उदयमं पुरुष-  
पुंडरीकं बी-
- २२ चं ॥ प्रकटश्रीनिधि बीचणं कुलगृहं शीलक्के लीलाश्रयं सुकृत-  
क्कुद्भवमंदिरं सिरिगे सेवास्थानकं सद्गुणक्के कलाभ्यासपदं  
सरस्वतिगे संचारालयं
- २३ धर्मकार्यकलापकमिवृद्धिगेहममलाचारक्केनल् रंजिपं ॥ बीचगे  
सुकवि संस्तुतवाचंगादर् सुतर् जिनेद्रमतश्रीलोचनसंनिभरात्महिता-  
२४ चारपर् नेगल्द पेर्मणनुमप्पणनुं ॥ पापापहारिजिनपश्रीपदभक्तं  
सुपात्रसंकुलदानव्यापारगमितदिननेनिपी पेर्मगे पेर्मणं  
तवर्मनेयादं ॥
- २५ स्थिरपद्मोदयमंभुजक्के कमलं पद्माकरक्कंभुजाकरमुद्यातवनक्के पूर्ण-  
फलितारामं पुरक्कोपुवंतिरे लोकोत्तमकार्तवीर्यनृपराज्यं-
- २६ गोप्पुवं सद्गुणाभरणं श्रीकरणाग्रगण्यवेनिसिर्दप्पं जगं बाप्पेनल् ॥  
अनवद्योक्ति विनूतवाणिगुरदेशं चागमस्वप्नभूजनिकायकृतिविस्म-
- २७ यस्थितिकरं जैनक्रमांभोजपूजनमैद्रध्वजविभ्रमश्रुतिलसत्संवादिये-  
दंदनिघनयश्रीकरणाप्पणंगे दोरेयारी धात्रियो-
- २८ क् धार्मिकर् ॥ अचलितगुणनिलयं चतुरचतुर्मुखनेनिसुवप्पण  
वल्लभे सुप्रचुरविवेकास्पदचारुचरिते वाग्देवियेब पेसरिंदेसेवल् ॥  
वरवा-
- २९ ग्देविगमप्पणप्रभुगमादर् नंदनर् श्रीजिनेश्वरमार्गप्रतिभासक-  
प्रचिलसदस्नत्रयंगल् विनेयर पूर्वार्जितपुण्यदिंदे निरुतं मेयवेत्त-  
वेंबंते-

- ३० सुस्थिरलक्ष्मीपतिबीचवैजयन्तदेवर् सज्जनानंदकर् ॥ प्रणुतोद्यत्-  
पात्रदानं व्रतगुणचरितं सज्जिनावासनिर्मापणवात्मोर्वा-
- ३१ शराज्याभ्युदयनयचयं तम्भोलोपुत्तिरल् भारिणियोल् विख्याति-  
वेत्तिर्वरे सोगयिपरा गंडरादिस्थसेनाग्रणी निबं कार्तवीर्यक्षि-
- ३२ तिपतिसचिवोत्तंसनी बीचिराजं ॥ सुजनाकर्षणमात्मवल्लभ-  
वशीकारं सुहृन्मोहनं कुजनोच्चाटनमन्यमंत्रिचयमानस्तंभनं  
दुर्णयत्र-
- ३३ जविद्वेषणमैबिवागे निजमंत्रांगंगलिं रंजिपं विजयश्रीनिधि-  
कार्तवीर्यसचिवं लक्ष्मीचणं बीचणं ॥ परवधुगानुमतिथं जैनरीय-  
लागदु परप्र-
- ३४ वर्तनेयोल् जैनरोल्लधिकं बीचं तंदरिनुपभुजविजयलक्ष्मियं  
पतिगीवं ॥ हृदयाह्लादकनादनुविंगिवनोर्वं सर्वसंपद्गुणास्पद-  
बीचानुजवैजणं वि-
- ३५ भूतयोल् धर्मात्मजं मूर्तियोल् मदनं चागदोल् दांधवतनूजं  
जैनपूजाभिषेकदोळिद्वं नयदोल् बृहस्पति रणोद्यत्क्रीडेयोल्  
राघवं ॥ विदि-
- ३६ तजिनागमांबुनिधिवर्धनदोल् निजवंशवारिजाभ्युदयविधानदोल्  
बुधमनोमिमतापणदोल् कलंकमिल्लद हिमरोचि तापकृतियिल्लद  
मानुविमू-
- ३७ ढवृत्तियिल्लिद सुरभूरुहं धरेयोल्पसुतं बलदेवनोपुवं ॥ स्वस्ति  
समधिगतपंचमहाशब्दमहामण्डलेश्वरं कार्तवीर्यदेवं निजानु-
- ३८ जयुवराजकुमारवीरमल्लिकार्जुनदेवं बेरसु वेणुग्रामस्कन्धावारदोल्  
साम्राज्यपुखमनुमविसुत्तमात्मीयश्रीकरणाप्र-
- ३९ गणयनुमल्लिमंत्रिजनवरंणयनुमण्य बीचिराजं माडिसिद्

रहजिनालयद श्रीज्ञान्तिनाथदेवर नित्यपूजामिषेकं मोदकाद  
धर्मकार्यनिमित्त-

४० मागि तज्जिनालयाचार्यश्रीशुभचंद्रभट्टारकदेवर्गे शकवर्षद ११२७  
नेय रक्ताक्षिसंवत्सरद पुण्यसुद्धविदिगे बहुवारदोल् आद  
संक्रमण-

४१ समयदोल् नाल्लासिर्व महाजनंगल् सहितमागि धारापूर्वकं  
माडि वेणुग्रामेयोल् कांठ स्थलवृत्ति अदर तेंक देसेय बजेय  
खारिगेयि प-

४२ डुवल् कोडगेय्य इप्पत्तनाल्कनेय हत्तियविल इरिसिल्गट्टे सहितं  
मत्तरय्दु ॥ आ वेणुग्रामेयल्लि हरिय मूडगेरिय पडुवण  
बरियो-

४३ ल् दुगिगयर तीकणन मनेयि बडगल् मनेयोदु । पडुवगेरिय  
पडुवण हरियोल् मनेयोदु । पडुवण गवनियल्लि मनेयोदु ।  
साल बसदियि मूडण-

४४ कपिलेश्वरदेवर धवलारद कट्टिदिरोल्मने मूरु । आनेयकेरेगे  
होद बट्टेयि बडगल् हूदोटं आ वेणुग्रामद कोळिं मत्तरंडु  
कम्मविन्नूरुल्पत्तारु । कणंबुरिगे-

४५ याल्लरिं पडुवण हंगेरेयि पडुवल् केय्मत्तरु हंनेरडु । पडुवण  
हट्टियल्लि तेंकगेरियोल् अय्गय्यगलदिप्पत्तोदु कय्नीलद  
मनेयोदु ॥ मत्तं स्वस्त्य-

४६ नेकगुणगणालंकृतसत्यशौचाचारनयविनयसंपन्नरुमाश्रितजन-  
प्रसन्नं मघपट्टिपुरप्रतिष्ठितजिनमुनिजनोपदिष्टगुडुशास्त्र क्रमप-

४७ रिपालितवीरवर्णजुधर्मं समाचरितपुण्यकर्मं । पद्मावतीदेवी-  
लब्धवरप्रसादं विहितसकलजनाह्लादं । न्यायोपार्जनव्यवहार-  
प्रशस्तं

- ४८ मल्लुकिदंडहस्तरुमप्प समयचक्रवर्ति जयपति सेट्टि मुख्यमागि वेणुग्रामद स्थलद समस्तमुम्पुरिदंडगलुं कूंडिमूसासिरद पट्टणिग मोदलादु-
- ४९ अथनानादेशिमुम्पुरिदंडगलुं परशुराम नायक पोम्मण नायक अम्मुगि नायक प्रमुत्तरप्प समस्तकालच्यवहारिगलुं पडप नायक को-
- ५० ड नंबि सेट्टि पोरेयच सेट्टि मोदलादेहला मलेयालच्यवहारिगलुं मत्तमा वेणुग्रामद स्थलद चिन्नगेयिकदवरुं दूसिगरुं मुख्यमागुलिद परदरुं । तेलिगरुं । दिक्-
- ५१ सालिगरुमितिवरुल्लं नेरेदा शान्तिनाथदेवर वसदिगे बिट्टायवेंतें-दोडे बडगणि बंद कुदुरेगे नेलमेट्टु हागवोंदु । तेंकल् नडेववकें सुंक हागवोंदु । मलेयाल
- ५२ कुदुरेगे हागवोंदु । अरुवत्तय्दत्तु कोनंगलोल्लेनं पेरिद्रोडं सर्वाबाध-परिहारं । चिन्नगेयिकद चीरक्के दूसिगवसरक्के । हत्तिवसरक्के । मणिगारवसरक्के । गंधवण-
- ५३ वसरक्के गंधवणिगरंगडिगे । अक्कसालेगमटक्के बेरेबेरे बरिसदेरे बरिसदेरे हिरिय हागवोंदु । होरगणि बंद सीरेय कडगेगे वीसवोंदु । होरगणि बंद गंधवणक्के । कक्षमंडक्के । आ म-
- ५४ डं गद्याणं तूक्कय्दु । हत्तिय मंडिगे तारं मूरु आ पेरिंगे काणियोंदु । मत्तद मंडिगे मत्तवोर्वल्लं आ पेरिंगे मत्तवोर्मनं । अंकणथ मत्तं मारिदडा मत्तमोर्वल्लं । मत्त-
- ५५ वसरदंगडिगे मत्तं निन्नसोल्लगे । अक्किवसरक्के अक्कियद् । मेल्सिण हेरिंगे मेल्सोर्मनं आ जवक्के अरेवानं । इंगिन पेट्टिगेगे इंगु गद्याणं तूक्कारु अक्कअरिसिनद जवक्के आ म-

- ५६ णडं पलवय्दु आ हेरिंगे अल्लअरिसिनं पलं हत्तु । गाणक्के निच्छत्वेण्येयद् । अडकंय हेरिंगे अडकेयिप्पत्तय्दु आ जवलक्के अडके हंनेरडु । एलेय हेरिंगेले नूरु हो
- ५७ रंगेलेयय्वत्तु । तेंगिन काय हेरिंगा कायोंदु । ओलेय हेरिंगे ओलेय सूडेरडु आ होरेगे सूडोंदु । होरगणि बन्द बेस्लद मंडिगे बेस्लदच्चु हदिनय्दु आ
- ५८ होरेगे अच्चोंदु । बालेय हेरिंगा कायारु आ होरेगे कायमूरु । नेल्लिय काय हेरिंगा कायबल्लवोंदु । कविन हगरक्के ओंदु कर्बु । बलहद हेरि-
- ५९ गे बलहवोपलं मत्तमा शान्तिनाथदेवर बसदिगे श्रीकार्तवीर्य-  
देवं कोट्ट अंगडि बडगगेरिय बडगण हरिय पडुवण कडेयोल्  
राजवीथियि मूडल् नाल्कु ॥
- ६० बहुमिवैसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः, यस्य यस्य यदा  
भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥ अपि गंगादितीर्थेषु हन्तुर्गामथवा  
द्विजं निष्कृतिः स्यान्न देवस्व-
- ६१ ब्रह्मस्वहरणे नृणां ॥ ओदविंदी धान्नयेस्सलं मिगे पोगले चिरं  
वर्तिसुत्तिके नित्याभ्युदयश्रीकार्तवीर्यक्षितिपविपुलसाम्राज्य-  
सन्तानमुर्वीविदि-
- ६२ तश्रीबीचिराजप्रथितविमलशान्तीशरावासधर्मं सदलंकारस्फुटार्था-  
न्वितपदकविकन्दर्पसुव्यक्तसूक्तं ॥ दोषव्यतीतमर्थविशेषमिदं  
पेल्दनोल्लु शासनं पीयू-
- ६३ षसमसूक्ति चातुर्माषाकविचक्रवर्ति कविकन्दर्प ॥ श्रीमन्माधवचंद्र-  
त्रैविद्यचक्रवर्तिवाक्सुधारसनाभ्युदितनित्यसाहित्यकमलवनमरालं  
बालचंद्रदेवं पेल्ल शासनं

[ इस लेखका सारांश जै० शि० सं० भा० ३ में क्रमांक ४५३ में आ गया है । किन्तु उस समय मूल लेख प्राप्त नहीं हुआ था । पाठकोंकी सुविधाके लिए सारांशकी मुख्य बातें यहाँ दोहरायी जाती हैं । इस लेखमें रट्ट वंशके राजा कार्तवीर्य ( चतुर्थ ) तथा उनके बन्धु मल्लिकार्जुनका एवं उनके मन्त्री बीचणका उनके पूर्वजोंसहित परिचय दिया है । बीचणने बेलगाँवमें रट्टजिनालय स्थापित किया था । इस मन्दिरके प्रधान भट्टारक शुभचन्द्रको शक ११२७, रक्ताक्षी संवत्सरमें द्वितीय पौष शुक्ल २ को बेलगाँवकी कुछ जमीन तथा कुछ करोंका उत्पन्न दान दिया गया था । इस शिलालेखके पाठकी रचना माधवचन्द्र त्रैविद्यके शिष्य बालचन्द्र कविकन्दर्प-ने की थी । ]

[ ए० ई० १३ पृ० १५ ]

३१६

बेलगांव ( क्रमांक २ ) ( ब्रिटिश म्यूजियम )

शक ११२७ = सन् १२०४, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्यादादामोघलांछनं । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य  
शासनं जिनशासनं ॥ नमो वीतरागाय शान्तये ॥
- २ श्राजिनसमयनवांबुधि राजिसुतिकर्मथनूर्जितामृतरत्नश्रीजननगृहं  
सत्त्वदयाजीवनमपरिमितगमीरम-
- ३ पारं ॥ जंबूद्वीपद भरतदोल्बुजभवसारसृष्टि कूंडिमहीचक्रं बगे-  
गोलिपुटु सकलजनांबकघनसुकृ-
- ४ तफलविलासनिवासं ॥ श्रीराष्ट्रकूटवंशसरोरुहवनराजहंसनाद-  
नाम्नं विस्तारियशोनिधि सेनमहारमणं
- ५ संभृतामलोमयपक्षं ॥ सिरियं निजानुजेयनादरदिं क्षशियिचु  
राजनादं नण्णं धरियिसि मिहंता सेनराजजो-

- ६ ल सेणसि राजनेनिपवनावं ॥ स्थिरतेयनुत्तंगतेयं धरिविसिदा  
सेननृपचरोदयदोल् भासुरतेजोनिधि पद्माभिराम-
- ७ नेने कार्तवीर्यरथियुदयिसिदं ॥ विनतारंपुप्रतिबिम्बाळि नितान्तं  
कार्तवीर्यपदनखदोल् चेख्वेनिकुं पूर्वपदाश्रि-
- ८ तरनळिदु तन्मंत्रकृतिगे पदेदप्पुववोल् ॥ स्थितिकारिणि विमल-  
गुणान्विते पद्मलदेवि कार्तवीर्यधरित्रीपतिदयिते तां त्रिव-
- ९ गौळतिसाधिकेयपरनीतिविद्येवोलेसेवल् ॥ जनिथिसिदं समस्त-  
गुणसंकुलसंस्तुतलक्ष्मभूमिपं जननुतकार्तवीर्य-
- १० विभुगं सतिपद्मलदेविगं सुतं जनिथिपवोल् जयन्तनमरप्रभुगं  
शचिगं मयूरवाहनमवंगवद्विजेगमंगमवं हरिगं
- ११ रमाख्येग ॥ वनितेयरं मरुल्लुचुव समाकृतियि सुमनोभिवृद्धियं  
जनिथिप शीलदिं कुवलयक्के विकासमनीव मयमेयिं जन-
- १२ नयनक्के कामनो वसन्तनो चंद्रमनो दिट्ठके पेलेने विभु लक्ष्मी-  
देवनेसेवं कविसंकुलकल्पमूरुहं ॥ विजितरिपुराजराजात्म-
- १३ जे चंदलदेवि लक्ष्मनृपसतियसेवल् विजितघटसर्पमदे विश्वजन-  
स्तुतचारुचरितेयेने धारिणिथोल् ॥ अवरिवर्गं कलिकार्तवी-
- १४ र्यनुं मल्लिकार्जुननुमादर् प्रोद्भवसाम्राज्यरामाधिपयुवराज-  
कुमाररात्मजर् घनतेजर् ॥ जनमेल्लं पेच्चे चहलं
- १५ पेगेवहरद सेल्लं जयश्रीगे नल्लं मनुमार्गं सत्रिवर्गं तनगेसंये  
निसर्गं गृहीतारिदुर्गं सनयालापं
- १६ सुरूपं नेगल्दनतिदिलीपं जितारातिभूपं घनशौर्यं क्षत्रवयं  
सुरकुजसदशौदार्यनी कार्तवीर्यं ॥
- १७ श्रीमन्कुलाब्धिवर्धनसोमनेनिप्पुदयविभुविनात्मजनयुद्दामयशो-  
निधि बीचं भूमहितं सौम्यवृत्तियं तलेदेसेवं ॥ बीचं-
- १८ गे सुकविसंस्तुतवाचंगादर् सुतर् जिनेंद्रमतश्रीलोचनसंनिमरात्म-  
हिताचरणर् नेगल्द पेर्मणनुमप्पणनुं ॥ तनगं



- १९ ब्रह्मंगमुद्यच्छतुरते तनगं वार्धिंगं गुण्णु चागं तनगं कर्णगमत्युच्चति  
सरि तनगं मेरुगं भू प्रियत्त्रं तनगं चंद्रगमहंमतर-
- २० चि तनगं वारिषेणंगमेदंतनिशं मन्व्यालि बणिणप्पुदु गुणियेनि-  
सिदंप्पणं प्रीतिथिदं ॥ श्रीकरणाप्रणिगप्पंगाकलितलस-
- २१ चरित्रे दथितेयलंकाराकीर्णं विनुते वरवर्णाकृति वाग्देवियुचित-  
नामदिनेसेवल् ॥ घनलक्ष्मीपतिपांडुगं नेगल्द कु-
- २२ न्तीदेविगं धर्मनंदनमीमाजुंनरादबोल् तनुजरादर् विश्रुतर्  
कार्तवीर्यनृपश्रीकरणाप्रणंगमेसेवो वाग्देविगं सारशौ-
- २३ र्यनिधानर् विभुबीचवैजबलदेवर् निजितारातिगल् ॥ अनुपम-  
विद्येगुद्वविनयं सिरिगोप्पुव चागदेल्गे जौवनके विनिर्मला-
- २४ चरणमायुगे विस्तृतकीर्ति वाक्प्रवर्तनेगे ऋतोक्ति तनेसकदिं  
सले मंडनमागे वर्तिपं जनपतिकार्तवीर्यसचिवैकशिरो-
- २५ मणि बीचनुर्वियोल् ॥ इदु तां श्रीकरणप्पणाप्रसुतसत्पुण्यप्रमा-  
जालमन्तिदु रटक्षितिपालमंत्रिय रमास्मरावलोकंशु-
- २६ मत्तिदु दल् धार्मिकचक्रवर्तिय दयादुग्धाद्धिवीचिसमभ्युदयं  
तानेने बीचिराजन यशं पर्वित्तु मूलोकमं ॥ विनुतनिज-
- २७ प्रमुगालोचनदोल् नयशास्त्रदृष्टि दुर्धरसमावनियोल् निशित-  
जयास्त्रं विनोददोल् नर्मसचिवनेनिपं वैजं ॥ भरदिं तनं नो-
- २८ डिद तरुणीजनवेरेद वंदिद्वृदं मत्तोर्वरनीक्षिसदेरेयदेनल् सुरूपन-  
नतिशयवितरणं बलदेवं ॥ श्रीकार्तवीर्यनृपति-
- २९ श्रीकरणाधिपन बीचणन गुरुकुलदोल् लोकोत्तरसुचरित्रविवेकर्  
मलधारिदेवमुनिपर् नेगल्दर् ॥ आ मुनिमुख्यर् शिष्यर्  
भूमीश्वर-
- ३० वंशरमलतरसिद्धांतश्रीमुखतिलकर् प्रथितोद्दामगुणर् नेगल्द  
नेमिचंद्रमुनींद्रर् ॥ निरुपमतपोनिधानर् धरणीश्वरजालमौ-

- ३१ लिलालितपदरेंदुरुमुदडिं कीर्तिपुदुवरै विभुशुभचंद्रदेवभट्टारकरं ॥  
स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्दमहामंड-
- ३२ लेश्वरं कार्तवीर्यदेवं निजानुजयुवराजकुमारवीरमल्लिकार्जुनदेवं  
बेरसु वेणुग्रामस्कंधावारदोल् साभ्राज्यमुखमनु-
- ३३ भविसुत्तमारमीयश्रीकरणाग्रगण्यनुभगण्यपुण्यनुमण्य बीचिराजं  
माडिसिद रट्टजिनालयद् श्रीशान्तिनाथदेवर अंगभोग-
- ३४ रंगभोगनित्याभिषेकार्चनतदावासखंडस्फुटितजीर्णोद्धरणाहारादि-  
दाननिमित्तं श्रीमूलसंघकौंडकुं दान्वयदेशीयगणपु-
- ३५ स्तकगच्छहनसोगप्रतिबद्धतज्जिनालयाचार्यश्रीशुभचंद्रभट्टारकदेवर्गे  
शकवर्षद ११२७ नेय रक्ताक्षिसंवत्सरद पु-
- ३६ प्यशुद्धविदिगे वडुवारदोलाद् संक्रमणसमयदोल् कूंडिमूसासिर-  
दोलगण कोरवल्लिगंपदण उंबरवाणियेंब प्रा-
- ३७ ममं सर्वाबाधपरिहारमष्टभोगतेजस्वाम्यसहितं निधिनिक्षेप-  
जलपाषाणरामादिसमन्वितं सर्वनमस्यं माडि स्वकीयसा-
- ३८ आज्यसंतानयशोमिवृद्धयर्थमागि धारापूर्वकमतिप्रोतियं कोट्टनदकें  
सीमे ऐशानियकोणोल् नरुवल मोनेय-
- ३९ लिल नट्ट कल्ललिं तेंक मोगदे मूडण दिक्किनोल् नट्ट कल्ललिं मुंते  
नट्ट कल्ललिं मुंडे नगरकेरयाल्लि मुंटे आग्नेयिकोणोल् मू-
- ४० लवल्लिबेलगोड मुग्गुड्डेयलि नट्ट कल्ललिं पडुव मोगदे तेंकण  
दिक्किनोल् बग्मणवाडकटुकवाडद मुग्गुड्डेय इंगुणितेरे-
- ४१ य केलगे नट्ट कल्ललिं मुंडे कुनिकिल्गल्लि नट्ट कल्ललिं मुंटे  
निरुतियकोणोल् कटुकवाडकरवसेय मुग्गुड्डेयलि नट्ट कल्ललिं  
बडग मो-
- ४२ गदे पडुवण दिक्किनोल् मेलुगुंडिय करवसेय मुग्गुड्डेयलि नट्ट  
कल्ललिं मुंडे केंदरिय मोंकिनोल् नट्ट कल्ललिं मुंते वायुविन-

- ४३ कोणोल् मेलगुंडिय नाविदिगेय सुग्गुडुय गोंयटे गट्टिनलि नट्ट  
कल्लिं मूड भोगदे बडगण दिक्किनोल् मुण्णद कोडिय भेगणो-  
ट्टुगल-
- ४४ लिं मुंडे सिदिकेवेट्टद पडुवण मोनेयलि नट्ट कल्लिं मुंते  
हेरहिनकोडिय कल्लहुजिकेय मेल नट्ट कल्लिं मुंदे मालद मेल  
नट्ट कल् ॥
- ४५ मत्तं नाडोल् कोट्ट स्थलवृत्ति कवूर काल्वलि मूलवल्लियोळरिं  
मूडल् बेलकम्बेय केरिय तेंकल् केय्कम्मवेंदु नूर आकवूरो-
- ४६ ल् महि गावुंडन मनेयिं पडुवल्लुगय्यगलदिप्पत्तोंदु कय्नीलद  
मनेयोंदु ॥ कुल्लियवाल्लिगेयोळरिंगीसान्य-
- ४७ दलि केंनेभरदेवर केरिय मूडल् कूडिय कोळ मत्तरोंदु बसदियिं  
तेंकल् हन्निकय्यगलदिप्पत्तोंदु कय्नीलद मनेयोंदु ॥
- ४८ हरिगळ्वेयाळरोळरिं पडुवल्लु हिंगळजेय बट्टेयिं बडगला कोळ  
मत्तरोंदु बडगण केरियलि हन्निकय्यगलदिप्पत्तु
- ४९ कय्नीलद मनेयोंदु ॥ चच्छळियलि मूडण प्रभुमान्यदोलगे  
बोच्चुळगेरेयिं मूडल् मुदुगोडेय बट्टेयिं तेंकल् हारव-
- ५० गोल मत्तर् मूवत्तु सेट्टिगुत्त नागणन मनेयिं बडगल् हन्निक-  
य्यगलदिप्पत्तु कय्नीलद मनेयोंदु ॥ बेलगलेय हलि हद्रिगुं-
- ५१ तियोळरिं मूडणोत्ति पडुवल्लु कम्म नालनूरय्वत्तु ॥ उच्चुगावेय  
हलि निट्टूरोळरिं नैर्ऋत्यदोल् महाजनंगल् कोट्ट-
- ५२ गोडगेयं अप्पेय सावन्तनुंबल्लियलि कोड केयं सीमे कंडेय केरेयिं  
बडगल् हुळगन गुत्तिथिं मूडल् सावन्तन कोडगे-
- ५३ रिय तेंकल् सेल्लसरलि पडुवल्लु नट्ट कल् मूडगेरियलि दनगर  
मनेय स्थळदोल् हदिना (ल्लु) गय्यडुवने मुंतेरडु गोदिगे ॥  
कण्णगावेया-

- ५४ लरिं नैर्ऋत्यदलि एलेदोंटं हाखगोल मत्तरोंदु कम्मवेल्नूरखवत्तंड  
तेंकणि बंद मुगुलिय हल्लवदकें तेंकण हले प-
- ५५ डुवला हल्लं बडगरूखंबाविय तोंटं । मूडल् मूलस्थानदेवर तोंटं ।  
आग्नेयकोणोरूल नडुवण देवालयद तोंटं । आ ए-
- ५६ लेय तोटदि तेंकला हल्लदि मूडल् हूदोंटं कम्मं नाल्लूर ॥ ई  
सामेगलोलेल्ल नट्ट कल्लगल् ॥ ओसेदी शासनमार्गदि नृपरदार  
पालिपरी
- ५७ धर्मं निसदं तत्सुकृतात्मरात्मबलमित्रप्रेयसीगोत्रपुत्रसमृद्ध-  
त्वदोलोंदि विश्वधरेयं निष्कंटकं माडि संतोसदि राज्यमनप्पु-  
केट्टु पडेव-
- ५८ दीर्घायुमं श्रीयुमं ॥ एनिसुं लोमदे शासनक्रममनावों मीरिदं  
तद्दुरात्मनसेव्याचरणान्वितं पलिगे पैशून्यक्के पापक्के भाजन-  
नल्पा-
- ५९ यु रुजाखिलं रिपुहृतात्मोर्वीतलं दुर्ध्वलं घनदुःखास्पदनागलुं  
नरकदोलोल् काडुगुं मूडुगुं ॥ सामान्योयं धर्मसे-
- ६० तुर्नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भिः । सर्वानेतान् भाविनः  
पार्थिवैर्द्वान् भूयो मूयो याचते रामभद्रः ॥ स्वदत्तां परदत्तां
- ६१ वा यो हरेत वसुन्धरां षण्ठिं वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते  
कुमिः ॥ प्रहताग्निजकातवीर्यसचिवं श्रीवीचिराजं यशोमहि-
- ६२ तं पेलिमेनल्के शासनमनोल्पिं बालचंद्रं गुणाम्बहि विद्वज्जन-  
संमतस्फुटपदार्थालंक्रियासंकुलावहमप्पन्तिरे पेल्दनिन्तु कवि-  
कन्दर्पं बुधाधीश्वरं ॥

[ इस लेखका सारांश जै० शि० सं० भाग ३ में क्रमांक ४५४ में दिया है । किन्तु उस समय मूल लेख प्राप्त नहीं हो सका था । यह लेख भी पहले लेखके ही दिन अर्थात् पौष शुक्ल २ शक ११२७ को लिखा गया

था । इसमें भी रट्ट वंशके राजा कार्तवीर्य ( चतुर्थ ) तथा उनके मन्त्री बीचणका उनके पूर्वजोंके साथ परिचय दिया है । बेलगाँवमें बीचणके द्वारा स्थापित रट्टजिनालयके अधिष्ठाता शुभचन्द्र भट्टारक थे । ये मूलसंघ — कोण्डकुन्दान्वय-देशीयगण-पुस्तकगच्छके मलघारिदेवके शिष्य नेमिचन्द्रके शिष्य थे । इन्हे कूण्ड प्रदेशके कोरवल्लि विभागका उम्बरवाणि ग्राम दान दिया गया था । ]

[ ए० इ० १३ पृ० २७ ]

३२०

बालूर ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड, राज्यवर्ष १६ = सन् १२०५

[ इस लेखमें होयसल राजा वीरबल्लाल २ के समय राज्यवर्ष १६, क्रोधन संवत्सरमें आषाढ़ व० ३ बुधवारके दिन मेघचन्द्रभट्टारकके शिष्य कसप गावुण्डकी इस निसिधिकी स्थापनाका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१९ ]

३२१

बालूर ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड, १३वीं सदी

[ यह निसिधिलेख बहुत घिस गया है । 'श्रीवीतराग' इतने अक्षर पढ़े जा सकते हैं । ]

[ रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१४ ]

३२२

बेलगामे ( मैसूर )

कन्नड, सन् १२०६

१ स्वस्ति श्रीमत् वीरबल्लालदेववर्षद १६ नेय क्षयसंव-

२ त्सरद भाद्रपद व ११ वृहस्पतिवारदन्दु कमलसेन-

३ देवर गुड्डि जकौव्वे समाधिविधियि मुडिपि सुगति-

४ य प्राप्तयेयादलु ॥ श्रीबातरागाय नमो

[ इस लेखमे होयसल राजा वीरबल्लालके १६वें वर्ष क्षयसंवत्सरके भाद्रपद कृष्णपक्षमे ११ को कमलसेनकी शिष्या जकौव्वेके समाधिभरणका उल्लेख है । ]

३२३

हंचि ( मैसूर )

सन् १२०७, कन्नड

[ यह लेख सन् १२०७ का है । होयसल राजा वीरबल्लालके राज्यमें नागरखण्ड प्रदेशके बान्धवनगरमे कदम्बवंशीय सामन्त बोप्पके पुत्र ब्रह्मका शासन चल रहा था । उस समय सावन्त मुद्दे मागुण्डिमें एक बसदि बनवायी तथा उसे कुछ भूमि दान दी । यह दान मूलसंध-काणूर गण-तित्रिणीक गच्छके अनन्तकीर्ति भट्टारकको दिया गया था । उनकी गुरुपरम्परा इस प्रकार है — गोवर्धन सैद्धान्ति-मेघनन्दि सैद्धान्ति-दिवाकर सिद्धान्तदेव-पद्मनन्दि सैद्धान्त — मुनिचन्द्र सैद्धान्त — भानुकीर्ति सैद्धान्त — अनन्तकीर्ति भट्टारक । मुद्देकी प्रशंसा विस्तारसे की है तथा उसे रेचचमूपतिके समान कोप्पण तीर्थका रक्षक कहा है । ]

[ ए. रि. मै. १९११ पृ० ४६ ]

३२४

आनन्दमंगलम् ( चिंगलपेट, मद्रास )

राज्यवर्ष ३८ = सन् १२१६, तमिल

[ इस लेखमे विणैयाभशूर कुरवडिगलके शिष्य वर्धमानपेरियडिगल्-द्वारा जिनगिरिपल्लिमें एक श्रावकको आहारदान देनेके लिए ५ कलंजु ( सुवर्णमुद्रा ) अर्पण करनेका उल्लेख है। यह लेख चोल राजा ( कुलोत्तु-ग३ ) मदिरैकोण्ड परकेसरिवर्मन्के ३८वें वर्षका है। ]

[ रि. सा. ए. १९२२-२३ क्र. ४३० पृ. २५ ]

३२५

मनगुन्दि ( चारवाड-मैसूर )

शक ११३८-४० = सन् १२१६-१८, कन्नड

[ यह लेख कदम्ब राजा जयकेशि तथा वज्रदेवके समय चैत्र व. ७, शक ११३८ तथा कार्तिक शु. ८, शक ११४० इन तिथियोंका है। इसमे मणिगुन्दिके जिनालयके जीर्णोद्धारके लिए कई भव्य पुरुषों-द्वारा दान दिये जानेका उल्लेख है तथा वहाँके जैन आचार्योंकी नामावली दी है। ]

[ रि. सा. ए. १९२५-२६ क्र. ४३९ पृ. ७५ ]

३२६

कंदगल ( बिजापूर, मैसूर )

राज्यवर्ष (२) १ = सन् १२३८, कन्नड

[ यह लेख यादव राजा सिंहणदेवके राज्यवर्ष (२) १, विक्रम संवत्सर ज्येष्ठ अमावास्याका है। इसमे मूलसंघ-काणूरगणके सकलचन्द्र भट्टारककी शिष्या नागसिरियव्वे-द्वारा निर्मित पार्श्वनाथ बसदिके लिए भूमि आदिके दानका उल्लेख है। ]

[ रि. सा. ए. १९२८-२९ क्र. ई ५० पृ. ४५ ]

३२७

## हलेबीड ( मैसूर )

शक ११५७ = सन् १२३६, संस्कृत-कल्लड

- १ श्रीमद्देवासुराहीन्द्रपूजितश्रांगजन्मजिद् देवः श्री-
- २ वीरतीर्थेशः पायाद् मय्यजनव्रजान् ॥ (१) श्रीमल्लोकैकबिख्या-
- ३ तमूलसंधो विराजते कोण्डकुन्दान्वयस्तत्र देशीयाख्यगणा-
- ४ प्रणीः ॥ (२) श्रावोरनन्दिसिद्धान्तचक्रवर्त्यनुजो महान्  
श्रीमद्बा-
- ५ हुबली नाम मुनिः सिद्धान्तपारगः ॥ (३) सकलज्ञ-  
प्रतिपादितोभयनया-
- ६ मिज्ञानसंपन्नको मदनोद्यद्दवावतोयदविभुः सद्धर्मरक्षामणिः  
दक्षिता-
- ७ द्वादशसत्पदार्थनिपुणः षड्द्रव्यवेदो जयत्यखिलोर्वानुतच्चारु  
बाहुबलिसिद्धान्तीश्वरः-
- ८ सन्मुनिः ॥ (४) तस्याग्रशिष्योखिलशब्दशास्त्रपारंगमः स्वात्म-  
सुखानुवर्ती । स्याद्वादविद्याकुश-
- ९ लो विभाति कामाम्बुजेन्दुः सकलेन्दुयोगी ॥ (५) अर्हणंदिमुनी-  
न्द्राणां चारित्रं विस्मयावहं ।
- १० तेषां प्रणयिनी वाणी तस्यास्तन्मुनयः प्रियाः ॥ (६) जल्प-  
वितण्डकथासु च शब्दाग-
- ११ मज्जिनमुखोत्थपरमागमयोरुच्चिद्रं यच्चित्तं स त्रैविद्यारुहोर्हणन्दि-
- १२ मुनिः ॥ (७) एष श्रुतगुरुर्यस्य सकलेन्दुमहाव्रतेः । तस्य  
विद्यामहाप्रौढिर्मा-
- १३ दशैर्वर्ण्येते कथं ॥ (८) ह्यर्थभूतो यमीशो वरजिनमुनिसद्वृन्द-  
मध्ये विराजत् षड्विंशत्यर्थि-



- १४ तोरुर्जितचरितपरः सप्ततत्त्वप्रवेदी । प्रायश्चित्तादिषट्कद्विगुणित-  
सुतपाश्चर्य-
- १५ चर्यप्रसिद्धो द्वात्रिंशद्भागसद्भावयुतसकलेन्दुवतीन्द्रो विभाति ॥  
(९) एवं कतिपय-
- १६ काले प्रवर्तिते ग्रामनगरखेदेषु तत्रायामग्योत्पलविकाशयन्  
सकलचन्द्रमु-
- १७ निरायाति (॥ १०) सत्पाण्ड्यदेशमध्यस्थितबिलिचाग्रामचैत्य-  
गृहमासाद्य ज्ञात्वा स्वान्धं
- १८ त्रिदिनादनशनविधिना त्रिविष्टपं संप्राप्तः ॥ (११) सप्ताग्रबाणे-  
न्दुवाशिप्रमादशकाख्यके म-
- १९ न्मथवत्सरे च सत्फाल्गुने शुद्धतृतीयकेन्दुवारेगमत् श्रीसकलेन्दु-  
देवः ॥ (१२) अरुहं नमः
- २० श्रीमद्वीरनन्दसिद्धान्तचक्रवर्तिगल सधर्मरूप बाहुबलिसिद्धान्ति-  
देवरे दीक्षा-
- २१ गुरुगल् श्रीमदर्हणन्दित्रैविद्यदेवर् श्रुतगुरुगलुमप्य श्रीस-
- २२ कलचन्द्रमट्टारकदेवर् श्रीमद्राजधानि दोरसमुद्रद समस्तमग्य-
- २३ नगरंगल् परोक्षविनयार्थवागि माडिसिद मंगलमहाश्री

[ यह निसिधिलेख राजधानी दोरसमुद्रके नागरिकोंने सकलचन्द्र भट्टा-  
रकके समाधिमरणकी स्मृतिमें स्थापित किया था । वीरनन्द सिद्धान्तचक्र-  
वर्तीके गुरुबन्धु बाहुबलि सिद्धान्तीसे दीक्षा लेकर अर्हणन्द मुनीन्द्रके पास  
सकलचन्द्रने शास्त्राध्ययन किया था । उनकी मृत्यु पाण्ड्य देशके बिलिचा  
ग्राममें फाल्गुन शु० ३, सोमवार शक ११५७ मन्मथ संवत्सरके दिन हुई  
थी । वे मूलसंघ-कोण्डकुन्दान्वयदेशीयगणके आचार्य थे । ]

[ ए० रि० मै० १९२९ पृ० ७४ ]

३२८

**हूचिनसिगलि ( धारवाड, मैसूर )**

शक ११ (६) ७ = सन् १२४५, कन्नड

[ यह लेख यादव राजा सिघणदेवके समय चैत्र शु० ५ रविवार, विरोधकृत संवत्सर, शक ११(६)७ के दिन लिखा गया है। इसमें एक श्राविका-द्वारा सिगलि ग्राममें चैत्यालय बनवानेका उल्लेख है। इस ब्रसदिके शान्तिनाथदेवके लिए महाप्रधान सर्वाधिकारि प्रभाकरदेवने तथा पुलिगेरेके मन्नेय एवं आठ हिट्टुओंने कुछ भूमि दान दी थी। ]

[ रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २९६ ]

३२९

**कलकेरि ( बिजापुर, मैसूर )**

शक ११६७ = सन् १२४५, कन्नड

[ इस लेखमें यादव राजा सिघणदेवके समय भाद्रपद शु० ४ रविवार शक ११६७ क्रोष्ठी संवत्सरके दिन महाप्रधान मल्ल, वाच तथा पायिसेट्टि-द्वारा निर्मित अनन्ततीर्थकर्मन्दिरके लिए कलुकेरके महाजनों-द्वारा भूमि आदि दान देनेका उल्लेख है। यह मन्दिर कमलसेन मुनिके उपदेशसे बन-वाया गया था। ]

[ रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई ५३ पृ० १८६ ]

३३०

**लक्ष्मेश्वर ( मैसूर )**

शक ११६९ = सन् १२४७, कन्नड

[ यह लेख यादव राजा सिंहणके समय ज्येष्ठ अमावास्या, शक ११६९, प्लवंग संवत्सरके दिन लिखा गया है। इसमें महाप्रधान बीचिराजकी कन्या राजलदेवी-द्वारा पुरिकरनगरके श्रीविजयजिनालयके लिए कुछ भूमि तथा द्रव्य दान दिये जानेका उल्लेख है। इनके गुरु पद्मसेन मुनि थे। ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ९ पृ० १६१ ]

३३१-३३२

शिगिकुलम् ( तिन्नेवेली मद्रास )

सन् १२५३, तमिल

[ ये दो लेख भगवती मन्दिरके दीवारोंपर खुदे हैं । पहलेकी तिथि मारवर्मन् सुन्दर पाण्ड्यदेव ( द्वितीय ) के राज्यवर्ष १५ का ३६०वां दिन यह दी है तथा दूसरेकी तिथि कोणेरिण्मैकोण्डान्के राज्यवर्ष १५ का ३८८वां दिन यह दी है । पहलेमे जो राजाज्ञा है उसीका पालन होनेका वर्णन दूसरे लेखमें है । इस आज्ञाके अनुसार राजमन्त्री अण्णन् तमिलप्पलवरेयन्की प्रार्थनापर राजा-द्वारा स्थानीय जिनमन्दिरकी भूमिको करमुक्त किया गया था । यह भूमि पुगलोकर्नाथनल्लूरनिवासी मदि-सागरन् आदिभट्टारकन्-द्वारा मन्दिरको अर्पित की गयी थी । मन्दिरका नाम न्यायपरिपालपेरुम्बल्लि तथा उसमें स्थित जिनमूर्तिका नाम एणक्कु-नल्लनायकर् था । मन्दिर जिस पहाड़ीपर था उसको जिनगिरिमल्लै यह नाम दिया गया था । वर्तमान समयमे इस मन्दिरकी जिनमूर्ति गौतम ऋषिके नामसे पूजी जाती है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० २६९-७० पृ० १०५ ]

३३३

सहेट महेट ( उत्तरप्रदेश )

संवत् ११७७ = सन् १२५५, संस्कृत-नागरी

[ तीन चरणपादुकाओंके एक पट्टपर यह लेख है । इसके मध्यमे संवत् ११७७ ऐसा निर्माणकालका उल्लेख है । लेखका अन्त 'प्रणमति नित्यं' इन अक्षरोंसे हुआ है । अतः यह जैन लेख प्रतीत होता है । ]

[ रि० आ० स० १९१०-११ पृ० १८ ]

३३४

बिजापूर ( मैसूर )

शक ११७९ = सन् १२५७, कन्नड

[ यह लेख करीमुद्दीनकी मसजिदमे पाया गया । यह मसजिद एक जैन मन्दिरके स्थानपर बनवायी गयी थी । इस मन्दिरके आचार्य करसिदेवके लिए यादव राजा कन्हरदेवके समय शक ११७९ मे कुछ भूमि दान दिये जानेका इस लेखमे निर्देश है । ]

[ रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २२४ ]

३३५

बस्तिहल्लि ( मैसूर )

सन् १२५७, कन्नड

[ यह मूर्तिलेख होयसल राजा नरसिहके समय सन् १२५७ का है । इस समय श्रीकरणद मधुकण्णके पुत्र विजयण तथा दोरसमुद्रके अन्य जैनोंने मूलसंघ-देसिगण हनसोगे शास्त्राके शान्तिनाथ मन्दिरका निर्माण किया था । इस मन्दिरके लिए हीरगुप्पे नामक ग्राम नयकीर्ति सिद्धान्तचक्रवर्तिको अर्पित किया गया था । ]

[ ए० रि० मै० १९११ पृ० ४९ ]

३३६

कल्लेकरि ( बिजापूर, मैसूर )

राज्यवर्ष ४ = सन् १२६०, कन्नड

[ यह लेख यादव राजा कन्नरदेवके राज्यवर्ष ४ साधारण संवत्सरमे लिखा गया था । इसमें अनन्ततीर्थकरमन्दिरके लिए रंगरस-द्वारा-पुत्र प्राप्तिके उपलक्ष्यमें कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है । करसंग्राहक सर्व-देव नायक-द्वारा भी इस समय कुछ दान दिया गया था । ]

[ रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई० ५४ पृ० १८६ ]

३३७

नेगलूर ( धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष (६) = सन् १२६२, कन्नड

[ यह लेख यादव राजा कन्धरदेवके राज्यवर्ष (६) विरोधी संवत्सरमें भाद्रपद शु० १४, गुरुवारको लिखा गया था । इसमें कुलचन्द्रभट्टारकके शिष्य सकलचन्द्र भट्टारकके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० १६२ पु० १०७ ]

३३८

बालूर ( धारवाड, मैसूर )

शक ११८४ = सन् १२६२, कन्नड

[ इस निसिधि लेखमें कहा गया है कि सेंबूरके काव्यकी माता चेकवाने यह निसिधि स्थापित की । लेखकी तिथि पौष शु० ११, सोमवार, शक ११८४, दुर्मति संवत्सर ऐसी दी है । ]

[ रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१८ ]

३३९

बालूर ( धारवाड, मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

[ इस लेखमें यादव राजा कन्धरदेवके राज्यकालमें नल संवत्सरके पौष मासमें गुरुवारके दिन इस निसिधिके स्थापित किये जानेका उल्लेख है । लेख बहुत धिस गया है । ]

[ रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१७ ]

३४०-३४१

## हत्तिमत्तूर ( धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष ५ तथा ९ = सन् १२६५ तथा १२६९, कन्नड

[ ये दो लेख हैं । पहला लेख यादव राजा महादेवके राज्यवर्ष ५ में कार्तिक व० १३, बुधवार, क्रोधन संवत्सरके दिन सेवयर जक्कयकी पत्नी मादवेके समाधिमरणका स्मारक है । दूसरेमें महादेवके राज्यवर्ष ९ में हत्तिमत्तूरकी बसदिके आचार्यके समाधिमरणका उल्लेख है । (न) न्दिम-ट्टारकदेवका भी उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० ६८-६९ पृ० ९८ ]

३४२

## इलेबीड ( मैसूर )

सन् १२६५, कन्नड

[ यह लेख होयसल राजा नरसिंह ३ के समय सन् १२६५ का है । इस वर्षमें राजा-द्वारा त्रिकूट रत्नत्रय शान्तिनाथ जिनालयके लिए माघ-नन्दि सैद्धान्तिको कल्लनगेरे ग्राम दान दिया गया था । माघनन्दिकी गुरु-परम्परा इस प्रकार है — मूलसंघ — नन्दिसंघ-बलात्कारगणके वर्धमानमुनि-जो होयसल राजाओके गुरु थे, श्रीधर त्रैविद्य-पद्मनन्दि त्रैविद्य-वासुपूज्य सैद्धान्ति-शुभचन्द्र-भट्टारक-अभयनन्दिभट्टारक — अरुहणंदि सिद्धान्ति, देवचन्द्र, अष्टो-पवासि कनकचन्द्र, नयकीर्ति, मासोपवासि रविचन्द्र, हरियनन्दि, श्रुतकीर्ति त्रैविद्य, वीरनन्दिसिद्धान्ति, गण्डविमुक्त, नेमिचन्द्रभट्टारक, गुणचन्द्र, जिनचन्द्र, वर्धमान, श्रीधर, वासुपूज्य, विद्यानन्द स्वामि, कटकोपाध्याय श्रुतकीर्ति, वादिविश्वासघातक मलेयालपाण्ड्यदेव, नेमिचन्द्र, मध्याह्नकल्पवृक्ष वासुपूज्य । श्रीधरदेव-वासुपूज्य — उदयेन्दु — कुमुदेन्दु — माघनन्दि । माघनन्दिके चार

ग्रन्थोंका उल्लेख किया है - सिद्धान्तसार, भावकाचारसाड, पदार्थसार तथा शास्त्रसार समुच्चय । इनके शिष्य कुमुदचन्द्र पण्डित थे । अन्तमें इस दानके सहायकके रूपमें महाप्रधान सोमेश दण्डनायकका उल्लेख किया है । ]

[ ए० रि० मै० १९११ पृ० ४८ ]

३४३

अणिगोरि ( धारवाड, मैसूर )

शक ११८९ = सन् १२६७, कन्नड

[ इस लेखमें चैत्र व० ४, मंगलवार, शक ११८९, प्रभव संवत्सरके दिन मूलसंघ-कोण्डकुन्दान्वयके सोमदेवाचार्यकी शिष्या आकलपे अम्बेके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई २०४ पृ० ५३ ]

३४४

संगूर ( धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष ६ = सन् १२६९, कन्नड

[ इस लेखमें यादव राजा महादेवके राज्यवर्ष ९, विभव संवत्सरमें नन्दिभट्टारकके शिष्य नयकीर्ति भट्टारकके शिष्य नालप्रभु गंगर सावन्त सोवके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई १६८ पृ० १०७ ]

३४५

हुत्तिकेरे ( मैसूर )

सन् १२७१, कन्नड

१ स्वस्ति प्रजोत्पत्तिसंवत्सरश्च चैत्र शु १ मि दंदु श्रीमत् प्रतापबीर  
होइसल श्रीवीरनारसि.....

२ वाहुलं सोमेयदण्णायकरु मेय्हुन बाचेयदण्णायकरु होंकुंदद  
बसदि जीर्णवा.....

३ दण्णायकरं जीर्णोद्धारवं माडिसिके - य निडिसिद्ध

[ इस लेखमें होयसल राजा नरसिंहके शासनकालमें चैत्र शु. १, गुरुवार, प्रजोत्पत्ति संवत्सर, के दिन होंकुंदकी बसदिके जीर्णोद्धारका उल्लेख है। यह कार्य सोमेय दण्डनायकके बहनोई बाचेय दण्डनायक-द्वारा किया गया था। लिपि १३वीं सदोकी है। संवत्सर नामानुसार यह वर्ष सन् १२७१ होगा जब नरसिंह तृतीयका राज्य चल रहा था। )

[ ए० रि० मै १९३७. पृ० १८७ ]

३४६

**मुलगुन्द ( धारवाड, मैसूर )**

शक ११९७ = सन् ११७५, कच्छ

[ यह लेख वैशाख व. १ (३), गुरुवार, शक ११९७ युव संवत्सरका है तथा पार्श्वनाथबसदिके भीतरी दीवालमें लगा है। इसमें सरटूरुके तिलकरसके मन्त्री देवण्णके पुत्र अमृतैयके समाधिमरणका उल्लेख है। ]

[ रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ९१ पृ० ८ ]

३४७

**अमरापुरम् ( अनन्तपुर, आन्ध्र )**

शक १२०० = सन् १२७८, कच्छ

[ यह लेख निडुगल्लुके महामण्डलेश्वर इरुगोण चोल महाराजके समय आषाढ शु० ५ सोमवार शक १२००, ईश्वर संवत्सरका है। इसमें मूलसंघ-देशियगणके त्रिभुवनदेवि राउलके शिष्य बालेन्दु मलघा-रिदेवके उपदेशसे संगयन बोम्मिसेट्टि तथा मेलन्वेके पुत्र मल्लिसेट्टि-द्वारा



तैलंगेरेके प्रसन्नपार्श्वदेवके लिए २००० वृक्षोंके उद्यानके दानका वर्णन है । इस मन्दिरका उपाध्याय जैन ब्राह्मण चत्तपिल्ले था जो पाण्ड्यप्रदेशके भुवलोकनाथनल्लूरका निवासी था । ]

[ रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० ४० पृ० ७४ ]

३४८

### इन्दौर म्युजियम ( मध्यप्रदेश )

संस्कृत-नागरी, सं० १३३४ = सन् १२७८

[ इस लेखमें पण्डिताचार्य रत्नकीर्ति-द्वारा एक मूर्ति सं० १३३४ में स्थापित किये जानेका उल्लेख है ।

[ रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० १२३ ]

३४९

### पटा ( उत्तरप्रदेश )

संवत् १३३५ = सन् १२७८, संस्कृत-नागरी

[ मूलसंघके गोललतक कुलके कुछ साधुओं-द्वारा संवत् १३३५ में तीन मूर्तियाँ स्थापित की गयी थीं ऐसा इस लेखमें वर्णन है । ]

[ रि० आ० सं० १९२३-२४ पृ० ९२ ]

३५०

### कडकोल ( धारवाड, मैसूर )

शक १२०१ = सन् १२८०, कन्नड

[ इस लेखमें मूलसंघके पद्मसेन भट्टारकके शिष्य सावन्त सिरियम गोडकी पत्नी चण्डिगौडिके समाधिमरणका तथा कई गोडों-द्वारा एक बसदिको दान दिये जानेका उल्लेख है । तिथि भाद्रपद शु० ६, सोमवार, शक १२०१, प्रमाथि संवत्सर ऐसी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई ५१ पृ० १२३ ]

३५१

## सण्णमल्लीपुर ( मैसूर )

शक १२०७ = सन् १२८५, कन्नड

- |                               |                            |
|-------------------------------|----------------------------|
| १ स्वस्ति श्रीप्रतापचक्रवर्ति | २ होइसल वीर नरसिं-         |
| ३ हदेवरसरु पृथिवि-            | ४ राज्यं गेयुतिरलु         |
| ५ शक वरिष १२०७ नेय            | ६ सुमक्रितुसंवत्सरद पावगु- |
| ७ ण....हे-                    | ८ गगडे....                 |
| ९ ...गरबेइलु                  | १० ...लबुं                 |
| ११ ...मतह....                 | १२ ....हि आतन तम्म....आल-  |
| १३ ...कोडगे....आल             | १४ ...लुडु होलवेरडु अन्तु  |
| १५ ...तिदने....सा-            | १६ यिर मत्तह....बिह        |
| १७ ...सिद सासन ॥              | १८ ...दक्षिण तगडूरलि       |
| १९ .....                      | २० (ता) यूर गुलियपुर       |
| २१ ...यण अल                   | २२ ...नागगावुड ॥ वीतराग    |

[ यह लेख होयसल राजा नरसिंह ३ के समय शक १२०७ के फाल्गुनमें लिखा गया था । किसी हेग्गडे-द्वारा नागगावुडको तगडूर, तायूर तथा गुलियपुर ग्रामकी कुछ भूमि करमुक्त दी जानेका इसमें वर्णन है । अन्तमें वीतराग यह मुद्रा है इससे दानदाता जैन प्रतीत होते हैं । ]

[ ए० रि० मै० १९३० पृ० १८४ ]

३५२-३५३

ताडकोड ( धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष १४ = सन् १२८५, कन्नड

[ यह लेख यादव राजा रामचन्द्रके राज्यवर्ष १४, चित्रभानु संवत्सर-का है। इस समय कन्नरदेवकी रानीकी आज्ञासे सर्वाधिकारी मायदेवने एक जिनमन्दिर बनवाया था। यहीके अन्य लेखमें चन्द्रनाथको नमस्कार कर बालचन्द्रके शिष्य श्रीवासुपूज्यका उल्लेख किया है। ]

[ रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ४४४-४४५ पृ० ७६ ]

३५४

कलकेरी ( मैसूर )

राज्यवर्ष १८ = सन् १२८९, कन्नड

[ यह लेख यादव राजा रामदेवके राज्यवर्ष १८ में पौष शु० ८, बडुवार, (सर्व)धारि संवत्सरके दिन लिखा गया था। इसमें नागेयिसेट्टि और मादब्बेके पुत्र मादैय्यके समाधिमरणका उल्लेख है। इनके गुरु समन्त-भद्रदेव थे। ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ७२ पृ० १६७ ]

३५५

डम्बल ( जि० धारवाड, मैसूर )

शक १०११ = सन् १२९०, कन्नड

[ यह लेख रामदेव ( यादव ) के समयका है। धर्मबोललके महानाडु-के १६ प्रतिनिधि तथा नाडुके ८ प्रतिनिधि एवं साल्ववीर चवुण्डके छोटे बन्धु सप्तरस-द्वारा नगर जिनालयके लिए कुछ करोंका उत्पन्न दान देनेका इसमें उल्लेख है। इसी मन्दिरको अय्वत्तोवकलु तथा उगुरु ३००-द्वारा कुछ तेल वगैरहका दान भी दिया गया था। तिथि पौष शु० २, रविवार, शक १२११, सर्वधारी संवत्सर ऐसी दी है। ]

[ रि० सा० ए० १९४४-४५ क्र० एफ् ६३ ]

३५६

पोन्नूर ( उ० अर्काट, मद्रास )

राज्यवर्ष ७ = सन् १२९०, तमिल

[ यह लेख स्थानीय जैन मन्दिरमें है । मारवर्मन् विक्रमपाण्ड्यके राज्यवर्ष ७ में विडालपर्कके नाट्टवर् ( ग्रामप्रमुखों )-द्वारा आदिनाथके पल्लिविलागम्में रहनेवाले लोगोंसे प्राप्त करोंका उत्पन्न इस जिनमन्दिरमें पूजा आदिके लिए अर्पण किए जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४१५ पृ० ४० ]

३५७

हुमच ( मैसूर )

शक १२१७ = सन् १२९५, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछ-
- २ नं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशास-
- ३ नं स्वस्ति श्रीमत्तु सकवर्ष १२१७ नेय मनु-
- ४ मथसंवत्सरद चैत्र सु पाडिष बृहस्प-
- ५ तिवारदंदु श्रीमत्सिद्धान्तयोगी-
- ६ द्रपादपंकजभ्रमर बग्मगवुड म-
- ७ हापुरुषो...गतो सिद्धि समाधिना ।
- ८ नमनार्ण...गुणसेनमुनिश्वरं
- ९ ...द्राविडान्वय
- १० मौलिना

[ इस निसिधिलेखमें श्रीमत् सिद्धान्त योगीन्द्रके शिष्य बग्मगवुडके समाधिमरणका उल्लेख है जो चैत्र शु० १, बृहस्पतिवार, शक १२१७ मन्मथसंवत्सरके दिन हुआ था । लेखके अन्तमें द्राविड अन्वयके गुणसेन मुनीश्वरका नाम भी आता है । ]

[ ए० रि० मै० १९३४ पृ० १७७ ]

३५=

लक्ष्मेश्वर ( मैसूर )

शक १२१७ = सन् १२८५, संस्कृत-कल्लह

[ इस लेखमें पुरिकरके शान्तिनाथ मन्दिरके लिए सोमय-द्वारा कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है । तिथि भाद्रपद शु० ५, सोमवार, शक १२१७ ऐसी दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई २८ पृ० १६३ ]

३५६

मन्नेर मसलवाड ( बेल्लारी, मैसूर )

शक १२१९ = सन् १२९७, कल्लह

[ यह लेख यादव राजा रामचन्द्रदेवके समय मार्गशिर शु० ५ गुरुवार शक १२१९ हेमलम्बि संवत्सरका है । इसमें महामण्डलेश्वर भैरवदेवरस-द्वारा मूलसंघ-देसिगणके नेमिचन्द्रराउलके शिष्य विनयचन्द्रदेवको भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है । यह दान मोसलेवाडके जिनमन्दिरके लिए था जिसका जीर्णोद्धार महामण्डलेश्वर सालेवेय तिकमदेव राणेयके मन्त्री सावन्त पण्डितके पुत्र केशव पण्डित-द्वारा किया गया था । ]

[ रि० सा० ए० १९१८-१९ क्र० २५६ पृ० २२ ]

३६०

कोगलि ( बेल्लारी, मैसूर )

१३वीं सदी, कल्लह

[ इस लेखमें होयसल राजा प्रतापचक्रवर्ति रामनाथदेव-द्वारा युव संवत्सरमे कोगलिके चैन्नपार्श्वजिनमन्दिरके लिए सुवर्णदान देनेका उल्लेख है । ]

[ इ० म० बेल्लारी १९२ ]

३६१-३६७

चिप्पगिरि ( जि० बेल्लारी, मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

[ ये छह लेख हैं । मूलसंघ-देशीयगण-कोण्डकुन्दान्वय-पोस्तकगच्छके केशणंदि भट्टारके शिष्योंके समाधिमरणका इनमें उल्लेख है । इन शिष्योंके नाम हैं—गोपरस, तथा उसकी पत्नी हालीवे, मादलदेवी, तिप्पयकी पत्नी जाकवे, नागलदेवी, मूलिग तिप्पय, बैतलेय बोम्मिसेट्टि तथा उसकी पत्नी बीमवे । लिपिके अनुसार ये लेख १३वीं सदीके प्रतीत होते हैं । इसी समयके एक और लेखमें माधवचंद्र भट्टारकदेवके शिष्य परिसयके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

( रि० सा० ए० १९४४-४५ ई ६३-७२ )

३६८

अदरगुंचि ( जि० धारवाड, मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख लिपिपर-से १३वीं सदीका प्रतीत होता है । यापनीय संघ-काडूरगणकी एक बसदिके लिए दी हुई जमीनकी सीमा बतलानेवाला यह पत्थर है । यह बसदि उच्छंगि नगरमें थी । यह दान अदिगुण्टेके गोण्ड और स्थानिकों-द्वारा दिया गया था । ]

( रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० क्र० ३ पृ० २५५ )

३६९

बसवपट्टण ( हासन, मैसूर )

१३वीं सदी कन्नड

१ श्रीमूलसंघ देसियगण पोस्तकगच्छ

२ कोंडकुंदान्वयद इंगलेश्वरद ब-

३ लिपि श्रीश्रुतकीर्तिदेवर गुड्डुगलु

४ कोंग नाड श्रीकरणद कावणगलु मक्क-

५ लु नाकण होनणंगलु माडिसिद श्री-

६ नेमिनाथस्वामिगलु प्रतिमे मंग-

७ ल महा श्री श्री श्री

[ इस लेखमें श्रीकरणद कावणके पुत्र नाकण तथा होनण-द्वारा, जो कोंगु प्रदेशके निवासी थे, नेमिनाथकी इस मूर्तिके स्थापित किये जानेका उल्लेख है। ये दोनों मूलसंघ-देसियगण-पुस्तकगच्छकी इंगलेश्वरबलिके आचार्य श्रुतकीर्तिके शिष्य थे। लेखकी लिपि १२वीं या १३वीं सदीकी प्रतीत होती है। ]

( ए० रि० मै० १९४४ पृ० ४२ )

३७०

रत्नापुरि ( मैसूर )

१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[ यह दो पंक्तियोंका लेख एक मूर्तिके पाद-पीठपर है जिसमें किसी-भट्टारकदेव-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका निर्देश है। लिपि १२वीं या १३-वीं सदीकी प्रतीत होती है। ]

[ मूल कन्नड लिपिमें मुद्रित ] [ ए० रि० मै० १९४४ पृ० ७० ]

३७१

बेलगोल ( मांड्या, मैसूर )

१२वा-१३वीं सदी, कन्नड

[ इस छोटे-से मूर्ति-लेखमें द्रविल संघ-नन्दिसंघ-अहंगल अन्वयके कुछ व्यक्तियों-द्वारा इस पार्श्वनाथ मूर्तिकी स्थापनाका निर्देश है। लिपि १२वीं या १३वीं सदीकी प्रतीत होती है। ]

[ मूल कन्नड लिपिमें मुद्रित ] [ ए० रि० मै० १९४४ पृ० ५७ ]

३७२

बिदिरूर ( शिमोगा, मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

- १ श्री मैणदान्वयद देसियगणद नागर एक्कगू डिय सु-
- २ मचंद्र देवरु माडिसिद बसदिगे ॥ श्रीजिनपद-
- ३ पंकजबिराजितमधुकरन् एनिप्प मल्लि कोट्टं
- ४ पूजितवेने तीर्थंकरब्राजित प्रतिकृतिथ-
- ५ नुचित कडितले गोत्रं ॥

[ इस लेखमें बिदिरूर ग्रामके बसदिमे मल्लि नामक व्यक्ति-द्वारा इस चौबीसी मूर्तिके अर्पण किये जानेका वर्णन है । यह बसदि देसियगण-मैण-दान्वय-कडितले गोत्रके सुभचन्द्रदेव-द्वारा बनवायी गयी थी । लेखकी लिपि १३वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९४३ पृ० ११४ ]

३७३

होंगनूर ( मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

- १ स्वस्ति श्रीमूलसंध श्रीक्राण्वद श्रीसकलचंद्रमहा-
- २ रकदेव सिष्यरु माधवचंद्रदेवर गुड्डुगलु
- ३ उमयनानादेसिगलु माडिसिद होंगनूर शा-
- ४ न्तिनाथदेवर जोगवड्डिगेय बसदि मंगल महा

[ यह लेख एक शान्तिनाथ मूर्तिके पादपीठपर है जो वर्तमानमें लक्ष्मी-देवी मन्दिरके एक चबूतरमें लगी है । इसमें होंगनूरकी बसदिका निर्माण सकलचन्द्रके शिष्य माधवचन्द्रके शिष्यों-द्वारा किये जानेका उल्लेख है । ये मूलसंध-क्राण्व (क्राणूर गण) के अन्तर्गत थे । लिपि १३वीं सदी-की है । ]

[ ए० रि० मै० १९४२ पृ० १२६ ]



३७४

तवनन्दी ( मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमूलसंच सूर-

२ स्तगण चित्रकूटान्वयद

३ प्रतिबद्ध

[ यह छोटा-सा लेख एक खण्डित जिनमूर्तिके पादपीठपर है । मूल-संच-सूरस्तगण-चित्रकूटान्वयके किसी व्यक्ति-द्वारा यह मूर्ति स्थापित की गयी थी । लिपि १३वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९४२ पृ० १८५ ]

३७५

वरुण ( मैसूर )

१३वीं सदी, संस्कृत-कन्नड

१ श्रीमद् द्रविल-

२ संगस्थ नन्दिसं

३ वे अरुंगले अ-

४ न्वयेऽशेषसास्त्र-

५ ज्ञ श्रीपाल

६ मुनिराश्रियः

७ तच्छिष्यो विदुषां

८ श्रेष्ठः पद्मप्रम-

९ मुनीश्वरः तस्य

१० पुत्रः तपोत्ती-

११ धर्मसेनमहा

१२ मुनिः ॥ सोयं

१३ शुद्ध ( ) स्वभावस्तो-

१४ बाह्यां (न)रपरिग्रहा-

१५ त्वयक्तो जिनपदाम्रे

१६ त्रिदिवं गतवान् बुध-

१७ :

[ इस लेखमें द्रविलसंच-नन्दिसंच-अरुंगल अन्वयके आचार्य श्रीपालके प्रशिष्य तथा पद्मप्रभके शिष्य धर्मसेनके समाधिमरणका उल्लेख है । लेखकी लिपि १३वीं सदीकी प्रतीत होती है । ]

[ ए० रि० मै० १९४० पृ० १७२ ]

३७६

केलनोरे ( मांडघा, मैसूर )

१३वीं सदी-उत्तरार्ध, कन्नड

पश्चिमकी ओर

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादा-
- २ मोघलांछनं (१) जीयात् त्रैलोक्य-
- ३ नाथस्य शासनं जिनशासनं ।
- ४ भद्रं म्याज्जिनेन्द्राणां
- ५ शासनायाचनाशिने । कुतीर्थ-
- ६ ध्वान्तसंघातप्रमिञ्चघनभान-
- ७ वे । स्वस्ति समधिगतपंचमहाश-
- ८ ब्द महामंडलेश्वरं द्वारावतीपु-
- ९ रवराधीश्वरं यादवकुलावर-
- १० धुमणि सम्यक्बचूडामणि मलपरो-
- ११ लुगण्ड नामादिसमालंकृतरप्प
- १२ श्रीविनयादित्यपोथ्सलन् परेयं-
- १३ ग बिट्टिदेव नारमिह बल्लाल नारसि-

दक्षिणकी ओर

- १४ घयदव तस्य पुत्रं नारसि-
- १५ हरसरु दोरसमुद्रदोलु पृथ्वीराज्यं गेयु-
- १६ त्तमिरलु स्वस्ति श्रीमूलसंघ बलात्कारं
- १७ ...यदोलु अनेकाच यंरु न-
- १८ ....प्रवर्तिसलु अवरोलु वर्धमानमटा-
- १९ रकर श्रीधराचार्यरु देवनन्दित्रैवि-

- २० वरु वासुपूज्यसिद्धान्तदेवरु शुभचन्द्र-  
 २१ मट्टारकरु भमयनन्दिमट्टारकरु अर्हन्-  
 २२ विसिद्धातिगलु देवचंद्र (द्र) सिद्धातिगलु भट्टोप-  
 २३ वासि रुनकचन्द्रदेवरु नयकीर्ति चान्द्रा-  
 २४ यणदेवरु मासोपवास रविचन्द्रसिद्धा-  
 २५ न्तिगलु हरियनन्दिमट्टारकरु श्रुत-  
 २६ कीर्तित्रैविद्यदेवरु वीरणदिमिद्धान्तदे-  
 २७ वरु गण्डविमुक्त नेमिचन्द्रमट्टारकरु देव  
 पूर्वकी ओर  
 २८ ( वर्ध )मानमुनीन्द्ररु श्रीधराचार्यरु वा-  
 २९ सुपूज्यत्रैविद्यदेवरु उदयचंद्रसिद्धा-  
 ३० तदेवरु कुमुदचन्द्रमट्टारकरु देवर मा....  
 ३१ माघनन्दिमट्टारकरु चक्रवर्तिगलु श्रीपादप-  
 ३२ चंगलिगे होयसलभुजबल श्रीवीरनारासिंहदेवरस-  
 ३३ रु दोरसमुद्रद त्रिकूटरसनत्रयद श्रीशान्तिनाथ  
 ३४ देवर अं(ग)भोग रंगभोग आहारदान मुन्ताद  
 ३५ समस्तभर्मकार्यवका....  
 ३६ चिककंनेयनहलि  
 ३७ ....व येनुल्लंथा भट्टमो-  
 ३८ वा तेजस्वाम्यसहितवागि माघनं-  
 ३९ विसिद्धान्तचक्रवर्तिगलु श्रीपाद-  
 ४० पचंगलिगे भारापूर्वकं माडि  
 ४१ कोट्टरु स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत्  
 ४२ वमुधरा....

[ इस लेखके प्रारम्भमें होयसल वंशके राजाओंकी परम्परा नरसिंह ( तृतीय ) तक दी है । नरसिंहने राजधानी स्थित शान्तिनाथ जिनालयके लिए चिककप्पेयनःल्लि ग्राम दान दिया । यह दान मूलसंघ-बलात्कारगणके कुमुदचन्द्र भट्टारकके शिष्य माघनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्तीको दिया गया था । लेखमें कुमुदचन्द्रके पूर्ववर्ती १९ आचार्योंके नाम भी उल्लिखित हैं । ]

[ ए० रि० मै० १९४० पृ० १६४ ]

३७७-३७८

मूगूर ( मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

(अ) १ श्रीमूलसंघ देसियगण पुस्त २ कगच्छ कौंडकुंदान्वयक

.....हगेरे-

३ यतीर्थंद प्रतिबद्धद भरतपण्डितरिगे ४ जक्कियब्बेय मगलु.....

(ब) १ मूलसंघ देगसिण पुस्तकगच्छ कौंडकुंदान्वय इंगणेश्वर सं(घ)द श्रीभानुकीर्तिपं-

२ हितदेवर शिष्यरप्प कान.....नदिदेवर गुड्डुगलप्प मूगूर समस्त

३ गावुण्डुगलु.....कोडेयर बमदिय जीर्णोद्धारणवमा

४ डि.....सिदरु मंगलमहाश्री

[ ये दो लेख मूगूरकी आदिनाथबसदि तथा पार्श्वनाथबसदिके मूर्तियोंके पादपीठोपर हैं । पहलेमे मूलसंघ-देसियगणके क-हगेरे तीर्थसे सम्बद्ध भरत पण्डितके लिए जक्कियब्बेकी कन्या ( नाम लुप्त )-द्वारा कुछ दान दिए जानेका उल्लेख है ! लेख अधूरा होनेसे विवरण स्पष्ट नहीं हो सकता । दूसरेमें मूल संघ-देसियगण-इंगणेश्वर संघके भानुकीर्ति पण्डितके शिष्य — नन्दिके शिष्य गावुण्डों द्वारा मूगूरकी कोडेयरबसदिके जीर्णोद्धारका उल्लेख है । लेखोंकी लिपि १३वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९३८ पृ० १८२-८३ ]

३७६

इलेबीड ( मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

- १ जिननात्मीयेष्टद्वयं निजगुरु नयकीर्तिव्रतीशं लसदमूवि-
- २ नुतं तानुक्किसेट्टिप्रभु पितृ तनगेकब्बे तायेन्दोडिन्तीवन-
- ३ धिम्यावृतधाय्रीतलदोल् अर्दे पुण्योदमं ववातदोल् कूडि निवान्-
- ४ तं नामिसेट्टि स्फुटविशदयशोलक्ष्मियं ताने पेत्तं ॥
- ५ अन्तातं व्यवहारदि....मन्न विक्रमाक्रान्त....
- ६ लदेव....मान्वातं दो....
- ७ कोण्डु....स्वान्तं विश्रुत ना-
- ८ मिसेट्टि दिवदोल् कैवल्यमं ताल्दिदं

[ इस लेखमें उक्किसेट्टि और एकव्वेके पुत्र नामिसेट्टिके समाधिमरण-का उल्लेख है । नामिसेट्टिके गुरु नयकीर्ति व्रतीश थे । लेखकी लिपि १३वीं सदीकी प्रतीत होती है । पंक्ति ५ के अस्पष्ट भागमें सम्भवतः वीरबल्लाल ( द्वितीय ) के राज्यका और तिथिका उल्लेख था । ]

[ ए० रि० मै० १९२९ पृ० ७८ ]

३८०

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

१३वीं सदी, तमिल

[ इस लेखमें कहा गया है कि कुलोत्तुंग चोल राजा-द्वारा कनकचिन्नगिरि अप्पर देवको अर्पित नल्लूर यह एक धार्मिक स्थान है । यह लेख चन्द्रनाथ मन्दिरके वराण्डेमें लगा है तथा १३वीं सदीकी लिपिमें है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० २९९ पृ० ६५ ]

३८१

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

१३वीं सदी, तमिल

[ यह लेख चन्द्रनाथ मूर्तिके पादपीठपर खुदा है । इस मूर्तिकी-जिसे कच्चिनायनकर कहा है - स्थापना आलप्पिरन्दान् मोगन् कच्चियरायर-द्वारा की गयी ऐसा लेखमें कहा है । लिपि १३वीं सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१९ पृ० ६७ ]

३८२

कोट्टगोरे ( मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

[ इस लेखमें देसियगण-दंगलेस्वर बलिके हेरगु निवासी आचार्य हरिचन्द्रके शिष्य माधनन्दि-द्वारा एक शान्तिनाथ मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । लिपि १३वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९१९ पृ० ३३ ]

३८३

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

१३वीं सदी, तमिल

[ यह लेख यहाँकी पहाड़ीपर चढ़नेके लिए बनी सीढ़ियोंके पास है । इन सीढ़ियोंका निर्माण गुणबीरदेवन् पण्डितदेवन्ने किया ऐसा लेखमें कहा है । लिपि १३वीं सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१६ पृ० ६७ ]

३८४

हुकेरी ( जि० बेलगांव, मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख टूटा है । यापनीय संघके किसी गणके त्रैकीर्ति आचार्यका इसमें उल्लेख है । लिपि १३वीं सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९४२-४३ ई ६ पृ० २६१ ]

३८५-३८६

हले हुब्बल्लि ( जि० धारवाड, मैसूर )

१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[ यहाँके अनन्तनाथ बसदिमें दो लेख हैं । एक उद्गादेवकी मूर्तिपर है । इसकी लिपि १२वीं सदीकी है । सेटि महादेवी-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना-का इसमें निर्देश है । दूसरा एक जिनमूर्तिपर है । इसकी लिपि १३वीं सदीकी है । इसमें यापनीय संघके (क)हूर गणका उल्लेख है ।

[ रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० ३३-३४ ]

३८७

मोटे बेन्नूर ( धारवाड, मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख १३वीं सदीकी लिपिमें है । तिथि चैत्र शु० १०, गुरुवार, सोम्य संवत्सर ऐसी दी है । इसमें जिनचन्द्रदेवके शिष्य बोम्मिसेट्टिके पुत्र बाचिसेट्टिके समाधिभरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई १०८ पृ० १२९ ]

३८८-३८९

बनवासि ( उत्तर कनडा, मैसूर )

१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[ यहाँ दो मूर्तिलेख हैं जो १२वीं-१३वीं सदीकी लिपिमें हैं किन्तु अस्पष्ट हैं । एकमें मूलसंघके किसी आचार्यका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २४३-४४ पृ० २८ ]

३९०

बिजापुर ( मैसूर )

शक १२३२ = सन् १३१०, कन्नड

[ इस मूर्तिलेखमें मूलसंघ-निगमावयवके कृष्णदेव-द्वारा शक १२३२, साधारण संवत्सरमें इस मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० १६४ पृ० १३४ ]

३९१

बेलगामे ( मैसूर )

सन् १३१९, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमनु यादवचक्रवर्ति भुजबलवी.....बल्लाल.....

२ षद ९ नेय सिद्धार्थिसंवत्सरद आषाढ शु.....

३ वार व्यतीपात संक्रान्ति शुभदिनद.....

४ (श्री)मद् राजधानिपट्टणं बलिग्रामेय हिरियब-

५ सदिय मल्लिकामोदशान्तिनाथदेवर अष्ट-

६ विधार्च(न)गे श्रीमनु महाप्रधानं सेनाधिपति मल्लि-



- ७ यणदण्डनायकह नागरखण्ड जिङ्गुलिगेयन्तेर-
- ८ डेप्पसुमं दुष्टनिग्र(ह) शिष्टप्रतिपालनं माडुत्तं
- ९ सु(खसं)कथाविनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे पट्टणद अधि-
- १० कारि हेग्गडे सिरियण्णं तच्चंतरालिकेय मूलेवर्त्तमु-
- ११ ख्यवागि हेजुंकडधिकारि चावुण्डरायनुं सोमय्य-
- १२ नुं मज्जेयदे कोप(?)विसदधिकारि मालवेग्गडे इन्तिनि-
- १३ वरुं तंतम्म सुंकमं येत्तिप्पत्तकं सर्वबाधा-
- १४ परिहारवागि सिरियण्णं....आचार्य
- १५ पच्चनन्दिदेवर कालं कचिं धारापूर्वकं माडि कोट्टरु ई धर्म-
- १६ मं प्रतिपालिसिदंगे वारणासिकुरुक्षेत्रदाल्लि साधिर
- १७ कविलेयिं वेदपालरप्प ब्राह्मणगे कोट्ट फल-
- १८ मक्कु

[ यह लेख होयसल राजा वीरबल्लालके राज्यवर्ष ९ सिद्धार्थिसंवत्सर-  
मे आषाढ शुक्लपक्षमे संक्रान्तिके दिन लिखा गया था । राजधानि बल्लि-  
ग्रामेके मल्लिकामोदशान्तिनायदेवकी पूजाके लिए पच्चनन्दि आचार्यको  
कुछ करोंका उत्पन्न दान दिये जानेका इसमें निर्देश है । यह दान हेग्गडे  
सिरियण्ण, चावुण्डराय, सोमय्य और मालवेग्गडे इन चार अधिकारियोंने  
दिया था । इस समय नागरखण्ड और जिङ्गुलिगे प्रदेशपर महाप्रधान  
मेनापति मल्लियणका शासन चल रहा था । बल्लाल द्वितीय अथवा  
बल्लाल तृतीय इन दोनोंके ९वें वर्षमें सिद्धार्थि संवत्सर नहीं था । अतः  
अनुमान किया गया है कि यह बल्लाल ( तृतीय ) के २९वें वर्षके सिद्धार्थि  
संवत्सरका उल्लेख होगा । तदनुसार सन् १३१९ यह इस लेखका वर्ष  
होगा । ]

३६२

कुमठ ( उत्तर कनडा, मैसूर )

शक १२६६ = सन् १३४४, कन्नड

[ इस लेखमें मूलसंघ, देसियगणके विशालकीर्ति राउलके अग्रशिष्य नागचन्द्रदेवके समाधिमरणका उल्लेख है । तिथि श्रावण व० ११, रविवार, शक १२६६, सुभानु संवत्सर ऐसी दी है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३९ पृ० २७ ]

३६३

रायद्रुग ( बेल्लारी, मैसूर )

शक १२७७ = सन् १३५५, कन्नड-संस्कृत

तालुक ऑफिसमें रखी हुई मूर्तिके पादपीठ पर

[ विजयनगरके राजा हरिहरके समय शक १२७७, मन्मथ संवत्सरमें यह लेख लिखा गया । कुन्दकुन्दान्वय, सरस्वतीगच्छ, बलात्कारगण, मूलसंघके अमरकीर्ति आचार्यके शिष्य माघनन्दि व्रतीके शिष्य भोगराज-द्वारा शान्तिनाथकी मूर्तिकी स्थापनाका इसमें निर्देश है । ]

[ इ० म० बेल्लारी ४५८ ]

[ रि० सा० ए० १९१३-१४ क्र० १११ पृ० १२ ]

३६४

होसाल ( द० कनडा, मैसूर )

शक १२७६ = सन् १३५७, कन्नड

[ यह लेख स्थानीय भग्न जिनमन्दिरमें है । इसमें विजयनगरके राजा बुक्कण्ण महारायके जैन सेनापति बैचय दण्डनायकका उल्लेख है । तिथि शक १२७९ विलम्बि संवत्सर ऐसी दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३१-३२ क्र० २८४ पृ० ३१ ]

३९५

## तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

शक १२८३ = सन् १३६१, तमिल

[ इस लेखकी तिथि धनु शुक्ल १३ बुधवार, शक १२८३ शुभकृत संवत्सर ऐसी दी है । इसमें शेम्बादि विल्लवडरैयन्के पुत्र ( नाम लुप्त )-द्वारा अप्पाण्डार् मन्दिरमें दीपके लिए भूमि दान दी जानेका उल्लेख है । यह दान गोप्पण्ण उडैयार्की प्रेरणासे दिया गया था । लेख अप्पाण्डार् चन्द्रनाथमन्दिरके मण्डपकी दीवालमें लगा है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०३ पृ० ६५ ]

३६६

## साविकेरि ( धारवाड, मैसूर )

शक १(२)६८ = सन् १३७६, कन्नड

[ इस लेखमें मार्गशिर व० १(३), बुधवार, शक १(२)९८ नल संवत्सरके दिन बालेयहल्लिके बेलप्पके समाधिमरणका उल्लेख है । उस समय विजयनगरके वीरबुक्करायका शासन चल रहा था । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३३ पृ० २७ ]

३६७

## गेरसोप्पे ( मैसूर )

शक १३०० = सन् १३७८, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं (१) श्रीमद्देव-
- २ जिनेन्द्राय तस्मानंतमहात्मने सर्वबोधविशिष्टाय भव्याकि-  
कुमुदेन्दवे (२) तं वंदे देवदेवं सुरुचि-

- ३ रसनघ्नं चारुकैवहयनेत्रं नित्यं निर्वाणरामाकुचविकिखितकाश्मीर-  
रागं वरांगं तुंगं देवेन्द्रानम्रपा-
- ४ दं गुणविकसदनन्तं हवबोधाम्रतत्त्वं मांगल्यं मन्त्रसार्थं निहत-  
मनसिजं नम्यधर्मस्वरूपं । (३) इदु
- ५ जम्बूद्वीपमंता भरतविषयदोल् पडुव मेरुसिदं.....पदपिन्दा मेरुविं  
दक्षिणदे तुलु कौंगिन्दवी शुद्ध-
- ६ दीपं मुददिं.....तेगु.....वलि पनसं नदीतीरदोल् कौंगु जम्बूसदनं  
चेल्वागि तोकुं
- ७.....बिडार हस्तिममूहं । (४) आ तुलुवाधीशरमणि.....वदनमागि  
तोपुंदु नयदिं नीतियुत गेरसोप्ये सोलि-
- ८ सुतिपुंदु विमवदिंदायमरावतियं । (५) अन्ता नगिरिय राज्य-  
कधीश्वरनेनिसिद मरुलयरसरन्वयसंप्रदायदा-
- ९ यदिं बन्द कीर्तिगे जयस्तंमनेनिसिदं हैवेभूपालन प्रतापवेन्तेने  
सान्द्र.....देमकुन्दोद्गमकुमुदन-
- १० मलमल्लिकाफुल्लमुख्यवृन्दं गंगातरंगतरलहरहासं तारनीहारहारं  
सन्दिदीं चारुकीर्ति.....
- ११ प्रसवदनुनयवैविन.....माल्पुदु श्रीहैवेभूपालन निजयशमं  
बणिमल्ल बल्लना-
- १२ वं दक्षिणमण्डलिक.....निजनिवास.....सल्लक्षण राजराजकटकंगल  
सुरेयना-
- १३ यदे तोण्डमण्डलभूपर मन्दि रक्षिसु हैवेराज वेनुतिपुंदु-
- १४ नलियदे नोलपडं मावनियंकाररतिचक्रद हस्तपराक्रमांकनी  
हैवनृपाल चित्रय-
- १५ शो.....निम्रय दुन्दुमिताडनंगलि जावलिशब्ददिं परिदु दूरदि  
संचरिसुत्तमिपुंदा.....

- १६ ....बेसेव राजहृदयंगलु मिश्रगलाद वदसुतं । श्रीमद्वेव....  
गुरुगुणादभुतमहानागेन्द्रपंचा-
- १७ स्व...सन्दिदं हासद बैहालि महाहाकिनीनामोपद्रवं एल्लवं....  
श्रीपार्श्वतीर्थेश्वरा-
- १८ वासमं श्रीमदनन्तपालंगीगे नित्यं दीर्घायुमं श्रीयुमं भन्ता  
नगिरियपुरवराधीश्वरं मासा....
- १९ वनियंककार मावंगेमलेव रायरगण्ड शिवसिंहासनचक्रवर्ति  
परसालुवदङ्गविभाड कलिगल मुखद....
- २० सम्यक्चूडामणि वसन्तराज्यचातुर्वर्ण्यक्के....हलुव रायरगण्ड  
हैवेभूपालं सुखसंकथाविनो-
- २१ दर्दिं राज्यं गेयुत्तिरलु आ गेरसोप्येय महाजनंगल गुणं-  
गलेन्तेन्दोडे ॥ वृ ॥ अदरोल् नानाजा-
- २२ तिपरदरप्रणी सम्यक्करादो जैनर् पडेवर् जैनमार्गाश्रयजलनिधि-  
संवधितपूर्णचन्द्रर् मुदमं क्रोधादि-
- २३ मू मादुद्वपेकुलनिवर् बिट्टु....रादर्....मुख्यमादधिपनखिल-  
कलावल्लभर् कीर्तिवैत्तरंताता-
- २४ मादण्डाधिपगलु....सहजात कुलक्षत्रियरादरसुगलन्वयमेन्तेन्दोडे  
स्वस्ति समधिगतपंचमहा-
- २५ महिमप्रसिद्धमाद वनवासिपुरवरार्धाश्वरर् बैजयन्ती-मधुकेश्वर-  
लब्धवरप्रसाद मृगमदामोद गोकर्ण....
- २६ महावलेश्वरदिव्यश्रीपादपद्माराधकर परवलसाधकरं हरसिबरुवर-  
शूल निगलंकमल्ल चलदंकराम राय-
- २७ रगण्ड साहसमल्ल गण्डरडावणि सत्यराधेय साहसोत्तुंग  
नारणागतवप्रपंजर पश्चिमसमुद्राधिपतियप्प हैवे-
- २८ क्षत्रियकुलकमलवनमार्तण्ड परनृपतामरस....पूर्णचन्द्रनेनिसिद  
वसवदेवरसरु....देवरसर-

- २९ राज्यलक्ष्मियेनिसिद चन्द्रपुरवेम्ब पट्टणदोलु राज्यं गेय्युव  
कालदोलु भा अरसुगल्लिगे पट्टवर्धनवाहसरनिधो-
- ३० गिगल् जिनसेम्बनुं त्रिशक्तिबलयुतनुं षड्गुणसमर्थनुं राजशत्रिय-  
चतुर्दन्त सोमेश्वरदण्डनायक-
- ३१ न अन्वयद कीर्तियेन्तेन्द्रोडे श्रीसोमदण्डपुत्रनु भासुर कामण्ण-  
दण्डनायकनेनिपं सासनचक्र-
- ३२ वर्ति धर्मधारक सामन्तं कीर्तिवैत्तनमल्लचरित्रं श्रीमत्सोमदण्ड-  
नायकंगे कामार्थं...तावु पुट्टिदर श्रीमद्रामणनेम्ब हेग्गडेय-
- ३३ सुवेम्बीपुत्रसंसेव्यकं रामं पुट्टिदर...दशरथसामर्थ्यदि...यपराजिता-  
रमणिगं साहित्यरत्नाकरमन्ता-
- ३४ रामणनेम्ब हेग्गडे रामकंगे तां पुट्टिदं शान्तं योजणनम्बपुत्र-  
नेनिसल् कुन्तीदेवि समन्तु
- ३५ आपाण्डुरारजंगे तां शान्तं धर्मजनेन्तु पुट्टिद बोला सम्यक्स्व-  
रत्नाकरमन्ता योजणसेट्ठिय जननि रामकनम्बयमेन्तेन्द्रोडे-
- ३६ वसुधेयोलु नेगल्ते...असमैश्वर्यसम्पत्तरं दानगुणसम्पत्तरमप्य  
नम्बिसेट्ठियर तम्मसेट्ठिसहोदररेनिसिद म-
- ३७ ल्लिसेट्ठि होक्कपसेट्ठि...गुणाढ्यरं जैनजनबान्धवरं आ सेट्ठरोक्कगे  
महावननेनिसिद आ होक्कपसेट्ठि-
- ३८ .....
- ३९ ...शककाल...साविरद मुन्नूर...

( अवशिष्ट ६ पंक्तियां पढ़ी नहीं जा सकतीं । )

[ यह लेख शक १३०० मे लिखा गया था । गेरसोप्पेके राजा हैवेय भूपालके शासनकालमे चन्द्रपुरमे बसवदेवरस शासन कर रहे थे । उनके दो मन्त्री सोमण्ण दण्डनायक और कामण्ण दण्डनायक थे । सोमण्णका पुत्र रामण्ण था जिसकी पत्नी रामक्क थी । उनके पुत्रका नाम योजणसेट्ठि

था । इनके कुलके होत्रपसेट्टि तथा नम्बिसेट्टि इन बन्धुओंने दिये हुए दानका विवरण इस लेखमें दिया था । ]

[ ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९५ ]

३६८

हडजन ( मेसूर )

शक १३०(६) = सन् , १३८४, कन्नड

- १ स्वस्ति श्रीमतु शकवरिष १३०.....संवत्सरद
- २ ज्येष्ठ व १ आ । श्रीमतु मैसुनाड.....ह-
- ३ डदनद तंडेयर कुलद बम्मय्यनवर सुपुत्र हिरि-
- ४ य मादण्णनवरु देवरिगे । श्रीमद् रायराजगुरु मंडलाचार्य
- ५ सककविद्वज्जनचक्रवर्तिगलुमप्प सैद्धांतिदेवर प्रियगुड्डि केशवदे-
- ६ ( वि )यरु आ केशत्रदेवियर अक्क मारदेवियरु स्वर्गग-
- ७ तरादरु । अवर निसिदियं माडिसि आ निसिदिय अच्चनेगे वि-
- ८ टं तह क्षेत्र बसदिगे पूर्वदलुल्लगहेथि तेंकण व
- ९ त्तिन असरिसदलु हत्तु खंडुग गहेयनु भाराप-
- १० वंक्कागि नडव हांगे आ हिरिय मादण्णनवरु विट्टदत्ति-

[ यह लेख मण्डलाचार्य सैद्धान्तिकदेवकी शिष्या केशवदेवीकी बड़ी बहन मारदेवीके समाधिमरणका स्मारक है । इस निसिदिकी पूजाके लिए हिरिय मादण्णने स्थानीय बसदिको कुछ भूमि दान दी थी । लेखकी तिथि ज्येष्ठ व० १, रविवार शक १३० ( चौथा अंक लुप्त है ) दी है । तिथि और वारके योगसे यह शकवर्ष १३०६ निश्चित होता है । ]

[ ए० रि० मै० १९३८ पृ० १६४ ]

३६६

इन्दौर म्युजियम ( मध्यप्रदेश )

संवत् १४४२ = सन् १३८६, संस्कृत-नागरी

[ यह लेख शान्तिनाथमूर्तिके पादपीठपर है । इसमें संवत् १४४२ में प्रौढाचार्य श्री महाकोतिका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० १५९ ]

४००

गेरसोप्पे ( मैसूर )

शक १३१४ = सन् १३९२, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघछांछनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य  
शासनं जिनशासनं । जिनगिरियदेशवेम्ब ललनामु-
- २ खक्के बेसेदिपीं गेरसोप्पेगे वर सेज्जेकार सले दण्डिगैय  
छत्रसुचामरालियिं बगेवुगे तोर्प हँवेनृप रामकं....बम्मपु-
- ३ त्रनोब्बणं नेगले सन्नुतनाद जिनचैत्यजिनालय-मन्दिरंवरं  
कलियुगदोल् महापुरुष योजण तन्न मंगल....
- ४ मण समवेन्दु माविसि नितान्त....स्थानमं जिनालयंगलं सले  
माडि गोपुरसुमनोहर....विचित्र....बलर्य अनन्तनाथन पति-
- ५ य....दें कृतार्थनो । अन्ता योजणसेट्टिय प्राणवल्लभेयाद रामकन  
गुणंगलेन्तेन्द्रोडे श्रीमतु सन्....
- ६ तनाथन पदाम्बुमृंगनु यो-
- ७ जणसेट्टि प्र....निनिवरु
- ८ लांग....रम्य....गोत्रचि-
- ९ तामणि पार्थिव....क्षपमेने



- १० दोळ् सस्यधीरोदास....
- ११ सेव रामकनोपिदली भरित्रियोळु
- १२ पतिमळे शीळवति भूनुतचारुचरि-
- १३ त्रे सकलजीवदयापरे सन्ततचतुर्वि-
- १४ भदानदोळ् अतिनिपुणतेयिन्देसेदली
- १५ रामककं । जिनमतवाक्यदोळु
- १६ ....सळे जिनराजपदाब्जभृंगे तां जननुत चार-
- १७ सीले गुण सुव्रत दान पूजेयि
- १८ ....सुखि कामिनीजनशिरोमणि यो-
- १९ ....याप्र निजनामदिं निजकुळोन्नति रामकनोपुतिदंलु ।  
श्रीजिनराजपूजेयोळु श्रीमुनिराजपदाब्जसेवे-
- २० योळु नैजगुणंगलिं विनयदिं मयदिं निजमावतुष्टियिं पूजिसि  
मक्तियिदेरगि तां स्तुतिमादियुं कीर्ति-
- २१ योळिन्तु वणिण....कोण्डी निजनामदि रामकनी भरित्रियोळु  
कमलदलायताक्षि कमलानने कमलसुगन्धि कोमल
- २२ ....विमलकतांगि....रसयुतरी जिनराजपूजेयोळु समरसमावदोळु  
सले माणिकसेट्टिपुत्रि राम-
- २३ कं क्रमगुणहस्तिकवपकतेयं नेरे योपुत्रलो भरित्रियोळु कमला-  
करदोळु कमलिनि कमलदोलं
- २४ कमळे पुट्टुवन्तिरे नागमनमलान्त्रयदोळु रामक विमलगुणामरणे  
पुट्टिदळ् कलियुगदोळु
- २५ रामककन अन्वयमन्तेन्दोडे । हुळिगेरेय पञ्चवस्तिय मुन्दण  
हिरिय अंगडिगे मुख्य-
- २६ वाद किरिय रामसेट्टि आ मदुवलिगे गंगाधि अवर मळलु  
बैचेसेट्टियरु आतन तंगि सोमन्वे

- २७ आ सोमब्बेयनु आ हुळिगेरेय माणिकसेट्टिगे विवाहमादी....  
अवर मगलु नागब्बे
- २८ आकेय तन्दे माणिकसेट्टि समस्तरु आ बैच्चिसेट्टि हुळिगेरेगेळिद  
हन्दिगुळदळि प्र-
- २९ ....आ नागब्बेयनू सलहि हिरिय हन्दिगुळद चन्द्रनाथ-  
स्वामिगल चैत्यालयदोलु पूजे
- ३० आदिके श्रीकार्य नडेवन्तागि वृत्तियनू बिट्टु शासनव हाकिसिदरु  
आ बैचरसियु तम्-
- ३१ म सोसे नागवेयनू गेरसोप्पेय सेट्टि गुत्तवायि भोजेय मग  
माणिकसेट्टियनू तानु विवा-
- ३२ हव माडि आ माणिकसेट्टियनन्वयमेन्तेन्दोडे गुच्छविकय  
नागिसेट्टिय मगलु रामब्बे आकेय पु-
- ३३ अ माणिकसेट्टि माणिकसेट्टिगू नागवेयवरिगू जनिसिद मळलु  
हरिसेट्टि कामण-
- ३४ नेमण्णसेट्टि सरणसेट्टि संगप यिन्तैवरोलगे रामक्कननू गेरसोप्पेय  
रामण हेग्गडेय मंगराज-
- ३५ णन भोजणंगे विवाहव माडि आ वोजण्णसेट्टियू रामक्कनू  
सुत्तसंकयाविनोदर्दि-
- ३६ दिहळिगे गेरसोप्पेय अनन्ततीर्थकरचैत्यालवनारब्धिसि महा-  
प्रतिष्ठेयनू माडिसि
- ३७ धिरुत्तं थिरलु सक वरुस सासिरद मूनूर हदिनात्कनेय  
प्रजापतिसंवत्सर-
- ३८ द कार्तिक शुद्ध पंचमि आदित्यवार सन्यसनसमन्वितवागि  
स्वर्गस्तरादरु....मदवळिगे
- ३९ रामक्कनवर तन्दे मोदलुगोण्डु चरित्रदि नेगळे विक्रमसंवत्सरद  
आषाढ-

४० सुध पंचमि सुक्रवार रोहिणीनक्षत्रदल तुंगसमाधि...

४१ ...आचन्द्रार्कमागि

४२ मूडे मत्तवन वोजण-

४३ सेट्टि...रामक...

४४ निषधिय कल्लिगे मंगल महा श्री

[ इस निषधिलेखमें कार्तिक शु० ५, रविवार, शक १३१४, प्रजापति संवत्सरके दिन योजणसेट्टिकी पत्नी रामकके समाधिमरणका उल्लेख किया है। रामकने गेरसोप्पेमें अनन्ततीर्थकरका मन्दिर बनवाया था। उसका वंशवर्णन भी लेखमें दिया है। रामकके पिता माणिकसेट्टिकी मृत्यु आषाढ़ शु० ५, शुक्रवार, विक्रमसंवत्सरके दिन हुई थी। ]

[ ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९७ ]

४०१

लक्ष्मणपुरकोट ( विजगापटम्, आन्ध्र )

संवत् १४४८ = सन् १३९२, संस्कृत-नागरी

[ इस मूर्तिलेखमें संवत् १४४८ में जिनचन्द्र भट्टारक-द्वारा इस मूर्ति-की स्थापनाका उल्लेख है। इस समय यह मूर्ति वीरभद्र मन्दिरमें है। ]

[ रि० सा० ए० १९११-१२ क्र० ४७ पृ० ५० ]

४०२

संगूर ( चारवाड, मैसूर )

शक १३१७ = सन् १३६५, कलक

[ इस लेखमें जैन मल्लप्पके पौत्र तथा संगमदेवके पुत्र नेमण्ण-द्वारा संगूरके पार्श्वनाथ मन्दिरको भूमि दान देनेका उल्लेख है। विजयनगरके सम्राट् हरिहरके समय गोबाके शासक माधवका यह सेनापति था। नेमण्ण-

के पिताका समाधिमरण पुष्य शु० ११, गुरुवार, युव संवत्सर, शक १३१७ में तथा पितामहका समाधिमरण फाल्गुन व० १४, सोमवार, नल संवत्सर-में हुआ था । ]

[ रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई १६७ पृ० १०७ ]

४०३

गूटो ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

१४वीं सदी, संस्कृत-कन्नड

[ इस लेखमें विजयनगरके राजा हरिहरके समय इरुग दण्डनायक-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका उल्लेख है । कोण्डकुन्दान्वयकी परम्परामें वक्रग्रीव, एलाचार्य, अमरकीर्ति, सिंहनन्दि तथा वर्धमानदेशिकका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२०-२१ क्र० ३२६ पृ० १८ ]

४०४

हम्पो ( बेल्लारी, मैसूर )

शक १३१७ = सन् १३९५, संस्कृत-तेलुगु

[ यह लेख एक जिनमूर्तिके खण्डित पादपीठपर है । तिथि फाल्गुन व० १, सोमवार, भावसंवत्सर ऐसी दी है । शक वर्षके अंक लुप्त हुए हैं । मूलसंघ-बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छके धर्मभूषण भट्टारकके उपदेशसे इम्म-डिबुक्क मन्त्रीश्वर-द्वारा कुन्दनशोलु नगरमें कुन्थुतीर्थकरका चैत्यालय बनवाये जानेका इसमें उल्लेख है । यह मन्त्री बैचय दण्डनाथके पुत्र थे । संवत्सरनामानुसार यह शक १३१७ का लेख प्रतीत होता है । ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ३३६ पृ० ४१ ]

४०५

करन्दै ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

१४वीं सदी, तमिळ

[ यह लेख विजयगण्डगोपालदेवके २०वें वर्षमें लिखा गया था ।  
पोन्नूरके निवासी अरुवन्दे आण्डाल् तिरुच्छोरुत्तुरै उडैयार्-द्वारा इस जिन-  
मन्दिरमें सन्ध्यासमय छह दीप प्रज्वलित रखनेके लिए तीन पलवन्नमाडै  
तथा कुछ चावलके दानका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३८ ]

४०६

हिरैचौटि ( मैसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

- १ नमो वीतरागाय । श्रीमत्परमगंभीरस्वाद्वादामोषलां-
- २ छनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं । सागरवारि-  
वेष्टितसमस्त-
- ३ धरारमणीधनस्तनाभोगविदेम्बिनं विदितविस्तृतसारतराग्रहारदिं
- ४ नागरखण्डपत्रपरिवेष्टनदिं जननेत्रपुत्रिकारागमनित्तु माण्डुदे  
मनस्सु-
- ५ खदं बनवासिमण्डलं । नागरखण्डं बनवासिगागिर्कुं भूषणं-बोलु
- ६ ....गिरेबागि मेरेगुं नागलतापूगवनदिनेसेव तवे सों
- ७ ....नागरखण्ड....सागरमागे तोपुं
- ८ ....सुखकिम्बागि....गे मेरेबुद्दी....ननुजना....सेजिसेट्टि
- ९ ....बसदिय माडिसिदर-इन्तण्णतम्मं हिरिम्बेरु शान्तिजिनेश्वर-
- १० बसदिय माडिसि सन्तोषदिं....सन्तसदिं पडेददं धराचम्प
- ११ ....गुणवार्थिय....पडेदु बालुत्तिरे कलकाळं पुरुषनिधि नाम-

- १२ सेट्टि तन्नय पेम्पि देसेवल्लरसियक्कनुमत मतं  
 १३ पडेदु सुखदि बाल्लुदु स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर भरिराय-  
 १४ विमाड अगलि....भाषेगे तप्पुवरायरगण्ड चतुस्समु-  
 १५ द्राधिपति श्रीवीरबुक्करायमहारायरु राज्यं गेय्युत्तुमि....वि-  
 १६ रोधिसंवत्सर कार्तिकशुद्धतदिगे....वर देवर नि-  
 १७ ....चन्द्रगुड्डिगलुमप्प....शान्तिना-  
 १८ नाथदेवर अमृतपडि नन्दादीप....  
 १९ केरेय केलगे गदे ख ४....  
 २० ....यी धर्ममं प्रतिपालिसु....  
 २१ वारणासि कुरुक्षेत्र....  
 २२ कविलेय-  
 २३ पातकनक्कु श्रीशान्तिनाथ,

[ यह लेख कार्तिक शु० ३, विरोधिसंवत्सरके दिन वीरबुक्करायके राज्यकालमें लिखा गया था । बनवासि प्रदेशके नागसेट्टि तथा सेणिसेट्टि-द्वारा शान्तिनाथमन्दिरके निर्माणका तथा उसमें दीपादि पूजाके लिए ४ खण्डुग भूमि अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मं० १९२८ पृ० ८३ ]

४०७

हले सोरख ( मैमूर )

१४वीं सदी उत्तरार्ध, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंमोरस्याद्वादामोघलांछनं जीयात् त्रे-  
 २ लोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं । अमरावतियलकावति स-  
 ३ ममेनिसुव सोरख तवनिधियुमेंबेरडं समनागि वि-  
 ४ पाक्सिदि सुमनसतरु सद्दंस तवनिधिय ब्रह्माल्यं ॥

५ ....तिगलवेन्तिदंडे नाक....

६ ....युविल....

७ ...बाधि

[ यह निसिधिलेख बहुत खण्डित है। सोरब और तवनिधिके शासक ब्रह्मके समय किसी व्यक्तिके समाधिमरणका यह स्मारक है। मृत व्यक्ति कोई महिला थी क्योंकि लेखके पाषाणपर एक स्त्रीमूर्ति उत्कीर्ण है। ]

[ ए० रि० मै० १९४२ पृ० १७९ ]

४०८

तवनन्दी ( मंसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

- |                            |                        |
|----------------------------|------------------------|
| १ जिनहं जिनमुनिगलु मत्तनु- | २ पम प्राणीश हरियन-    |
| ३ दन नेनदुं वनजाक्षि महा-  | ४ लक्ष्मयु वनतर शौर्य- |
| ५ दोलुमसिथोल् स-           | ६ ले पायिदलू           |
| ७ महालक्ष्मय सद्गुण-       | ८ समुद्रोपमान ॥ मं-    |
| ९ गलमहा श्री श्री          |                        |

[ इस लेखमे महालक्ष्मी नामक किसी महिलाके अग्निप्रवेश-द्वारा मरणका उल्लेख है। जिन, मुनि और अपने पति हरियनंदनका स्मरण करते हुए उसने धैर्यपूर्वक प्राणत्याग किया था। लिपि १४वीं सदीकी है। ]

[ ए० रि० मै० १९४२ पृ० १८५ ]

४०९

तलकाड ( मंसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख द्रविल संघ-नन्दिगणके कमलदेवके शिष्य लोकाचार्यके समाधिमरणका स्मारक है। लिपि १४वीं सदीकी है। यह लेख वैकुण्ठ-नारायणमन्दिरकी दीवालमें लगा है। ]

[ ए० रि० मै० १९१२ पृ० ६३ ]

४१०

मत्तावार ( मंसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

- १ मरुलजिन जकवेहट्टि चटवे-
- २ गन्ति मत्तवूर बसदि तपसु
- ३ माडि सिद्धि आदलु अबेय मा-
- ४ चरन मग मार कल्ल निळिसि-
- ५ द

[ यह निषिधिलेख मरुलजिन-जकवेहट्टि नामक ग्रामकी निवासी चटवेगन्तिके समाधिमरणका स्मारक है। उसका मृत्यु मत्तवूरकी बसदिमे हुआ था। अबेय माचरके पुत्र मारने यह स्मारक स्थापित किया था। लेखकी लिपि १४वीं सदीकी प्रतीत होती है। ]

[ ए० रि० मे० ९९३२ पृ० १७१ ]

४११

हुलेकल ( उत्तर कनडा, मंसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख १४वीं सदीकी लिपिमें है और बहुत घिसा है। इसके प्रारम्भमें जिनशासनकी प्रशंसा है तथा बादमें किसी मठमें आहारदान आदिके लिए कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० ई० क्र० २१ पृ० २२९ ]



४१२-४१३

कोनकोण्डल ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

१४वीं सदी, कन्नड

[ ये दो लेख १४वीं सदीकी लिपिमें रसासिद्धलगुट्ट नामक पहाड़ीपर पाषाणोंपर खुदे हैं । इनमें बिप्पगिरिके श्रीविद्यानन्दस्वामी तथा बोलय नागका उल्लेख हुआ है । अक्षर कुछ अस्पष्ट हुए हैं । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५२-५३ ]

४१४

उद्गरि ( मैसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादा-
- २ मोघलांछनं । जोयात् त्रैलोक्यना-
- ३ थस्य शासवं जिनशासनं ॥ स्वस्ति श्रीमतु
- ४ .....विजयकीर्तिभटारर....

[ यह लेख खण्डित है इसलिए विजयकीर्तिभटार इस नामके अतिरिक्त अन्य विवरण इससे प्राप्त नहीं होता । लिपि १४वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९२९ पृ० १४२ ]

४१५

सक्करेपट्टण ( मैसूर )

संस्कृत-कन्नड, १४वीं सदी

१ ....

- २ तस्मिन् सेनगणान्तरिक्षतरणिः श्रीवीरसेनो भुवि संसाराम्बु-  
चितारणैकतरणिः श्रेयोवनीसारणो । तच्छिष्यः प्रचुर-

- ३ प्रबन्धरचनाचातुर्यपद्मासनः पायाद् वो जिनसेन इत्थमिधया  
ख्यातो मुनिग्रामणीः । (१) श्रीमत्पुस्तक-
- ४ गच्छसुरसदृशो विश्वप्रकाशात्मकस्त्रैविद्यो गुणमद्रदेवयतिपः  
श्रीसूरसेनस्ततः (१) शिष्यः श्रीकमलादिमद्रगणभृद् दे-
- ५ वेन्द्रसेनस्ततः । तेनाकारि कुमारसेनमुनिपो वादीन्द्र-चूडामणिः  
(२) तच्छिष्याः हरिसेनदेवादयः । मा-
- ६ धुर्य वाचि कारुण्यं हृदि तीव्रं तपस्ततः । श्रीप्रमाकरसेनाख्य-  
गुरुश्रेयो विराजते । (१३) तत्पद्मादय-
- ७ शैलतिग्मकिरणस्त्रैविद्यपारंगतो भूपालार्चितपादपंकजयुगः  
श्रीलक्ष्मिसेनो मुनिः (१) लोकं सत्त-
- ८ पसां निधानमनघं कारुण्यवारांनिधिः दाने कल्पकुजोपमो  
विजयते कामेककण्ठीरवः । (४)
- ९ श्रीमदनसेपुमुनिपो सज्ज्ञानामृतपयोधिपूर्णेन्दुः (१) सुदृढतपोगुण-  
युक्तो भाति श्रीमत्प्रभा-
- १० करार्यसुतः । (५) द्वीपितटाकनामनगरीपति शंखजिनेन्द्रचन्द्र-  
मश्रीपादपंकजालिरमकाम-
- ११ रकीर्तिमुनीन्द्रपादसेवापरिपक्वबुद्धि बलगारसमाह्वयवंशपञ्च-  
तारापति रंजिपं स्वजनकं-
- १२ जनमोमणि वैश्य मायणं । (६) गुणतुंगं होल्लराजं पितृ गुणवति  
देवमाख्येतन्नन्त्येयु-
- १३ द्यद्गुणरत्नं नागराजं परिक्रिपोडे पितृव्यं गुणैकाग्र्यं माकणन्  
भारमीयानुजं तानेनिपगणित-
- १४ सौभाग्यदिं मायदिं धारिणियोल् विख्यातिवेत्तं जिनसमय-  
सरस्सारसं मायणार्थं । (७) मतं लोकै-
- १५ कमित्रं प्रचुरतरकलावल्लभं वन्दिवृन्दोत्करपुण्यत्-कल्पभूजं  
बुधनुतचरितं वाक्परं

- १६ काव्यगोष्ठि-सरसं विद्विष्टशैकाशनि सुरपुरमोदकान्तगल मीन-  
केतुद्वर रूपं सद्गुणोदग्र-
- १७ हमयन् एनल् आश्चर्यमे मायणार्थं । (८) इन्तु 'होब्सक-  
भूविभुलक्ष्मीलपनमुं
- १८ श्रीवीरबुक्कराजसाम्राज्यरमारमणीयविलासदर्पणोपमं एनिसि  
सोगयिसुव होसपट्टणदोलु प्रसिद्धिबडेद बै-
- १९ इय मायण माकप्पगलु न.....दवागि माडिद श्रीलक्ष्मीसेन-  
मटारकर निषधिय प्रतिष्ठे शासन मंगल महा श्री श्री श्री श्री श्री

[ यह निषिधिलेख सेनगणके लक्ष्मीसेनभट्टारककी मृत्युका स्मारक है ।  
इनकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी - वीरसेन - जिनसेन - गुणभद्र त्रैविच- !  
देव - सूरसेन - कमलभद्र - देवेन्द्रसेन - कुमारसेन - हरिसेन - प्रभा-  
करसेन - लक्ष्मीसेन । लक्ष्मीसेनके गुरुबन्धु मदनसेन थे । यह निषिधि  
बलगार वंशके मायण तथा माकण नामक दो वैश्यों-द्वारा स्थापित की  
गयी थी । ये होसपट्टणके निवासी थे । यह नगर होयसल प्रदेशमें था  
तथा वीरबुक्कराजके राज्यके अन्तर्गत था । ]

[ ए० रि० मै० १९२७ पृ० ६१ ]

४१६

तेरकणांबि ( मैसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

- १ स्वस्ति श्रीमूलसंघ देशियगण पुस्तक-
- २ गच्छ कौंडकुंदान्वय इनसोगेय बलि-
- ३ य राजगुरु ( मंड ) छाचार्यरुमप्प ( सम )-
- ४ यामरण ललितकीर्तिमट्टारकर माडिसिद
- ५ ( प्रतिमे ) मंगल महा श्री श्री श्री

[ यह लेख पादबर्नाथमूर्तिके पादपीठपर है । इस मूर्तिकी स्थापना मूलसंघ-हनसीमे बलिके ललितकीर्ति भट्टारकने की थी । लिपि १४वीं सदी की है । ]

[ ए० रि० मै० १९३४ पृ० १६९ ]

४१७

तगडूर ( मैसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

- |                        |                        |
|------------------------|------------------------|
| १ ( कों ) डकुन्दान्वय  | २ ( सू ) लसंघ नागनन्दि |
| ३ (अन)न्तमट्टारकशिष्य  | ४ नन्दिमट्टारकरशि-     |
| ५ ....यस्तगडू          | ६ ....यिल्लेकन्तिय(र्) |
| ७ (स)न्यसनंगेरुदु सुर- | ८ (लोकक्के) सन्दर्     |

[ इस निसिधिलेखमें मूलसंघ-कोण्डकुन्दान्वयके नागनन्दि भट्टारकके शिष्य नन्दिभट्टारककी शिष्या ....यिल्लेकन्तिके समाधिमरणका उल्लेख है । पाषाण टूटा होनेसे कुछ अक्षर नष्ट हुए हैं । लिपि १४वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९३८ पृ० १७३ ]

४१८

चामराजनगर ( मैसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

- |                      |                  |
|----------------------|------------------|
| १ श्रीमूलद संगद का-  | २ णूरगणद अन-     |
| ३ न्तकीर्तिदेवर गुडु | ४ बोप्पय सन्ध-   |
| ५ सनविधिधिं          | ६ ....(स्व)गँस्त |

[ इस लेखमें मूलसंघ-काणूर गणके अनन्तकीर्तिदेवके शिष्य बोप्पयके समाधिमरणका उल्लेख है । लिपि १४वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९३१ पृ० ११२ ]

४१६

माविनकेरे ( कडूर, मैसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

- १ स्वस्ति श्रीमत्तु मन्मथसंवत्सर प्रथम श्रावण शु । गुरुवार पुष्य-  
नक्षत्रदत्तु श्रीचंद्रनाथन चैत्याकषदत्तु
- २ तोलहरवल्लिब धनसकसेट्टितिब मग आदिसेट्टिब येरमिसिद  
चतुर्विंशतितोर्थकरप्रतुमेयनु बिरिसि कु-
- ३ तार्थ नादेनु मद्र छुमं मंगलं भूवात् पुनर्दर्शनं शुभं मंगल महा  
श्री श्री श्री

[ इस लेखमें चतुर्विंशति तीर्थकर मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है ।  
अनंतकसेट्टितिके पुत्र आदिसेट्टिने यह मूर्ति स्थापित की थी । तिथि प्रथम  
श्रावण शु० (?) मन्मथ संवत्सर ऐसी दी है । लिपि १४वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९४६ पृ० ३७ ]

४२०

गेरसोप्पे ( मैसूर )

शक १३२३ = सन् १४०१, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं जी-
- २ यात् त्रैलोक्यनाथस्य शामनं जिनशासनं
- ३ नगिरिय कुलचक्रवर्ति.....राजनिर्जित....
- ४ ला सामन्तर बलियं यिन्ता होन्नभूपनलियं....आ साम-
- ५ न्तन पुत्रनर्थिकामं कोमल....मरसं भरितृपालनातन....
- ६ दे....धर चारुकीर्तिपण्डित....सद्गुरुप्रभु आ कामनृपालन मान
- ७ योजि राज्यमे नगिरियुमनितुं तनगागे बैचणभूपति म....
- ८ नेगलद् रिपुसैम्य....नवर....न पदसरसि....जिनमुनिपादांबुजात्  
....नृपाल

- ६ बैचणसेट्टि परिणतान्तस्करणमन्तप्य हैवेरायन प्रतापवेन्-
- १० तेन्दोडे स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर.....नियमोसरगण्ड.....  
प्रताप....
- ११ सूरकार सिवसिंहासनचक्रवर्ति निर्लिपपुरवरा-
- १२ धीइवरनेनिप बैचिराजं राज्यं गयिवलि शकवरुष
- १३ १३२३ नेय विक्रमसंवत्सर माग शु १ मन्दवारद
- १४ रात्रियोलु हैवेराजन अलिय मंगराजनु स्वर्गस्थनाद श्रीजि-
- १५ नराजराजितपदाम्बुजभृंग.....कीर्तियिन्दी जगदोलो-
- १६ ...वलमोप्पुव दानियु हैवेभूपन राजिय पट्टदानेयं...
- १७ ...गोविजनरह विक्रमसं.....नगिर मंगनृपं सुरलोक-
- १८ केय्दिदं.....विसुद्धरप्प मत्त.....राजं जिनमतांबुधिहिमकि-
- १९ रणं नगिरपुराधीश मंगरसंगं राजसञ्जत
- २० ...रतिपञ्चबाणनस.....श्रीमंगभूपालकं हिमरुक
- २१ ...श्री.....विक्रमसंवत्सरद माघमासद....
- २२ लु.....सुरांगनारमण....
- २३ जीयेम्बिनं....
- २४ ...ससिमिते श्रीविक्रमा....
- २५ काल्यस्थे देवप्प.....सूभे पक्षे वल-
- २६ क्षे मन्दवार....
- २७ सुरपदमं....

[ यह लेख गेरसोप्पेके राजा हैवेरायके जामात नगिरपुरके प्रमुख मंगरसकी मृत्युकी स्मृतिमें लिखा गया था । इसकी तिथि माघ शु० १, शनिवार, शक १३२३ विक्रम संवत्सर यह थी । लेखका बहुत-सा भाग घिस गया है । इसके पूर्वभागमें होत्र राजा तथा बैचणसेट्टिका उल्लेख है । उनका मंगरससे क्या सम्बन्ध था यह स्पष्ट नहीं है । ]

[ ए० रि० मै० १९२८ पृ० १०० ]

४२१

सककरेपट्टण ( मैसूर )

शक १३२८ = सन् १४०५, कन्नड

- १ श्रीमत् परमगंभीरस्याद्वादामोवलांछनं (१) जीवात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशामनं (११) .
- २ श्रीमद् रायराजगुरु मण्डलाचार्य.....पुरविक्रमादित्य मध्याह्न-
- ३ कल्पवृक्ष सेनगणाग्रगण्यरुमप्य श्रीमल्लक्ष्मीसेनभट्टारकरवर श्रीमत् श्रीमानसेनदेवर निषिधि शकव-
- ४ र्ष....१३२८ नेय पार्थिव संवत्सर १० लु
- ५ श्रीमुत्तद होसऊर बैचसेट्टिय मक्कलु मायसेट्टि वोम्मिसेट्टि नागणसेट्टि अवर मोम्मक्कलु बैच-
- ६ शेट्टिय तम्मसेट्टि कोवरिसेट्टि चिक्कबैचसेट्टि मादिसेट्टियर मक्कलु कोवरिसेट्टियरु

[ यह लेख सेनगणके भट्टारक लक्ष्मीसेनके शिष्य मानसेनदेवकी समाधि-का स्मारक है । यह निषिधि मुत्तदहोसऊरके बैचसेट्टिके पुत्र मायसेट्टि, वोम्मिसेट्टि आदिने शक १३२७ में स्थापित की थी । ]

[ ए० रि० मै० १९२७ पृ० ६२ ]

४२२

कोरग ( द० कनडा, मैसूर )

शक १३३१ = सन् १४१०, कन्नड

[ यह लेख केरवसेके राजा सान्तर वंशीय वीरभैरवके पुत्र पाण्ड्य-भूपालके समय पुण्य शु० १०, गुरुवार, शक १३३१, सर्वधारि संवत्सर-का है । इसमें बलात्कारगणके वसन्तकीर्तिराउलकी प्रार्थनापर बारकूल्की बसदिके लिए राजा-द्वारा कुछ भूमिके दानका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५३० पृ० ४९ ]

४२३-४२४

भटकल ( उत्तर कनडा, मैसूर )

शक १३३२ = सन् १४१०, कन्नड

[ ये दो लेख हैं । कार्तिक शु० १०, सोमवार, शक १३३२ सर्वधारी संवत्सर, यह इनकी तिथि है । एकमे संगिराव ओडेय-द्वारा उनके किसी सम्बन्धित मल्लिराय नामक व्यक्तिके समाधिमरणपर निसिधिकी स्थापना-का उल्लेख है । दूसरेमें किसी राजकन्याके समाधिमरणपर निसिधिरस्थापना-का उल्लेख है । इसमें हैवभूप, भैरादेवी तथा संगिरायका भी नामोल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० ३३९-४० ]

४२५

लक्ष्मेश्वर ( मैसूर )

शक १३३४ = सन् १४१२, कन्नड

[ यह लेख विजयनगरके देवराय महारायके समय मार्गशिर शु० २, रविवार, नन्दन संवत्सर, शक १३३४ को लिखा गया था । शंखबसतिके आचार्य हेमदेव तथा सौम्यदेव ( शिवमन्दिर ) के शिवरामय्य-द्वारा दोनों मन्दिरोंकी भूमिकी सीमाके बारेमें कुछ विवादका समझौता किये जानेका इसमें उल्लेख है । यह कार्य नागण्ण दण्डनायक-द्वारा सम्पन्न हुआ था । ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ३३ पृ० १६३ ]

४२६-४३०

टोंक ( राजस्थान )

संवत् १४७० = सन् १४१३, संस्कृत-नागरी

[ ये ५ मूर्तिलेख हैं । मूलसंघके आचार्य प्रभाचन्द्रके शिष्य पद्मनन्दिके उपदेशसे खण्डिल्लवाल कुलके कुछ व्यक्तियों-द्वारा ज्येष्ठ शु० ११, गुरुवार, संवत् १४७० को ये मूर्तियाँ स्थापित की गयी थीं । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४६६-७० पृ० ६९ ]



४३१

मुक्तगुन्द ( धारवाड, मैसूर )

शक १३४२ = सन् १४२०, कन्नड

[ यह लेख वैशाख शु० १४, रविवार, शक १३४२, शार्वरी संवत्सर-  
का है । इस समय रायराजगुरु हेमसेनके शिष्य बुल्लिसेट्टिका समाधिमरण  
हुआ था । ]

[ रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० ९५ पृ० ८ ]

४३२

मुक्तगुन्द ( धारवाड, मैसूर )

शक १३४३ = सन् १४२१, संस्कृत-कन्नड

[ यह लेख चन्द्रनाथबसदिमें है । इसकी तिथि भाद्रपद शु० ९,  
शुक्रवार शक १३४३ प्लव संवत्सर है । इस समय स्वरटोरके तिलकरसके  
मन्त्री हेगडे मदुवरसके पुत्र नागरसकी मृत्यु हुई थी । ]

[ रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० ९४ पृ० ८ ]

४३३

गेरसोप्पे ( मैसूर )

शक १३४३ = सन् १४२१, संस्कृत-कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघकांडनं । जीवात् त्रैलोक्य-  
नाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ श्रीजम्बूद्वी-
- २ पमध्यस्थितजनसर...स्मरणबाम्बंकृतआयर्...तद्धर...जिनपद-  
पद्मभृंग...स्तमित...जायातं पत्तनं त्यक्तपदं

- ३ ....त्रैविद्यवल्ली....मुक सुलभरारम्य....स्थितजिनेन्द्रपादयुगपद्म-  
शृंगा संसा-
- ४ १....माडिध....तेसेद....दुदुभूजरे-
- ५ द्रः तदीयवंशोद्भवमंगभूपो साहित्यलक्ष्मी....भामाति लक्ष्मी  
जिनमंदिरेषु कामं कामितदायकः कन-
- ६ रुट् कन्दर्पसर्वप्रियः कल्याणकलनानन्त....श्रीमंगभूपस्य जिनेन्द्र-  
पादद्वयपद्मगन्धमिलद्भृंगोभवत् सन्ततं
- ७ तदीयवंशसंभूतः केशवाख्यः क्षितांश्वरः वशीकरोति सहसा  
वन्दिगोहेषु सम्पदं....मुपासितुं भवतु ते गात्रं हि-
- ८ माद्रीकृतं । श्रीमत्केशवभूमिपालचरितं श्रुत्वा स्तुवन् किन्नरैः  
तोषाकम्पितशंभुमौलिविलसद्गंगातरंगास्पदं आश्रयाशो दह-  
त्यागु स्वाश्रयं स्वतनाथ सा ( ? स्वीयतेजसा )
- ९ केशवेन्द्रप्रतापाग्निः नाश्रयं तापयत्यहो । केशवेन्द्रगुणान् वक्तुं  
को वा शक्नोति पण्डितः आकाशस्थितनक्षत्रगणना केन मुच्यते ॥  
वर्धमानान्वयोद्भवो निर्धूताश्रित-
- १० दरिद्रे निजपत्तिनियमांतर्धियुते होन्नबरसि विशुद्धात्मिके आने-  
वलिगे तिलकमेनिक्कुं १ आ होन्नबरसियरसं श्रीहैवनृपं  
जिनक्रमांबुजशृंगं बाहुबलनिर्जितरि-
- ११ पुभूषं साहससमुद्रनमिनवकामं । तथोरभून्निर्मलजकबरसी  
नुता सुशीला जिनभक्तियुक्ता तं चोपयेमे वरमंगभूपो जामातृवर्यो  
भुवि है-
- १२ वराजः अनिन्दादपि निर्गन्तुं भीरवः खलु योषितः मंगभूपाल-  
कीर्तिस्तु कामिनीवातिलंघिनी तथोरभूतां जिननाथनम्रौ मात्रा  
पुनीताखिलजैनल....

- १३ धात्रीव हैवणश्री...माबलरसो समूर्जिताह्वानयुता सुशीला  
श्रीमन्नन्नलिम्प - मौलिविलसन्माणिक्य...स्पर्धुतिपादपद्म -  
नखर श्रीपाश्वर्वा-
- १४ येन तु कामं मंगरसात्मजो गुरुगुणश्रीहैवणाख्योभवत्...  
जैनयोगिनिकर साहित्यरत्नाकर श्रीमद्भातुनितम्बनीव  
नितरां...नृपालकृता भू-
- १५ मौ भूतिगुणोजमास्करलसत्प्रत्यग्रभासान्विता कामं मंगनृपा...  
गुरुदया देवी...श्रीमावलांबा...सुधासूतिद्युति प्रत्यहं १ कं ।
- १६ आ माबलरसियरसं भूमीशविनम्रपाद केशवभूषं कामारिमसित-  
मस्तकसोमद्युतिकीर्ति को...सुरलोकद सुरतरुविन गुरु-
- १७ लमं मेदुदु तृप्तिविल्लदे सुररं धरेयोल् भूसुररादरु वरकेशवभूप-  
कल्पभूजस्पर्धुति माति...कीर्त्या श्रीकेशवक्षमापतिरप-
- १८ रांभुधितोरगा जिनपतिश्रीपादपद्मानता भूमौ भाविजिनेन्द्रचन्द्र-  
विलसत्चारित्रनु...रागोदया संसारसारोदया ।
- १९ त्र्यब्ध्यग्न्यैकसमन्विते शककृते आशावरोवत्सरे माघे मानित-  
पंचमीतिथियुते श्रीसौम्यवारे सिते पक्षे...आदिराजवनिता  
धर्माभिधाने पुरे कामं कारयति स्म
- २० जक्यबरसी पाश्वप्रतिष्ठां मुदा । अनन्तरं । नगिरद राज  
होन्नरसनन्वयवाधिगे चन्द्रं सले तां सोगयिप हैवैभूपनलियं  
कलिकालद
- २१ कर्णनेम्बरी जगदलु मंगभूवरन बान्धवे तंगलेदेविनन्दनं  
नगेमोगदा कल्पभूज केशवरायनु कीर्तिवल्कलं । कं । अन्ता  
नगिरद राज-
- २२ र सन्तानाब्धिषोलु लक्ष्मीमाणिकदेवीकान्तनू पुनिपवीरायगे  
कन्तुविलन्तुदयिसिर्द संगनृपालं संगविदूर क्षेमपुरतीर्थजनेन्द्र  
पाद-

- २३ पद्मकं शृंगजजीयनालजनु अम्भमहीशव पुत्र संसमं...तन्म  
मनमोल्बन्तीधर्मवं माडि पूर्वदोल् पिगिद धर्मवेक-
- २४ वनु पालिसिदं रविचन्द्ररुक्मिनं । अन्ताधर्मप्रतिपत्तकनेनिप  
श्रीसंगभूपालं सुखादि राज्यं गेयुसिरल्ल खिलेयोल्ल कुम्तलनाडु  
करं रंजि-
- २५ से पश्चिमनाडु देशदोल् कलवे वापी कूप नदी मामरनिं  
पनसीले बाळेयिं बाळेयिं बलसिकोण्डु कोकमिधुवमोदलागर-  
कल्लियारवेगल नडवोप्पु
- २६ वी पुरबनालुवन् अज्जनुपाकवेम्भवं । बिरुन्दूरधिपति तां  
करमोप्पुव अडिबरवळिथिं करमेसेवन् तम्मरस...बलिबं कीर्ति-
- २७ वेसना तम्मरसं । आ तम्मरसनप्रजेय तनजं धरेयोल् इल्लूर  
भूसुरनुत कल्लरसननुजे तंगदेविगे वरनेनिप हैवेयरसन वरपुत्रं प-
- २८ अणरस जैनपदमत्तं । आ पञ्चणरसन् आसनप्रजे जक्कल-  
देविय...तन्दे हैवणरसरु पाश्वर्तीयेश्वर...माडिद नित्यपूजे-
- २९ आहारदानमोदलाद (वु) मेळ्ळवं पुरो...दिगे सळिसि मुन्निन  
धर्मवेळ्ळवं नेरमाडि बळिळ तन्नोल्ल सन्नुतबुद्धि पुट्टे जिनन्द्र-  
नभिणेकनु नित्यपू-
- ३० जनं मुन्नेसेवन्नदानमोदलाद्वनुं पिरिदायि माडि...लृप्तिविन्दो-  
किदु पञ्चरसं मिगे कोट्ट वृत्तिवं । श्रीपाश्वर्तीयेश्वरद श्रीकायं-
- ३१ वकेयू अंगमोगचैत्यालयद जीर्णोद्धारक्के धारापूर्वकवागि कोहन्ता  
वृत्तिय विवर हैवणरसरु तालु मूळवागि आकुतिदं कोषुवणिग-
- ३२ लि कंगन कुळिष इन्नेरडु मूढे सुनिगे सीमं मूळलु अभिन-  
सेट्ठितं हित्तक गदे तैकलु हरिडु कोडि गाडि पडुबल्लु तम्मरसर  
होसगद्देयलु थिक्किद कल्लुगाडि
- ३३ बडगलु हीलेयभागे यडिबिम्बी चतुस्सीमेविदोळ्कगुल्ल ककवेय  
समस्तवृत्ति पञ्चरसरु तालु मूळवागि आलुचैद होन्नमव केरेव

३४ ....मेळे येसि होन्नाबरद नाळकुवरे होन्तन् तम्म अम्म तंगल-  
देवियरिगे पुण्यार्थ परिहारमागे बिहुडु हैवण्णरसह त-

३५ म्म मनःपूर्वकवागि कोट्टु सर्वमान्यवागि मूळस्थळवागि तावु  
आलुत्तं यिहुं....चडेय मजन वृत्तिगे गडि मूडलु होळे तेंकलु  
होळे गडि पडुवलु

३६ .....

३७ ....समस्तवृत्तियन् आहारदानवकवागि याचन्द्रार्कवागि

३८ धारापूर्वकं माडि कोट्टु मत्तु आहारदानवके या चित्पालयद....  
गृह

[ इस लेखमें पद्यणरस-द्वारा पार्श्वतीर्थकरमन्दिरके लिए ४ होन्नु क्रीमतकी भूमि दान दिये जानेका निर्देश है। पद्यणरसकी माता तंगलदेवी तथा पिता हैवण्णरस थे। उसकी बही बहिन जवकलदेवी थी। तंगलदेवी-का बन्धु कल्लरस था जो इधुवन्दूरके शासक तम्मरसका भानजा था। यह कुन्तलनाडुके राजा अज्जका जामाता था। अज्जका समकालीन राजा संग था जो अम्बराजाका पुत्र था। अम्बका पिता संग था जो अम्बीराय और माणिकदेवीका पुत्र था तथा राजा केशवका वंशज था। केशवकी पत्नी माबलरसि मंग राजाकी कन्या थी। मंगकी पत्नी जवकम्बरसि हैवण और होन्नबरसिकी कन्या थी। इस दानकी तिथि माघ शु० ५ बुधवार, शक १३४३, शार्वरी संवत्सर ऐसी दी है। ]

[ ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९३ ]

४३४

उडिपि ( द० कनडा, मैसूर )

शक १३४६ = सन् १४२४, संस्कृत-कन्नड

[ यह लेख ( ताम्रपत्र ) विजयनगरके देवरायमहाराजके राज्यकालमें पुष्य शु० ६, बुधवार, शक १३४६ क्रोधि संवत्सरके दिनका है। इसमें  
२०

मूलसंघ-बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छके वर्धमान भट्टारककी प्रार्थनापर राजा-द्वारा वरांग नामक ग्राम नेमिनाथमन्दिरको अर्पित किये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ए १२ पृ० ५ ]

[ इस ताम्रपत्रकी प्रतिलिपि वरांग ग्रामस्थित नेमिनाथबसदिमें एक पाषाणपर उत्कीर्ण है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२५ पृ० ४९ ]

### ४३५

**माण्डू** ( धार, मध्यप्रदेश )

( संवत् ) १४८३ = सन् १४२६, संस्कृत-नागरी

[ इस लेखमें सम्भवनाथकी मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । तिथि ( संवत् ) १४८३, वैशाख ( चैत्र ) शु० ५, गुरुवार ऐसी दी है । ] \*

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १८२ पृ० ४४ ]

### ४३६

**बसरूर** ( दक्षिण कनडा, मैसूर )

शक १३०३ = सन् १४३१

[ यह लेख देवराय २ के राज्यमें शक १३५३ में लिखा गया था । इसमें जैन मन्दिरके लिए बसरूरके चेट्टियों-द्वारा वहाँके बाजारमें आनेवाली चावलकी हर गाड़ीपर एक 'कोलग' दान दिये जानेका उल्लेख है । ]

[ इ० म० दक्षिण कनडा २७ ]

४३७

कुण्णत्तूर ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

शक १३६३ = सन् १४४१, तमिल

[ यह लेख ऋषभनाथबसदिके पूर्वी दीवारपर खुदा है। कुण्ण ( कुण्णत्तूर ) के अर्हत्-मन्दिरका निर्माण शक १३६३ में होनेका इसमें वर्णन है। ]

[ रि० सा० ए० १९४१-४२ क्र० १०३ पृ० १४० ]

४३८

बदनोर ( भीलवाडा, राजस्थान )

संवत् १(४)६७ = सन् १४४२, संस्कृत-नागरी

[ इस लेखमे संवत् १(४)९७ में शान्तिनाथका उल्लेख किया गया है। ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४५० पृ० ६७ ]

४३९

कुण्डघाट ( जि० मोघोर, बिहार )

संवत् १५०५ = सन् १४४६, संस्कृत-नागरी

मग्न मन्दिरमें एक महावीरमूर्तिके पादपीठपर

[ इस लेखमे संवत् १५०५ फाल्गुन शु० ९ को महावीरमूर्तिकी स्थापनाका निर्देश है। ]

[ रि० इ० ए० क्र० ८ (१९५०-५१) ]

४४०-४४१

बैन्दुर ( ८० कनडा, मैसूर )

शक १३(७)१ = सन् १४२०, कन्नड

[ यह लेख विजयनगरके मल्लिकार्जुन महारायके समय चैत्र शु० १०, गुरुवार, शक १३(७)१ शुक्ल संवत्सरका है। इस समय बैन्दुरके पार्श्वनाथ बसदिके लिए कुछ लोगों-द्वारा दिये हुए दानोंका विवरण इसमें दिया है। देवप्प दण्डनायकका भी उल्लेख है। इसी समयका दूसरा लेख यहीं है। इसमें हाडुवलिय राज्यके शासक संगिराय ओडेयके पुत्र ईंगरस ओडेयके समय पार्श्वनाथबसदिको प्राप्त दानोंका विवरण है। ]

[ रि० सा० ए० १६२९-३० क्र० ५३६-३७ पृ० ५३ ]

४४२

चित्तलद्रुग ( मैसूर )

शक १३८५ = सन् १४६३, कन्नड

१ सखवरुस १३८५ सोमकृति सं-

२ वल्लरद कतिकसुध १५ आकिय मं-

३ गिसेट्टिय मग गुम्मिसेट्टियर नि-

४ स्तिगे श्रीवीतराग

[ यह एक निसिधिलेख है। आकिय मंगिसेट्टिके पुत्र गुम्मिसेट्टिके समाधिस्मरणका यह स्मारक है। तिथि कार्तिक शु० १५, शक १३८५, शोभकृत संवत्सर इस प्रकार दी है।

[ ए० रि० मै० १९३९ पृ० १०४ ]



४४३-४४४

चित्तलङ्गुग ( मैसूर )

१५वीं सदी ( सन् १४७२ ), कन्नड

१ नन्दन सं २ बाचण्णगळ ३ निस्तिगे

[ यह निसिधिलेख बाचण्णके समाधिमरणका स्मारक है । १५वीं सदीकी लिपिमें नन्दन संवत्सरका उल्लेख है अतः सन् १४७२ का यह लेख होगा । यहीँका एक अन्य लेख इसी समयकी लिपिमें है जिसमें गुम्मटदेवकी निसिधिका उल्लेख है । यथा-

१ सख्खरु - २ आसाडसु ३ (गु) मटदेव

इसमें तिथिके अंक लुप्त हो चुके हैं । ]

[ ए० रि० मै० १९३९ पृ० १०४-५ ]

४४५

गुरुबयनकैरे ( द० कनडा, मैसूर )

शक १४०६ = सन् १४८४, कन्नड

[ इस लेखमें शक १४०६ मे नरसिंह बंग-द्वारा कन्नडिवसदि नामक जिनमन्दिरको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४८१ पृ० ४५ ]

४४६

बिदिकूर ( शिमोगा, मैसूर )

शक १४१० = सन् १४८८, कन्नड

१ स्वस्ति स (क) वरिष १४१० नेय प्लवंग संवरद जेट सुए

पंचमि आदिवारदलु अदियर् बलिय गण्डलिकेय उटेकोंड राम-  
नाय्कुनु बिदिरूरल्लि तनगे स्वर्गापवर्गसुखक्के का-

२ (२)णवागि चैत्यालयव कट्टिसि आर्दाश्वरन प्रतिष्ठेयन माडिसि-  
दनु श्री

[ इस लेखमे रामनायक-द्वारा बिदिरूर ग्राममें चैत्यालय बनवानेका  
तथा आदिनाथकी इस मूर्तिकी स्थापना करवानेका वर्णन है। यह कार्य  
ज्येष्ठ शु० ५, शक १४१० के दिन सम्पन्न हुआ था। ]

[ ए० रि० मै० १९४३ पृ० ११३ ]

४४७

जबलपुर ( मध्यप्रदेश )

संवत् १५४६ = सन् १४६३, संस्कृत-नागरी

[ यह लेख पार्श्वनाथकी भग्न मूर्तिके पादपीठपर है। तिथि वैशाख  
शु० ३, संवत् १५४९ ऐसो दी है। ]

[ रि० इ० ए० १९५१-५२ क्र० १२३ पृ० २१ ]

४४८

शिवङ्ग'गर ( राजस्थान )

सं० १५५६ = सन् १५००, संस्कृत-नागरी

[ यह लेख मूलसंघ-बलात्कारण - सरस्वतीगच्छके आचार्य रत्न-  
कीर्तिके समय सं० १५५६ मे लिखा गया था। इनकी गुरुपरम्परा  
पद्मनन्दि-शुभचन्द्र-जिनचन्द्र-रत्नकीर्ति इस प्रकार बतलायी है। ]

[ रि० आ० सं० १९०९-१० पृ० १३२ ]

४४६

## हुमच ( मैसूर )

१५वीं सदी, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीर्या- २ द्वादामोषलांछनं  
 ३ जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शा- ४ सनं जिनशासनं  
 ५ विरोधिकृत् संवत्सरद् आम्बी- ६ ज बहुल दसमि सोमवा-  
 ७ रदलु । श्री मद्रावराज- ८ गुरु मंडलाचार्यरं  
 ९ महावाद्वादीश्वर रा- १० यवादिपितामह सकल-  
 ११ विद्वज्जनचक्रवर्तिगलुं श्रीम- १२ द्वादींद्रविशालकीर्तिम-  
 १३ -स्वरकुलकमलमातंडरं १४ श्रीमदमरकातिरयतीश्वरप्रि-  
 १५ याग्रशिष्यरं मूलसंघ व- १६ लात्कारगणाग्रगण्यरुमप्य  
 १७ श्रीधर्मभूषणमट्टारकदे- १८ वर प्रियगुडु श्रीमदम-  
 १९ रेंद्रवंदितजिनेंद्रपादार- २० विंदमधुकरनुं चतुर्विधदा-  
 २१ नर्चितामणियुं खंडस्फुटि- २२ तजीर्णजिनालयोद्धारकनुम  
 २३ प्य बिटिसेट्टिय मग चोकिसेट्टि-२४ य निसिधि ॥

[ इस लेखमें बिटिसेट्टिके पुत्र चोकिसेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है जो आश्विन व० १० सोमवार, विरोधकृत् संवत्सरके दिन हुआ था । चोकिसेट्टिके गुरु धर्मभूषण मट्टारक थे जो मूलसंघ-बलात्कारगणके अमर-कीर्ति यतीश्वरके शिष्य थे । लिपि १५वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९२४ पृ० १७५ ]

४५०-४५१

आदवनी ( बेल्लारी, मैसूर )

१५वीं सदी, तेलुगु

[ ये लेख पहाड़ीपर एक पाषाणपर खुदे हुए तीर्थंकरमूर्तिके पास और चरणपादुकाओंके पास हैं । ये बहुत धिसे हुए हैं । मूर्तिके पास एक शकवर्षकी संख्या खुदी है तथा पादुकाओंके पास किसी आचार्यका नाम है । दोनों अच्छी तरह पढ़ना सम्भव नहीं है । लिपि १५वीं सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९४१-४२ क्र० ७४-७५ पृ० १३७ ]

४५२-४५३

नरसिंहराजपुर ( मैसूर )

१५वीं सदी, कन्नड

[ यहांके दो मूर्तिलेख १५वीं सदीके लिपिके हैं । इनपर देविसेट्टिके पुत्र दोडणसेट्टि तथा नेमिसेट्टिके पुत्र गुम्मणसेट्टिके नाम उत्कीर्ण हैं । ]

[ ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८४ ]

४५४

हनसोगे ( मैसूर )

१५वीं सदी, कन्नड

- १ हनसोगेय हिरियबसदिय
- २ कोण्डिय कल्ल ओरसेय बोम्मि-
- ३ सेट्टियरु इक्किंसिदरु

[ यह लेख स्थानीय आदीश्वरबसदिके सभामण्डपके छतके पाषाणपर खुदा है । यह पाषाण ( कोण्डियकल्लु ) बोम्मिसेट्टि-द्वारा स्थापित किया गया था ऐसा लेखमें कहा है । लिपि १५वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९३९ पृ० १९४ ]

४५५

## मूडबिदुरे ( मैसूर )

शक १४२६ = सन् १५०४, कन्नड

[ इस ताम्रपत्रमे उल्लेख है कि कदंब कुलके शासक लक्ष्मणपरस अपरनाम भैररसने जैनोके ७२ संस्थानोंके प्रधान आचार्य चारुकीर्ति पंडिताचार्यके एक शिष्यको अपने राज्यके एक हिस्सेके धार्मिक अधिकार प्रदान किये । तिथि-आश्विन कृ० ५, शक १४२६, क्रोधि संवत्सर । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २४ क्र० ए० ५ ]

४५६

## करन्दै ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

शक १४३१ = सन् १५०९, तमिल

[ यह लेख मकर शु० १०, गुरुवार, शक १४३१ को लिखा गया था । विजयनगरके शासक नरसिंहरायके समय रामप्प नायकने मन्दिरोंकी भूमिपर जोड़ि संज्ञक कर लगाया था जिससे मन्दिरोंकी हानि हुई थी । कृष्णदेवराय सिंहासनारूढ़ हुए तब उन्होंने मन्दिरोंकी भूमिको करमुक्त घोषित किया । इस घोषणाका लाभ पडैवीट्टु तथा चन्द्रगिरि प्रदेशके जैन और बौद्ध मन्दिरोंको भी हुआ । करन्दै स्थित जिनमन्दिर भी इससे लाभान्वित हुआ ऐसा लेखमें कहा गया है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १४४ ]

४५७

गुरुव्यनकेरे ( द० कनडा, मैसूर )

शक १४३१ = सन् १५१०, कन्नड

[ यह लेख स्थानीय शान्तोत्तरबसदिके मण्डपमें है । इसमें माघ व० १०, सोमवार शक १४३१ को बेलतंगडीके कुछ लोगों-द्वारा कुछ भूमिके दानका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४८० पृ० ४५ ]

४५८

वरांग ( द० कनडा, मैसूर )

शक १४३७ = सन् १५१५, कन्नड

[ यह लेख विजयनगरके कृष्णदेवमहारायके समय माघ शु० ५, शुक्रवार, शक १४३७ भावसंवत्सरका है । इसमें तुलुराज्यके शासक रत्न-प्पोडेयका उल्लेख किया है । देवेन्द्रकीर्तिकी प्रार्थनापर इस बसदिके लिए देवराय-द्वारा पहले दी हुई भूमिके पुनः खेतीयोग्य बनानेका इसमें उल्लेख है । यह कार्य अवकम्म हेग्गिडिति तथा उनके सहयोगियों-द्वारा सम्पन्न हुआ था ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ पृ० ४९ क्र० ५२८ ]

४५९

चामराजनगर ( मैसूर )

सन् १५१८, कन्नड

[ इस लेखमें अरिकुठारके महाप्रभु कामैय नायकके पुत्र वीरैय नायक-द्वारा विजय ( पार्श्व ) नाथ मन्दिरके लिए सन् १५१८ में कुछ दानका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मे० १९१२ पृ० ५१ ]

४६०

कोह नगोरी ( जयपुर, राजस्थान )

संवत् १५७७ = सन् १५२१, संस्कृत-नागरी

[ इस लेखकी तिथि माघ शु० ५, संवत् १५७७ यह है । इसमें मूल-संघ-बलात्कारणके आचार्योंकी परम्परा दी है तथा खण्डुलवाल अन्वयके राय रामचन्द्रके शासनका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ४१६ पृ० ६९ ]

४६१

बरांग ( द० कनडा, मैसूर )

शक १४४४ = सन् १५२२, कन्नड

[ यह लेख पोंबुचके राजा इम्मडि भैरवरसके समय चैत्र व० १२, सोमवार शक १४४४ चित्रभानु संवत्सरका है । इसमें राजा-द्वारा बरांगके नेमिनाथ बसदिके लिए भैरवपुर नामक ग्रामके दानका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२९ पृ० ४९ ]

४६२

सोदे ( उ० कनडा, मैसूर )

शक १४४५ = सन् १५२२, संस्कृत-कन्नड

[ यह ताम्रपत्र आषाढ़ पूर्णिमा शक १४४५ चित्रभानु संवत्सरका है । तोलव प्रदेशके क्षेमपुर ( गेरसोप्पे ) नगरसे इम्मडि देवराय ओडेयर्त्ते बण्डुवाल ग्रामकी कुछ भूमि लक्ष्मणेश्वरके शंखजिनबसतिके लिए दान दी थी । यह दान देशीगणके चन्द्रप्रभदेवके लिए था । ]

[ ए० रि० मै० १९१६ पृ० ६९ ]

४६३

सौंड ( जि० उत्तर कनडा, मैसूर )

शक १४४४ = सन् १५२२, कन्नड

[ यह ताम्रपत्र यहाँके भट्टाकलंक मठमें प्राप्त हुआ । हुलिगेरीकी शंख-जिनर बसतिके लिए मल्लिसेट्टिने मासूर मोसलेयकुरुवु विभागमें इम्मडि देवराज ओडेयरुसे कुछ जमीन खरीदकर दान दी । इसकी प्रेरणा देसिगणके विजयकीर्तिदेवके शिष्य चन्द्रप्रभदेवने दी थी । श्रावण शु० ५, गुरुवार, शक १४४४, विषु संवत्सर यह इसकी तिथि है । ]

( रि० सा० ए० १९३९-४० ए० क्र० १५ पृ० २२ )

४६४-४६५

श्रुंटेगेरी ( मैसूर )

१६वीं सदी ( सन् १५२३ ), कन्नड

[ ये दो लेख हैं । पहला अनन्तनाथमूर्तिके पादपीठपर है । चैत्र कृ० ५, रविवार, स्वभानु संवत्सरके दिन यह मूर्ति अर्पित की गयी थी । इसका स्थापक हलुमिडि निवासी देविसेट्टिका पुत्र देवणसेट्टि था । मूर्तिका वजन १८० हल कहा गया है । दूसरा लेख चन्द्रनाथ मूर्तिके पादपीठपर है । यह मूर्ति आदिसेट्टिके पुत्र बोम्मरसेट्टि-द्वारा वैशाख शु० १, गुरुवार, स्वभानु संवत्सरके दिन अर्पित की गयी थी । दोनों लेखोंकी लिपि १६वीं सदीकी है अतः संवत्सरनामानुसार ये शक १४४५ अर्थात् सन् १५२३ के प्रतीत होते हैं । ]

( मूल लेख कन्नडमें मुद्रित )

[ ए० रि० मे० १९३३ पृ० १२४ ]



४६६

नेहिलकर ( द० कनहा, मैसूर )

शक १४४७ = सन् १५२५, कन्नड

[ यह लेख स्थानीय अनन्तनाथबसदिके प्राकारमें है । देवण्णरस उपनाम कोन्नकी बहन शंकरदेवी-द्वारा कीयरवुरकी बसदिके लिए धनु १५, रविवार, शक १४४७, तारण संवत्सरके दिन कुछ भूमिके उत्पन्नके दानका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२२ पृ० ४९ ]

४६७

पल्लिच्छन्दल् ( द० अर्काट, मद्रास )

शक १४५२ = सन् १५३०, तमिल

[ यह लेख एक भग्न जैनमन्दिरके स्थानपर है जिसे शैनियम्मण्, कोयिल् कहा जाता है । विजयनगरके राजा अच्युतदेवमहारायने वैयप्प नायकके निवेदनपर शर्म्बके नायनार् विजयनायकर् नामक जिनमूर्तिकी पूजाके लिए जोडि और शालुवरि करोंका उत्पन्न अर्पण किया था । यह राजाशा वेलूर बोम्मुनायकके समय उत्कीर्ण की गयी ऐसा लेखमें कहा है । तिथि मिथुन शु० १०, बुधवार, शक १४५२, नन्दन संवत्सर ऐसी दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ४४९ पृ० ५१ ]

४६८

पटना म्युजियम ( बिहार )

संवत् १५९३ = सन् १५३१, संस्कृत-नागरी

[ यह लेख एक पीतलकी जिनमूर्तिके पादपीठपर है । इसकी स्थापना मूलसंघ-कुन्दकुन्दाचार्यान्ययके मण्डलाचार्य धर्मचन्द्रके उपदेशसे खंडेलवाल

अन्वयके कुछ सज्जनोंने की थी । प्रतिष्ठा तिथि ज्येष्ठ शु० ३, सोमवार, संवत् १५९३ ऐसी दी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १६२ पृ० ३३ ]

४६६

**हनुमंतगुडि ( रामनाड, मद्रास )**

शक १४५५ = सन् १५३३, तमिल

मलवनाथ जैन मन्दिरके आगे पड़ी हुई शिलाओंपर

[ इसमें शक १४५५ के लेखके खण्ड है । एकमे जिनेन्द्रमंगलम् अथवा कुरुवडिमिदिका निर्देश है जो मुत्तोरु कूरम् विभागमें था । ]

( इ० म० रामनाड २७९ )

४७०

**नीलत्तनहल्लि ( मैसूर )**

सन् १५३४, कन्नड

[ इस लेखमें सन् १५३४ में मदवणसेट्टिके पुत्र पदुमणसेट्टि-द्वारा अनन्तनाथचैत्यालयमें किसी व्रतके पालनका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९१५ पृ० ६८ ]

४७१

**लक्ष्मेश्वर ( मैसूर )**

शक १४(६१) = सन् १५३९, कन्नड

[ इस लेखमें जैन और शैवोंके एक विवादके समझौतेका उल्लेख है । यह विवाद जिनमूर्तियोंके सम्मानके सम्बन्धमें था । जैनोंकी ओरसे शंख-बसतिके शंखणाचार्य तथा हेमणाचार्यने और शैवोंकी ओरसे दक्षिणसोमेश्वर

मन्दिरके कालहस्ति और शिवरामने यह समझीता किया था । तिथि ज्येष्ठ शु० १ सोमवार, शक १४(६१), विल्वि संवत्सर ऐसी दी है । ( शकवर्षकी संख्याके अन्तिम अंक लुप्त है जो संवत्सरनामानुसार दिये गये हैं ) । ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई १८ पृ० १६२ ]

४७२.

कारकल ( द० कनडा, मैसूर )

शक १४६५ = सन् १५४३, कन्नड

[ यह लेख ( ताम्रपत्र ) चैत्र शु० ४ शक १४६५ शोभकृत संवत्सर-का है । इसमें चन्दलदेवीके पुत्र पाण्ड्यप्परस तथा तिरुमलरस चौटस इनमें अनाक्रमण सन्धिके उल्लेख किया है । इसके साक्षीके रूपमें जैन आचार्य ललितकीर्ति भट्टाङ्गका उल्लेख हुआ है । ]

[ रि० सा० ए० १९२१-२२ पृ० ९ क्र० ए ५ ]

४७३

कुरुगोड्ड ( बेल्लारी, मैसूर )

शक १४६७ = सन् १५४५, कन्नड

एक मग्न मन्दिरके दक्षिणी दीवालपर

[ विजयनगरके राजा बीरप्रताप सदाशिव महारायके समय शक १४६७, विश्वावसु संवत्सरमें यह लेख लिखा गया । रामराज्य-द्वारा जिनमन्दिरके लिए कुछ भूमिदान देनेका इसमें निर्देश है । ]

( इ० म० बेल्लारी ११३ )

४७४

## कारकल ( मैसूर )

शक १४६६ = सन् १५४५, कन्नड

[ यह लेख माघ शु० ३, गुरुवार, शक १४६६, क्रोधि संवत्सरका है । चन्दलदेवीके पुत्र चन्द्रवंशीय पाण्ड्यप्प बोडेयके राज्यकालमें कारिजे निवासी सिदवसयदेवरस-द्वारा कारकलके गुम्मतनाथ स्वामीको कुछ भूमि अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० ३३९ पृ० ५२ ]

४७५

## मूडबिदुरे ( मैसूर )

शक १४६६ = सन् १५४६, संस्कृत-कन्नड

[ इस ताम्रपत्रमें बिलिगिके शासक वीरप्पोडेयकी वंशावली छह पीढ़ियों तक दी है । बिदुरे नगरकी त्रिभुवनचूडामणि बसतिके लिए इस शासकने चिक्कमालिगेनाडु विभागके कुडुगिनबयलु ग्रामकी कुछ जमीनका उत्पन्न दान दिया था । इसी मन्दिरके चन्द्रनाथदेवको नैवेद्य अर्पण करनेके लिए एक चाँदीका प्याला और कुछ धन भी दान दिया था । यह दान वीरप्प-के चाचा तिम्रसको पत्नी वीरम्मके नामसे था । इसी तरह घण्टोडेयके पुत्र तिम्रप्पके नामसे चन्द्रनाथदेवके दुग्धाभिषेकके लिए कुछ दान दिया गया था । कार्तिक शु० ७, शक १४६८, विश्वावसु संवत्सर, यह इस दानकी तिथि थी । प्रथम आषाढ शु० १०, पराभव संवत्सर यह दूसरी तिथि दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए २ पृ० २३ ]

४७६

काप ताम्रपत्र ( जि० दक्षिण कनडा, मैसूर )

शक १४७९ = सन् १५५६, संस्कृत-कल्लह

- १ श्री धर्मनाथ (ने) शरणु ॥ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादाभोघकांछनं ।  
जोया-
- २ स्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ स्वस्तिश्रीसकलज्ञान-  
साम्राज्यपदराजितः । व-
- ३ धर्मानजिनाधीशः स्याद्वादमठभासुरः ॥ तिन्निणीगच्छवाराशेः-  
सुधांशुर्जानदी-
- ४ धितिः । सद्धर्मसरसीहंसः प्रवादिगजकेसरी ॥ काणूर्गण-  
नमोभागे सामाति मुनि-
- ५ कुं (ज) रः । अज्ञानतिमिरोद्धतिः श्रीमान् भानुमुनी(श्व)रः ॥  
पंचाचारशरध्वस्तपंच-
- ६ बाणशरवजः । अलण्डश्रोतपोलक्ष्मीनाथको भानुसंयमी ॥  
श्रीमद्भानुमु-
- ७ नीश्व(रो) विजयते स्याद्वादधर्माश्वरे श्रीमद्ज्ञानविनूत्नदीधिति  
(श)तध्वस्तान्धका-
- ८ रत्नजः । श्रीमूलामलसंघनीरजमहाषण्डेष्वलण्डश्रियं ध्यात (न्व)  
न् मुनि-
- ९ कोकचारुनिकरं सौख्याणवे मग्नयन् ॥ तुलुदेशवेम्बभूपन पोलेव  
महाप-
- १० दकदंष्ट्रे येसगं (से) गुं निच्छं । धरेयोळगे कापिन नगरद नेकन-  
नाल्व भूप महद्देगडेयम्बं ॥
- ११ पंगुलबलि अधिपतियनु पोंगलसदे नेकके तानु नृपकुलतिलकं ।  
संगतसभेयोळु

- १२ पो (गलगुं) अंगजजयजिनपदाब्जमधुकरनेष ॥ भूदेविय मुखकनडि  
बाडें हेल्व-
- १३ गें कापुवेनिसिद नगरं । आदरदिंसदरो (ल्गा) मेदिनिमतधर्म-  
नाथनेन (से) गुं जिनपं ॥ आ नगर-
- १४ क्कधिपतियुं श्रीपति तिरु (म) रस नृप (अ)वनीतिलकं ।  
वोमनदकि आतानुं वोतुकरं मुक्किल-
- १५ क्षिमिगित्तं मनमं ॥ येनेम्बे मदहेगडे दानचतुर्विधक्के ताने  
चित्तरत्नं । सन्नुतगुणगण-
- १६ निकेयं उच्चतस्त्रीलवनु ताल्द (नृ) परिपुसंहारं ॥ धर्मदोलं (दढ)  
चित्तनु निर्मल-
- १७ गुरुमक्कियल्लि तिरुमरसनृपं । धर्मजिनजैनशासनमं वोम्मन्दि तानु  
माडि क्किति (य)
- १८ नित्तं ॥ स्वस्ति श्री जयाभ्युदय शालिवाहनशकवर्ष १४७६ नेय  
संदं नलसंवत्सर-
- १९ द कार्तिक शुद्ध १ आदित्यवारदलु श्रीमन्महाराजाधिराजराजपर-  
मेश्वर सत्यरत्नाकर
- २० शरणागतवज्रपंजर चतुःसमुद्राधेश्वर कलियुगचक्रवर्ति श्रीवीर-  
प्रताप सदाशिव-
- २१ राय राजराजेंद्र दक्षिणभागभार्यदेवतासंनिभरुमप्प रामराजय-  
नवरु ये-
- २२ क (च्छ) त्रिदिं राज्यवनु प्रजिपाळिसुतिर्दं कालदलु वारकूरु  
मंगलूरुलु सदा(शि)वनायकरु
- २३ राज्यवं गे(यि)तिर्दं कालदलु तुलु(व)देशकामिनीमुखकमलतिल-  
कायमानानादिसि-
- २४ द्वप्रसिद्धकापिसिंहासनोदयाचलालंकरणतरुणतरणीप्रकाशरं-  
अनन्यराजज्यसौ(ज)-

- २५ म्य (औ)दायंवीर्यधैर्य(मा)धुर्यगांभीर्यनयत्रिनयसत्त्वशौचाद्यन-  
तगुण-
- २६ गणनूत्तरस्नाभरणगणकिरणोद्योतितभरतादिसकल (पु)राणपुरुष-  
रुमप्य
- २७ तिरुमलरसराद महर्हेगडेयरु अवर नालिनवरु गणपणसावंतरु  
कापिन राज्यव-
- २८ नु प्रतिपाकिसुतिदं कालदलु ॥ स्वस्ति श्रीमद्रायराजगुरु मंडला-  
चार्य महा-
- २९ वादवादीश्वर राज्यवादिपितामह सकलविद्व(ज)नचक्रवर्तिगलुं  
इत्याद्यनेकवि-
- ३० रुदावलीविराजमानरुं काणूरुगणाग्रण्यरुगलुमप्य श्रीमदभिनव-
- ३१ देवकीर्तिदेवरुगलु शिष्यरु मुनिचंद्रदेवरुगलु (अ)वरुगलु शिष्यरु  
देवचंद्रदे-
- ३२ वरुगलु तम्म गुरु मुनिचंद्रदेवरुगलिगे स्वर्गापवर्गकके कारणवागि  
कापिन-
- ३३ लु धर्मवनु मादबेकेंब चित्तदिंद तिरुमलरसराद महर्हेगडेयरु  
कूं (कू)-
- ३४ डेयु अवर नालिनवरु गण(प)णसामंतर कूडैयु कापिन हलर  
सहायदिं-
- ३५ द धर्मके वोटु क्षेत्रवनु कोडबेकुर्येंदु चित्तैसलागि अवरुगलु धर्म-
- ३६ परिणामस्वरूपवने वुल्लवराद कारण गुरुमक्तियिंद तम्म सीमेय-
- ३७ लुम(ल्ला)रेम्व (वू)रोलगे पडु(व)ण दिक्किनलु कलंतोपतिना  
वाल्लैयलु अगलिं-
- ३८ द वोलगे वेट्टिन गहेल्लं बीज बल्ल मूवत्तर लेक्कद बत्त मूडे २  
मत्तम-

- ३६ गालिंदं होरगे पापिनादियेब गहेष्कं बीज बल्ल मूवत्तर लेक्कद बीज  
 ४० मूडे ४ मत्तं बागिल गहेष्कं बीज बल्ल मूवत्तर लेक्कद मूडे ४ गहे मू-

## पिछला माग

- ४१ रकं बीज मूडे १० ई भूमिगलिगे वुल्ल करे मुरे मने बावि हलसु मावु सुं-  
 ४२ बे निक्किलिहक्कदें कदिरु जल पाषाण सह मूलधारेयनु एरदु को-  
 ४३ द्रु यिसिकोंद दोडुवराहग ८० अक्षरदल्ल येमट्ट वराह यी हों-  
 ४४ ज्जिगे येरदु बेलेयलु सह वर्षल्ले बह अक्कि अंगडिय होरिगेय  
 ४५ बल्ल पेवत्तर लेक्कद अक्कि मूडे २४ ई अक्किगे नडव भर्मंद विवर कापिन वस्ति-  
 ४६ य केलगण नेलेयलु धर्मतीर्थकरसन्निधियलु मध्याह्नकालेदल्ल नित्यद -  
 ४७ लु दिन वोंदक्के वोंदुवल्ल अक्कि नैवेद्यक्कु (मु) निचंद्रदेवरुगल हंस-  
 ४८ रिनलु नड(व) हालधारेगु सह अक्कि मूडे १० तिगलु तिगलु तप्पदं तिं-  
 ४९ गलल्लि १७ होहाग नडव वार १ मत्तं इप्पत्तेदु २५ होहाग नडव  
 ५० वार १ अंतु तिगलल्लि येरदु वार समदाय नडवुदक्के अक्कि मूडेवु  
 ५१ १२ई वारंगलल्लि मंगलत्रयोदशी बहाग आ मंगलत्रयोदशी नडव-



- ५२ (देंदु) विशेषवाणि यिरिसिद अक्कि मूडे २ अंतु अक्कि मूडे  
यिप्पत्तनाळु
- ५३ यो धर्मद स्थलदल्लि बल्लारिगे अनाय सनाय सल्लदु इल्ल आ  
स्थ(ल)गदल्लु इह
- ५४ चोळ्ळिगे बिट्टि बिट्टार सल्लदु काणिके देसे अप्पणे पददल्लि येत्तु  
सल्लदु बेंदु
- ५५ सर्वमान्यवाणि तिरुमलरसराद मडहेगडेयरु अवर नाकिनवरु ग-
- ५६ णपणसामंतर् सह तम्म धर्मपरिणामनिमित्तवाणि तम्म स्वरुधि-
- ५७ यिंद गुरुमक्तिर्यिंद वोडंबट्टु बरसि कोट्ट तंजशासन इंत-
- ५८ प्पुदळे साक्षिगलु अधिकारि कांतसेट्टि चटं विकसेट्टि सामणि  
संकर-
- ५९ सेट्टि राजसेट्टि बग्गे(से)ट्टिय अलिय केसण मूलूर बेळिके  
बिरुमाल
- ६० दुग्ग बंडारि बिरुसामणि यितिनवर वुमयान्म(त)दिं मं-
- ६१ गलुरु संकै सेनवोवन बरह । यिंती धर्मशास(न)ळे मंगल-
- ६२ महा श्री श्री श्री ॥ स्वदत्ताद् द्विगुणं पुण्यं परदत्तानुपाकनं ।
- ६३ परदत्तापहारेण स्वदत्तं निष्फलं भवेत् ॥ दानपालनयोर्मध्ये
- ६४ दानाच्छ्रेयोनुपाकनं । दानात्स्वर्गमवाप्नोति पालनादच्युतं
- ६५ पदं ॥ श्री धर्मशासनळे आवनानोळ्ब जैननादव तप्पिदरे बेलुगु-
- ६६ लद गुम्मतनाथ कोपणद चंद्रनाथ ऊज्जंतगिरिय नेमीश्वर-
- ६७ मोदळाद जिनबिक्कगलुनोडद पापके होहरु शैवनादरं प-
- ६८ वंतगोकर्णमोदळादवरल्लि कोटिलिगवनोडद पापके होहरु
- ६९ बैष्णवनादरे तिरुमलेमोदळादवरल्लि कोटिविष्णुमूर्तियनोड-
- ७० द पापके होहरु ॥ सद्रं भूयाजिनशासनस्य ॥ श्री

[ यह ताम्रपत्र शक १४७९ में लिखा गया था । उस समय विजय-नगरसाम्राज्यके अधिपति सदाशिवराय थे तथा रामराज उनके प्रधान सेनापति थे । इस साम्राज्यके बारकूर तथा मंगलूर प्रदेशपर केलडि सदाशिव नायककी नियुक्ति की गयी थी । इस प्रदेशमें काप नगरका अधिकारी मद् हेगडे था । इसने धर्मनाथ तीर्थंकरकी पूजा आदिके लिए मल्लारु गाँवमें कुछ जमीन दान दी जिसकी आय ८० वराह थी ( वराह उस समयकी रौप्यमुद्राकी संज्ञा थी ) । यह दान अभिनव देवकीर्तिके प्रशिष्य तथा मुनिचन्द्रके शिष्य देवचन्द्रके उपदेशसे दिया गया था । इसके पहले मूलसंघ-काणूरगण-तिन्त्रिणीगच्छके भानुमुनीश्वरकी प्रशंसा की गयी है । देवचन्द्र भी काणूरगणके ही थे । अन्तमें दानकी रक्षाके लिए जो शाप दिये हैं उनमें श्रवणबेलगोलके गोम्मटेश्वर, कोपणके चन्द्रनाथ तथा गिरनारके नेमिनाथकी मूर्तियोंका उल्लेख किया है ]

[ ए० इ० २० पृ० ८९ ]

४७७

चिप्पगिरि ( जि० बेल्लारी, मैसूर )

शक १४८२ = सन् १५६०, कन्नड

[ इस लेखमें आदवानीके विशालकीर्तिगुरु तथा चिप्पगिरिके श्रावकों-द्वारा चतुर्थमुनीश्वरकी वन्दनाका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९४४-४५ ई ७४ ]

४७८

मूडबिदुरे ( जि० दक्षिण कनडा, मैसूर )

शक १४८५ = सन् १५६३, कन्नड

[ इस ताम्रपत्रमें बिदुरे नगरकी चण्डोग्र पारिश्वतीर्थंकर बसतिके लिए शंकरसेट्टि ऊर्फ विरणन्तर-द्वारा उसकी बहन शंकरदेवीके आग्रहसे कुछ

धन दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान अभिनव चादकीति पण्डितके आज्ञावर्ती सेट्टिकारोंको सौंपा गया था। १२५० वराह मुद्राओंके एक और दानका भी इसमें उल्लेख है। तिथि मेष (त्रयोदशी), शुक्रवार, शक १४८५, रविरोद्गारी संवत्सर ऐसी दी है। ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २३ क्र० १ ए ]

४७६

प्रिन्स आफ़ वेल्स म्युजियम, बम्बई

शक १४८५ = सन् १५६३, शिलालेख क्र० B.B. ३०७, कन्नड

[ यह लेख चैत्र शुक्ल १२, सोमवार, शक १४८५, दुन्दुमि संवत्सर, के दिन लिखा गया था। विट्ठप्प नायक तथा हेम्मरसि नायिकितिके पुत्र सालुव नायक-द्वारा गेरसोप्पेमें शान्तिनाथका मन्दिर बनवाये जानेका तथा इस मन्दिरको कुछ जमीन दान देनेका इसमें निर्देश है। इसमें नगिरे, हेवे, तुलु तथा कोंकण इन पश्चिम समुद्रतटके प्रदेशोंपर रानी चेन्न भैरा-देवीके शासनका उल्लेख है। ]

[ रि० इ० ए० (१९५०-५१) क्र० २४ ]

४८०

मूडबिदुरे (मैसूर)

शक १४९३ = सन् १५७१, कन्नड

[ इस ताम्रपत्रमें भीचारमागाने विभागके मरकत ग्रामकी कुछ जमीन बिदुरेकी बसतिमें आहारदानके लिए अर्पित करनेका उल्लेख है। यह दान चौट कुलकी अब्बकदेवीने उसकी बहन पदुमलदेवीकी पुण्यवृद्धिके लिए दिया था। पुत्तिगेके शासक इस दानका भंग न करें ऐसी सूचना अन्तमें दी है। तिथि पौष शु० ८, रविवार, शक १४९३ प्रजोत्पत्ति संवत्सर, इस प्रकार दी है। ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २३ क्र० ए ३ ]

४८१

महेश्वर ( मध्यप्रदेश )

सं० १६२७ = सन् १५७१, संस्कृत-नागरी

[ यह लेख सम्राट् अकबरके राज्यकालमें संवत् १६२७ में लिखा गया था । मालवामें उस समय ख्वाजा अजीझ बेग प्रान्तीय शासक नियुक्त था । इस समय मण्डलोई मुजानरायने महेश्वरस्थित आदिनाथ-मन्दिरका जीर्णोद्धार किया ।

अकबरके शासनकालके अन्य दो लेख यहीं प्राप्त हुए हैं । इनमें मण्डलोई देवदास ( मुजानरायके बन्धु ) द्वारा संवत् १६२२ में महेश्वर मन्दिरका तथा संवत् १६२६ में कालेश्वर मन्दिरका जीर्णोद्धार किये जानेका उल्लेख है । इस तरह जैन सज्जनों-द्वारा जैनैतर मन्दिरोंकी सहायता-का यह उदाहरण है । ]

[ ६० हि० का० १९४७ पृ० ३९३ ]

४८२

कुम्भंगि ( तुंकूर, मैसूर )

सन् १५७३, कन्नड

[ इस मूर्तिलेखमें कहा है कि नाल्कुवागिलु निवासी बोम्मिसेट्टिके पुत्र दानप्पने यह मूर्ति तथा प्रभावलि सन् १५७३में स्थापित की । ]

[ ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८४ ]

४८३

चित्तामूर ( द० अर्काट, मद्रास )

शक १५०० = सन् १५७८, कन्नड-तमिल-संस्कृत

[ यह लेख स्थानीय जिनमन्दिरके मानस्तम्भपर है । इस स्तम्भकी

स्थापना जगतापिगुप्ति निवासी बायिसेट्टिके पुत्र बुश्शेट्टिने शक १५००, बहुधान्य संवत्सरमें की ऐसा इसमें उल्लेख है। स्तम्भके दूसरी ओर संस्कृत भाषा और कन्नड लिपिमें इसी वर्णनका लेख है। इसमें बुश्शेट्टिको महा-नागकुलका कहा गया है। ]

[ रि० सा० ए १९३७-३८ क्र० ५१७-१८ पृ० ५७-५८ ]

४८४

कारकल ( द० कनडा, मैसूर )

शक १(५)०१ = सन् १५८०, कन्नड

[ इस लेखकी तिथि कार्तिक शु० १, शक १(५)०१ है। प्रारम्भ श्रीमत्परमगम्भीर.....आदि श्लोकसे है। अन्य विवरण लुप्त हुआ है। ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० ३३७ पृ० ५२ ]

४८५

सेतु ( शिमोगा, मैसूर )

शक १५०५ = सन् १५७३, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीजयाम्युदय शालिवाहनशक वरुष १५०५ चित्रमानु-  
संवत्सरद भाद्रपद सुद्ध १० शुक्रवारदंदु करुरु नाड चैवल्लिय  
तिम्म गौडरु यिवल्लिय नायक्क गौडरु जट्टिगौडरु मग सेट्टि-  
गौडरु आ समस्त आचकरु सह मुंतागि सेतुविन बसदि श्री  
आदितीर्थेश्वररिंगे माडिस्त लोहद

२ प्रभावलिगे आ समस्त जन्नंगलिगे मंगल महा श्री श्री श्री  
विरपयजु माडिदुदु

[ यह लेख आदिनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इस मूर्तिकी स्थापना भाद्रपद शु० १० शक १५०५ के दिन हुई थी। स्थापक चैवल्लि ग्रामके तिम्मगौड तथा यिवल्लि ग्रामके सेट्टिगौड थे। ]

[ ए० रि० मै० १९४४ पृ० १६७ ]

४८६

येडेहल्लि ( मंसूर )

शक १५०६ = सन् १५८४, कन्नड

- १ शुभमस्तु नमस्तुंगशिरस्तुंविचंद्रचामर (चार)वे
- २ त्रैलोक्यनगरारंममू(ल) स्तंभाय शंभवे ॥ स्वस्ति श्री-
- ३ विजयाभ्युदय सासिवाहसकवरुष १५०६ नेष संद वर्तमान ।
- ४ तारण सं । आश्विजा शु १० मि आदिचारदलु श्रीमतु ।  
दानिवा-
- ५ सद चेन्नरायवडे । मळलु चिक्कवीरप्पवाडेह मळलु चेन्नवि-
- ६ रवाडेह गेरसोप्पे समंतमद्रदेवर सिष्यरु गुणभद्रदेवरु सिष्य-
- ७ रु । वीरसेनदेवरिगे । कोट भूमि क्रयपत्रद क्रमवेन्तेन्दरे  
माळेपा(ल)
- ८ बन्दप्पन मग लिंगणनु । नष्टसन्तनवा(गि)होद सम्मंद ।  
छातन भू-
- ९ मि नागलपुरद ग्रामद बळगे तेंगिनहितकगद्दे ख १ कंडुग  
वंभ-
- १० तु बीजवरि । आ भूमि नम्म आरमनिगे हरवरियागि बन्द
- ११ सम्मंद । यी वीरसेनदेवरिगे क्रैयावागि कोट्टेवागि आ भूमि-
- १२ गे सलुव क्रय द्रव्य । लक्षणलक्षित तत्कालोचित मध्यस्तपरि-  
कल्पित उ-
- १३ मयवादिसंप्रतिपन्न कालपरिवर्तनक्के सलुव पियसाहेनिजग-
- १४ हि चरह ग ३२ अक्षरदलु मूवत्तु येरडु वरहनु । तरविस उळि-
- १५ यदे । सळे-साकल्यवागि सल्लिसि कोण्डेवागि । आ भूमिगे  
सलुव चत्तु-
- १६ सीमेय विवर । मूडलु । ई गद्देय नीरपर्कल आगळिंद पडुलु

- १७ तेंकलु केरेपरिचिदं व(ड)गलु ॥ पडुवलु गुरुवप्प हेबकवन तो-  
 १८ टदिदं मूडलु । बडगलु हानम्बिचिदं तेंकलु । चिती चतुस्सि-  
 १९ मेवलगुल्ल । निधि । निम्मेपजळ । पासण अक्षोणि । आगमि ।  
 सिद्धमां-  
 २० ध्यंगलेंब । अष्टाभोग तेजसाभ्यवज्जु नीड निम्म शिष्यह पा-  
 २१ रम्पर्यवाणि सुखदिं बोगिसि बहिरि यन्दं बरसि कोट क्रय शा-  
 २२ सन पटे यिदुक्के अबिलासे बिटवरु देवळोक मर्त्यलोकके विर-  
 २३ हितरु । श्रीहृत्य । गोहृत्यक बजिनरहरू । विरपव-  
 २४ डेरु श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

[ यह लेख आश्विन शु० १०, रविवार, शक १५०६, तारण संवत्सरके दिन लिखा है । इसमें दानिवासके शासक चेन्नरायके पौत्र तथा चिक्क-वीरप्पके पुत्र चेन्नवीरप्प वडेर-द्वारा गेरसोप्पेके वीरसेनदेवको कुछ भूमि दी जानेका उल्लेख है । वीरसेनके गुरु गुणभद्र तथा प्रगुरु समंतभद्र थे । उन्होंने ३२ बराह मृत्यु देकर यह भूमि खरीदी थी जो पहले भालेपाल वन्दप्पके पुत्र लिंगणकी थी और उसके सन्तानरहित स्थितिमें मृत्यु होनेसे राजाधीन हुई थी । यह भूमि नागलापुर गांवके क्षेत्रमें थी । ]

[ ए० रि० मै० १९३१ पृ० १०४ ]

४८७

### येडेहल्लि ( मैसूर )

शक १५०७ = सन् १५८५, कन्नड

- १ सुममस्तु । नमस्तुंगशिरश्चुंबिचंद्रचामरचा-  
 २ रवे त्रैलोक्यनगरारंभमूलस्तंभाय शंभवे (।) स्व-  
 ३ स्ति श्रीअयाभ्युदय शाकिवाहनशकवरुष १५०७  
 ४ संद वर्तमान पार्थिवसंवत्सरद चबित्र व ७ मि आदि-

- ५ वारदलु श्रीमत्तु । दानिवासद चेन्नरायवोडेयर म-
- ६ कलु । चिक्कवीरप्पवोडेयर मकलु । चेन्नवीरप्पोडेयरु । गेरसो-
- ७ प्पे समंतमद्रदेवर सिष्यरु । गुणमद्रदेवर सिष्य-
- ८ वीरसेनदेवरिगे । कोट भूमि क्रयपन्नद क्रमवैत-
- ९ दरे । बालेपाल तम्मयन मग नरसप्पनु नष्टस-
- १० तानवागि होद सम्मंद आतन भूमि यीचलदाल ग्रामदलि ।
- ११ एण्टु खण्डुग बिजवरि भूमि नम्म अरमनिगे हरवरियागि
- १२ बन्द सम्मंद आ भूमिन् दानिवासद चेन्नरायवोडेय-
- १३ र मकलु । चिक्कवीरवोडेयर मकलु चेन्नवीरवोडेयर ।
- १४ गेरसोप्पेय समंतमद्रदेवर शिष्यरु गुणमद्रदेवर शिष्यरु
- १५ वीरसेनदेवरिगे । क्रयवागि कोटवागि । आ भूमिगे । सलुव । क्र-
- १६ यद्रव्य । लक्षणलक्षित तत्कालोचित मध्यस्तपरिकल्पित उभे-
- १७ यवादिसंप्रतिपन्न कालपरिवर्तनके सलुव प्रिय-
- १८ स्राहे । निजगति वरह गद्याण ग ३० अक्षरदलु मू-
- १९ वत्तु वरहंनु तारविस उलयदे सल्लिसि कोण्डेवागि । आ एण्टु
- २० खण्डुग भूमिगे सलुव चतुसीमेय विवर मूडलु नन्दिगाव ।
- २१ तिम्मरसैयन गदेयिंदलु पडुवलु । पडुवलु नरसोपुरदं-
- २२ हलदिं वलु(?) मूडलु । बडगलु दरयिंदलु । तैकलु । तै-
- २३ कलु अरमनेगदेयिंदलु बडगलु । यिति चतुसीमेयांगु-
- २४ ल निधि निक्षेप जल पाषाण अक्षीणि आगमि सिध साध्यंगलेंब
- २५ अष्टमोग तेजसाभ्यवनु आगुमादिकोण्डु निवु निम्म शिष्य-
- २६ रु पारम्परेयागि आचंद्राकैस्तायियागि सुखदिं भोगिसि
- २७ बहिरि येंदुबरसि कोट क्रयस्यासनपटे यिदके अभिला-
- २८ से बटवरु देवलोक मर्त्यलोकके विरहितरु । ओहस्य
- २९ गोहस्यके बजनरहरु चेन्नवीरवोडेह श्री
- ३० श्री श्री श्री



[ यह लेख चैत्र व० ७, रविवार, शक १५०७, पार्थिव संवत्सरके दिन लिखा है । इसमें दानिवासके शासक चेलवीरप्प बोडेयर-द्वारा गेर-सोप्पेके वीरसेनदेवको कुछ भूमि दी जानेका उल्लेख है । इस भूमिके लिए ३० वराह क्रीमत दी गयी थी । यह पहले बालेपाल तम्मयके पुत्र नरसप्प-की थी जो पुत्ररहित स्थितिमें मृत्यु होनेसे राजाधीन हुई थी । भूमि योचल-दाल ग्रामके क्षेत्रमें थी । ]

[ ए० रि० मै० १९३१ पृ० १०८ ]

४८८

### चिकह्नसोगे ( मैसूर )

सन् १५८५, कन्नड

[ यह लेख आदिनाथवसदिके गोमुखपर है । चारुकीर्ति पण्डितदेवके शिष्य तथा ब्राह्मणप्रमुख चिक्कणय्यके पुत्र पण्डितय्य द्वारा आदीश्वर, चन्द्र-नाथ तथा शान्तीश्वरकी मूर्तियोंकी स्थापनाका इसमें उल्लेख है । समय सन् १५८५ है । ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ५१ ]

४८९

### येडेहल्लि ( मैसूर )

शक १५०९ = सन् १५८७, कन्नड

- १ सुभमस्तु । नमस्तुंगशिरश्चुंबिचंदचामर-
- २ चारवे त्रैलोक्यनगरारंभमू(ल)स्तंभाय शंभवे ।
- ३ स्वस्ति श्रांजयाभ्युदय शालिवाहन शक वरुष १५०९
- ४ नेय संद वर्तमान । सर्वजित्तु सं । वयिशाक शु ५ मि
- ५ यु आदिचारदलु श्रीमत्तु । दानिवासद चेन्नरा-

- ६ यवडेर मकलु । चिक्कवीरप्पवाडेर मककलु चेन्नविरवा-  
 ७ डेरु । गेरसोप्पे समंतमद्गदेवर शिष्यरु । गुणमद्गदेव-  
 ८ र शिष्यरु । वीरसेनदेवरिगे । कोट भूमि कयपन्नद कम-  
 ९ वेंतेंदरे नालपुरद ग्रामदोलगे संकणन मग मल-  
 १० यन डोंकिन कोडुगे बिजवरि ख १० हत्तु खण्डुग भूमि  
 ११ यु । सलविट्टु नम्म आरमनिगे हरवरियागि मंद सं-  
 १२ मंद । यी वीरसेनदेवरिगे क्रैयक्के कोटेवागि । आ भूमिगे सलु-  
 १३ व क्रय द्रव्य । लक्षणलक्षित । तत्कालोचितमध्यस्तपरिकल्पित  
 १४ उभयवादिसंप्रतिपन्न कालपरिवर्तनक्के सलुव प्रियसू-  
 १५ हे । निजगटि वरह ग ४० अक्षरदलु नाक्खत्तु वरहनु । तर  
 १६ विस उल्लियदे साक्खयवागि । सलिसि कोण्डेवागि आ भूमिगे  
 सलु-  
 १७ व चतुसिमेय विवर । मुडलु यिगदेय नीरेरकलगलि-  
 १८ द पडुवलु । बडगलु केरेंयेरिथिंद तेंकलु तेंकलू नं-  
 १९ म गदेयिंद बडगलु । यिती चतुरसामेयोलगुल नि-  
 २० धि निक्षेप जल पासण अक्षाणि आगमि सिध साध्यंग-  
 २१ लेंब आष्टभोग तेजसाम्यवंनु निउनिम्म शि-  
 २२ यरु पारम्परियवागि सुखदि बोगिसि बट्टिरि  
 २३ येंदु वरभि कोट क्रयशासनपटे । चिदक्के अबिला(वे) वटवरु दे-  
 २४ वलोक मत्त्यलोकक्के विरहितरु श्रीहत्य गोहत्यक्के बजनरह-  
 २५ रु । चेन्नवीरवडेरु श्री श्री श्री श्री श्री

[ यह लेख वैशाख शु० ५, रविवार, शक १५०९ सर्वजित संवत्सर  
 इस तिथिका है । दानिवामके शासक चेन्नवीरप्प वडेर-द्वारा गेरसोप्पेके  
 वीरसेनदेवको कुछ भूमि दी जानेका इसमें उल्लेख है । नालपुर ग्रामकी  
 यह भूमि ४० वराह क्रीमत देकर खरीदी गयी थी । ]

[ ए० रि० मं० १९३१ पृ० ११० ]

४६०

रत्नप्रयबसदि बीलिंगि, ( उत्तर कनडा, मंसूर )

१६वीं सदी ( सन् १५८७ )

[ इस लेखमें मूलसंघ-देसिगण-पुस्तकगच्छके श्रवणबेलगुल मठके चारु-कीर्ति पण्डितका उल्लेख किया है। इन्हें रायराजगुरु, मण्डलाचार्य, बल्लाल-रायजीवरक्षापालक आदि उपाधियाँ प्राप्त थीं। इनकी परम्परामे श्रुतकीर्ति पण्डित हुए। इनकी शिष्यपरम्परा इस प्रकार थी—श्रुतकीर्ति—विजयकीर्ति—श्रुतकीर्ति ( द्वितीय )—विजयकीर्ति ( द्वितीय ), अकलंक—विजयकीर्ति ( तृतीय )—अकलंक ( द्वितीय )—भट्टाकलंक। भट्टाकलंकदेवका समय शक १५१०=सन् १५८७ दिया है। संगीतपुरका लोकप्रयुक्त नाम हाडुवल्लि है। यहाँके राजा इन्द्रभूपालको विजयकीर्ति ( प्रथम ) की कृपासे सिंहासन प्राप्त हुआ ऐसा कहा गया है। विजयकीर्ति ( द्वितीय ) की प्रेरणासे पश्चिम समुद्र तटपर भट्टकल नगरको स्थापना हुई थी। ]

[ ए० ई० २८ पृ० २९२ ]

४६१

जि० दक्षिण कनडा ( स्थान नाम अज्ञात )

शक १५१३=सन् १५९१, कन्नड

[ यह ताम्रपत्र शक १५१३ खर संवत्सरमे किन्निरा भूपालने दिया था। इसमे एक जैन मन्दिरके लिए कुछ भूमिदानका उल्लेख है। ]

( इ० म० दक्षिण कनडा २ )

४६२-४६३

रायबाग ( मैसूर )

शक १५१९ = सन् १५९७, संस्कृत-कन्नड

[ ये दो लेख स्थानीय आदिनाथमन्दिरके दो स्तम्भोंपर हैं - एक कन्नडमे है तथा दूसरा उसीका संस्कृत रूपान्तर है । इसमें ज्येष्ठ व० १४, शक १५१९ के दिन मूलसंघ-सेनगणके सोमसेन भट्टारक-द्वारा इस मन्दिरके जीर्णोद्धारका तथा पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५२-५३ पृ० ३३ ]

४६४-४६५

मारूरु ( दक्षिण कनडा, मैसूर )

शक १५२० = सन् १५९८, कन्नड

[ ये दो लेख हैं । मारूरुके पार्श्वनाथबसतिमे स्थित तीर्थंकरमूर्तियोंकी पूजाके लिए पार्श्वदेवा बिन्नाणि-द्वारा कुछ भूमि दान दिये जानेका ह्वनमें उल्लेख है । पहला लेख चैत्र शु० ३, सोमवार, शक १५२० का है तथा दूसरा लेख पौष शु० २ शुक्रवार, शक १५२० का है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ७४-७५ ]

४९६-४९७

करन्दै ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

संस्कृत-ग्रन्थ, १६वीं सदी

[ यह लेख १६वीं सदीकी लिपिमें है । पुष्पसेन योगीन्द्रके गुरु समन्त-भद्रकी अक्षय कीर्तिका इसमें वर्णन है ।

यहीके एक अन्य लेखमें मुनिभद्रस्वामीका नामोल्लेख किया है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३४, १४५ ]

४६८

हुमच ( मैसूर )

१६वीं सदी, कन्नड

१ श्रीबोम्मरसन रूपवतिदिदन्

[ यह लेख पार्श्वनाथबसदिमे स्थित क्षेत्रपालमूर्तिके पादपीठपर १६वीं सदीकी लिपिमे है । इसमें मूर्तिके निर्माताका नाम बोम्मरस दिया है । ]

[ ए० रि० मै० १९३४ पृ० १७७ ]

४६९

सेतु ( शिमोगा, मैसूर )

१६वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीगुम्मेय सेट्टियर बस्तिय श्रीवर्धमानस्वामिय संनि-  
धानदल्लि गणपणसेट्टियर मग संघय्यसेट्टियरु तमगे पुण्यात्-  
वागि प्रतिष्ठे माडिसिद अभिनन्दनतीर्थेश्वरनिगे मं-

२ गळ महा श्री श्री श्री श्री श्री

[ इस लेखमें संघय्य सेट्टि-द्वारा अभिनन्दन तीर्थंकरकी इस प्रतिमा की स्थापनाका निर्देश है । इस समय गुम्मेयसेट्टिकी बसतिके वर्धमान-स्वामी उपस्थित थे । लिपि १६वीं सदीकी प्रतीत होती है । ]

[ ए० रि० मै० १९४४ पृ० १६६ ]

५००-५०१

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

१६वीं सदी, तमिल

[ इस लेखमें एक पद्यमें कोण्डैमलै निवासी गुणबहिरमुनिवन् ( गुण-  
भद्रमुनि ) की प्रशंसा की गयी है जो दक्षिणप्रदेशमें तमिल और संस्कृतके

सुप्रसिद्ध विद्वान् थे । लेख १६वीं सदीकी लिपिमें है तथा चन्द्रनाथमन्दिरके मुख्य द्वारके पास खुदा है । मन्दिरके मण्डपकी दीवालपर खुदे एक अन्य लेखमें इन्हीं आचार्यको वीरसंघप्रतिष्ठाचार्य यह विशेषण दिया है ।

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र०, ३०२ पृ० ६५ ]

५०२

सौदा ( उत्तर कनडा, मैसूर )

शक १५३० = सन् १६०७, कन्नड

पहली ओर

- १ श्री (१) स्वस्ति (१) श्रीजयाभ्युदय शाकिवाह-
- २ नशकवरुष १५३० नेय प्लवंगसंवत्सर-
- ३ द कार्तिक शु १० बुधवारदलि श्रीमद् राय-

दूसरी ओर

- ४ (राजगुरुमं) डलाचार्य महाबाद-
- ५ (वादीश्वर रा) यवादिपितामह सकलविद्वज-
- ६ (नचक्रवर्ति ब) लालरायजीवरक्षापा-

तीसरी ओर

- ७ लक देशिगणाग्रगण्य संगीतपुरसिंहा (सन)-
- ८ पट्टाचार्य श्रीमदकलंकदेवरुगलु
- ९ श्रीपंचगुरुचरणस्मरणियिद स्वर्गस्थरा-

चौथी ओर

- १० (दरु) (१) अवर निषिधिमंटपळे मंगल महाश्री (१)
- ११ मष्टाकलंकदेवेन स्याद्वादन्यायवादिना(१)

निषि-

- १२ धीमंटपो इब्धः स्थेयादाचंद्रभा (स्क) रं (॥)

[ इस लेखमें देशिगणके प्रमुख संगीतपुरके पट्टाचार्य अकलंकदेवके स्वर्गवासका निर्देश है जो कार्तिक शू० १० शक १५३० के दिन हुआ था । उनकी यह निषिधि उनके शिष्य भट्टाकलंकदेव-द्वारा स्थापित की गयी थी । ]

[ ए० ई० २८ पू० २९२ ]

५०३

करन्दै ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

शक १५४१ = सन् १६१९

[ यह लेख विजयनगरके महामण्डलेश्वर रामदेव महारायके समय शक १५४१, कालयुक्ति, चैत्र ३ के दिन लिखा गया था । वाल नागम नायक और तलत्तार् लोगों-द्वारा कथिलायप्पुलवर् ( नामक जैन विद्वान् ) को कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३७ ]

५०४

मूडबिदुरे ( मैसूर )

शक १५४४ = सन् १६२२, कन्नड

[ इस ताम्रपत्रमें निर्देश है कि सेनगणके समन्तभद्रदेवने इक्केरिमें केलडि वेंकटप्प नायकसे मिलकर तथा उसके अधीन अधिकारी चिन्नभंडार देवप्पसे साहाय्य पाकर बिदुरे नगरकी त्रिभुवनतिलक बसतिका जीर्णोद्धार कराया । तिथि-वैशाख, शक १५४४, रुधिराश्वि संवत्सर । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ पू० २४ क्र० ए ४ ]

५०५

कलकत्ता ( नाहर म्युजियम )

शक १५४८ = सन् १६२६, कन्नड

१ सक १५४८ श्रीमूलसंघ भट्टारक

२ श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् प्रणम

३ श्रीमतिवीर

[ यह लेख पीतलकी चौबीसतीर्थकरमूर्तिके पादपीठ पर है । मूलसंघके धर्मचन्द्र भट्टारकके उपदेशसे श्रीमतिवीर-द्वारा इस प्रतिमाकी स्थापना शक १५४८ मे की गयी थी । लिपिसे पता चलता है कि यह मूर्ति कर्नाटकमें निर्मित है । ]

[ ए० रि० मै० ११४१ पृ० २४९ ]

५०६

कोलारस ( शिवपुरी, मध्यप्रदेश )

संवत् १६८४ = सन् १६२८, हिन्दी-नागरा

[ इस लेखमें शाहजहाँके अधीन शासक अमरसिंहके समयमें एक जैन चैत्यालयके जीर्णोद्धारका उल्लेख है । तिथि आषाढ़ शु० ९, गुरुवार, संवत् १६०॥८४ इस प्रकार दी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २४१ पृ० ४८ ]

५०७

मूडबिदुरे ( मैसूर )

शक १५५४ = सन् १६३२, कन्नड

[ इस ताम्रपत्रमें उल्लेख है कि बिदुरेके दो विभाग बेट्टकेरी तथा मादलंगडिकेरीमें रहनेवाले श्रावक पहले दीवालीका त्यौहार मनाते व्रत



एक दूसरोंसे पत्थर, लाठी आदिसे लड़ते थे । सेनगणके समन्तभद्रदेवने उन्हें इस कार्यसे रोककर दीपाराधना और अन्य पूजाओंसे यह त्यौहार मनानेका आदेश दिया । तदनुसार देवण तथा अन्य शिष्योंके प्रभावसे उसका पालन भी कराया । तिथि-दीपावली, आंगिरस संवत्सर, शक १५५४ । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ ऋ० ए० ४ पृ० २३ ]

५०८

### मूडबिदुरे ( मैसूर )

शक १५६२ = सन् १६४१, कन्नड

[ इस ताम्रपत्र-लेखकी तिथि शक १५६२ विक्रम, मार्गशिर कृ० २ शुक्रवार, ऐसी है । मंगलूर तथा बारकूरके शासक केलडि वीरभद्र नायक-के समयका यह लेख है । पुत्तिगे निवासी चौटवंशके चिक्कराय ओडेय-द्वारा अभिनव चारुकोटि पण्डितदेव तथा मूडबिदुरेके अन्य श्रेष्ठियोंको संरक्षणका आश्वासन दिये जानेका इसमें निर्देश है । इसके पूर्व अधिकारियों-द्वारा धार्मिक तथा वैयक्तिक सम्पत्तिका अपहरण किया गया था अतः यह आश्वासन जरूरी हुआ था । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए ८ ]

५०९-५१०

### शिवपुरी ( मध्यप्रदेश )

संवत् १७०३ = सन् १६४७, हिन्दी-नागरी

[ इस लेखमें महाराज संग्रामके पोतदार जैन मोहनदास-द्वारा कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है । यहींके एक अन्य लेखमें गंगादास और गिरधर-

दास-द्वारा मालवदेशस्थित शिवपुरी ग्राममें एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। प्रथम लेखकी तिथि वैशाख शु० ३, शक १५६८, संवत् १७०३ ऐसी दी है। ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २५०-५२ पृ० ४८-४९ ]

५११

सौदा ( उत्तर कनडा, मैसूर )

शक १५७७ = सन् १६५५, कन्नड

- १ स्वस्ति (i) श्रीजयाभ्यु(द)य शालिवाहनसकव(र्ष)
- २ १५७७ जय सं(वत्सर)द कार्तिक सुध्ध दशमि
- ३ सू(र्षो)दयवाद यरडने घल्लिगेय-
- ४ विल्लि देसि श्रीमद् रायराजगुरु मंड-
- ५ लाचार्यरुं महाबादवादीश्वर रा-
- ६ यवादिपितामह सकलविद्वज्जनच-
- ७ (क्र) वत्तिग(लुं) बल्लालरायजीवरक्षापा-
- ८ लकरुमप्प श्रीमद् भट्टाकलंकजीय(दे)-
- ९ वरु
- १० (श्री)पंचगुरुचरणस्मर(णैयिंद)
- ११ चतुसंघ(समक्ष) दल्लि स्व-
- १२ गंवनैदिदरु (i) इं-
- १३ ती श्री श्री श्री (ii)

[ इस लेखमें देसिगणके श्रीमद् भट्टाकलंकदेवके स्वर्गवासका निर्देश है जो कार्तिक शु० १० शक १५७७ के दिन हुआ था। उनकी समाधि पर यह लेख है। ]

[ ए० इ० २८ पृ० २९२ ]

५१२

टोडा रायसिंह ( जयपुर, राजस्थान )

संवत् १७१८ = सन् १६६२, संस्कृत-नागरी

[ इस लेखमें अम्बावतीके कछवाह वंशके राजा जयसिंहके मन्त्री मोहनदास-द्वारा विमलनाथ मन्दिरके निर्माणका वर्णन है। तिथि फाल्गुन व० १०, बुधवार, संवत् १७१८ ऐसी दी है। उस समय मुगल बादशाह शाहजहाँका राज्य चल रहा था। ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ४१४ पृ० ६९ ]

५१३

श्रीरंगपट्टम् ( मैसूर )

सन् १६६६, कन्नड

[ यहाँके आदीश्वरमन्दिरमें सन् १६६६ का एक लेख है। इसमें चारुकीर्ति पण्डिताचार्यके शिष्य पायण्ण-द्वारा अष्टाह्निकामहोत्सवके लिए कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। ]

[ ए० रि० मै० १९१२ पृ० ५६ ]

५१४

मुल्लगुन्द ( धारवाड, मैसूर )

शक १५९७ = सन् १६७५, कन्नड

[ यह लेख भाद्रपद व० ५, रविवार, शक १५९७ राक्षस संवत्सर-का है। इसमें नागभूपकी पत्नी बनदाम्बिके द्वारा अर्हत् आदिनाथकी मूर्तिकी पुनः स्थापनाका वर्णन है। यह मूर्ति मुसलमानों-द्वारा अष्ट की गयी थी। ]

[ रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ९३ पृ० ८ ]

५१५

, बेल्तूर ( मैसूर )

शक १६०२ = सन् १६८०, कन्नड

- १ ॥ शुभमस्तु ॥ नमस्तुंगशिरश्चुम्बिचंद्रचामर-
- २ चारवे । त्रैलोक्यनगरारम्भमूलस्तंभाय शम्भ-
- ३ वे ॥ स्वस्ति श्रीजयाभ्युदय शालिवाहनशकवर्षग-
- ४ लु १६०२ ने रबुद्रि सं । भाद्रपद व १० क्लु दिक्किकोल्का-  
पुरजि-
- ५ नकंचिपेनुगोंडेसिंहासनद समंतमद्रस्वामिगळ शि-
- ६ प्यराद वीरसेनभट्टारकरवर प्रियशिष्यराद लक्ष्मीसेनम-
- ७ ट्टारकरवरिगे आत्रेयगात्रद आपस्तंभसूत्रद य-
- ८ जुःशारवाद्यायिगळाद श्रीमन्महाराजश्रीहरति सम्मेटरंग-
- ९ प्पराजरवर पौत्रराद कृष्णप्पराजरवर पुत्रराद राय
- १० प्पराजरवरु रत्नगिरिबस्ति देवस्थानदल्लि यी जिनेश्वर-  
स्वामिप्रतिष्ठा-
- ११ कालदल्लि दारागृहीतवागि कोट्ट भूदानद दर्मशासनदान-
- १२ पट्टे क्रम वेंतेंदरे  
( पंक्ति ३ से १२ तकका पाठ पंक्ति २६ तक दो बार  
दोहराया है । )
- २७ क्रम वेंतेंदरे यी रत्नगिरि स्थळदल्लि अनादियागिचिहंथाव-
- २८ स्ति देवस्थानदल्लि जिनेश्वरस्वामिगे आराधने नडेयदे यिह-

## पिछला भाग

- २९ थादरखि नीबु मत संरक्षण्यकर्तरागि बुद्धभविसिदंथा थो—  
 ३० गनिष्ठरादरिद यी देवस्थानवनू पुनः जीर्णोद्धारव माडि  
 ३१ संप्रोक्षणे प्रतिष्ठेयनू माडि देवता नित्य बैमवबु सार्व-  
 ३२ कालबु नडदु आ सुकृत नमगु बुंतागुव रीतिगे नडसिधिरागि  
 ३३ अडु निमित्त्य आ महोत्सवाकालदह्लि निगमे नम्म सिरैहद सीमे-  
 ३४ योलगण संते दोङ्गेरि होबलि गूडिद बहुवन हल्लिस्थ-  
 ३५ लदोलगण आपिनहल्लियनू सहिरण्योदकदानधारा-  
 ३६ गृहीतवागि त्रिवाचबु त्रिकरणयुक्तवागि धारेयने-  
 ३७ रदु कोट्टेवागि आ ग्रामक्के सलुवंता यरेनेळ कॅनेलका-  
 ३८ डारम्म नीरारम्म अणे अच्चुकट्टु यात कपिले गूडेगू-  
 ३९ थिलु केरे कुंटे कालुवे मोदकागि आ ग्रामक्के सलुवंता परिस्तरण-  
 ४० दोळगागि वुत्पत्ति आदंता सकळ सुवर्णादाय सकळमत्ता-  
 ४१ दायवन् निम्म सिष्यपारम्पयंअनुभविसि कौंडुसु-  
 ४२ खदल्लि थिहुदेंदु बरसि कोट दानपट्टे । स्वदत्ताद्धि-  
 ४३ गुणं पुण्यं परदत्तानुपालनं । परदत्तापहारणं  
 ४४ स्वदत्तं निष्फलं भवेत् ॥ श्रीरामा

[ इस दानपत्रकी तिथि भाद्रपद कृ० १०, शक १६०२ रौद्रि संवत्सर, ऐसी है : इसमें रंगप्पराजके पौत्र तथा कृष्णप्पराजके पुत्र रायप्पराज-द्वारा लक्ष्मीसेन भट्टारकको रत्नगिरिवस्तिके लिए आपिनहल्लि नामक ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है । लक्ष्मीसेनको दिल्ली, कोल्लापुर, जिनकंचि तथा पेनुगोंडे के सिंहासनाधीश कहा है । वे समंतभद्र स्वामीके प्रशिष्य तथा वीरसेन भट्टारकके शिष्य थे । दानदाता रायप्प राजा हरति नगरके प्रमुख थे । उन्हें आत्रेय गोत्रके आपस्तंबसूत्रानुयायी कहा है ।

[ ए. रि. मै. १९३९ पृ. १८७ ]

५१६

बेल्लूर ( मैसूर )

कन्नड ( सन् १६८० )

[ यह लेख विमलनाथमूर्तिके पादपीठपर है। पद्मकुलके शर्कर-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना हुई थी। यह हूलिकल निवासी था तथा समन्तभद्रा-चार्य के शिष्य लक्ष्मीसेनाचार्यका शिष्य था। समय लगभग सन् १६८० का है। ]

[ ए० रि० मै० १९१५ पृ० ६८ ]

५१७-५१८

पोन्नूर ( उ० अर्काट, मद्रास )

शक १६५५ = सन् १७३३, तमिल

[ स्थानीय जिनमन्दिरके छतमें लगे स्तम्भपर यह लेख है। तिथि वैशाख २७, प्रमादी संवत्सर, शक १६५५, कलिवर्ष ४८३४ यह है। इसमें कहा है कि स्वर्णपुर-कनकगिरिके जैन हेलाचार्यकी साप्ताहिक पूजा-के लिए प्रति रविवारको पार्श्वनाथ तथा ज्वालामालिनीकी मूर्तियाँ नीलगिरिपर्वतपर ले जाते हैं। यहीके अन्य लेखमें पार्श्वनाथकी स्तुतिमें कुछ मन्त्र लिखे हैं। ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४१६-१८ पृ० ४० ]

मूललेख

१ स्वस्ति श्री शालिवाहनशकाब्दः १६५५ कल्यब्दः ४८३४ वक्रु  
मेळ् चेल्ला निण्ण प्रमवादि ग ( श ) काब्दः वरुषं ४६ वक्रु  
प्रमादिच्च वरुषं वैशाखमादं १७ ( उ ) एलुदिय शासनमावदु ( १ )  
स्वस्ति श्रीस्व ( णं ) पु ( र ) कनकगिरि आदीश्वरस्वामिचैत्यालय  
सम्बन्दमान वायुमूळैयिलि-

२ रुक्कुं नीलगिरि हेलाचार्यपादपूजै आदिवारन् तोस्म मेपाडि  
आलयत्तिन् श्रीपार्श्वनाथस्वामियुं ज्वाळामा (लि) निन्नम्मणैयुं  
मेपाडि स्वर्णपुरजैनगाल् एडुत्तुकोण्डु पोय् पूजिप्पट्टु (१) इन्द  
शासनमनन्तसेनदेव (नाले) लुङ्गपट्टु (११)

[ ए० इ० २९ पृ० २०२ ]

५१६

करन्दै ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

शक १६६९ = सन् १७४८, तमिल

[ यह लेख ज्येष्ठ शु० ५, शुक्रवार, शक १६६९ को लिखा गया था ।  
मुनिगिरि स्थित कुन्थुनाथस्वामीके मन्दिरके गोपुरका जीर्णोद्धार अगस्तियप्प  
नायिनार्ने किया ऐसा इसमें कहा गया है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३६ ]

५२०

मूडबिदुरे ( मैसूर )

शक १६७६ = सन् १७५७, कन्नड

[ बिद्यानगर ( विजयनगर ) के राजा विजय सदाशिव महारायके  
अधीन सोदे प्रदेशके शासक अरसप्पोडेयके पुत्र इम्मडि अरसप्पोडेयने  
वेण्णोगावे ग्रामकी कुछ जमीन अपने गुरु चारुकीति पण्डितदेवको अर्पित की  
ऐसा इस ताम्रपत्रमे उल्लेख है । तिथि-मार्गेश्वर शु. १ शक १६७९, राक्षस  
संवत्सर । ]

[ रि. सा. ए. १९४०-४१ पृ. २४ क्र. ए ६ ]

५२१

बालूर ( धारवाड, मैसूर )

शक १(६) ८५ = सन् १७६३, कन्नड

[ जैन मन्दिरके सन्मुख दीपमाला स्तम्भपर यह लेख है । देवण और उसके पुत्रोंका इसमें उल्लेख है । तिथि कार्तिक शु. १०, सोमवार, विक्रम, शक १६८५ ऐसी दी है । ]

[ रि. इ. ए. १९४५-४६ क्र. २१३ ]

५२२

तिलिवल्लि ( धारवाड, मैसूर )

१८वीं सदी, कन्नड

[ इस निसिधि लेखमें वैशाख शु. ५ सोमवार, स्वर्भानु संवत्सरके दिन पुजारी पेवय्यके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि. इ. ए. १९४५-४६ क्र. २५३ ]

५२३

काकन ( जि० मोंघीर, बिहार )

संवत् १८२२ = सन् १७६६, संस्कृत - नागरी

जैन मन्दिरमें चरणपादुकाओंके चारों ओर

[ इस लेखमें काकन्दीके जैन संघ-द्वारा संवत् १८२२ वैशाख शु० ६ को जैन मन्दिरके जीर्णोद्धारका तथा सुविधिनाथके चरणोंकी स्थापनाका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० ३ ]



५२४

मैसूर

कन्नड

शान्तीश्वर बसतिमें दीपस्तम्भोंपर

[ इस लेखमें चामराजकी रानी देवीरम्मणि-द्वारा उक्त दीपस्तम्भ शान्तीश्वर बसतिको अर्पित किये जानेका उल्लेख है । ये चामराज मैसूरके राजा चामराज वोडेयर ( नवम ) ( सन् १७७६-९६ ) होंगे । ]

[ मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित ]

[ ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०२ ]

५२५

मैसूर

कन्नड

उपर्युक्त बसतिमें चार कलशोंपर

[ इस लेखमें उपर्युक्त रानी देवीरम्मणि-द्वारा शान्तिनाथके अभिषेक-के लिए इन चार कलशोंके दानका निर्देश है । ]

[ मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित ]

[ ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०२ ]

५२६-५२७

नरसिंहराजपुर ( मैसूर )

सन् १७७८-७९, कन्नड

[ यहाँके दो लेख सन् १७७८ तथा १७७९ के हैं । पहलेमें वियंग बरमैयके पुत्र नागप्प-जो काम्बोदि वैश्य था तथा निर्घडेवृक्षसंघका था -

द्वारा एक मण्डपकी स्थापनाका उल्लेख है। दूसरेमें इसी व्यक्ति-द्वारा मूर्तिका पादपीठ अर्पित करनेका उल्लेख है। रविवारव्रतकी समाप्तिपर यह दान दिये गये थे। ]

[ ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८४ ]

५२८

मैसूर

शक १७३६ = सन् १८१४, कन्नड

शान्तीश्वर बसन्ति-गर्मगृहके द्वारके पीतलके आवरणपर

[ इस लेखमें दनिकार पद्मयके पुत्र नागय-द्वारा ३९३ ( सेर ) वजन-के इस पीतलके गन्धकुटी ( द्वार ) के आवरण दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान आश्विन शु० १, शक १७३६, भाव संवत्सरके दिन दिया गया था। ]

[ मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित ]

[ ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०२ ]

५२९

मैसूर

( शक १७३६ = सन् १८१४ ) संस्कृत-कन्नड

शान्तीश्वर बसन्ति-सुखनासि द्वारके आवरणपर

श्रीमच्छांतिजिनेन्द्रस्य पंचकल्याणसंपदः ।

श्रिया मेरुजिनागारं हसतश्चैक्यवेश्मनः ॥१॥

पराधर्यरचनोपेतं कवाटमिदमद्भुतं ।

कारयामास सद्भक्त्या श्रावको जैनमार्गतः ॥२॥

नागनामा पितुः स्वस्य भरिनागाङ्गस्य च ।

धनिकारपदाङ्गस्य स्वर्मोक्षसुखकण्ठये ॥३॥

[ इस लेखमें निर्देश किया है कि प्रस्तुत द्वारका निर्माण धनिकार मरिनागके पुत्र नाग-द्वारा किया गया । इस लेखमें समयनिर्देश नहीं है किन्तु पिछले लेखका ही समय इसका भी होगा ऐसा अनुमान होता है । ]

[ ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०३ ]

५३०

मैसूर

शक १७५४ = सन् १८३२, संस्कृत-कलह

अनन्ततीर्थकरकी मूर्ति - शान्तीश्वर वसति

- १ श्रीमत्कश्यपगोत्रजो जिनपदांभोजे कसं षट्पदः क्षात्रीयोत्तम-  
देवराजनृपतिः सद्धर्म-
- २ पत्न्या सह ( । ) केषम्मण्यमिधानया व्रतयुजा स्वर्गापवर्गप्रदं  
कृश्वानंतवर्त तदा-
- ३ रचितवान् बिंबं मुदैवच्छुभं ॥ अंबुधोद्विषदौलेंदु-प्रमितेस्मिन्  
शकाब्दके ।
- ४ नन्दने वत्सरे भाद्रमासे शुक्लाष्टमीतिथौ । अनंतनाथबिंबस्य  
प्रतिष्ठां जग-
- ५ दुत्तरां ( । ) कारयामास पूर्वोक्तदेवराजनृपोत्तमः ॥

[ इस लेखमें कश्यप गोत्रके उत्तम क्षत्रिय राजा देवराज तथा उनकी धर्मपत्नी केषम्मणि-द्वारा अनन्तप्रतकी पूर्णताका उल्लेख है । उक्त दम्पतिने इस अवसरपर भाद्र शुक्ल अष्टमी, शक १७५४, नन्दन संवत्सर, के दिन अनन्तनाथकी यह मूर्ति स्थापित की । इस समय मैसूरमें कृष्णराज वडेयर ( तृतीय ) का राज्य चल रहा था । अतः लेखोक्त देवराज नृपति मैसूरकी अरसु जातिके प्रमुखोंमें-से एक थे ऐसा अनुमान होता है । ]

( ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०१ )

५३१

हले हुब्बलि ( जि० धारवाड, मैसूर )

शक १७८४ = सन् १८६२, कन्नड

[ यह लेख शक १७८४ का है । कहा गया है कि इस वर्ष एक नया जगट बनवाया गया । यह उस पुराने जगटसे बनवाया था जो यहाँके अनन्तनाथबसदिमें पिछले ११०० वर्षोंसे था । ]

[ रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० ३५ पृ० २५७ ]

५३२

चित्तामूर ( द० अर्काट, मद्रास )

शक १७८७ = सन् १८६५, संस्कृत-ग्रन्थ

[ यह लेख स्थानीय जिनमन्दिरके गोपुरकी दीवालपर है । इस गोपुर-का निर्माण अभिनव आदिसेन भट्टारकने सार्वजनिक सहायतासे किया ऐसा उल्लेख है । तिथि ज्येष्ठ पूर्णिमा, शुक्रवार, शक १७८७ क्रोधन संवत्सर ऐसी दी है । इसी दीवालपर एक अन्य लेखमें जिनालयनिर्माणसे प्राप्त पुण्यकी प्राप्त पुण्यकी प्रशंसाके कुछ श्लोक हैं । ]

[ रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ५१९-२० पृ० ५८ ]

५३३

मैसूर

१६वीं सदी, कन्नड

शान्तीश्वर बसतिमें सर्वाणह यक्षकी मूर्तिके पादपीठपर

इस लेखमें मरिनागेय नामक व्यक्ति-द्वारा महिसूरके शान्तीश्वर बसतिमें सर्वाणहयक्षकी मूर्तिके पादपीठपर पीतलका आवरण लगानेका

उल्लेख किया है। मरिनागेय दनिकार परचयका पुत्र था। लिपि १९वीं सदीकी है।

[ मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित ]

[ ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०० ]

५३४

मैसूर

१९वीं सदी, कन्नड

उपर्युक्त बसतिमें घण्टापर

[ इस लेखमें शिरसैयके छोटे भाई पुट्टैय-द्वारा इस घण्टेके दानका उल्लेख है। लिपि १९वीं सदीकी है।

( मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित )

[ उपर्युक्त पृ० १०० ]

५३५

मत्तावार ( मैसूर )

१९ वीं सदी, कन्नड

मत्तवूर बस्ति पाश्वर्नाथस्वामिचैत्यालयके

ऐवर अंबणनुब

[ यह लेख एक घण्टेपर खुदा है। ऐवर अंबण-द्वारा यह घण्टा मत्तवूरके पाश्वर्नाथस्वामी चैत्यालयमें अर्पण किया गया था। लिपि १९वीं सदीकी है। ]

[ ए० रि० मै० १९३२ पृ० १७५ ]

५३६

कञ्जुपतिपाडु ( नेलोर, आन्ध्र )

तमिल

[ इस लेखमें करिकालचोल जिनमन्दिरके लिए मतिसागरदेवके उपदेशसे प्रमलदेवी-द्वारा सीढ़ियाँ बनवानेका निर्देश है। यह लेख सम्राट् राजराजदेवके ३७वें वर्षका है। ]

नोट—चोल राजराज नामक किसी भी राजाका राज्य ३७ वर्षकी दीर्घ सीमा तक नहीं पाया जाता। अतः इस लेखकी तिथि गलत प्रतीत होती है। ]

( इ० म० नेलोर ५०२ )

५३७

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

तमिल

[ यह लेख पल्लव राजा सकल भुवनचक्रवर्ति पेरुंजिगदेवके तीसरे राज्यवर्षका है। इसमें इस देव-मन्दिरकी प्रदक्षिणामालिकाका निर्माण पालैयूर निवासी...शिगन्-द्वारा किये जानेका उल्लेख है। लेख चन्द्रनाथ-मन्दिरके प्राकारके पश्चिमी दीवारपर खुदा है। ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१४ पृ० ६६ ]

५३८

गेरसोप्पे ( मैसूर )

संस्कृत-कन्नड

१ घनशोकवलीमंजुलदेशीगणललितकीर्तिमुनिस्सुनोः (१) श्रीदेव-  
चन्द्रसूरूपदेशास्त्रेमिजिनविम्बं ॥

२ श्लोकः ॥ भोजणश्रेष्ठिपुत्रोसौ कल्लपश्रेष्ठिपुंगवः (१) अकारयत्  
सुतो यस्य माबाम्बागर्मजोजणः ॥

[ यह नेमिनाथ मूर्ति भोजणश्रेष्ठिके प्रपौत्र तथा कल्लपश्रेष्ठि एवं  
माबाम्बाके पुत्र भोजणश्रेष्ठिने देशीगण-घनशोकवलीके आचार्य ललितकीर्तिके  
शिष्य देवचन्द्रसूरिके उपदेशसे स्थापित की । ]

[ ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९५ ]

५३६

### गेरसोप्ये ( मैसूर )

कल्लड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनं (१) जीयात् त्रैलोक्यनाथ-  
स्य शासनं जिनशासनं (॥)
- २ श्रीजिनराजराजितपदाम्बुजराजमराल नगिरिय राजशिरो-
- ३ मणि प्रचुरकीर्तिदिशावलयप्रकाशनुं तेजभुजप्रतापरिपुराजमुखां-
- ४ वुजं हस्तवीरनुं भूजनवन्ध होञ्जनृपनर्थिजनावन कल्पवृक्षनुं  
होन्-
- ५ नमहीशनात्मजेयु मालियब्बरसिगे कामराजगं सञ्जुतमूर्ति होञ्ज-  
नृपनात्मसवान्-
- ६ धव मंगराजनुं मन्मथरूप हरिहरनृपाळकनातन पुत्र हैवणरसंगे  
मनःप्रियान्-
- ७ गनेयु सान्तलदेवि समाधिकाळदोलु आकेय गुरुगलु लोकह्याति-  
यनान्तिद् अनन्-
- ८ तवीर्यरु रतिसंकाशसोबगेनिसि सन्दिर्दा कान्तेगे हैवणरस  
वह्लमनादं । स्मररूपं
- ९ सूद्रकंगी पुरदोलु कीर्तिवेत्त बोम्मणसेट्टिव वरवनिते बोम्मकंगं  
वरसुगु-

- १० णि सान्तलरसि पुट्टिदलागल् । अरसप्पोडेयर तनूजे वरगुणि  
बोम्मकनाकेयात्मजे सान्तकरसि-
- ११ यु परमन पदमं स्मरियिसि सुरलोकवेय्दि सुखदिन्दिदंलु  
अहन्तन पादाम्बुजमं
- १२ स्मरयिसुत्तं नम्बि(?) पदम नाकगेयोलु उच्चरिसुत्त सान्तकरसि  
शरीरमं पत्तेण्टुदिन-
- १३ दोलु सन्दलु वरवत्सर तारणदोलु सुरुचिर-फाल्गुणद शुद्ध  
पाडिवतिथियोलु हरिदश्व-
- १४ दिनदि सान्तकरसियु स्वर्गस्थलादल् भाकेनिमित्तं माडिसिद  
निषिधिय कल्लिगे मंगल महाश्री-

[ यह निषिधि-लेख रानी सान्तलदेवीके समाधिमरणका स्मारक है । इसकी तिथि फाल्गुन शु० १, रविवार, तारण संवत्सर ऐसी थी । यह देवी बोम्मणसेट्टिकी कन्या तथा हैवणरसकी पत्नी थी । हैवणरसका पिता मंगराज था जो कामराज और मालियव्वरसिका पुत्र था । मालियव्वरसिके पिता गेरसोप्पेके राजा होत्र थे । उसका एक और पुत्र हरिहर नृपाल था । सान्तलदेवीकी माता बोम्मक्का अरसोप्पोडेयकी कन्या थी । ]

[ ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९९ ]

५४०

साल् ( मैसूर )

कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंजीरस्याद्वादा-
- २ मोवलांछनं ।...
- ३ ...शासनं जिनशा...
- ४ सनं श्री...चन्द्रनाथदेव-



- ५ र गुड्डि नादोब्बेय...  
 ६ ...नागय्यंगलु निलि-  
 ७ सिद कल्लु...सालियूर  
 ८ ...महाजन...

[ इस निषिधिलेखमें चन्द्रनाथदेवकी शिष्या नादोब्बेके समाधिमरण तथा नागय्य-द्वारा इस निषिधिकी स्थापनाका उल्लेख किया है। ]

[ ए० रि० मै० १९२७ पृ० १२९ ]

५४१

सक्करेपट्टण ( मैसूर )

कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोषलाञ्छनं । जीया-  
 २ त् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं । श्रीमद् राजगुरु  
 ३ ...मौनपाचार्य श्री होसूर शिष्य नूलवागि-  
 ४ सेट्टिय मग नूलवन्दिसेट्टिय निषिधि  
 ५ शार्वरि संवत्सरद् ६ आषाढ सुध १४ आदि

[ यह निषिधिलेख होसूरके राजगुरु मौनपाचार्यके शिष्य नूलवागि-सेट्टिके पुत्र नूलवन्दिसेट्टिका स्मारक है । तिथि आषाढ शु० १४, रविवार, शार्वरी संवत्सर, इस प्रकार बतलायी है । ]

[ ए० रि० मै० १९२७ पृ० ६३ ]

५४२

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

तमिल

[ इस लेखमें अप्पाण्डार ( चन्द्रप्रभ ) मन्दिरके इस गोपुरका निर्माण परमजिनदेवजीयर्-द्वारा किये जानेका उल्लेख है । लेखकी तिथि पंगुणि

द्वितीया, रेवती नक्षत्र, रविवार, युव संवत्सर इस प्रकार दी है। लिपि आधुनिक है।

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१५ पृ० ६७ ]

५४३

### मुत्तगदहोसूर ( मैसूर )

कन्नड

१ सिद्धजिनालय

२ सान्तेऔवेय बसदि

३ बगे माडिसिदनु

[ इस छोटे-से लेखमें सान्तेऔवे नामक महिला-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका उल्लेख है। ]

[ ए० रि० मै० १९२४ पृ० २३ ]

५४४

### उम्मत्तूर ( मैसूर )

१ स्वस्ति श्री.....राज-

२ भट्टारह.....नोन्तु

३ सन्यसनं गेटदु मुडि

४ पिदर् कल्ल निलिसिद शा-

५ न.....पण्डितं....

[ इस लेखमें.....राज भट्टारकके समाधिमरण तथा ज्ञान.....पण्डित-द्वारा इस निषिधिकी स्थापनाका उल्लेख है। ]

[ ए० रि० मै० १९२८ पृ० ४७ ]

५४५

## कम्मनहल्लि ( मैसूर )

कण्ठ

- १ श्रीमत्परभगंभीरस्थाद्वादामोघकाञ्छनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य  
शासनं जि....
- २ ....श्रीमति मूलसंघ....संघोद्भव....शुभे देशीगणे
- ३ ....स्याद्वादारिणाशानि....कैवल्यजन्मावनिः
- ४ ....मयचन्द्रकरुणा....कलियुगे....
- ५ ....बुल्लप....शोभते....
- ६ ....जिनपदसेवेयोलुचितदानदोलु....यिन्तु सुख....
- ७ जिनेश्वरनाम....मनदोल् ....बुल्लपं
- ८ ....प्रभवसंवत्सर....देवाक....
- ९ माडिसि....(१) हारदानककं

[ यह लेख बहुत घिस गया है । प्रभवसंवत्सरमें बुल्लप-द्वारा किसी मन्दिर-निर्माणका तथा उसमें आहारदानके लिए कुछ व्यवस्थाका इसमें उल्लेख है । मूलसंघ-देशीगणके अभयचन्द्र आचार्यका भी उल्लेख हुआ है । ]

[ ए० रि० मै० १९२८ पृ० ८७ ]

५४६

## गोणिबीड ( मैसूर )

कण्ठ

- |                 |          |
|-----------------|----------|
| १ स्वस्ति श्री- | २ मतु भ- |
| ३ नन्तन ड-      | ४ धापनेय |

५ चउवीस तीर्थक

६ र प्रति-

७ मे मंगल

[ यह चौबीसतीर्थकरमूर्ति अनन्तव्रतके उद्यापनके समय स्थापित की गयी थी। इस समय बन्नि महाकाली मन्दिरमें सुनारों-द्वारा इसकी पूजा की जाती है । ]

[ ए० रि० मै० १९२७ पृ० ७४ ]

५४७

कल्लहल्लि ( मैसूर )

कल्लह

१ स्वस्ति श्रीमूलसंग देसिगण पुस्तकगत्स कुण्डकुन्दान्ववायं...  
श्रीजयदेवम-

२ टारकदेवर प्रियसिस्वरु श्रीअनन्तवीर्यदेवर प्रियगुडुगलु जीब-

३ गौड मल्लिगौडन मग मुद्दिगौडन मग राय-

४ गौड माडिसिद् आदिपरमेश्वरप्रतिमेश्वरु मंगल म-

५ हाश्री श्री श्री रूवारि वूपोजन मग रूवारि नागोज माडिद्

[ इस लेखमें देसिगणके जयदेवभट्टारकके शिष्य अनन्तवीर्यदेवके शिष्य रायगौड-द्वारा आदितीर्थकरकी मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। यह मूर्ति रूवारि वूपोजके पुत्र रूवारि नागोजने उत्कीर्ण की थी । ]

[ ए० रि० मै० १९२५ पृ० ९३ ]

५४८-५५६

तंगले ( मैसूर )

कल्लह

[ यहाँ एक शिलालेखपर कुछ मुनियोंकी मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं तथा उनके नीचे इस प्रकार नाम दिये हैं - १ नमोहते अजितकीर्तिगलु २

देवनन्दिग्रतिगलु ३ गुणसागरभटारकर ४ कीर्तिसागरभटारकर ५ अजितसेन-  
भटारकर ६ प्रभाचन्द्रदेवर ७ विमलगुणग्रतिगलु ८ अजितसेनभटारकर ९  
शुभचन्द्रर । ]

[ ए० रि० मै० १९२५ पृ० ५१ ]

५५७

### कनकरायनगुड्ड ( मैसूर )

कन्नड

१ श्रीकोण्डय्यसेट्टियर् २ मूलस्थानवसद्विय स्था-

३ नक्के''''कन्तिथर मगल् ४ विजयक्कं कोट्ट मण्णु

५ मू -

[ इस लेखमें कोण्डय्य सेट्टि-द्वारा निर्मित मूलस्थान जिनालयके लिए  
विजयक्का-द्वारा कुछ भूमि दान दी जानेका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९२५ पृ० ३८ ]

५५८

### हुलदेनहल्लि ( मैसूर )

कन्नड

१ परमेश्वर पृथ्वीराज्य--

२ रसारपुर वूर्वेल्लिय--

३ योल्कट्टि किलगणकरे--

४ नन्दिबडिगल् पडेदराताद--

५ रु साक्षि सिडिलवडु तोरेदे--

६ पालु अरुगोल केरेय केलग--

७ ण देसे पलु मने तार इदके सा--

८ वस्तर तेकलनाड पल्पसार द--

[ इस लेखका ऊपरका और दाहिना भाग टूटा है । नन्दियडिगल् आचार्यको कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९२६ पृ० ८३ ]

५५६

तोललु ( मंसूर )

कन्नड

- १ श्रोमत्परमगंभारस्याद्वादा-
- २ मोघलांछनं जीयात् त्रैलोक्यना-
- ३ थस्य शासनं जिनशासनं । स्वस्ति यमनि-
- ४ यमस्वाध्यायगुणसम्पन्नरूप्य अभयच-
- ५ न्द्रदेवरु सर्गगामिगलाद परोक्ष-
- ६ यममागल् पद्मावतियक्क माडिसिद सास-
- ७ नं ॥ अरेवेसनागिरह बसदियं माडि-
- ८ सिदरु देवर मनेय परिसूत्रद गट्टुं कट्टि-
- ९ यिसिदरु मनेयं माडि नडुम्मरनुमं नट-
- १० रु इनिसक्कं यिक्कि पूजिसिद गद्याणवेप्प-
- ११ तु । इन्तप्पुदक्के साक्षि मुद्गवुण्डनु भास-
- १२ गवुण्डनुं तम्मडियं ररु । बिट्टियणनुं ने-
- १३ मणनुं ईस्तानकोडेयरु ।

[ इस लेखमें कहा है कि आचार्य अभयचन्द्रकी मृत्यु होमेपर उनकी शिष्या पद्मावतियक्काने एक अधूरे जिनमन्दिरको पूर्ण किया । इस कार्यमें ७० गद्याण खर्च हुए । इस मन्दिरके व्यवस्थापक बिट्टियण तथा नेमण थे । मुद्गवुण्ड तथा भासगवुण्ड इसके साक्षी थे । ]

[ ए० रि० मै० १९२६ पृ० ४२ ]

५६०-५६१

यल्लवट्टि ( जि० धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ यहाँ दो लेख हैं । एकमें मूलसंघ-देशीयगणके सकलचन्द्रदेवके गृहस्थ शिष्य सेनबोव केतय्यकी मृत्युका उल्लेख है । इसकी तिथि मार्ग-शिर शु० ८ शुक्रवार, आनन्द संवत्सर ऐसी दी है ।

दूसरे लेखमें मूलसंघ-देशीयगण-पोस्तक गच्छ — कोण्डकुन्दान्वयके देव-कीर्ति भट्टारकके एक शिष्यकी मृत्युका उल्लेख है । इसकी तिथि श्रावण कृ० ९ रविवार, साधारण संवत्सर ऐसी है । ]

( रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ६०-६१ )

५६२

शाबल ( जि० धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें देशीयगणके बालचन्द्र त्रैविद्यदेवके एक गृहस्थ शिष्यकी मृत्युका उल्लेख है । मार्गशिर कृ० ३, व्यय संवत्सर ऐसी तिथि दी है । ]

( रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ५४ )

५६३

दानबुलपाडु ( जि० कडप्पा, आन्ध्र )

कन्नड

[ इस लेखमें कनककीर्तिदेवके शिष्यकी — जो पेनुगोण्डका एक व्यापारी था — निसिधिका उल्लेख है । ]

( इ० म० कडप्पा १४९ )

५६४

मुल्कि ( दक्षिण कनडा, मैसूर )

कन्नड

[ जैन बसदिके आगे मानस्तम्भकी दक्षिण बाजूपर । इसमें तीर्थकरों-  
की प्रशंसामें पाँच श्लोक लिखे गये हैं । ]

( ६० म० दक्षिण कनडा ९३ )

५६५

मद्रास ( म्यूजियम )

कन्नड

[ यह लेख शान्तिनाथकी मूर्तिके पादपीठपर है । महाप्रधान ब्रह्मदेवण-  
द्वारा स्थापित किये हुए येरग जिनालयमें यह मूर्ति थी । मूलसंघ, कुण्ड-  
कुन्दान्वय, काणूरगण, तिन्नित्रणि गच्छके महामण्डलाचार्य सकलभद्र भट्टारक  
ब्रह्मदेवणके गुरु थे । ]

( ६० म० मद्रास ३२४ )

५६६

मद्रास ( म्यूजियम )

कन्नड व संस्कृत

[ इस लेखमें साहित्यप्रिय साल्व-राजा द्वारा शास्त्रोक्त रीतिसे शान्ति-  
नाथकी मूर्तिके निर्माणका तथा स्थापनाका निर्देश है । ]

( ६० म० मद्रास ३२५ )



५६७

कोगलि ( बेल्लारी, मैसूर )

कसड

जैन मन्दिरमें एक मूर्तिके पादपीठपर

[ चैत्र शु० १४, रविवार, परिधावि संवत्सरमें अनन्तवीर्यदेवके शिष्य ओबेयमसेट्टि-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका इस लेखमें निर्देश है । ]

( इ० म० बेल्लारी १९० )

५६८

कीलक्कुडि ( मदुरा, मद्रास )

तमिल

[ गुहामे जैन मूर्तिके पादपीठपर ।

गुणसेनदेवके शिष्य वर्धमानव पण्डितके शिष्य गुणसेनपेरियडिगल-द्वारा यह मूर्ति खुदवायी गयी ऐसा इस लेखमें निर्देश है । यहांकी अन्य दो मूर्तियोंके लेखोंमें भी गुणसेनदेवका उल्लेख है । ]

[ इ० म० मदुरा ३९ ]

५६९

कुण्डघाट ( जि० मोंधीर, बिहार )

संस्कृत-गौडीय

जैन मन्दिरमें महावीरमूर्तिके पादपीठपर

[ इस लेखमें वीरेश्वरक-द्वारा इस मूर्तिके दिये जानेका निर्देश है । ]

[ रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० ९ ]

५७०

पेनुकोण्ड ( जि० अनन्तपुर, आन्ध्र )

कन्नड

पार्श्वनाथमन्दिरके समीप एक कुँएके पास शिलापर

[ यह जिनभूषणभट्टारकदेवके शिष्य नागय्यका समाधि लेख है । ]

[ इ० म० अनन्तपुर १६७ ]

५७१

कायाम्पट्टि ( मद्रास )

तमिल

[ यह लेख शमणर् तिडल् नामक भग्न जिनमन्दिरके पास है । जयवीर पेरिलमैयान्-द्वारा तिरुवेण्णायिल् स्थित ऐन्नूरुवपेरुम्पल्लि ( जिन-मन्दिर ) के आगे फ़र्श बनवानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ इ० पु० क्र० १०८३ पृ० १५१ ]

५७२-५७३

मलैयकोविल् ( मद्रास )

तमिल

[ इस लेखमें जैन आचार्य गुणसेनका नाम दिया है । साथमें परवादिनिदा यह उपाधि है । स्थानीय गुहामन्दिरके पास पाषाणपर यह लेख उत्कीर्ण है । ऐसा ही लेख तिरुमय्यम्के सत्यगिरीश्वरमन्दिरके एक पाषाणपर भी है । ]

[ इ० पु० क्र० ४५ पृ० १ ]

५७४

तेणिमलै ( मद्रास )

तमिल

[ यह लेख एक पाषाणपर उत्कीर्ण जिनमूर्तिके नीचे है। यह मूर्ति ( तिरुमेणि ) शिवल्ल उदण सेरुवोट्टि-द्वारा उत्कीर्ण थी ऐसा लेखमें कहा है। ]

[ इ० पु० क्र० १० पृ० १ ]

५७५

पुण्डि ( जि० उत्तर अर्काट, मद्रास )

तमिल

पोन्निनाथ जैन मन्दिरके पश्चिमी दीवालपर

[ इस लेखमें शम्बुवरायका उल्लेख है। वीरवीरजिनालय नामक मन्दिरकी स्थापनाका तथा उसे एक गाँव दान देनेका उल्लेख इस लेखमें है। ]

[ इ० म० उत्तर अर्काट २१० ]

५७६

मूडबिदुरे ( मैसूर )

कन्नड

[ इस ताम्रपत्रके तीन भाग हैं। पहला भाग वृषभ २२, गुरुवार, तारण संवत्सरके दिनका है। इसमें चन्द्रकीर्तिदेव-द्वारा २४ तीर्थंकरोंको पूजाके लिए २०० होन्नु अर्पण किये जानेका उल्लेख है। यह रकम विष्णु कलुम्बहको कर्ज दी गयी थी। उसने अपनी कुछ जमीन गिरबी रखकर इस रकमके ब्याजके रूपमें १६ मन चावल देना स्वीकार किया था। दूसरा भाग कर्क ९, बुधवार, स्वर्भानु संवत्सरके दिनका है। इसमें श्रीधर पडि-

कोदि-द्वारा जमीन गिरवी रखकर २१०० वीररायफण कर्ज प्राप्त करनेका उल्लेख है। इसके व्याजके रूपमें २८ मुठे चावल देना स्वीकार किया था। इसका उपयोग गेरुसोप्येकी ललितादेवी-द्वारा स्थापित बसदिमें पूजाके लिए होना था। तीसरा भाग मेष १, रविवार, नन्दन संवत्सरके दिनका है। इसमें तीन बन्धुओं-द्वारा पार्श्वनाथबस्तिसे कुछ कर्ज लेनेका तथा उस-पर कुछ निश्चित रकम व्याज देनेका उल्लेख है। ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए ९ ]

५७७

मूडबिदुरे ( मैसूर )

कल्लड

[ इस ताम्रपत्र-लेखमें चारुकीर्ति पण्डितदेव-द्वारा निर्मित चण्डोग्र पार्श्वनाथबसदिके लिए कर्वरबलिके बर्मनन्द तथा उनके बन्धु कुंगिय बर्मिसेट्टि-द्वारा ७०१ गद्याण दान दिये जानेका निर्देश है। लेखकी तिथि वृषभ १५, रविवार, दुर्मुखि संवत्सर ऐसी दी है। ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए ७ ]

५७८

निट्टूर ( मैसूर )

कल्लड

- |                   |              |                |
|-------------------|--------------|----------------|
| १ चित्रभानु       | २ संवत्सर    | ३ द फाल्गुण    |
| ४ द शुद्ध ८       | ५ यु सोम     | ६ वार बोम्मण्ण |
| ७ गल्लु स्वर्गस्त | ८ राद निषिधि |                |

[ इस निषिधिलेखमें फाल्गुन शु० ८, चित्रभानु संवत्सरके दिन बोम्मण्णके समाधिमरणका उल्लेख है। ]

[ ए० रि० मै० १९३० पृ० २५७ ]

५७६

तल्लुक्कुर ( मैसूर )

कन्नड

- |                       |                        |
|-----------------------|------------------------|
| १ भावसंवत्सरदु श्राव- | २ ण शुद्ध त्रयोदसि आ-  |
| ३ दिवारदंदु स्वस्ति   | ४ श्रीमद्....अजितेश्व- |
| ५ रदेवर....महाजन....  | ६ ....वागि....         |
| ७ ....केशवदेवर बम्म-  | ८ व्वे छोट्टि....      |
| ९ ....वागि म्कम२....  | १० कोण्डु....          |
| ११ ....येनुक्क        |                        |

[ यह लेख काफी अस्पष्ट हुआ है। श्रावण शु० १३, रविवार, भावसंवत्सरके दिन किसी ग्रामके महाजनों द्वारा अजितेश्वर देवके मन्दिरके लिए कुछ भूमि दान दी गयी ऐसा इसमें उल्लेख है। केशवदेवकी कन्या बम्मव्वेके उद्यानके समीपकी २ कम्म जमीन भी इस दानमें सम्मिलित थी। ]

[ ए० रि० मै० १९३० पृ० ११३ ]

५८०

अंबले ( मैसूर )

कन्नड

- |                 |                    |
|-----------------|--------------------|
| १ जिनचन्द्रदेवक | २ ....मुडि(पि).... |
|-----------------|--------------------|

[ इस छोटे-से लेखमें जिनचन्द्रदेवके समाधिभरणका उल्लेख है। ]

[ ए० रि० मै० १९३० पृ० १३३ ]

५८१-५८४

हैदराबाद ( म्युजियम ) ( आन्ध्र )

संस्कृत-कन्नड

[ ये चार मूर्तिलेख हैं जो घिसनेसे अस्पष्ट हुए हैं । एकमें मूलसंघके किसी व्यक्तिका उल्लेख है । दूसरेमें एक मूर्तिकी स्थापना फाल्गुन शु० १५, बुधवार, शवरी संवत्सरके दिन किये जानेका उल्लेख है । तीसरेमें पण्डित मल्लिसेनका उल्लेख है । चौथेमें नेमिचन्द्रदेवके शिष्य कुमार मायिदेव महामण्डलेश्वर-द्वारा पार्श्वनाथ मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । इन लेखोंका समय निश्चित नहीं है । ]

[ रि० ६० ए० १९४६-४७ क्र० १४९, १५०, १५२, १५४ ]

५८५

भोसे ( सातारा, महाराष्ट्र )

कन्नड

[ इस लेखमें मूलसंघ-काणूरगणके वामनन्दि त्रयोश्वरका उल्लेख है । लेख बहुत घिस गया है । समय निश्चित नहीं है । ]

[ रि० ६० ए० १९४६-४७ क्र० २४३ ]

५८६

बेलगामे ( मैसूर )

संस्कृत-कन्नड

१ गणप्राच्यमहीभृदर्कः श्री-

२ भव्याब्धिधर्षिष्णुशशांकमूर्तिः

[ यह लेख एक जिनमूर्तिके पादपीठपर है और इसका आधा भाग अस्पष्ट हो जानेसे अधूरा हुआ है। इसमें किसी गणके एक आचार्यका उल्लेख रहा है। ]

[ ए० रि० मै० १९२९ पृ० १२६ ]

५८७

कारकल ( मैसूर )

संस्कृत

[ यह लेख गोम्मट मूर्तिके सम्मुख ब्रह्मस्तम्भके समीप उत्कीर्ण पादुकाओंके पास है। लिपि आधुनिक है -  
( मूल- ) श्रीगणधरपादम् । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० ३३८ पृ० ५२ ]

५८८

कोप्पल ( रायचूर, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें चावय्य-द्वारा जटार्सिगनन्दि आचार्यकी पादुकाओंकी स्थापनाका उल्लेख है। ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १६१ पृ० ४१ ]

५८९

बादंगट्टि ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख बोम्मिसेट्टिके समाधिमरणका स्मारक है। ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १६९ पृ० २२ ]

५६०

बालेहल्लि ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें मार्गशिर व० १०, शुक्रवार, शुभकृत् संबत्सरके दिन माधवचन्द्रदेवके शिष्य नागगौडकी पत्नी सायिगबुडिके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १९१ पृ० २३ ]

५६१

गुडुगुडि ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख सरस्त ( सूरस्त ) गणके किसी आचार्यकी शिष्या ज्ञागवेके समाधिमरणका स्मारक है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २०० पृ० २४ ]

५६२

मन्तगि ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख टूटा है । हरिकेसरिदेव, हरिकान्तदेव तथा तोयिमरस द्वारा विभिन्न बसदियोंको दिये गये भूमिदानोंका इसमें उल्लेख है । इनमें बंकापुरकी उम्पंटावण बसदि तथा कोन्तिमहादेविय बसदिका भी समावेश है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २०८ पृ० २५ ]



५६३

**मन्सगि ( धारवाढ, मैसूर )**

कन्नड

[ इस लेखमें फाल्गुन - ? - बडुवार, सर्वधारि संवत्सरके दिन सूरस्तगणके सहस्रकीर्तिदेवके शिष्य तथा मल्लिगुण्डके महाप्रभु विठगौडके समाधिभरणका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २१० पृ० २५ ]

५९४

**येलबर्गि ( रायचूर, मैसूर )**

कन्नड

[ यह लेख एक भग्न मूर्तिके पादपीठपर है । इसमें मूलसंघ, सूरस्तगण तथा कन्निसेट्टिका उल्लेख हैं । ]

[ रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० २२५ पृ० ३९ ]

५९५

**तिरुप्परकुण्डम् ( मदुरै, मद्रास )**

तमिल ( ? ) - ब्राह्मी

[ यहाँ पहाड़ीपर दो गुहाओमे निम्न पंक्तियाँ खुदी हैं । ये गुहाएँ जैन श्रमणोंके लिए उत्कीर्ण की गयी थीं -

( १ ) न य ( २ ) मा ता ये व

( ३ ) अ न तु वा ण को टु पि ता वा ण ]

[ रि० इ० ए० १९५१-५२ क्र० १४०-४२ पृ० २२ ]

५६६

देवसूर ( मदुरा, मद्रास )

बट्टेल्लु

[ यह लेख बहुत अस्पष्ट है । इसमें किसी पत्नी ( जैन वसति ) तथा तुंग पल्लवरैयन्का उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३१-३२ क्र० ५९ पृ० १२ ]

५६७

अषकूर ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख वीरभद्र मन्दिरकी एक भग्न मूर्तिके पादपीठपर है । इसमें शान्तिनाथ, सोमदेव तथा वसुधाकरदेवकी स्तुति की है । सातोज-रामोज-द्वारा इस बसदिके निर्माणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० ७ पृ० ९२ ]

५६८

हावेरी ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें मादरस-द्वारा जिनमन्दिरकी सीढ़ियाँ बनवाये जानेका उल्लेख है । इस समय यह लेख वीरभद्र मन्दिरमें लगा है । ]

[ रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० ९६ पृ० १०१ ]

५६९-६०२

इंगलेश्वर ( बिजापूर, मैसूर )

कन्नड

[ ये चार समाधिलेख हैं । पहलेकी तिथि तारण, अमावास्या, शुक्रवार यह है । यह सत्यण्णकी समाधि है । दूसरा लेख अगलसेट्टिके पुत्र शान्ति-

सेट्टिकी समाधिपर है । तिथि आंगिर संवत्सर, चैत्र १, सोमवार यह है । तीसरी समाधि शान्तिदेव मुनिकी है । तिथि प्रमादि संवत्सर, ....मास व ६, शुक्रवार यह है । चौथी समाधि माघनन्दि मुनिपकी है । तिथि श्रावण शु० ११, शुक्रवार, युव संवत्सर है । ]

[ रि० सा० ए० १९३०-३१ क्र० ई १५-१८ पृ० ८५ ]

६०३

कागिनोल्लि ( धारवाड, मैसूर )

कलह

[ यह लेख एक स्तम्भपर है । इसमें दानविनोद वैरिनारायण लेंक-मसण आदित्यवर्माकी स्तुति की है तथा उसके द्वारा काणूरगण, मेघपाषाण-गच्छकी बसदिमें एक स्तम्भकी स्थापनाका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० २८ पृ० १२१ ]

६०४

माकनूर ( धारवाड, मैसूर )

कलह

[ इस लेखमें खर संवत्सर, कार्तिक शु० ( ? ), शुक्रवारके दिन मूल संघ-सूरस्थगणके नन्दिभट्टारकके शिष्य बोप्पगौडके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ई ५० पृ० १५१ ]

६०५

लक्षकुण्डि ( धारवाड, मैसूर )

कलह

[ यह लेख एक भग्न जिनमूर्तिके पादपीठपर है । इसकी स्थापना त्रैविद्य नरेन्द्रसेनके शिष्य वैश्य जेमिसेट्टिकी कन्या राजब्बेने की थी । ]

[ रि० सा० इ० १९३४-३५ क्र० ई ७५ पृ० १५४ ]

६०६

देवूर ( बिजापूर, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें मूलसंघ-देसिगण-इंगलेस्वर बलिके नेमिदेव आचार्यके शिष्य सिगिसेट्टि, देविसेट्टि, पदुमब्बे तथा सिंगेयके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई २२ पृ० १८३ ]

६०७

शिरूर ( जमखंडी, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें यापनीय संघ-वृक्षमूलगणके कुसुमजिनालयमें कालिसेट्टि-द्वारा पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका वर्णन है । ]

[ रि० सा० ए० १९३८-३९ क्र० ई ९८ पृ० २१९ ]

६०८

इडैयालम् ( द० अर्काट, मद्रास )

तमिल

[ यहाँ जैन मन्दिरके समीप पाषाणोंपर चरणपादुकाएँ उत्कीर्ण हैं तथा निम्न नाम खुदे हैं -

- ( १ ) मल्लिषेणमुनीस्वर ( २ ) विमलजिनदेव  
( ३ ) अप्पाण्डार् नायिनार् ( ४ ) इडैयालम्के जिनदेवर् ]

[ रि० सा० ए० १९३८-३९ क्र० ३११-१४ पृ० ४२ ]

६०६

तोरनगल्लु ( बेल्लारी, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख अकलंकदेवके शिष्य नयिचिसेट्टिके समाधिमरणका स्मारक है । ]

[ रि० सा० ए० १९२२-२३ क्र० ७२९ पृ० ५१ ]

६१०

लोकिकेरे ( बेल्लारी, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख श्री रत्नभूषण भट्टारकके प्रिय शिष्य लोकेयकेरे निवासी मरगोण्डके समाधिमरणका स्मारक है । ]

[ रि० सा० ए० १९२४-२५ क्र० २९९ पृ० ४९ ]

६११-६१२

गरग ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख यापनीय संघ-कुमुदिगणके शान्तिवीरदेवके समाधिमरणका स्मारक है । तिथि श्रावण व० ४, गुरुवार, विकृति संवत्सर ऐसी दी है । यहीँके एक अन्य लेखमें भी यापनीय संघ-कुमुदिगणका उल्लेख है । अन्य विवरण लुप्त हुआ है । ]

[ रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ४४१-४४२ पृ० ७६ ]

६१३

कुमठ ( उत्तर कनडा, मैसूर )

कन्नड

[ स्थानीय जैन बसदिमे पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर यह लेख है । मूलसंघ, सूरस्तगण, चित्रकूट गच्छके मुकुन्ददेव-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना की गयी थी । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३७ पृ० २७ ]

६१४

कुमठ ( उत्तर कनडा, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें पुष्य शु० (?) क्रोधन संवत्सरके दिन क्राणूरगणके गंजिय मलघारिदेवकी शिष्या कंचलदेवीके समाधिमरणका उल्लेख है । इसके पतिका नाम त्रिभुवनवीर था तथा कदम्ब राजाओंकी उपाधियाँ उसे दी गयी हैं । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २४२ पृ० २८ ]

६१५

रायद्रुग ( बेल्लारी, मैसूर )

कन्नड

[ यहाँके निसिधि लेखोंमें निम्न व्यक्तियोंके नाम हैं — मूलसंघके चन्द्रभूति, आपनीय संघके चन्द्रेन्द्र, बादय्य तथा तम्मण्ण । एक लेखपर माघ शु० १ सोमवार, प्रमाथि संवत्सर यह तिथि दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९१३-१४ क्र० १०९ पृ० १२ ]

६१६-६१७

कोगलि ( बेल्लारी, मैसूर )

कन्नड

[ इस मूर्तिलेखमें अनन्तवीर्यदेवके शिष्य ओडेयमसेट्टि-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । यहाँके एक स्तम्भपर जिनमूर्तियोंके अभिषेकके लिए कई व्यक्तियों-द्वारा दिये गये दानोंका उल्लेख है । प्रथम लेखकी तिथि चैत्र शु० १४ रविवार, परिधावि संवत्सर ऐसी दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९१४-१५ क्र० ५२०-२१ पृ० ५३ ]

६१८

मुल्लगुन्द ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें देसिगण-हनसोगे अन्वयके ललितकीर्ति भट्टारकके शिष्य सहस्रकीर्तिकी मृत्युका उल्लेख है । मुस्लिमों-द्वारा पार्श्वनाथबसदिपर आक्रमणके समय उनकी मृत्यु हुई थी । ]

[ रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ९२ पृ० ८ ]

६१९

कलिकेरि ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें मूलसंघ-काणूरगण-तित्रिणी गच्छके भानुकीर्ति सिद्धान्त-देवके शिष्य हलिगामुण्ड-द्वारा कलिकेरिके अकलंकचन्द्रभट्टारकके लिए एक बसदिके निर्माण तथा पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२७-२८ क्र० ई ५१ पृ० २४ ]

६२०

कम्मरचोडु ( बेल्लारी, मंसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें पद्मप्रभमलधारिदेवके प्रियशिष्य महावहुव्यवहारि रायर-सेट्टिकी पत्नी चन्दब्बे-द्वारा इस जिनमूर्तिके जीर्णोद्धारका वर्णन है । इस समय यह मूर्ति हिन्दू देवताके रूपमें पूजी जाती है । ]

[ रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० ५६० पृ० ५५ ]

६२१-६२२

कोडशीवरम् ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

कन्नड

[ यह लेख एक स्तम्भपर है । काणूर गणके पुष्पनन्दि मलधारिदेवके शिष्य दावणन्दि आचार्य-द्वारा एक बसदिके निर्माणका इसमें उल्लेख है । यहींके एक अन्य लेखमें काणूरगणके (?) आचार्यकी शिष्या इङ्गोल राजाकी रानी आलपदेवी-द्वारा इस बसदिकी रक्षाका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० २०-२१ पृ० ७२ ]

६२३-६२६

अमरापुरम् ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

कन्नड

[ यहाँके निसिधिलेखोंमें निम्न व्यक्तियोंके नाम हैं—(१) प्रभाचन्द्र-देवके शिष्य कोम्मसेट्टि (२) पोतोज तथा उसका पुत्र सयबि मारय (३) मूलसंघ-देसियगणके बालेन्दु मलधारिदेवके शिष्य विरूपय तथा मारय (४) मूलसंघ-सेनगणके प्रसिद्ध वादि भावसेन त्रैविद्यचक्रवर्ति (५) इंगलेस्वरके प्रभाचन्द्र भट्टारकके शिष्य बोम्मसेट्टियर वाचय (६) बेरिसेट्टिके पुत्र सम्बिसेट्टि । यहाँके एक अन्य लेखमें इंगलेस्वरके त्रिभुवनकीर्ति राउलके शिष्य देशियगणके बालेन्दु मलधारिदेव-द्वारा एक बसदिके निर्माणका उल्लेख है । ] [ रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० ४१-४७ पृ० ७४ ]



६३०

तम्मदहलि ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

कन्नड

[ इस लेखमें मूलसंघ-देसियगणके चारुकीर्ति भट्टारकके शिष्य चन्द्राक भट्टारकके समाधिभरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० ४८ पृ० ७४ ]

६३१

रामपुरम् ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

कन्नड

[ इस लेखमें मूलसंघ-देसियगणके देवचन्द्रदेवके शिष्य बेट्टिसेट्टिके पुत्र कृष्णसेट्टिके समाधिभरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९१७-१८ क्र० ७१४ पृ० ७४ ]

६३२

रामतीर्थम् ( विजगापटम्, आन्ध्र )

तेलुगु

[ यह लेख एक भग्नजिनमूर्तिके पादपीठपर है । ओगेरुमार्गस्थित चनुद (ओ) लु निवासी प्र (मि) सेट्टि-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना हुई थी । ]

[ रि० सा० ए० १९१७-१८ क्र० ८३२ पृ० ८५ ]

६३३

वेलूर ( द० अर्काट, मद्रास )

तमिळ

[ इस लेखमें जयसेन-द्वारा इस जिनमन्दिरके जीर्णोद्धारका उल्लेख है । लिपि उत्तरकालीन है । ]

[ रि० सा० ए० १९१८-१९ क्र० १२४ पृ० ५९ ]

६३४

निडुगल ( मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें बेल्लुम्बट्टेके भव्यों-द्वारा-जो मूलसंघदेसिगणके नेमिचन्द्र भट्टारकके शिष्य थे-पार्श्वनाथ मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९१८ पृ० ४५ ]

६३५-६३६

नेल्लिकर ( द० कनडा, मैसूर )

संस्कृत-कन्नड

[ यह लेख स्थानीय अनन्तनाथवसदिमे है । इसके मण्डपका निर्माण मंजण कोन्नभूप-द्वारा किया गया ऐसा कहा है । यहींके दूसरे लेखमे इस मन्दिरका निर्माण ललितकीर्ति भट्टारकदेवके शिष्य कल्याणकीर्तिदेवकी सम्पत्तिसे देवचन्द्र-द्वारा किये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२०-५२१ पृ० ४८-४९ ]

६३७

मुनुगोडु ( गुण्टूर, आन्ध्र )

तेलुगु

[ इस लेखमें बिल्लम नायक-द्वारा पृथिवीतिलकवसदिके लिए कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० १९ पृ० ६ ]

६३८-६३९

लक्कुण्डि ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ ये दो लेख हैं । एकमें मूलसंघ-देवगणके शंखदेव-द्वारा एक जिन-

मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । दूसरेमें वसुधैकबान्धवजिनालयके त्रिभुवन-तिलक शान्तिनाथदेवके लिए एक दानशालाके समर्पणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ३१, ३४ पृ० ३ ]

६४०

जावूर ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें बौचिसेट्टि-द्वारा सकलचन्द्र भट्टारकको जावूर ग्रामके पुनः दानका उल्लेख है । नविलगुन्दमें जयकीर्तिदेव-द्वारा निर्मित ज्वाला-मालिनीबसदिके लिए मल्लिदेवने पहले यह गाँव अर्पण किया था । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई २२८ पृ० ५५ ]

६४१

कोमरगोप ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें त्रिभुनतिलक जिनालयमें आहारदानादिके लिए बालचन्द्र सिद्धान्तदेवके शिष्य पेगंडे वासियण्णकी पत्नी चामिकब्बे-द्वारा सुवर्णदानका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई २३० पृ० ५५ ]

६४२-६५०

गुण्डकेर्जिगि ( बिजापूर मैसूर )

कन्नड

[ यहाँ भग्न मूर्ति-पाषाणोंपर निम्न नाम खुदे हैं । (१) देशियगण-इंगलेश्वर ( बलि ) के चन्द्रकीर्तिदेव तथा जयकीर्तिदेव (२) अपराजिता देवी (३) वृषभयक्ष (४) पातालयक्ष (५) कुबेरयक्ष (६) महानसीयक्षी (७) अनन्तमती (८) चक्रेश्वरी (९) शा) न्तनाथस्वामी ]

[ रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई १६-१७ पृ० ६६ ]

६५१

हुलूर ( बिजापूर )

कन्नड

[ इस लेखमें कण्डूर गणकी एक बसदिके लिए पुलुवरणिके महाजनों-द्वारा भूमिदानका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२९-३० पृ० ६७ क्र० ई २९ ]

६५२

तम्मदह्महि ( बिजापूर, मैसूर )

कन्नड

[ इस निसिधि लेखमें इंगलेश्वरतीर्थकी बसदिके आचार्य देवचन्द्र भट्टारकके शिष्य बोगगावुण्डके समाधिमरणका उल्लेख है ।

[ रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई ७० पृ० ६९ ]

६५३

तुम्बिगि ( बिजापूर, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख पुष्य शु० १०, सोमवार, ईश्वरसंवत्सर, राज्यवर्ष ८ का है । राजाका नाम लुप्त हुआ है । इस समय बोचुवनायककी निसिधिकी स्थापना की गयी थी तथा तदर्थ पार्श्वदेवको कुछ भूमि अर्पित की गयी थी । ]

[ रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई० ७४ पृ० ६९ ]

६५४

हूचिन हिप्पगि ( बिजापूर, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें हबु रेमरस तथा रेचरस-द्वारा ऋषियोंके आहारदानके लिए देवचन्द्र भट्टारकको कुछ भूमि दान देनेका उल्लेख है । इंगलेश्वरके देवकीर्ति भट्टारकका भी उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई ९१ पृ० ७१ ]

## परिशिष्ट १

### श्वेताम्बर लेखोंकी सूचना

[ पहले संग्रहकी पद्धतिके अनुसार हम यहाँ श्वेताम्बर सम्प्रदायसे सम्बद्ध लेखोंकी सूचना दे रहे हैं। इस सूचीमें सरकारी प्रकाशनोंमें प्रकाशित लेखोंका अन्तर्भाव है। श्री० पूरणचन्द नाहरका प्राचीन जैनलेखसंग्रह, श्री० अगरचन्द नाहटाका बीकानेर जैन-लेखसंग्रह, आदि ग्रन्थोंमें प्रायः श्वेताम्बर सम्प्रदायके ही लेख हैं। इन लेखोंकी संख्या ३५००से ऊपर है। इनका प्रस्तुत सूचीमें उल्लेख आवश्यक नहीं समझा गया। ]

१ अकोटा ( बड़ोदा, गुजरात ) - द्वावीं सदी

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० १६-१९

२ अकोटा - ६ वीं-१०वीं सदी

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० २०-३५ तथा ३९-४८

३ बड़ोदा ( गुजरात )-सं० १०६३ = सन् १०३७

रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १६९-७१

४ भरतपुर ( राजस्थान )-सं० ११०६ = सन् १०५३

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ३८८, ३९४

५ आबू ( राजस्थान )-सं० १११९ = सन् १०६३

ए० इ० ९ पृ० १४८

६ सिरोही ( राजस्थान ) सं० ११३५ = सन् १०७६

रि० आ० स० १९२१-२२ पृ० ११९

७ काडोळ ( गुजरात )-सं० ११४० = सन् १०८४

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ए २

- ८ काढोल-सं० ११२६ = सन् ११००  
 रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ए ३
- ९ उदयपुर ( राजस्थान )-सं० ११०६ = सन् ११२०  
 रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २३७
- १० नाडोल ( राजस्थान )-सं० १२१३ = सन् ११५७  
 इ० ए० ४१ पृ० २०२
- ११ लखनऊ ( उत्तरप्रदेश )-सं० १२१६ = सन् ११६०  
 रि० आ० स० १९१३-१४ पृ० २९
- १२ जाकोर ( राजस्थान )-सं० १२२१ = सन् ११६५  
 ए० इ० ११ पृ० ५४
- १३ मथुरा ( उत्तरप्रदेश ) सं० १२३४ = सन् ११७८  
 रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ५२६
- १४ मद्रेशर ( गुजरात )-सं० १३१५ = सन् १२५९  
 रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १६९
- १५ मद्रेशर-सं० १३२३ = सन् १२६७  
 रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १७०
- १६ जाकोर ( राजस्थान )-सं० १३३१ = सन् १२७५  
 ए० इ० ३३ पृ० ४६
- १७ आमरण ( राजस्थान )-सं० १३३३ = सन् १२७७  
 पूना ओरिएण्टलिस्ट ३ पृ० २५
- १८ चितोड ( राजस्थान )-सं० १३३४ = सन् १२७८  
 रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २३२-२३३
- १९ उदयपुर ( राजस्थान )-सं० १३३५ = सन् १२७९  
 रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४८५
- २० बम्बई-सं० १३५६ = सन् १३००  
 रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २०१-३

२१ उदयपुर—१३वीं सदी

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ५०७

२२ खंभात ( गुजरात )—सं० १४२०से सं० १४६८=सन् १३६४से

सन् १४१२

रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५९-१९५

२३ आंतरी ( राजस्थान ) सं० १४६८=सन् १४१२

रि० आ० सं० १९२९-३० पृ० १८७

२४ मेढवा ( राजस्थान )—सं० १५०७से १६८७

=सन् १४५१से १६३१

रि० आ० सं० १९०९-१० पृ० १३३

२५ ब्रिटिश म्यूजियम—सं० १५१५से १६८३

=सन् १४५४से सन् १५२७

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ५३०-५३८

२६ सिरौही ( राजस्थान )—सं० १६२४=सन् १४६८

रि० आ० सं० १९२१-२२ पृ० ११९

२७ बम्बई—सं० १५२५=सन् १४६९

रि० आ० सं० १९३०-३४ पृ० २४९

२८ उदयपुर—सं० १५५६=सन् १५००

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४८६

२९ मौगामा ( राजस्थान )—सं० १६७१=सन् १६१५

रि० आ० सं० १९२९-३० पृ० १८८

३० अलवर ( राजस्थान )—सं० १६७३=सन् १५१७

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ३८६

३१ अलवर—सं० १६२६=सन् १५७०

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ३७८

३२ बैराट ( राजस्थान )—शक १५०६ = सन् १५८०

रि० आ० स० १९०९-१० पृ० १३२

३३ अलवर—सं० १६४५ = सन् १५८९

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ३७६

३४ लखनऊ—सं० १६५२ = सन् १५९६

रि० आ० स० १९१३-१४ पृ० २९

३५ मद्रेश ( गुजरात )—सं० १६५९ = सन् १६०३

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १७०

३६ उदयपुर—सं० १६६२ = सन् १६०६

रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २३७

३७ मद्रेश—सं० १९०५-१९३४ = सन् १८४६-१८७८

रि० इ० ए० १९५४-५५ पृ० ४२





## परिशिष्ट २

जनेतर लेखोंमें जैन व्यक्ति आदिके उल्लेख ।

( १ ) बेलगामे

कच्छ

सन् १२९४

[ इस लेखमें यादव राजा रामचन्द्रके समय बल्लिगावेके भेरुण्डस्वामी-मन्दिरका उल्लेख है । इस मन्दिरके हेगडे पदपर वैद्य दासण्णकी स्थापना कर उसे कुछ भूमि अर्पित की गयी थी । इस भूमिमें प्रथमसेनबसदि ( जिनमन्दिर ) की कुछ भूमि भी शामिल कर दी गयी थी । ]

[ ए० रि० मै० १९२९ पृ० १२४ ]

( २-६ ) देवगोरी तथा कोलूर ( जि० धारवाड, मैसूर )

( ११वीं-१३वीं सदी )—कच्छ

पहला लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल ( सोमेश्वर प्रथम ) के राज्यकालका है । इनके अधीन बासवूर १४० प्रदेशमें जीमूतबाहन अन्वयमें उत्पन्न हुआ कलियम्बरस शासन कर रहा था । इसे सम्पत्त्व-चूडामणि तथा पद्मावतीलब्धवरप्रसाद ये विशेषण दिये हैं । इसने कोलूरके कलिदेवेश्वरके मन्दिरमें दीपदानके लिए कुछ दान दिया था । इस दानकी तिथि पौष शु० ५, शक ९६७, उत्तरायण संक्रान्ति थी ।

दूसरे लेखकी तिथि शक ९९७, पौष शु० १४, उत्तरायण संक्रान्ति थी । इस समय चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्ल सोमेश्वर द्वितीयका राज्य चल रहा था । इसमें भी कलियम्बरसके शासनका उल्लेख है तथा देवनेसे-के कांकलेश्वर मन्दिरके लिए दण्डनायक वण्णमय्य-द्वारा कुछ दान दिये

जानेका निर्देश है। इसी लेखके दूसरे भागमें उसी कुलके एक दूसरे कलियम्मरसका उल्लेख है जो चालुक्य सम्राट् भूलोकमल्ल सोमेश्वर तृतीय-का सामन्त था। इसने सम्राट्के राज्यके ९वें वर्ष अर्थात् शक १०५६ में उक्त मन्दिरको कुछ दान दिया था। इस कलियम्मरसने माहेश्वर दीक्षा ग्रहण की थी।

तीसरे लेखमें उक्त कलियम्मरस (द्वितीय) का उल्लेख सम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ) के राज्यके दसवें वर्ष (सन् १०८५) में किया है जब उसने कोलूरमें कुछ धार्मिक दान दिया था।

चौथा लेख सम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ) के राज्यके ४६वें वर्ष (सन् ११२१) का है। इसका सामन्त हेर्माडियरस था जो उक्त कलियम्मरस (द्वितीय) का पुत्र था। इसने कोलूरमें त्रिभुवनेश्वर तथा भैरवके मन्दिरों-को कुछ दान दिया था। तथा माहेश्वर दीक्षा ग्रहण की थी।

पाँचवाँ लेख यादव राजा सिंघण (तेरहवीं सदीका पूर्वार्ध) के राज्यकालका है। इसका सामन्त मल्लिदेवरस था जो उक्त जीमूतबाहन अन्वयमे उत्पन्न हुआ था। इसने कोलूरके क्षेत्रपाल मन्दिरको कुछ दान दिया था।

यहाँ द्रष्टव्य है कि कलियम्मरस (द्वितीय), हेर्माडियरस तथा मल्लिदेवरस शैव थे फिर भी उन्हें पद्मावतीलब्धवरप्रसाद यह पुराना विशेषण दिया है।

छठा लेख विक्रमादित्य (षष्ठ) के राज्यके ४थे वर्ष (सन् १०७९) का है। इसके अधीन मोलम्बवाडि तथा सान्तलिंगे प्रदेशपर त्रैलोक्यमल्ल (जयसिंह तृतीय) शासन कर रहा था तथा बनवासि प्रदेशपर बलदेवय्य-का शासन था। बलदेवय्यको जिनचरणकमलभृंग यह विशेषण दिया है। इसके अधीन कुछ करोंका उत्पन्न कोलूरके ग्रामेश्वर मन्दिरके लिए किसी कन्नडाचार्यको दान दिया था। ]

[ ए० इ० १९ पृ० १७९-१९७ ]

( ७ ) शिवमन्दिर, नीळूर ( जि० तंजोर, मद्रास )

तमिल - सन् १११६

[ यह लेख कुलोत्तुंग चोलके राज्यके ४६वें वर्षमें लिखा गया था । इसमें कण्डन् माधवन्-द्वारा शोण्णवाररिवार ( गणपति ) देवका मन्दिर बनवानेका निर्देश है । यह माधवन् कुलत्तूर स्थानका शासक था जहाँ अमिदसागर ( अमृतसागर ) मुनिने कारिगै ( याप्परंगलक्कारिगै ) नामक छन्दःशास्त्र तमिल भाषामें लिखा था । इस रचनाके लिए जिनने प्रेरणा की वे सज्जन माधवन्के चाचा ( अथवा ससुर ) थे ।

इस छन्दःशास्त्रमें ४४ कारिकाएँ हैं तथा उरुप्पियल्, शेय्युलियल् एवं ओलिबियल् ये तीन प्रकरण हैं । इसपर गुणसागरने टीका लिखी है । ]

[ ए० ई० १८ पृ० ६४ ]

( ८ ) कमलापुर और हंपीके बीच

कृष्णमन्दिरके समीप एक मण्डपमें

शक १३३२ = सन् १४१०, कन्नड

[ यह लेख मधुर नामक जैन कविने लिखा है जो वाजि कुलमें उत्पन्न हुआ था । लेखमें देवरायके मन्त्री लक्ष्मीधर-द्वारा महागणनाथ ( शिव ) की स्थापनाका वर्णन है । मधुरने धर्मनाथपुराण तथा गुम्फाष्टक लिखा है । यह हरिहररायके मन्त्री मुद्दण्डेश्वरका आश्रित था । इस लेखमें लक्ष्मीधर-द्वारा मधुरको हाथी, घोड़े, रत्न, जमीन आदि दान देनेका उल्लेख है । ]

[ इ० ए० ५५, १९२६ पृ० ७७ ]

( ९ ) गोकर्ण ( उत्तर कनडा )

१५वीं सदी, कन्नड

[ इस लेखमें महाबलेश्वर मन्दिरमें अन्नसत्र तथा अन्यपूजाके लिए कुछ

दान दिये जानेका उल्लेख है। दानकी रक्षाके लिए कहे गये शापात्मक वर्णनमें गेरसोप्पेकी हिरियबस्तिके चण्डोग्र पार्श्वनाथका भी उल्लेख है। ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० ई० क्र० १०८ पृ० २३७ ]

### (१०) वीराम्बुधि ताम्रपत्र ( मैसूर )

शक १४८६ = सन् १५६७, कन्नड

[ जिनशासनकी प्रशंसासे इस ताम्रपत्रका प्रारम्भ होता है। कुलोत्तुंग विक्रमरायके पुत्र चंगालराय-द्वारा भारद्वाजगोत्रके ब्राह्मण नरसीभट्टको वीराम्बुधि नामक ग्राम दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। दानकी तिथि माघ शु० १०, शक १४८९, सर्वजित् संवत्सर ऐसी दी है। ]

[ ए० रि० मै० १९२५ पृ० ९३ ]



## परिशिष्ट ३

### नागपुर-प्रतिमा लेखसंग्रह

इस परिशिष्टमें हम नागपुरके समस्त प्रतिमालेखोंका संकलन दे रहे हैं। इन लेखोंका संग्रह श्री शान्तिकुमारजी ठवली (वर्तमान निवास—देवलगाँव राजा, जि० बुलडाणा, महाराष्ट्र) ने कोई २७ वर्ष पहले सन् १९३५ में किया था। आपने यह संग्रह नागपुरके लोकप्रिय जैन श्रीमान् स्व० सवाई सिंगई श्री० नेमलालजी पासूसावजीकी स्मृतिमें अर्पित किया था। इस संग्रहके लिए स्व० पूज्य ब्र० क्षीतलप्रसादजीने भूमिका लिखी थी जो इस प्रकार थी — “जैनधर्मके इतिहासके निर्माणके लिए इस बातकी परम आवश्यकता है कि सर्व जैन स्मारकोंके लेख संग्रहीत किये जावें — इन स्मारकोंमें प्रतिमाओंके लेख, यन्त्रोंके लेख, अन्य शिलालेख तथा शास्त्रोंकी प्रशस्तियाँ आवश्यक हैं — श्री शान्तिकुमार ठवली नागपुरने नागपुरके सर्व दिगम्बर जैन मन्दिर व चैत्यालयोंके लेखोंको लिखकर पुस्तकाकार सम्पादन करनेमें जो परिश्रम उठाया है वह सराहनीय है। अच्छा हो यदि इन मूर्तियोंके लेखोंके साथ यन्त्रोंके लेख और शास्त्रकी प्रशस्तियोंका विवरण प्रकट किया जावे। एक संक्षिप्त तालिका ऐसी दी जावे कि लेख-रहित प्रतिमाएं इतनी व अमुक संवत्की इतनी — जिससे पाठकों प्राचीनता व अर्वाचीनताका पता तुरत लग जावे। ऐसी पुस्तकसे भविष्यमें बहुत काम निकलेगा — आशा है ठवली महोदय मध्यप्रान्त व बरारके सर्व स्थानोंके लेखोंके संग्रहका प्रयत्न करेंगे। अन्य उत्साही युवकोंको अपने-अपने प्रान्तोंके लेखोंको प्रकट करना चाहिए जिससे किसी समय भारतीय दि० जैन लेख संग्रह पुस्तक निर्माण हो सके।

ब्र० सीतळ

९-३-१९३६ नागपुर”

इस पुस्तिकाका प्रकाशन अन्यान्य कारणोंसे अबतक नहीं हो सका था। अतः हमने इस परिशिष्टमें इसका पुनः संपादन किया है। संग्रहकने मूल लेख मन्दिरोंके क्रमसे अलग-अलग संग्रहीत किये थे तथा यन्त्रोंके लेखोंके परिशिष्ट अन्तमें दिये थे। हमने मन्दिरों तथा मूर्तियोंका विवरण अलग दिया है तथा लेख समयक्रमसे अलग दिये हैं। इन लेखोंके विशेष नामोंका समावेश सूचीमें कर दिया है तथा वहाँ लेखोंके साथ ( ना० ) यह संकेत दिया है।

नागपुर नगरका अस्तित्व यद्यपि राष्ट्रकूट साम्राज्यके समयसे ज्ञात होता है तथापि इसे भोंसला राजा रघूजी१ के समयसे — सन् १७३४ से प्रधान स्थान प्राप्त हुआ है। तबसे १९५६ तक यह मध्यप्रदेशकी राजधानी रही है। नागपुरके सभी मन्दिर प्रायः भोंसला राजाओंके राज्यमें ही बने हैं किन्तु इनमें कई प्रतिमाएँ अन्य स्थानोंसे भी लायी गयी हैं। इस नगरमें कुल ९ मन्दिर हैं। विदर्भकी रीतिके अनुसार यहाँके प्रमुख जैन व्यक्तियोंके घरोंमें भी छोटे-छोटे चैत्यालय हैं। ऐसे गृहचैत्यालयोंकी संख्या ३७ है। इन सब स्थानोंमें कुल मिलाकर ६४६ मूर्तियाँ आदि हैं जिनमें धातुकी ४४० तथा पाषाणकी २०६ हैं। इन मूर्तियों आदिके ४१ प्रकार हैं जिनकी संख्या इस प्रकार है — (१) आदिनाथ ४३ (२) अजितनाथ १३ (३) सम्भवनाथ १ (४) सुमतिनाथ २ (५) पद्मप्रभ ७ (६) सुपाश्वर्चनाथ १२ (७) चन्द्रप्रभ ४३ (८) पुष्पदन्त ३ (९) शीतलनाथ ५ (१०) श्रेयांस ३ (११) वासुपूज्य ६ (१२) अनन्तनाथ २ (१३) धर्मनाथ ३ (१४) शान्तिनाथ १० (१५) अरनाथ ६ (१६) मुनिमुद्रत १३ (१७) नेमिनाथ १४ (१८) पार्श्वनाथ १३३ (१९) महावीर १० (२०) चौबीसी ३४ (२१) पंचमेरु ९ (२२) नन्दीश्वर ७ (२३) सिद्ध ४ (२४) बाहुबली ६ (२५) रत्नत्रयमूर्ति ३ (२६) पंचपरमेष्ठि १ (२७) यक्षिणी २७ (२८) सरस्वती ३ (२९) क्षेत्रपाल १ (३०) सप्त ऋषि १ (३१) चौसठ ऋषि १ (३२) गुरुपादुका २ (३३) रत्नत्रय यन्त्र ५ (३४) सम्यग्दर्शन यन्त्र ४ (३५) सम्यक्चारित्र

यन्त्र ६ (३६) दशलक्षण यन्त्र ६ (३७) षोडशकारण यन्त्र २ (३८) कलि-  
कुण्ड यन्त्र १ (३९) सिद्ध यन्त्र १ (४०) नवग्रह यन्त्र १ (४१) जलयात्रा  
यन्त्र १ । इन मूर्तियों आदिमें ५२९ के पादपीठों अथवा किनारोंपर लेख  
हैं । ऐसे लेखोंकी संख्या ३२४ है ( जहाँ दो अथवा अधिक मूर्तियोंपर एक  
ही लेख है वहाँ हमने उस लेखको एक लेखके रूपमें ही गिना है । )

समयकी दृष्टिसे ये लेख आठ सदियोंमें इस प्रकार विभक्त हैं — विक्रम  
तेरहवीं सदी ४, पन्द्रहवीं सदी ३, सोलहवीं सदी २२, सत्रहवीं सदी  
५१, अठारहवीं सदी ७२, उन्नीसवीं सदी ६९ तथा बीसवीं सदी १०० ।

इन सब लेखोंकी भाषा अशुद्ध संस्कृत है । कुछ लेखोंमें नागपुरकी  
स्थानीय भाषाओं—हिन्दी तथा मराठीका अंशतः प्रयोग हुआ है ( लेख क्र०  
२०६, २६३, २६७, २६९, २७८, २८५ ) किन्तु शुद्ध हिन्दी या मराठीमें  
कोई लेख नहीं है । एक लेख (क्र० ७३) कसबमें तथा एक (क्र० ३१९)  
उर्दूमें है किन्तु इनका वाचन प्राप्त नहीं हो सका ।

मूर्तिप्रतिष्ठाके स्थानोंके सोलह नाम उल्लिखित हैं — नागपुर ( क्र०  
१५२, १९०-२, २१२, २१५, २१६, २२०-१, २२७, २२९, २३१, २३३, २३५,  
२४२, २४७, २४९, २५०, २५५-७, २५९, २६१, २७९, २८२, २९५ ), कारंजा  
( क्र० ८१, १२५, १५७-८, २१० ), सिरसग्राम ( क्र० २०२, २०४ ),  
रामटेक ( क्र० ७३, २५३ ) भीसी ( क्र० १४३ ), तजेगांव ( क्र० १०६ )  
उमरावती ( क्र० १९९ ), इंगोली ( क्र० २३२ ), संजालपुर ( क्र० ७० )  
बहादुरपुर ( क्र० ६५ ), अबडनगर ( क्र० १३० ) सिवनी ( क्र० २८० )  
छपारा ( क्र० २८४ ), कामठी ( क्र० १५४ ), सावरगांव ( क्र० २९३ ),  
सवाई जयनगर ( क्र० १९३ ) ।

प्रतिष्ठाकर्ता व्यक्तियोंकी पन्द्रह जातियोंका उल्लेख मिलता है —  
राइकवाल ( क्र० ९ ), अगरवाल ( क्र० ५३ ), गंगराडा ( क्र० १० ),  
गोल्सिंधारा ( क्र० ७३ ), पल्लीवाल ( क्र० ५१ ), गुजरपल्लीवाल  
( क्र० २१ ), पद्मावती पल्लीवाल ( क्र० ११४ ), उज्जनीपल्लीवाल

( क्र० १०८, १२०, १४३ ), श्रीश्रीमाल ( क्र० ४९-५० ) हुंबड ( क्र० ८, २०, ३०, ३९, ८६ ), गोलापूर्व ( क्र० ६८, २९१ ), परवार ( क्र० ६९, १८८, १९१-९२, २५०, २५४, २६३, २७२, २८५ ), खंडेलवाल ( क्र० १०७, २८२ ) सैतवाल ( क्र० ९५, २७९, २८६, २८७ ), बघेरवाल ( क्र० १४, २९, ३८, ४४, ४६, ५५-६, ६६, ८०-८२, ८८-९०, ९२, ९४, ९६, १२२, १२५, १३०-१, १३५, १५७, १८२, १९८, २०१, २०२, २०४, २२७ ) ।

प्रतिष्ठापक आचार्य अधिकांश मूलसंघके सेनगण तथा बलात्कारगणके थे, काष्ठासंघके नन्दीतटगच्छके कुछ आचार्योंके उल्लेख भी है । इन उल्लेखोंका उपयोग हमारे ग्रन्थ 'भट्टारक सम्प्रदाय' में किया गया है । उससे इन भट्टारकोंके बारेमें अन्य जानकारी प्राप्त की जा सकती है ।

संवत् १५४८ के दो लेख ( क्र० १८, १९ ) विशेष रूपसे उल्लेखनीय है । इनमें पहला लेख कोई ७७ मूर्तियोंपर है । ये मूर्तियाँ मुडासा शहरमें शिवसिंहके राज्यकालमें सेठ जीवराज पापडोवालने प्रतिष्ठित करवायी थीं । इस समारोहके प्रमुख भट्टारक जिनचन्द्र थे । इस समारोहमें प्रतिष्ठित मूर्तियाँ प्रायः प्रत्येक दिगम्बर जैन मन्दिरमें पायी जाती हैं ।





## मूल लेख

- १ संमत १२०१ बैसाख वदी तीन । ( विवरण क्र० १४० )
- २ सं० १२३४ स तु हा ले (?).... ( विवरण क्र० १६६ )
- ३ संमत १२६२ साल..... ( विवरण क्र० ११५ )
- ४ संमत १२६९ वर्ष आषाढ सुदी ३ .... ( विवरण क्र० ११४ )
- ५ संमत १४५७ वर्षे बैसाख सुदी ६ श्रीमूलसंघ म०.....ओजिन-  
देव साह माणिकचंद.... ( विवरण क्र० २३१, २३२ )
- ६ मूलसंघ म० धर्मभूषणोपदेशात् संमत १४६५ वर्षे.....  
( विवरण क्र० ३०२ )
- ७ संवत् १४८५.... ( विवरण क्र० ४० )
- ८ संवत् १५१० वर्षे माहमासे शुक्लपक्षे ५ रवौ श्रीमूलसंघे  
सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये म० पञ्चनंदि  
तत्पट्टे म० श्रीसकलकीर्ति तत्शिष्य ब्र० जिनदास हुंबडजातिय  
सा० तेजु मा० मलाई सुत हरिचंद्र मा० नागाई सुत गोविंद  
मा० बजाई । ( विवरण क्र० १६७ )
- ९ सं० १५२१ वर्षे बैसाख वदि २ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे  
बलात्कारगणे श्रीविद्यानंदिगुरूपदेशात् श्रीराइकवालजातिय....  
भार्या अहिबदे सुत वेणा भार्या वनादे कारित आचंद्रप्रमचतुर्वि-  
शति नित्यं प्रणमंति ॥ श्रीशुभं ॥ ( विवरण क्र० १५७ )
- १० संमत १५२४ मूलसंग सेनगणो माणिकसेनगुरु गगराडा माल-  
सेटा भार्या तानाई । ( विवरण क्र० ८० )
- ११ संमत १५३१ फागुण वदी ५ मू०..... ( विवरण क्र० १८८ )
- १२ संमत १५३५ श्रीमू० म० भुवनकीर्तिस्तत्पट्टे म० ज्ञानभूषणस्त-  
दुपदेशात् सं० दि० समाज । ( विवरण क्र० ११३ )

१३ सं० १५३५ वर्षे पौस वदी ३ श्रीमूलसंघे म० सकलकीर्तिस्त०  
म० श्रीभुवनकीर्तिस्त० भ० श्रीज्ञानभूषणगुरुपदेशात् चांगा  
मार्या भूसनदे वदासा मा० तानां जी वासपूज्य ।

( विवरण क्र० १६० )

१४ [ सक ] १४०२ व० श्रीक...श...ज्ञात वधेरवाल...गोत्र सं०  
पासधन...सं० जेनराज मातापुत्र प्रणमंति (विवरण क्र० ४१३)

१५ सं० १५४३ श्रीमूलसंग म० श्रीभुवनकीर्तिस्तत्पट्टे श्रीज्ञान-  
भूषणगुरुपदेशात्...दिवसी मा० गुणा सुत...मा० नामलाई ।

( विवरण क्र० ३८० )

१६ सं० १५४३...पद्मसी...दन...। ( विवरण क्र० ४३३ )

१७ संमत १५४५ का ज्येष्ठ...। ( विवरण क्र० ३४३ )

१८ संवत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्रीमूलसंघे मट्टारक श्रीजिन-  
चंद्रदेव साह जीवराज पापडीवाल नित्यं प्रणमंति शहर मुडासा  
राजा स्योसिंघ । ( विवरण क्र० १-३, १०-२६, ४६-४८, ८७, ९१-  
१०२, १४६-१५६, २३८-२६४, ३६७-६९ )

१९ संमत १५४८ वर्षे वैशाखसुदी ३ श्रीमूलसंघे मट्टारकजी  
श्रीमानुचंद्रदेव साह जीवराज पापडीवाल नित्यं प्रणमंति  
सहर मुडासा श्रीराजा सोसिंघ । ( विवरण क्र० २१८, २१९ )

२० ॐ नमः सं० १५५२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ शुक्रे श्रीमूलसंघे म०  
भुवनकीर्तिस्त० म० श्रीज्ञानभूषणगुरुपदेशात् हुं० श्रे० पर्वत  
मा० देव सु० राजा मा० शलदे सुत कर्मसी प्रणमंति श्रीमुम-  
तिनाथ प्रणमंति । ( विवरण क्र० १६५ )

२१ सं० १५२४ मूलसंघे सेनगणे म० माणिकसेन उपदेशात् गुजर-  
पल्लिवालज्ञाति संघवी नेमा...। ( विवरण क्र० १३७ )

२२ सं० १५६१ वर्षे वैशाख सुदि १० बुधौ श्रीमूलसंघे म० श्री-  
ज्ञानभूषण त० म० श्रीविजयकीर्तिगुरुपदेशात् व० लाडण स०

- क० राजा मा० माणिकी सु० कान्हा मा० रूपी आ० गोईया  
मा० मरगदि आ०.....श्रीरत्नत्रय नमंति । ( विवरण क्र० १६८ )
- २३ संमत १५६१ वर्षे फागुण सुदी....। ( विवरण क्र० ११७ )
- २४ सं० १५७८ मू० म० धर्मभूषण । ( विवरण क्र० ३८३ )
- २५ संमत १५८२....। ( विवरण क्र० ४८२ )
- २६ सं० १५८३....। ( विवरण क्र० १२१ )
- २७ सं० १५८३....ती १३....। ( विवरण क्र० ४५३ )
- २८ संमत १५८४ श्री, मू. स. म. विजयकीर्ति तत्पट्टे म.  
शुभचंद्रचोपदेशात् ब्रह्म श्रीशांता बेकीबाई-ति प्रणमंति ।  
( विवरण क्र. २०५ )
- २९ संमत . १६०० वर्षे फागुण वदी ५ शुके श्रीमूलसंगे महारक  
श्रीरामकीर्ति प्रतिष्ठित सेनगणे बघेरवाल ज्ञातिय चवरियागोत्रे  
सा. धाऊजी भार्या बोपाई सुत सा. माणिक भार्या पदमाई  
आता रतन भार्या पसाई पुत्र धाऊजी एते आमुपाईर्चनाय  
नित्यं प्रणमंति । ( विवरण क्र. ३०९ )
- ३० संवत १६०७ वर्षे वैशाख वदी ३ गुरु श्रीमूलसंघे म. श्रंशुभ-  
चंद्रगुरुपदेशात् हूँ सखेस्वरा गोत्रे सा. जीना मा. भाळी सु.  
नाका भा. नाकदे आ. जगा भा. ललितादे आ. नर एते सर्व  
नित्यं प्रणमंति । ( विवरण क्र. ४-६ )
- ३१ [ सं. ] १६०८-उषा- । ( विवरण क्र. ४८४ )
- ३२ संमत १६०९ फालगुण २ दिन- । ( विवरण क्र. १३९ )
- ३३ संवत १६११ ते रागविदे (?) प्रणमंति । ( विवरण क्र. ४६० )
- ३४ संमत १६१४ सेनराण धरमाई बापाई चांगासा ।  
( विवरण क्र. २००, ३६६ )
- ३५ सं० १६१५ मा० १३ । ( विवरण क्र. ४६० )
- ३६ सं० १६१६ । ( विवरण क्र. ४६१ )

- ३७ सके १४८५ मू० स- । ( विवरण क्र. २२५ )
- ३८ सक १४८७ प्रजापतसंवत्सरे श्रीमू. सरस्वती. बलात्कार. म. धर्मचंद्राणाम् उपदेशात् ज्ञाति बघेरवाल भुरा गोत्रे सा रत्न सं. भार्या पुतली लखमाई-प्रणमंति । ( विवरण क्र. ४३४ )
- ३९ सं. १६२५ आषाढ शुद्धि ५ श्रीमूलसंघे ब्रह्म श्रीहंस ब्रह्म श्रीराज-पाछोपदेशात् हुंबड ज्ञातौ सा. समराज भा. लोकोई स. आसजी भा. बाकाई । ( विवरण क्र. २६८ )
- ४० श्रीमूलसंघ संमत १६३१ वर्षे फाग सुदी १० सोमे म. श्रीगुणकीर्तिगुरुपदेशात् सं. कर भार्या सहागदेई सं. वीरदास भा. ताकमई श्रीभजितनाथ जिन प्रणमंति ।  
( विवरण क्र. ३०७ )
- ४१ संमत १६३६ मरानोजो पु (?) । ( विवरण क्र. ३०६ )
- ४२ संवत् १६३६ श्रीकाष्टासंघे भ० विद्याभूषण प्रतिष्ठित हुंबड सा. जयवंतभार्या तसमादे सु-जीवराजसा धनराजसा प्रणपालसा नित्यं प्रणमंति । ( विवरण क्र. ४०८ )
- ४३ शक १५०१ मा. तिथी ८ काष्टासंघे म. श्रीश्रीभूषणसदुपदेशात् प० जयवंत ( विवरण क्र. ४३६ )
- ४४ सके १५०३ वृषा नाम संवत्सरे फागुण सुदि ७ श्रीमूलसंघ ब. म. धर्मभूषणोपदेशात् बघेरवालज्ञाति ठवलागोत्रे सं. पासुसा भार्या सं० रूपाई तयो पुत्रौ आपुसा भार्या लिंबाई रामासा भार्या बोपाई एते प्रणमंति । ( विवरण क्र. ४२१ )
- ४५ सके १५०६ माघ वदी १ गोत्र चवरिया गुणासा ।  
( विवरण क्र. ३९१ )
- ४६ संमत १६४५ बैसाख सुदी ७ सोमवार श्रीकाष्टासंघे काडबाग-डगणे पुष्करगच्छे मङ्गारकभीप्रतापकीर्ति तस्य आम्नाये बघेर-

बालज्ञातिथे बोरखंडियागोत्रे संगई पुंजासा स० चवाई प्रणमंति ।  
( विवरण क्र० ४५० )

४७ संमत १६४६ वर्षे श्रीमूलसंग मट्टारक श्री...वीर तत्पट्टे म.  
श्री...सेन तस्य शिष्य पंडित श्रीगजा उपदेशात् साह बावजी  
भार्या दामाई तयो पुत्र गकुरसाह तस्य भार्या पेमाई तयो सुत  
तुवाजीसाह भार्या लखमाई तेषां नित्यं प्रणमंति...साव फागुण  
शुदी १० गस्वासरे श्रीचितामणो पार्श्वनाथचैत्यालये प्रतिष्ठितं ॥  
शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ जे पूजता ते भवंतु ॥ जयस्तु ॥  
( विवरण क्र० ३११ )

४८ सं. १६४९ फा. शु. १३ मू. बलात्कार. म. पद्मकीर्ति उप-  
देशात्... ( विवरण क्र० ४३० )

४९ [ सं० ] १६५२ बैसाख सुद १४ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे  
पद्मकीर्ति विद्याभूषण हेमकीर्ति सदुपदेशात् श्रीश्रीमाल...  
( विवरण क्र० ३६६, २६९ )

५० संमत १६५३ बैसाख शुद्ध १४ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे मट्टा-  
रक हेमकीर्ति उपदेशात् श्री श्रीमालज्ञातौ महासा नित्यं प्रणमतु  
( विवरण क्र० ४७५ )

५१ शके १५१९ मन्मथनामसंवत्सरे बैसाख सुदि त्रयोदशीदिने  
घटापितं श्रीमूलसंघे सरस्वतिगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचा-  
र्यान्वये म० श्रीधर्मभूषणोपदेशात् पल्लीबालज्ञातीय स. बायासा  
तस्य भार्या गंगाई तयो पुत्र सं. लखमसी तस्य भार्या द्वौ  
गोमाई काकाई तेषा पुत्र द्वौ प्रथमपुत्र सं. मोतासा द्वितीय  
नेमा प्रणमंति । ( विवरण क्र० १२४ )

५२ श्रीमूलसंघे सेनगणे वृषभसेनगणधरान्वये श्रीसम्मतमट्ट...लक्ष्मी-  
सेनमट्टारकउपदेशात् सके १५२१ फागुण सुद पा. रवौ संघची  
सोमसेठी श्रीमंगल । ( विवरण क्र० १३० )

- ५३ संवत् १६५८ वर्षे आषाढ वदी....अष्टस्वाकृष्णः । ( विवरण क्र० ४८३ ) ।
- ५४ शके १५२५ वर्षे शुभकृत् नाम संवत्सरे ज्येष्ठशुक्लपक्षे १३ तिथौ प्रतिष्ठिता । ( विवरण क्र० २७१ )
- ५५ संमत १६६० वर्षे फाल्गुण शुद्धि १० श्रीकाष्ठासंघे लाडवाग-  
ङ्गच्छे म० श्रीप्रतापकीर्ति नंदिसंघे बघेरवालज्ञातिय-सा मारया  
वीरूना परिनिवाई तयो पुत्र सा० नोगु मा. परिहाई श्रीपद्मा-  
वति प्रणमंति श्रीकाष्ठासंघे नंदितटगच्छे महारक श्री श्री श्रीभूषण  
प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ४१४ )
- ५६ शक १५२५ वर्षे श्रीमूलसंघे सेतगणे श्रीमन्वृषभसेनगणान्वये  
म० श्रीसोमसेन तत्पट्टे म० श्रीमाणिकसेन तत्पट्टे म० श्रीगुण-  
मद्र तत्पट्टे म० श्रीगुणसेन उषदेशात् बघेरवालज्ञातीय खटबड-  
गात्रे सं० श्रीहरकसा भार्या गोलाई तयो सुत सं० गणासा  
भार्या कडताई येते श्रीरत्नप्रयचतुर्विंशति प्रणमंति । ( विवरण  
क्र० १९० )
- ५७ संमत १६६० वर्षे फाग सुद ॥ गु० श्री एतत्-वा- मुन्नावाई  
श्रीशीतलनाथबिंबका म०-१ ( विवरण क्र० २७८ )
- ५८ शक १५२६ माहो सुद १३ महारक हेमकीर्ति उपदेशात् प्रति-  
ष्ठितं सितकसिंघवी-तार्जा सवाल तुरासु (?) रुपा नित्यं प्रण-  
मंति । ( विवरण क्र० ४३९ )
- ५९ संवत् १६६३ वर्षे....श्रीमूलसंघे....म० जगतकीर्ति सदुपदेशात्-  
स्वेरान्वये-प्रतिष्ठितं ( विवरण क्र० ४८६ )
- ६० संमत १६६४....महाराजाधिराज....श्रीचन्द्रकीर्ति-तत्पट्टे महारक  
देवेन्द्रकीर्तिजी आम्नाय सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाभा-  
र्यान्वय प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० २७ )
- ६१ संमत १६६९ चैत्रसुद १५ रवौ मूलसंघे कुं० म० यशोकीर्ति

तत्पट्टे म० ललितकीर्ति तत्पट्टे म० धर्मकीर्ति उपदेशात्-पट्टे ।  
( विवरण क्र० २१३ )

६२ ॐ नमः संमत १६७१ वर्षे वैशाख सुद ५ मूलसंघे बकास्कार-  
गणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये म० धर्मकीर्ति तत्पट्टे म०  
धर्मकीर्ति तदुपदेशात् पौरपट्टे सा उदयचंद्र भार्या-भक्तिनारा मूले  
गोहिलगोत्रे-उदयगोत्रे प्रतिष्ठा प्रसिद्धं सोनी दामोदर निर्मापितं  
संभवानि संसाहित प्रतिष्ठामध्ये प्रतिष्ठितं नंदिश्वरजिनबिंब ।  
( विवरण क्र० २१५ )

६३ संवत् १६७२ वर्षे फागुण सित २ तिथौ मेढतानगरं लोढागोत्रे  
सं० चारपात भार्या सकतादेवीभ्यां श्रीधर्मनाथबिंबं कारितं  
प्रतिष्ठितं श्रीजिनचंद्रसूरिमिः । ( विवरण क्र० १५८ )

६४ सके १५३७ । ( विवरण क्र० ४४१ )

६५ संमत १६७६ वर्षे माघवदी ८ श्रीकाष्टासंघे लाडवागढगच्छे  
महारक श्रीप्रतापकीर्ति धाम्नाये बघेरवालज्ञातौ बोरखल्यागोत्रे  
धर्मतासा भार्या अंबाई तयो पुत्र लखमणसा प्रमुख पंचपुत्र  
सभार्या सपुत्र श्रीचन्द्रप्रभु प्रणमंति । श्रीकाष्टासंघे नंदितट-  
गच्छे म० श्रीभूषण प्रतिष्ठितं बहादुरपुरे । ( विवरण क्र० २९८ )

६६ संमत १६७६ वर्षे माघवदी...काष्टासंघे लाडवागढगच्छे श्रीप्रता-  
पकीर्ति उपदेशात् बघेरवाल ज्ञातिय गोवालगोत्रे सं० बापु  
भार्या जमुना... ( विवरण क्र० १४३ )

६७ [ सं० ] १६८१ पार्श्वनाथ मानिक । ( विवरण क्र० ४३८ )

६८ संवत् १६८१ वरषे चैत्र सुदी ५ रवळ श्रीमूलसंघे महारकश्री-  
ललितकीर्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्यश्रीरत्नकीर्तिदेवास्तत्पट्टे  
आचार्यश्रीचंद्रकीर्तिस्तदुपदेशात् गोलापूर्वान्वये खान नाम गोत्रे  
सेठि मालु भार्या चंदनसिरी तत्पुत्र सेठि कतुह भार्या किसवा  
तस्य पुत्री आदी गिर्यं प्रणमंति ( विवरण क्र० २६५ )

- ६९ संमत १६८१ वर्षे माघ सुदी १५ गुरौ म० धर्मकीर्ति उपदेशात् परवारज्ञातो...। ( विवरण क्र० २२३ )
- ७० संमत १६८१ बै० सु० १ दिने संजालपुरवास्तव्य सं० चंद्रा श्रीपाशर्वनाथबिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्रीविजयदेवसू [ रिमिः ] । ( विवरण क्र० २०१ )
- ७१ संवत् १६८१ माघ सुदी ३ दिन...। ( विवरणक्र० १०८ )
- ७२ मंवरगोत्र पानासा संमत १६८६ । ( विवरण क्र० १४४ )
- ७३ संवत् १६८६ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतांगच्छे कुंदकुंदा-चार्यान्वये म० श्रीधर्मचंद्र तदानीय आ(चार्य)पासकीर्ति तदुपदेशात् संघवि बरहरसाह गोलसिंघारा रामटेक सांतिनाथ प्रसादेनृ ज्येष्ठ वद्य ५ शमि तिलक मंगलं शुभं भवतु ॥ छ ॥ ( विवरण क्र० २७४ )
- ७४ सं० १६९१ मा० रत्नकीर्ति । ( विवरण क्र० ३८२ )
- ७५ संमत १६९२ मिति बैसाख वदी ११ सोमवासरे म० धर्मचंद्र-जी । ( विवरण क्र० १२० )
- ७६ शके १५६१ प्रभवनामसंवत्सरे फाल्गुण सुदी द्वितीया मूलसंघे पुष्करगच्छे सेनगणे मट्टारक श्रीसोमसेनउपदेशात् प्रतिष्ठितं...। ( विवरण क्र० १११ )
- ७७ शके १५६१ फाल्गुण सुदी २ गुरु श्रीमूलसंघे पुष्करगच्छे सेनगणे...हुंबड...। ( विवरण क्र० १३४ )
- ७८ शक १५६१ फाल्गुण...श्रीमूलसंघ सेनगण म० श्रीसोमसेन तुक्साव गुणासाव...बोपासा नित्यं प्रणमंति । ( विवरण क्र० २११ )
- ७९ शके १५६१ फाग वदी १० शनैश्चरे काष्ठासंघे लाहबागड बन्हा-डगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये श्रीनरेंद्रकीर्ति तत्पट्टे तमो०...।



- उ० सा० पामादि पु० देवासा नि० प्रतिष्ठितं श्रीलक्ष्मीसेन  
प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० २३५ )
- ८० शके १५६१ पार्थीवनामसंवत्सरे श्रीमू० ब० स० म० धर्म-  
चंद्रोपदेशात् बघेरवालजातीय खंडारियागोत्रे आवण मा० गंगाई  
तयोपुत्र भाणिकसा भार्या गोपाई प्रतिष्ठितं । ( विवरण  
क्र० ३८९ )
- ८१ संमत १७०३ वर्षे ज्येष्ठ वदो १० शक्रे श्रीकाष्टासंघे लाडवागड-  
गच्छे लोहाचार्यान्वये वराडप्रदेशे कारंजीनगरे प्रतापकीर्तिभा-  
म्नाय बघेरवाल जातीय काबला गोत्र सा श्रीपाससा भार्या  
पद्माई तयो सुत सा वण भार्या मणकाई तयो पुत्र द्वौ प्रथमपुत्र  
स० श्रीरामा भार्या अंबाई द्वितीय पुत्र सा पतसा एते समस्तै  
श्रीकाष्टासंघे नंदितगच्छे म० श्रीरामसेनान्वये तदनुक्रमेण म०  
श्रीविश्वमेन तत्पट्टे श्रीविद्याभूषण तत्पट्टे म० श्रीश्रीभूषण तत्पट्टे  
श्रीचंद्रकीर्ति तत्पट्टे म० श्रीराजकीर्ति तत्पट्टे म० श्रीलक्ष्मी  
सेनजी प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० १३५ )
- ८२ मूलसंगे बलात्कारगणे म० धर्मभूषणगुरूपदेशात् बघेरवाल....  
पुत्र....सा ( भिन्न अक्षरमें ) संमत १७०६ वर्षे मी....माह सु०  
५ मो....पुजासा.... । ( विवरण क्र० ३१० )
- ८३ शके १५७२.... । ( विवरण क्र० ११८ )
- ८४ संमत १७११ म० सकलकीर्ति सा० लाले पुत्रवंते प्रणमंति ।  
( विवरण क्र० ३३६ )
- ८५ ॐ नमः सिद्धेभ्यः सा म० संवत् १७११ श्रीमहाराज.... ।  
( विवरण क्र० ४७६ )
- ८६ संवत् १७१३ वर्षे माघ सुदि ११ गुरौ श्रीमूलसंघे ब्रह्म श्रीशान्ति-  
दास तत्पट्टे ब्रह्मश्रीवादिराज गुरूपदेशात् हुं बड जातीय बाई

काष्ठाई इति सिद्धयंत्रं नित्यं प्रणमंति । शुभं भूयात् ।

( विवरण क्र० २७५ )

८७ शके १५७८—सुखनाम म० स० म० श्रीधर्मभूषण उपदेक्षात्  
तिमासा भार्या वखाई तयो पुत्र भूतसा त० देवाई ।

( विवरण क्र० १८४ )

८८ शके १५८० माघ सुदी ५ सोमे कारंजानगरे काष्ठासंघे नंदितट-  
गच्छे म० इंद्रभूषण प्रतिष्ठितं बघेरवाकज्ञाति गोवलगोत्रे मा०  
दुल्लणबाई प्रणमंति । ( विवरण क्र० १४१ )

८९ संवत् १७१५ वर्षे माघ सुदी ५ काष्ठासंघे नंदितटगच्छे विद्या-  
गणे बघेरवाक ज्ञातीय बोरखंडियागोत्रे स० खांभा भार्या  
पुतकाई तयो पुत्र सं० धनजी भार्या पदाई येन सुपार्श्वनाथ  
प्रणमंति । ( विवरण क्र० १४२ )

९० शके १५८० माघ सुदी ५ सोमवार काष्ठासंघे नंदितटगच्छे  
मटारक श्री इंद्रभूषण प्रतिष्ठितं बघेरवाकज्ञाती बोरखंडियागोत्रे  
तेऊजीसा भार्या जसाई तयो पुत्र जैत्र नाथुसा सा० चित्तामनसा  
इते अंबिका नित्यं [ प्रणमंति ] ( विवरण क्र० ४४७ )

९१ संवत् १७१५ माघ सुदी ५ सोमवार काष्ठासंघे नंदितटगच्छे  
विद्यागणे मटारकरामसेनान्वये राजकीर्ति तत्पट्टे मटारक लक्ष्मी-  
सेन तत्पट्टे म० इंद्रभूषण प्रतिष्ठितं संघवी खांभा भार्या पुतकाई  
तयो पुत्र सं० धनजी भार्या पदाई अंबिका प्रणमंति काष्ठासंघे  
लोहाचार्यानवये प्रतापकीर्ति संघवी खांभा भार्या पुतकाई सं०  
धनजी । ( विवरण क्र० ४४८ )

९२ संवत् १७१५ माघ सुदी ५ सोमे काष्ठासंघे काढबागडगच्छे म०  
प्रतापकीर्ति तदाम्नाये बघेरवाकज्ञाती कावरी ।

( विवरण क्र० ५ )

- ९३ शके १५८३ शौ० फ० व० ३ म० स० म० पक्षकीर्ति सो० श्रा०  
बुनसेट भाग्या भ्राता । ( विवरण क्र० २०२ )
- ९४ श० १५८१ क० व० पक्ष० म० जे० का० श्रा० बघेरबाक  
लुगाई का पु का सा मा का सा त (?).....ग मु.....।  
( विवरण क्र० ४०६, ४०३ )
- ९५ शक १५८२ स्याचरी नाम संबत्सरे तीथ फाकगुण सुद दसमी  
१०॥ श्रीवांतीनाथचैत्यालय श्रीबकात्कार गणे सरस्वतीगच्छे  
श्रीकुंदकुंदाचार्यान् महारक श्रीपक्षकीर्ति उपदेशात् समटेक नम्र  
ज्ञाती सहृदवाक...राबाजी जाई । ( विवरण क्र० २७३ )
- ९६ शके १५८२ फाकगुण सुद ७ तिहक सेन महारक श्रीजिनसेन  
बघेरबाकज्ञाती चवरियागोत्रे सा०...भार्या...नित्यं प्रणमति ।  
( विवरण क्र० ४४५ )
- ९७ संमत १७१८ । ( विवरण क्र० १२३ )
- ९८ शके १५८३ प्रमखनामसंबत्सरे ज्येष्ठवदी प्रथम...व० कुं०  
म०...। ( विवरण क्र० २२९ )
- ९९ शके १५८६ वर्षे क्रोधनामसंबत्सरे तिथी फागुण सुद ५ श्रीमूक-  
संधे बकात्कारगणे सरस्वतीगच्छे म० धर्मचंद्र तत्पट्टे म० धर्म-  
भूषण महाराज व० नेमन्थी भार्या राजाई पुत्र सोषराजी तं  
प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० २०८ )
- १०० शक १५८६.....। ( विवरण क्र० ३८८ )
- १०१ शके १५८९ । ( विवरण क्र० ७ )
- १०२ शके १५९२ वैशाख...मुकसंब सरस्वतीगच्छ बकात्कारगणे  
कुंदकुंदाचार्यान्वये महारक कुमुदचंद्र तत्पट्टे म० अजितकीर्ति  
त० म० विशाककीर्ति उपदेशात् सोनोपंडित रोडे ।  
( विवरण क्र० १८० )
- १०३ संमत १७३१ । ( विवरण क्र० १२२ )

- १०४ सके १५९६ फा० शु ॥ ३ म०...कीर्ति तत्पट्टे द्वाभूषण श्रीमू०  
स० ब० । ( विवरण क्र० २२१ )
- १०५ शके १५९७ मूलसंघ बलात्कारगण म० धर्मभूषण ॐ हरीसाव  
पुत्र फकीचंद प्रणमंति । ( विवरण क्र० २२८ )
- १०६ श० १५९७ मू० सेनगणे म० जि० तज्जेगामग्रामे गु० गनसेठ  
भा० सिशवाई पु० कृस्नाजी भा० मेगाई पु० जोगाजी प्रणमंति ।  
( विवरण क्र० ४५७ )
- १०७ संमत १७३२ वर्षे ज्येष्ठ सुदी २ श्रीमूलसंघे मट्टारक श्रीसुरेंद्र-  
कीर्तिस्तदाम्नाये खंडेरवालान्वये गृध्रवालगोत्रे सा देवसी पुत्र  
संगहान...प्रतिष्ठा कारिता...। ( विवरण क्र० ३७७ )
- १०८ शके १५९७ मू ॥ ब ॥ म० श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् ऊजानीपल्ली-  
वालजातीय माणिकसा तत्पुत्र नारसा सुत शतसा प्रणमंति ।  
( विवरण क्र० १५९ )
- १०९ [ श० ] १५६७ सु० ज्ञानसेन उ० लखसेठ माहोरकर-अण-  
मंति । ( विवरण क्र० १६२ )
- ११० शके १५६६ पिं० श्रीमू० । ( विवरण क्र० ४९७ )
- १११ सक १६०१ संमत १७३६...। ( विवरण क्र० ३५९ )
- ११२ सक १६०१ मार्गशिर्ष...। ( विवरण क्र० २२० )
- ११३ १६०१ सं० श्रीमू० । ( विवरण क्र० ४९१ )
- ११४ सके १६०१ फाल्गुण सुदि ११ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे  
मट्टारकश्रीपद्मकीर्तिसदुपदेशात् श्रीपद्मावतीपल्लीवालजातीय अडनाब  
कुस्तानी पानसी मार्या मगनाई तयोपुत्र बाबुजी प्रणमंति ।  
( विवरण क्र० २७२ )
- ११५ सांतिनाथ सके १६०४ श्री...। ( विवरण क्र० ३७५ )
- ११६ रा० अरजुनसा सके १६०७ क्रोधनामसंवत्सरे मार्गशिर्ष सुदी ५  
श्रीमूलसंघे खंडारियागोत्रे सः पी० । ( विवरण क्र० १२९ )

- ११७ सातनाथ सके १६०७.....४ माघे.....। ( विवरण क्र० ४६२ )
- ११८ सके १६०७.....। ( विवरण क्र० ४७४ )
- ११९ सके १७०७ संमत १७४२ । ( विवरण क्र० ४५२ )
- १२० शके १६०७ प्रमवनामसंवत्सरे फालगुण वदी १० म० धर्मचंद्र उपदेशात् मु०.....नगरे ज्ञाते उज्जैनीपल्लीवार गोदसा भार्या सेमाई ब० साह....भार्या नागाई प्रणमंति । (विवरण क्र० १८७)
- १२१ सके १६०८ फागुण वदि १० श्रीमूकसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीविशालकीर्तिस्तत्पष्टे म० श्रीपद्मकीर्तिस्तत्पष्टे म० श्रीविद्याभूषण....स्वकर्मक्षयार्थ । ( विवरण क्र० २६७ )
- १२२ संवत् १७४४ सके १६०९ फालगुण सुद १३ श्रीमत्काष्टासंघे लाडबागडगच्छे म० प्रतापकीर्ति आम्नाये बघेरवालज्ञाती गोवाल-गोत्रे संवदी पदाजी भार्या तानाई तयो पुत्र संवदी जमनाजी भार्या हांसुबाई तयो पुत्रा तुर्य स० पुतलाबा भार्या गंगाई म० पुजाबा मा० देवकु स० शीतलाबा मा० सकाई इ० पदाजी एते सह नित्यं प्रणमंति श्रीकाष्टासंघे नदितटगच्छे म० इंद्रभूषण म० सुरेंद्रकीर्तिः । ( विवरण क्र० १७२, १७४, ४४६ )
- १२३ सके १६०९ फा० सु० १३ काष्टासंघे लाडबागडगच्छे प्रतापकीर्त्याम्नाय म० सुरेंद्रकीर्ति सं० पदाजी मा० तानाई पु० राजबा मा० सोनाई पु० अनतोबा मा० पामाई जीप्रतिष्ठितं (विवरण क्र० १७५)
- १२४ सके १६०९....बलात्कार....। ( विवरण क्र० ४७८ )
- १२५ संवत् १७४५ ज्येष्ठ सुदी २ सोमवार श्रीकारंजानगरे काष्टासंघे प्रतापकीर्तिआम्नाये बघेरवालज्ञाती बोरखंडियागोत्रे सा० मनासा भार्या सकाई तयो पुत्रा अथ सा अर्जुन मा० रंगाई शितलसा भार्या साधरा लक्ष्मणसा मा० जीवाई येसोबा पुर्तुकोबा....नित्यं प्रणमंति । ( विवरण क्र० ४४९ )

- १२६ मिती बैसाख सुदी ३ संमत १७४५....। ( विवरण क्र० ६६ )
- १२७ संमत १७४६....। ( विवरण क्र० ३२६ )
- १२८ शके १६११ श्री....। ( विवरण क्र० ३६१ )
- १२९ सं० १७४६ । ( विवरण क्र० ३८४ )
- १३० संमत १७४७ शके १६१२ ज्येष्ठ वदी ७ म० श्रीईंद्रभूषण त० म० सुरेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठित श्रीकाष्ठासंघे लाडबागगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये म० श्रीनरेंद्रकीर्ति प० म० श्रीप्रतापकीर्ति आम्नाये बघेरवालजाति गोवालगोत्रे सं० बापु पुत्र सं० मोज संघवी पदाजी भार्या तानाई पुत्र सं० बापु सं० जमनाजी सं० राजबा अथ संघवी जमनाजी भार्या इसाई समस्त कुटुम्बपरिवार नित्यं प्रणमंति दर्शनार्थं श्रीअवधनगर प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० १७६ )
- १३१ शके १६१२ ज्येष्ठ वदि ७ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छ बलाका-  
रगणे म० श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये म० धर्मभूषण त० म० विश्वाकर्कीर्ति त० म० धर्मचंद्रोपदेसात् बघेरवालजाति लडासो  
गोत्रे सा० राघुसा सुत कपुसा अंबिका नित्यं प्रणमंति । ( विव-  
रण क्र० ४३२ )
- १३२ संमत १७५० सबधारी नाम संवत्सरे आषाढ़ कृष्ण तिथि....भार्या  
श्री.... । ( विवरण क्र० ७३ )
- १३३ शके १६१७ फा० ५....। ( विवरण क्र० ३७८ )
- १३४ सं० १७५२ माघ वदी ८ श्रीमूलसंघ म० श्रीहेमकीर्ति गु० त०  
न न जा सबजी (?) । विवरण क्र० ४११ )
- १३५ संवत् १७५३ वर्षे बैसाख सुदि ६ सनी श्रीकाष्ठासंघे लाडबा-  
गगच्छे लोहाचार्यान्वये तदनुक्रमे महारक श्रीप्रतापकीर्ति  
तदाम्नाये बघेरवालजातौ गोवालगोत्रे संघवी मोज भार्या पदमाई  
तथोपुत्र अरजुन भार्या सकाई तासो पुत्र सं० तवना भार्या

सिता पुत्र सं० मामा भार्या देगई संबवी भर्मा भार्या कल्याई  
तयो पुत्र सं० सितल भार्या देनकु भार्या हिराई तयो पुत्र भोज  
द्वितीयभार्या... इत्यादि सपरिवारे नित्यं प्रणमन्ति । आकाष्टासंघे  
नंदीतटगच्छे म० रामसेनान्वये तदनुक्रमेण म० इंद्रभूषण तत्पट्टे  
म० सु ( रेंद्रकीर्ति )... ( विवरण क्र० १६९ )

१३६ संमत १७५३ वरषे मिती बैसाख सुदी ३... पापझोवाक प्रति-  
ष्ठितं । ( विवरण क्र० ५८, ६३, ६४, ८८ )

१३७ शके १६१३ वै० सु० ३ श्रीमूलसंघ सेनगण । ( विवरण क्र०  
१६४, २१६ )

१३८ संवत् १७५४ मूलसंघे सेनगणे पुष्करगच्छे म० छत्रसेनोपदे-  
शात्... ( विवरण क्र० ८ )

१३९ [ सं० ] १७५६ श्रोमु० बा० स० श्रीदेवेंद्रकीर्ति म० प्रतिष्ठित  
मिती माघ सुद ५ । ( विवरण क्र० २०४, ४६९ )

१४० शके १६२२... म० श्री ... चंद्रगुरुपदेशात्... ( विवरण क्र०  
३३० )

१४१ शके १६२४ विभवनामसंवत्सरे माघ... ।

१४२ स० १६२६ म० हेमकीर्ति उपदेशात् प्रतिष्ठितं स्त्री० स० ।  
( विवरण क्र० ४१२ )

१४३ शक १६२६ तारणनामसंवत्सरे माघ सुद १३ शुक्ले मूलसंघ  
बलारकारगच्छ कुंदकुंदाचार्यान्वये म० पद्मकीर्ति तत्पट्टे म० विद्या-  
भूषण त० म० हेमकीर्ति उपदेशात् उज्जैनोपस्कीवाकज्ञातीय  
सिंगवी लखमप्रसादजी भार्या गोमाई तस्य पुत्र नेमासिंगवी  
सितलसिंगवी... सितलसिंगवीप्रतिष्ठितं मोसीनगरे चंद्रनाथ-  
चैथ्यालये गुमासा चितामणिसा नित्यं प्रणमतु ( विवरण क्र०  
२१० )

१४४ शक १६२६ तारण संवत्सरे माघ सुद १३ मूलसंघ व० भ०

- हेमकीर्ति उपदेशात् सितलसंगई प्रतिष्ठितं शुभं भूयात् । ( विवरण क्र० १८६ )
- १४५ शके १६२८-विमवनामसंवत्सरे माघ..... । ( विवरण क्र० ३०५, ३३८, ४०१ )
- १४६ सक १६३६ जय० फा० दताजी । ( विवरण क्र० ४३५ )
- १४७ संमत १७७२ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंद ( कुंदाचार्यान्वये )..... । ( विवरण क्र० ५७ )
- १४८ संमत १७७८ चैत्र सुदी ६ श्रीमू० स० । ( विवरण क्र० २९ )
- १४९ सं० १७८३ । ( विवरण क्र० ४६३ )
- १५० संमत १७९१ मूलसंघ । ( विवरण क्र० ११९ )
- १५१ संमत १७९३ प्र० श्रीमू० स० ब० म० श्रीधर्मचंद्रना उपदेशात् ज्ञान वा० भोजसा माः नावाई त० पु० फदआ (?) नित्यं प्रणमंति । ( विवरण क्र० ४०५ )
- १५२ संवत् १८०० वैसाख शु॥ ३ मौमवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कार-गणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये.....नागपुरमे.....प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ५१, ५६ )
- १५३ संमत १८०० वैसाख सुदी ३ । ( विवरण क्र० ५६ )
- १५४ संमत १८१० माघ सुद २ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती-गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये गोपाचलपट्टे मट्टारक श्रीचारुचंद्रभूषण तदोपदेशात्.....नगरे प्रतिष्ठा करापिता.....कामठी सदर..... । ( विवरण क्र० २०९ )
- १५५ शके १६७६ । ( विवरण क्र० ३३५ )
- १५६ श्रीमूलसंगे सके १६७६..... । ( विवरण क्र० ४३३ )
- १५७ शके १६७७ क्रोधनामसंवत्सरे मार्गशिर्य सुदी १० वृधे मुळसंघ पुष्करगच्छे सेनगणेम्नाये मट्टारकजी सोमसेनदेवा तत्पट्टे मट्टारक श्रीजिनसेनगुरुपदेशात् कारंजाग्रामवास्तव्य बघेरवालज्ञात



सावकागोत्रे वीरसाह भार्या हिराई तयोपुत्र जिनासाह भार्या  
गोपाई तयो पुत्र द्वौ प्रथम पुत्र तचनासा भार्या अंबाई द्वितीयपुत्र  
शितलसाह भार्या पदाई नित्यं प्रणमंति । ( विवरण क्र० १७७ )

१५८ शक १६७८ माघ सुद १४ मूलसंक्र म० शांतिसेनोपदेशात्  
प्रतिष्ठितं कारंजाग्रामवास्तव्येन नेवाशाति कु० गोत्र पु०  
चिंतामणसा नित्यं प्रणमंति । ( विवरण क्र० २१२ )

१५९ संमत १८१४ शके १६७९ । ( विवरण क्र० ४४४ )

१६० शक १६८१ फा० व ॥ ६ मू० स० ब० कु० म० धर्मचंदे....  
पाश्वर्नाथविंश । ( विवरण क्र० १३८ )

१६१ शक १६८६ स० म० ब० म० धर्मचंद्र । ( विवरण क्र० २०३ )

१६२ शके १६८७ फा० ५ अ० । ( विवरण क्र० ४३१ )

१६३ सके १६८७ मन्मथ अजितकीर्तिउपदेशात् स० छ रे म टा कं (?)  
फा० सु० २ । ( विवरण क्र० ४७० )

१६४ संवत् १८२३ चैत्र वदी ८ । ( विवरण क्र० ३१६ )

१६५ संमत १८२७ सके १६९२ वैशाख सुदी १२.....उपदेशात्..... ।  
( विवरण क्र० २९९ )

१६६ सके १६९२ मिती वैशाख वद ११ श्रीमूलसंघे स० ब० म०  
धर्मचंद्र प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ६ )

१६७ शके १६९५ । ( विवरण क्र० ४६७ )

१६८ सके १६९५ मन्मथनामसंस्तरं..... । ( विवरण क्र० २३६ )

१६९ सके १६९७ फा ॥ ५ अ० बावजि । ( विवरण क्र० ४५६ )

१७० सके १६९७ स० म० स०.....म० अजितकीर्ति..... । ( विवरण  
क्र० ४६५ )

१७१ सके १६९७ म० फा० सु० ५ म० अ० मना । ( विवरण क्र०  
४७३ )

१७२ सके १६९७ फा० ५ अ० अयं ति० । विवरण क्र० ४७७ )

- १७३ (सके) १६१७ फा० ५ अ० ब० ल० । ( विवरण क्र० ४७१ )
- १७४ शके १६१७ मन्मथनामसंवत्सरे अजितकीर्ति उपदेशात् परवार हिरामन फाल० शु० द्वितीया २ । ( विवरण क्र० ४८० )
- १७५ सके १६१७ मनाजी सेठ म० अ० । ( विवरण क्र० ४८३ )
- १७६ शके १६१७ मि० फा० २ नथु । ( विवरण क्र० ३१५ )
- १७७ संमत १८३२ मन्मथनामसंवत्सरे मू० ब० स० कु० म० पद्मकीर्ति म० विद्याभूषण म० हेमकीर्ति तत्पट्टे अजितकीर्ति फालगुण मससे शुद्ध २ पंचपरमंष्टी । ( विवरण क्र० २२७ )
- १७८ शक १६१७ नाम संवत्सर म० अजितकीर्ति उपदेशात् फा० सु० २ । ( विवरण क्र० २०६ )
- १७९ शके १६९८ सु० ( विवरण क्र० ३२४ )
- १८० श्रीमूलसंघी सके १७०५ । ( विवरण क्र० ४४० )
- १८१ सक १७०७ चैत्र वद १३ श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छ बलात्कार-गण । ( विवरण क्र० ७६ )
- १८२ संमत १८४५ सके १७१० श्रीमत्काष्टासंघे लाडबागड नंदितट-गच्छे म० सुरेंद्रकीर्ति तत्पट्टे म० सकलकीर्ति तत्पट्टे म० लक्ष्मी सेनजी श्रीबघेलवालज्ञाति जुगिया गोत्रे काष्टासंघ गार्दा । ( विवरण क्र० १३३ )
- १८३ सके १७१० शै कीलनामसंवत्सरे मिती आवण सुद्ध १२ श्री-मूलसंघ चिमनाजी सरावजे तथ पुत्र मुरारजी । ( विवरण क्र० १२८ )
- १८४ सा० १७१० काष्टासंघी वर्धासा जोगी । ( विवरण क्र० १७३ )
- १८५ संमत १८४६ कार्तिक सुदी ४ काष्टासंघे नंदितटगच्छे श्रीलक्ष्मीसेनजी प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० १३२ )
- १८६ संमत १८५२ महारक उपदेशात् रामलालेन प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० ४६८ )

- १८७ सके १७१८ संवत् १८५३ मार्गेश्वर....। ( विवरण क्र० ४६२, ४६६ )
- १८८ कौ नमः सिद्धेभ्यः संवत् १८५७ शके १७२२ मादवा सुदी १० सोमवासरे कुंदकुंदाचार्याभ्याय सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे म० श्री श्री श्री अजितकीर्ति तस्य उपदेशात्....गोहिक परस्पर ज्ञाते...मंगलं भूयात् । ( विवरण क्र० ३१ )
- १८९ साल १७२३ संवत् १८५८ फागवदी २ । ( विवरण क्र० ४२५ )
- १९० संवत् १८५९ शके १७२४ का नामपूस्मध्ये म० रत्नकीर्ति उपदेशात्....। ( विवरण क्र० ३०, ४४, ४५ )
- १९१ संवत् १८५६ कुंदुभिनामसंवत्सरे नागपूरनगरे रघुवराज्ये म० श्रीरत्नकीर्तिउपदेशात् श्रीपरिवार वंशे....। ( विवरण क्र० ३२ )
- १९२ संवत् १८५६ शके १७२४ श्री मूलसंघ बलात्कारगणे सरस्वती-गच्छे म० रत्नकीर्ति उपदेशात् नागपूरनगरे रघुवराज्ये परिवारा-न्वये सेतगागर गोहिल्कगोत्र...भार्या...प्रतिष्ठा करारितं । ( विवरण क्र० ३३, ४३ )
- १९३ संवत् १८६१ वैशाख सुदी ५ सोमवासरे सवाईजयनगरे श्री-सुरेंद्रकीर्तिउपदेशात्....हिरा...प्रतिष्ठा कारिता । ( विवरण क्र० ३४६ )
- १९४ संवत् १८६६ फाल्गुण कृष्ण ५ शुक्रवारे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ३७०, ३७२ )
- १९५ संवत् १८६८ फागुण सुदी ७ बुध श्रीमूलसंघ बलात्कारगण सरस्वतीगच्छ...प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ११० )
- १९६ शके १७४३ श्रीमूल....। ( विवरण क्र० ४८१ )
- १९७ शके १७४४ श्रीमूलसंघ । ( विवरण क्र० ९०, १७६ )
- १९८ संवत् १८८१ वर्षे माघ मासे शुद्ध ५ सोम श्रीकाष्टासंघे म०

- सुरेन्द्रकीर्ति तत्त्वशिव्य भ० देवेंद्रकीर्ति राजोमान ज्ञाति बघेरवाल ।  
( विवरण क्र० १७० )
- १६६ संमत १८८१ म० स० ब० आचार्य श्रीरामकीर्ति उपदेशात्...  
प्रतिष्ठित श्रीउमरावतीनगरे । ( विवरण क्र० १६२ )
- २०० संवत् १८८५ श्रीमूलसंघ सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदा-  
चार्यान्वय भट्टारक श्रीदेवेंद्रकीर्ति उपदेशात्...प्रतिष्ठितं ।  
( विवरण क्र० ५२ )
- २०१ संवत् १८८५ मार्गशिर्ष वद १२ गुरुदिने श्रीमत्काष्टासंघे लाड-  
बागढगच्छे भ० प्रतापकीर्ति भाग्याय नंदितटगच्छे भ० सुरेन्द्रकीर्ति  
तस्य भ० देवेंद्रकीर्ति राज्यमान ज्ञाति बघेरवाल गोत्र बोरखंड्या  
सा० खेमासा पु० पूनासा यंत्र प्रणाम्यन्ति । (विवरण क्र० ३९२)
- २०२ संमत १८८७ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदा-  
चार्याभ्याये श्रीमत्भट्टारक धर्मचंद्रदेवात् तत्पट्टे भट्टारक देवेंद्र-  
कीर्तिदेवात् तत्पट्टे भ० पद्मनंदिदेवात् तत्पट्टे भ० देवेंद्रकीर्ति-  
देवात् उपदेशात् बघेरवाल पाससा भवसा सरसग्राममध्ये प्रतिष्ठा  
करापितं । ( विवरण क्र० ४२८ )
- २०३ संमत १८८७ शके १७५२ श्रावणमासे शुक्लपक्षे ती० ५  
आदितवासरे बालात्कारगणे कारंजापुरपट्टाधिकारी श्रीमंत भ०  
देवेंद्रकीर्तिस्वामीजी मादं बिब प्रतिष्ठितं ।  
( विवरण क्र० ४७१ )
- २०४ शक १७५२ संमत १८८७ वैशाख सुदी ७ गुरुवार स्वस्ति श्री-  
मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ०  
धर्मचंद्रदेवात् तत्पट्टे भ० देवेंद्रकीर्तिदेवात् त० भ० पद्मनंदि-  
देवात् कार्यरंजकपुरपट्टाधिकारी श्रीमत् देवेंद्रकीर्तिउपदेशात्  
वैरामक्षेत्रे सरसग्रामे माणिकसा बघेरवाल तत्पुत्र पामा गोत्र  
श्वरे प्रतिष्ठा करावितं । ( विवरण क्र० १९१ )

- २०५ संमत १८८७ का ज्येष्ठ सुदी ९ विंशतिनामसंवत्सरे श्रीमू० स०  
ब० कुं० म० पद्मनंददेवात् तत्पद्मे म० देवेंद्रकीर्ति...प्रतिष्ठा  
करान्वितं । ( विवरण क्र० २८ )
- २०६ संवत् १८८८ वैशाख कृष्ण ५ रविवासरे श्रीमूलसंघे ब० स०  
श्रीकु० इदं प्रतिमा कारयेत् श्रीसकलपंचकमेष्टिके स्वकर्मक्षयार्थं  
प्रतिमा प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० २९ )
- २०७ संमत १८८८... । ( विवरण क्र० १०६ )
- २०८ संमत १८८९ वैशाख शुक्ल ११ गुरुवासरे मूलसंघ ब० स०  
कुंदकुंदाचार्यान्वय । ( विवरण क्र० ८५ )
- २०९ संमत १८८९ वृषभायणे... । ( विवरण क्र० १०३ )
- २१० संमत १८९१ शके १७५६ जयनामसंवत्सरे श्रावणमासे कृष्ण-  
पक्षे पराकी मूलसंघे स० ब० कारंजानगरे इदं पद्मदेवि श्री-  
मद्देवेंद्रकीर्तिस्वामिना प्रतिष्ठितम् । ( विवरण क्र० २३७ )
- २११ संमत १८९३ वर्षे भाव सुद १० बुधदिनी मूलसंघ कुंदकुंदा-  
चार्यान्माय ब० स० महारकपद्मनंददेवात् तत्पद्मिण्य म० देवेंद्र-  
कीर्तिदेवात् तत् उपदेशात्...भार्या हिता पुत्र नेमुराम भ्राता  
दाम्जी भार्या लाडव...प्रतिष्ठितं प्रणमंति । ( विवरण क्र०  
१८६ )
- २१२ सं० १८९३ श्रीमू० नागपूर श्रीपाशु चं० । ( विवरण क्र०  
३९६ )
- २१३ श्रीमूलसंघ सक १७५९ । ( विवरण क्र० ४५४, ४५८ )
- २१४ श्रीसंवत् १८९४ साक आषाढ़ ब० १ श्रीमहावीर स्वामीजीका  
मुख । ( विवरण क्र० ४६, ५० )
- २१५ संमत १८९७ शके १७६२ भगवतिनामसंवत्सरे वैशाख सुदी  
१ बुधवासरे इदं श्रीपाश्वर्नाथस्वामी श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे  
बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये महारक श्रीमद्देवेंद्रकीर्तिस्वामी

नागपुरे प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० २१४ )

२१६ संवत् १८९८ मिति श्रावण सुदि ८ सोमदिने नागपुरे श्रीपार्श्व-  
नाथचैत्यालये इदं जलयात्राग्रंथं प्रतिष्ठितं ( विवरण क्र० २७० )

२१७ संमत १८९६ फागुण सुदी ७ बुधवासरं श्रीमूलसंघे बालास्कार  
गण सरस्वतीगच्छ कुंदकुंदाम्बाये तेन प्रतिज्ञानुसारेण प्रतिमा  
प्रतिष्ठितं गोपीसाह । ( विवरण क्र० ३३२ )

२१८ श्रीमूलसंघे शके १७६४ । ( विवरण क्र० ११३ )

२१९ श्रीपारसनाथजी सक १७६५ रत्ननाथ संवत्सरे । ( विवरण  
क्र० ७७ )

२२० संमत १९०० शके १७६५ सोमल नाम संवत्सरे चैत्र सुदी ३  
सोमवासरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बालास्कारगणे नागपुर  
पार्श्वनाथचैत्यालये अयं मेरु देवेंद्रकीर्तिस्वामीना प्रतिष्ठितं ।  
( विवरण क्र० १८१ )

२२१ संवत् १९०० शके १७६५ सोमवक नाम संवत्सरे चैत्र सुद  
३ सोमवार मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बालास्कारगणे श्रीनागपुरे  
श्रीमत् चिंतामणिपार्श्वनाथचैत्यालये श्रीशंतिनाथस्वामी देवेंद्र-  
कीर्तिस्वामीना प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० १७८, १७९ )

२२२ संमत १९०२ माघ शु॥ १३ ( विवरण क्र० २८३, ३०० )

२२३ संमत १९०२ माघ सुदी तेरसी म० देवेंद्रकीर्ति हस्तेन सुखा-  
लाल प्यारेलाल प्रतिष्ठा करारिता । ( विवरण क्र० ३४२ )

२२४ शके १७६७ । ( विवरण क्र० ३६५ )

२२५ संमत १९०२ शके १७६७ तेरसादिवसे प्रतिष्ठितं । ( विवरण  
क्र० ३६ )

२२६ संवत् १९०४ शके १७६६ मिति वैशाख सुदी १३ बुधवासरं  
इदं श्रीचन्द्रनाथस्वामी प्रतिष्ठा श्रीमत्देवेंद्रकीर्तिस्वामी तेन  
प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ६०, ६१ )

- २२७ संमत १९०४ शके १७६९ प्लवंगनामसंवत्सरे मिति वैशाख सुदी १३ बुधवासरे इदं मुनिसुवत स्वामी श्रीमूलसंघ बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये म० श्रीमद् देवेंद्रकीर्ति उपदेशात् बघेरवालवंशः चवरियागोत्रे रतनसावजी श्रीनागपुरे प्रतिष्ठितः । ( विवरण क्र० २२४ )
- २२८ संमत १९०४ मिति वैशाख सुदी १३ । ( विवरण क्र० २८२ )
- २२९ संवत् १९०७ शके १७७२ मिति आषणसुदी ५ सोमवार नागपुरनगरे श्रीमूलसंघ सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण श्रीपार्श्वनाथस्वामिचैत्यालये इदं पद्मावतिदेवि प्रतिष्ठितं ।  
(विवरण क्र० २३४)
- २३० संवत् १९०७ शके १७७२ मिति आषण सुदी ५ सोमवासरे नागपुरनगर मुलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीपार्श्वनाथस्वामीचैत्यालये अयं पार्श्वनाथप्रतिमा म० देवेंद्रकीर्तिस्वामिना प्रतिष्ठितः । ( विवरण क्र० १९६ )
- २३१ समत १९०७ मिति आषण सुदः ५ म० स० ब० नागपुरे पार्श्वनाथदेवालये प्रतिष्ठितः । ( विवरण क्र० १८५, ३८५ )
- २३२ अयं मेरु हंगोलीग्रामे शांतीनाथस्वामीचैत्यालये स्थापित संवत् १९०८ शक १७७३ वर्षे विरोधकृतनामसंवत्सरे आषणमासे शुक्लपक्षे १० बुधवासरे मुलसंघ सरस्वतीगच्छ बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये नागपुरनगरे पार्श्वनाथस्वामीचैत्यालये अयं मेरु जिनान् श्रीदेवेंद्रकीर्तिस्वामीना प्रातिष्ठाप्य हंगोलीग्रामे स्थापितः । ( विवरण क्र० १९५ )
- २३३ संमत १९०८ शक १७७३ आषण सुद १० बुधवार मुलसंग सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण कुंदकुंदाचार्यान्वये नागपुरनगरे श्रीपार्श्वनाथचैत्यालये अयं श्रीनेमिजिन देवेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठितः ।  
( विवरण क्र० २१७, २३० )

२३४ शके १७७१ पार्थिवनामसंवत्सरे ज्येष्ठ सुदी ११ तिलक श्री-  
मूलसंघे सेनगणे पुष्करगच्छे गुणमद्देवात् तत्पट्टे ध्रुतवीरदेवात्  
तत्पट्टे भ० माणिकसेनदेवात् त० नेमसेनउपदेशात् बधनोरा  
ज्ञाति माणिकसेटी भार्या सोनाई तस्य पुत्र धायसेटी भार्या  
गुणाई तस्य पुत्र आयसेटी भार्या रत्नाई लखमणसेटी भार्या  
धरवाई रंगसेटी भार्या माकाई इदं प्रतिष्ठा केकी द्वितीय साखा  
म० गुणमद्देवा तत्पट्टे म० लक्ष्मीसेनश्री प्रतिष्ठितं श्री आबाजी  
लखमजी रंगो ( विवरण क्र० २२६ )

२३५ संमत १६१३ शके १७७८ मिती फाग सुदी २ मूलसंघ  
सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण कुंदकुंदान्वय अनंतनाथस्वामी  
नागपूरं प्रतिष्ठितं ( विवरण क्र० १८३ )

२३६ संमत १९११ शके १७८० माघ सुदी ३ म० स० ब० कुं०  
प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० १६८ )

२३७ मा यं धा म न (?) संवत् १९११ । ( विवरण क्र० ४१६ )

२३८ संमत १९१६ मि० फाग सुद ११ श्री म० स० ब० कुं०  
हिरालालसा ठाकूर । ( विवरण क्र० ३४, ५३ )

२३९ संमत १६१६ मि० फाग सुद ११ श्री म० स० ब० कुं०  
लुखुसा चोणसाव । ( विवरण क्र० ३२, ३६, ३२८, ३२९ )

२४० संमत १६१६ फागुण सुद ११ समतीवृतं (?) कुंदकुंदान्नाय  
गणहु गंगाराम । ( विवरण क्र० ३७ )

२४१ संवत् १९१६ मि० फागुण सुदी ११ श० श्रीम० स० ब० कुं०  
अयं श्रीअजितनाथस्वामी सुक्तीसाव परवार तेन प्रतिष्ठितं ।  
( विवरण क्र० ४१, २८६, २८८-२९०, २९३, ३०३, ३०८, ३३१ )

२४२ संमत १६१६ मिती माघ सुदी १० श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे  
बलात्कारगणे कुंदकुंदान्नायान्वये अयं श्रीमहावीरस्वामीजी  
महारक श्रीदेवेंद्रकीर्ति स्वामीजी उपदेशात् संजुरामजी तस्य



पुत्र भागचंदजी अजमेरा खंखेरवाल भावकेन प्रतिष्ठितं गुरु-  
वासरं नागपुर शुक्रवारीपेठ श्रीजिनचैत्यालय । ( विवरण क्र०

६५, ६६, ७२, ७५, ७६ )

२४३ संमत १९१६ मिति माघ सुदी १० गुरुवार । ( विवरण क्र०  
६७, ६८, ८२ )

२४४ संमत १९१६ मिति माघ सुदी १० सरूपचंद अजमेरा तेन  
प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ७१ )

२४५ संमत १९१६ माघ सुदी १० मूलसंघे प्रतिष्ठितं ।  
( विवरण क्र० ७८ )

२४६ संमत १९१६ माघ सुदी १० गुरुवार श्रीमू० स० ब० कुं०  
नेमिनाथस्वामीजिन । ( विवरण क्र० ८१, १६९ )

२४७ संमत १९१६ मिति माघ सुदी १० गुरुवासरे श्रीमू० स० ब०  
भट्टारकदेवेंद्रकीर्तिस्वामीजी हस्तेन...प्रतिष्ठितं...नागपुरमध्ये ।  
( विवरण क्र० ८६ )

२४८ संमत १९१६ मि० फा० सुदी ११ शनिवार श्रीमू० स० ब०  
कुंद० अयं श्रीभादिनाथ श्रीदेवेंद्रकीर्ति स्वामीना प्रतिष्ठितं ।  
( विवरण क्र० २८७ )

२४९ संमत १९१६ मिति फागुण सुदी ११ शनिवासरे नागपुरनगरे  
श्रीमहावीरस्वामीचैत्यालये श्रीमूलसंघे स० ब० कुं० अयं  
श्रीपादस्वनाथस्वामीजी श्रीदेवेंद्रकीर्ति स्वामीजी स्वहस्तेन  
प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० २९१ )

२५० संमत १९१६ मिति फागुण सुदी ११ शनिवासरे श्रीमू० स० ब०  
कुं० नागपुरनगरे श्रीजिनचैत्यालये अयं श्रीभादिनाथस्वामी  
मूलनायक म० श्रीदेवेंद्रकीर्तिस्वामी उपदेशात् गकुरदास  
तत्पुत्र मनीलाल परवार वोछल मुर कोछल गोत्र ते प्रतिष्ठितं ।  
( विवरण क्र० ३६६ )

- २५१ संवत् १६१६ मिति माघ १। ( विवरण क्र० ८६, ४२७ )
- २५२ संवत् १६२५ मार्गशिर्ष सुदी ५ गुरु श्रीमू० म० हेमकीर्ति  
तत्पट्टे म०....करा....। ( विवरण क्र० २८० )
- २५३ संवत् १९२५ का माघ सुदी ५ सोमवारे श्रीमूलसंघे बलात्कार-  
गणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये नागौरपट्टे म० हेम-  
कीर्ति उपदेशात् रामटेकमध्ये संघर्षा मनालालेन प्रतिष्ठितं ।  
( विवरण क्र० २८४ )
- २५४ संवत् १९२५ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये  
नागौरपट्टे म० श्रीविद्यामूषणजी तत्पट्टे मट्टारक श्रीहेम-  
कीर्तिजी तदाम्नाय....परवालान्वये कोछलगोत्रे संघर्षा भुरसीदास  
तत्पुत्र मनालालेन प्रतिष्ठा करान्वितं । ( विवरण क्र० ४ )
- २५५ संवत् १९२५ शके १७६० विभवनाम संवत्सरे शुक्लपक्षे तीर्था  
७ बुधवासरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदा-  
चार्याम्नाये इदं प्रतिमा देवेंद्रकीर्ति स्वामीन हस्ते नागपुरमध्ये  
चोखालाल तस्य भार्या वीराबाई ने प्रतिष्ठा करान्वितं ।
- २५६ श्रीजिनो जयति ॥ श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्रेभ्यो नमः । संवत्  
१९२५ का शके १७६० का विभवनामसंवत्सरे सिसरकृतो  
मासात्तमासोत्तममासे मार्गशिर्षमासे शुभे शुक्लपक्षे तीर्था ५  
पंचमी गुरुवासरे उत्तराषाढ नक्षत्रे गजनामयोगे श्रीनागपुरवा-  
स्तव्यमे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे नंदाभ्याये  
कुंदकुंदाचार्यान्वये श्रीनागौरपट्टे मट्टारकधी हरषकार्तिजी  
तत्पट्टे म० श्रीविद्यामूषणजी तराडेण (?)....इक्ष्वाकुवंशे धुरामोरी  
गोत्रे संघर्षा कृपारामजी तत्पुत्र कलुषाजजी भार्या हीराबाई  
तत्पुत्र वृथपाल सावजी छोटेराल....तेन सपरिवारेण संघर्षा  
कलुषाज श्रीप्रतिष्ठां करापितं ॥ श्रीरस्तु ॥ श्रयामस्तु ॥ रक्षित-  
मस्तु ॥ ( विवरण क्र० २८५ )

२५७ श्रीसंमत ११२५ शक १७९० विमवनामसंवत्सरे मिती बैसाख-  
मासे शुक्लपक्षे तीथी ७ बुधवासरे श्रीमूलसंघे बालात्कारगणे  
श्रीसरस्वतीगण्डे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये श्रीचन्द्रप्रभस्वामीन  
प्रतिमाया श्रीमद् देवेन्द्रकीर्तिस्वामीहस्ते श्रीनागपूरमध्ये प्यारे-  
सावजी भार्या पुनाबाई परवार तेने प्रतिष्ठा करारितं ।

( विवरण क्र० २९४ )

२५८ संमत १९२५ बै० शु ॥७ सु० कुं० दे० नागपूरमध्ये गुमान-  
साव तस्य पुत्र खुडामणसा तस्य पुत्र भोजराज परवार तेन  
प्रतिष्ठा करान्वितं । ( विवरण क्र० २९६ )

२५९ संमत १९२५ बैसाख शुद्ध ७ बुध० श्रीमू० स० व० कुं०  
श्रीपाश्वर्नाथस्वामीना देवेन्द्रकीर्तिस्वामीनहस्ते नागपूरमध्ये  
प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ३१२-१४ )

२६० संमत १९२५ बैसाख सुदी ७ प्रतिष्ठितं मनबोध जिन मुंगा-  
बाई । ( विवरण क्र० ३२७ )

२६१ संमत १९२५ मिती अषण सुदी ५ प्रतिष्ठा नागपूरमध्ये आदि-  
नाथजी । ( विवरण क्र० ३३६ )

२६२ संमत १९२५ शक १७९० आदिनाथस्वामी ।

( विवरण क्र० ३४४ )

२६३ संमत ११२५ का मिती माघ सुदी ५ सोमवासरे श्री मूलसंघ  
व० स० कुंदकुंदाचार्यान्वये नागौरपट्टे भ० श्रीविद्याभूषणजी  
तस्पट्टे भ० हेमकीर्तिना तदाम्नायवरती पंडित सवाईरामीपदेशात्  
परवारान्वये कोठल्लगोत्रे संघई तुलसीदास तत्पुत्र सं० लाल  
कुंजलाल बिहारीलालेन प्रतिष्ठा की । ( विवरण क्र० ३५५ )

२६४ संमत ११२५ बैसाख सुदी ७ बुधवारे श्रीमूलसंघे बालात्कारगणे  
सरस्वतीगण्डे कुंदकुंदाचार्यान्वाये महारकश्रीमद्देवेन्द्रकीर्ति  
प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ३७१ )

२६५ संमत १६२५ माघ सुदी ५ सोमे प्रतिष्ठितं ।

( विवरण क्र० ३७३-४ )

२६६ श्रीमूलसंगचे...संमत १६२६ प्रभवनाम संवत्सरे श्रावण व ॥५॥

( विवरण क्र० ४५१ )

२६७ संमत १९२८ प्रभवनामसंवत्सरेॐ माघ शुक्ल द्वादशीतिथौ  
बुधवासरे प्रतिष्ठाचार्य श्रीमत् देवेंद्रकीर्तिमहाराज प्रतिष्ठा करणार  
प्यारेसाव मनासाव । ( विवरण क्र० ३६३ )

२६८ श्रीपारसनाथजी संमत १६२८ । ( विवरण क्र० २६२ )

२६९ संवत् १९२८ प्रजापतिनामसंवत्सरे माघशुक्ले द्वादशीतिथौ बुध-  
वासरे प्रतिष्ठाचार्यश्रीमत् देवेंद्रकीर्ति महाराज प्रतिष्ठा करविणार  
मनालाल सवाईसंघवी । ( विवरण क्र० ४२ )

२७० संवत् १६२८ ( विवरण क्र० ३८ )

२७१ ॐ चंद्रनाथ येन संमत १९३३ । ( विवरण क्र० ७० )

२७२ संमत १६३६ शके १८०४...प्रतिष्ठाचार्य विशालकिर्ती महाराज  
प्रतिष्ठा करविणार सुतीयाबाई परवारीन । ( विवरण क्र० २७९ )

२७३ श्रीपारसनाथजी सं० १९४८ ( विवरण क्र० ३०४ )

२७४ संमत १९५२ वैशाख सुदि १३ सोमवासरे...प्रतिष्ठितं ।

( विवरण क्र० ८४ )

२७५ सं० १९५८ व० सु० १२ पदासा भोजासाव ।

( विवरण क्र० ४०२ )

२७६ संमत १६५८ वैशाख शुद्ध १५ मूलसंघे कुंदकुंदाम्नाये महाराज  
देवेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ३७६ )

२७७ मा० शी० ७ श्री० २१० व० स्व० बा० झी० अ० प्र० ना०  
सं० १९६१ । ( विवरण क्र० ४१८ )

\* यह संवत्सर नाम गलत प्रतीत होता है ।

२७८ संमत १९६१ मिती ज्येष्ठ शु ॥ १० श्रीवीरसेन स्वामी उपदेशात्  
चांगासाव गंगासावजी चवरे बाहानी प्रतिष्ठा करविली ।

( विवरण क्र० १४५ )

२७९ नागपुर शेतवाल मन्दिर प० रवि० संमत १९६१ मार्गशिर्ष व ॥  
सप्तम्यां पण्डितवर्य रामचंद्र ब्रह्मचारिणां पंच शेतवाल अनुराया  
प्रतिष्ठितं इदं प्रतिमा । ( विवरण क्र० १०७ )

२८० संमत १९६६.....कुं०म्नाय मित्रनीनग्र प्रतिष्ठितं ।

( विवरण क्र० ३२५ )

२८१ वीरसंमत २४३६ मि० मा० शु ॥ ५ सु० बा० ग० प्रतिष्ठितं ।

( विवरण क्र० ४३७ )

२८२ संमत १९६८ ज्येष्ठ सुद ८ शुक्रवासरें मुलसंधे बलात्कारगणे  
सरस्वतीगच्छे कारंजापुरे पट्टाधिकारी म० देवेंद्रकीर्तिस्वामी उप-  
देशात् शिखरजीकी पादुका खंडेलवालजातिय पाटणीगोत्र  
हजारीलाल गेंदालाल येन प्रतिष्ठा करापितं नागपूरनगरे ।

( विवरण क्र० १६७, २३३ )

२८३ संमत १९७६ पण्डित रामभाऊना प्रतिष्ठितं कन्हैयालालजी  
गरीबे यांचे आईचे नन्दिचर व्रतोद्यापनार्थ ।

( विवरण क्र० २२२ )

२८४ स्वस्ति श्री २४५८ श्रीवीरसंवत्सरे १९८८ विक्रम माघमासे  
शुक्लपक्षे दशम्यां तिथी बुधवासरें श्रीमूलसंधे बलात्कारगणे सर-  
स्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्याम्नाये फणिंद्रपुरनिवासी परवारजातिय  
खेलामूर गोइल्लगोत्रोत्पन्न परमानंदीप्रजात्मज परवारभूषण  
फत्तेचंददिपचंदाभ्यां छपारानगरे प्रतिष्ठितं ।

( विवरण क्र० ३२०-२३ )

२८५ श्रीमहावीरनिर्वाणसंमत २४६० विक्रम संमत १९९० शके  
१८५५ फालगुण शुद्ध १२ सोमवार श्रीमूलसंव सरस्वतीगच्छ

बलात्कारगण श्रीकुंदकुंदाचार्यव्यांतीक वासक गोत्रांतीक  
परवारजाति नागपूरनिवासी शेट कनईकाल नेमिचंदजी बांनी  
दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र गजपंथ येथील श्री ब्र० जीवराज गौतम-  
चंद सोलापूर याचे प्रतिष्ठामध्ये श्रीमहावीर तीर्थंकराचे चिन्ह  
प्रतिष्ठित केले असे ॥ ( विवरण क्र० ६२ )

२८६ श्रीमद्देवाधिदेव १०८ भगवान शांतिनाथ तीर्थंकर जिनबिंब  
प्राणप्रतिष्ठा स्वस्ति श्री १०८ भ० विशालकीर्तिस्वामीमहाराज  
संस्थान तत्कालातूर गादी नागपूर पट्टाचार्य सदुपदेशात् नाग-  
पूरस्थ दि० जैन सैतवाल समाज वारसंवत् २४६१ मितो मार्ग-  
शिर्ष कृष्ण १२ श्याम् कृतेति शम् । ( विवरण क्र० १०४-५ )

२८७ श्रीमद्देवाधिदेव १०८ भगवान आदिनाथ तीर्थंकर जिनबिंब प्राण-  
प्रतिष्ठा स्वस्ति श्री १०८ भ० विशालकीर्तिस्वामीमहाराज  
संस्थान तत्कालातूर गादी नागपूर पट्टाचार्य सदुपदेशात् नाग-  
पूरस्थ दिगम्बर जैन सैतवाल समाज व श्री० राजाराम दुर्धी-  
साव काटोलकरेण प्रतिमा आणिता प्रतिष्ठाचार्य श्री० पंडितवर्य  
रामभाऊ महामहोपाध्याय पंडित श्री० अखिल सैतवाल जैन  
राजगुरुपीठ संस्थान तत्कालातूर गादी नागपूर वीरसंवत् २४६१  
मितो मार्गशिर्ष कृष्ण १२ श्याम् कृतेति शम् ।

( विवरण क्र० १०६ )

२८८ स्वस्ति श्री १०८ श्रीमहारकविशालकीर्ति उपदेशात् सं० २४६१  
मार्गशिर्ष कृष्ण १२ श्याम् बुध्नौ प्रतिष्ठितं ।

( विवरण क्र० ३८६-७, ३८३-४, ४१५-७ )

[ अनिश्चित समयके लेख ]

२८९ संवत् १५४ - संघ र नी गो पुत्रा न र नी ( ? )

( विवरण क्र० ४१० )

२९० सं० १५...सुद १३ सकला पुत्र मनसुख भार्या महना ।

( विवरण क्र० ४२२ )

२९१ संवत् १५ - ६ वर्षे वैसाख सुदि ३ मंगलदिने मटारकजिन-  
चंद्राभ्नाये गोलापूर्व संघे इलाम... । ( विवरण क्र० १६३ )

२९२ संमत १-६१ वर्षे वैसाख सुदी...को...जीवराज... ।

( विवरण क्र० ७४ )

२९३ संके १-७६ शुभकृत नाम संवत्सरे कार्तिक शुद्ध प्रतिपदा १  
बुधवार सावरगावग्राम श्रीभादिनाथचैत्यालये श्रीमहिचंद्र  
मटारकउपदेशात् तस्य श्रावक तिम्राजी पलसापुरे तस्य भार्या  
बच्चाई व गंगाई तस्य पुत्र येकुजि कोनेरवा तस्य यंत्रं ।

( विवरण क्र० २७६-२७७ )

२९४ ...७८ वैसाख सुदी ३...पुत्र मोती भार्या...म... ।

( विवरण क्र० ३९७ )

[ अज्ञात समयके लेख ]

२९५ संवत्...वैसाख मासे शुद्ध ३ भौमवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे  
सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्याभ्नाये तेन प्रतिज्ञानुसारेण प्रतिष्ठितं  
नागपूरमध्ये... । ( विवरण क्र० ५४ )

२९६ भीकाजी । ( विवरण क्र० ११६ )

२९७ ...मूलसंघ बलात्कारगण पितृह्यागोत्रे रामासा भार्या नेमाई पुत्र  
रतनसा भार्या पदमाई द्वितीय पुत्र हिरासा भार्या पुंजाई तृतीय  
पुत्र तवनासा चतुर्थ पुत्र पदाजी...श्रीचंद्रप्रभ प्रतिष्ठा...  
संवत्... । ( विवरण क्र० १३१ )

२९८ श्रीकाष्टासंघ नंदितटगच्छ भ० श्रीरामसेनान्वये भ० श्रीलक्ष्मी-  
सेनजी प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० १३६ )

२९९ श्रीवासुपूज्य जिनवर । ( विवरण क्र० १८२ )

- ३०० ....महाराजाधिराज....देवेंद्रकीर्ति....बलात्कारगण सरस्वती  
[ गच्छ ]....। ( विवरण क्र० १९३ )
- ३०१ भ० हेमकीर्ति उपदेशात्....स० प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० २०७ )
- ३०२ हेमराज तस्य पुत्र हंसराज भार्या तमाबाई प्रतिष्ठा माघ सुदी....।  
( विवरण क्र० २८१ )
- ३०३ ....सातनाथ....। ( विवरण क्र० ३५३ )
- ३०४ श्री आदिसर । ( विवरण क्र० ३५८ )
- ३०५ श्रीमू० स० भ० श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् रामसेन ।  
( विवरण क्र० ३७९ )
- ३०६ श्रीमू० भ० जि० का प सेठ प्र (?) ( विवरण क्र० ३८१ )
- ३०७ श्रीमूलसंघे म० श्रीभुवनकीर्ति....। ( विवरण क्र० ३९०-४१३ )
- ३०८ श्रीमूलसंग । ( विवरण क्र० ३९१, ४०३, ४१६, ४८६ )
- ३०९ श्रीमू० स० ब० । ( विवरण क्र० ४०० )
- ३१० श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् कपरसेठ । ( विवरण क्र० ४०४ )
- ३११ लखमनसा रुपा । ( विवरण क्र० ४०७ )
- ३१२ ब्र० पं० नेमीचंद्रजी । ( विवरण क्र० ४२० )
- ३१३ सेनगण म० श्रीलक्ष्मीसेन....च्यास्त्रिमति सेवक देवीचे चंद्रा-  
इत्ये....। ( विवरण क्र० १६४ )
- ३१४ मू० व० स० धर्मचंद्र हेमसेठ नित्यं....ता ।  
( विवरण क्र० ४४२ )
- ३१५ मूलसंघे भ० सुरेंद्रकीर्ति....प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ४५५ )
- ३१६ ... मू० म० जि० पार वा गट (?) ( विवरण क्र० ४६४ )
- ३१७ श्रीआदिनाथ सा० श्रीवंत । ( विवरण क्र० ४६६ )
- ३१८ मू० संघ तानसेठ बमनौया । ( विवरण क्र० ४७२ )
- ३१९ श्रीमूलसंघ ब्रह्म. मल्लिदास सा....भार्या सखाई ।  
( विवरण क्र० ४८८ )



- ३२० श्रीमूलसंघ संकराजी पुजारी ना । ( विवरण क्र० १२५-६ )  
 ३२१ रुखवसा ठवली । ( विवरण क्र० १२७ )  
 ३२२ बावाजी वडलकार । ( विवरण क्र० ४६४ )  
 ३२३ मू० भ० जि० गदसेठ स्वहित । ( विवरण क्र० ४६५ )  
 ३२४ श्रीमूलसंघे भ० श्रीमल्लिभूषण सा० लखा मार्या अजी सुता  
 सोनाई । ( विवरण क्र० १६१ )

## मन्दिरों व मूर्तियोंका विवरण

[ १ ] अजितनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, केलीबाग, नागपुर ।

१ अजितनाथ ( सफेद पाषाण १ $\frac{१}{२}$  फुट ) लेख क्र० १८

२ पार्श्वनाथ ( सफेद पाषाण १ फु० २ इ० ) लेख क्र० १८

३ " " " " लेख क्र० १८

४ पार्श्वनाथ ( धातु १ इ० ) लेख क्र० २५४

५ चौबीसी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ९२

६ पार्श्वनाथ ( धातु ४ $\frac{१}{२}$  इ० ) लेख क्र० १६६

७ धर्मनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० १०१

८ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ११८

लेखरहित प्रतिमाएँ - शान्तिनाथ ( धातु ७ इ० ), चौबीसी

( काला पाषाण १ $\frac{१}{२}$  फुट ), पार्श्वनाथ ( धातु ३ $\frac{१}{२}$  इ० ),

चन्द्रप्रभ ( काला पाषाण ९ इ० ) पार्श्वनाथ ( काला-

पाषाण १ इ० )

पार्श्वनाथ ( काला पाषाण ८ इ० ) यक्षिणी ( कृष्ण पाषाण

१० इ० ) ।

[ २ ] दिगम्बर जैन मन्दिर, मस्कासाथ, नागपुर

१ आदिनाथ ( सफेद पाषाण २ $\frac{१}{२}$  फु० ) लेख क्र० १८

१० पद्मप्रभ ( सफेद पाषाण १ फु० ) लेख क्र० १८

११ आदिनाथ ( सफेद पाषाण १० इ० ) लेख क्र० १८

१२ पार्श्वनाथ ( सफेद पाषाण १ फु० ) लेख क्र० १८

१३ अजितनाथ ( सफेद पाषाण १० इ० ) लेख क्र० १८

- १४ चन्द्रप्रभ ( सफेद पाषाण ३० इंच ) लेख क्र० १८
- १५ आदिनाथ ( सफेद पाषाण १० इंच ) लेख क्र० १८
- १६ सुपार्श्वनाथ ( " " ) लेख क्र० १८
- १७ पार्श्वनाथ ( सफेद पाषाण १ फु० ) लेख क्र० १८
- १८ वासुपूज्य ( सफेद पाषाण ११ इंच ) लेख क्र० १८
- १९ पार्श्वनाथ ( काला पाषाण १ फु० २ इंच ) लेख क्र० १८
- २० पार्श्वनाथ ( सफेद पाषाण १ फु० ) लेख क्र० १८
- २१ चन्द्रप्रभ ( सफेद पाषाण १० इंच ) लेख क्र० १८
- २२ अजितनाथ ( " " ) लेख क्र० १८
- २३ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० २ इंच ) लेख क्र० १८
- २४ आदिनाथ ( सफेद पा० ७ इंच ) लेख क्र० १८
- २५ नेमिनाथ ( सफेद पा० ८ इंच ) लेख क्र० १८
- २६ सुपार्श्वनाथ ( सफेद पा० १० इंच ) लेख क्र० १८
- २७ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ३ इंच ) लेख क्र० १८
- २८ पार्श्वनाथ ( काला पा० ११ इंच ) लेख क्र० २०५
- २९ पार्श्वनाथ ( काला पा० १० इंच ) लेख क्र० १४८
- ३० पार्श्वनाथ ( धातु १ फु० ) लेख क्र० १४०
- ३१ पार्श्वनाथ ( धातु १४ इंच ) लेख क्र० १४८
- ३२ पार्श्वनाथ ( धातु ९ इंच ) लेख क्र० १९१
- ३३ पद्मप्रभ ( धातु ११ इंच ) लेख क्र० १९२
- ३४ चौबीसी ( धातु ७ इंच ) लेख क्र० २३८
- ३५ चौबीसी ( धातु ७ इंच ) लेख क्र० २३९
- ३६ चौबीसी ( धातु ७ इंच ) लेख क्र० २३९
- ३७ पार्श्वनाथ ( धातु ६ इंच ) लेख क्र० २४०
- ३८ आदिनाथ ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० २७०
- ३९ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० ११ इंच ) लेख क्र० २२५

- ४० मुनिसुवत ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० ७  
 ४१ अजितनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ४२ धर्मनाथ ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० २६६  
 ४३ चौबीसी ( धातु १० इ० ) लेख क्र० १६२  
 ४४ यक्षिणी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १९०  
 ४५ यक्षिणी ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० १९०। लेखरहित प्रतिमाएँ—  
 पार्श्वनाथ ( धातु १ से ४ इ० की दस प्रतिमाएँ )

[ ३ ] दिगम्बर जैन मन्दिर, किराणा बाजार, नागपुर

- ४६ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८  
 ४७ पार्श्वनाथ ( काला पा० १ फु० ) लेख क्र० १८  
 ४८ सुपार्श्वनाथ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १८  
 ४९ महावीर ( काला पा० ४½ फु० ) लेख क्र० २१४  
 ५० चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १ फु० ३ इ० ) लेख क्र० २१४  
 ५१ मुनिसुवत ( सफेद पा० १ फुट ) लेख क्र० १५२  
 ५२ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फुट ) लेख क्र० २००  
 ५३ चौबीसी ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २३८  
 ५४ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १½ फुट ) लेख क्र० २९५  
 ५५ पार्श्वनाथ ( धातु १० इ० ) लेख क्र० २०६  
 ५६ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० २ फु० २ प्रतिमाएँ ) लेख १५२  
 ५७ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १४७  
 ५८ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १३६  
 ५९ सुपार्श्व ( पीला पा० ७ इ० ) लेख क्र० १५३  
 ६० चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० २२६  
 ६१ पार्श्वनाथ ( पीला पा० १ फु० ) लेख क्र० २२६  
 ६२ महावीर ( धातु १ फु० ३ इ० ) लेख क्र० २८५

६३ चन्द्रप्रभ ( काला पा० १ फु० ) लेख क्र० १३६

६४ नेमिनाथ ( काला पा० १ फु० ) लेख क्र० १३६

लेखरहित प्रतिमाएँ — पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १½ फु० ),  
पार्श्वनाथ ( धातु २ से ३ इ० ४ प्रतिमाएँ ), चन्द्रप्रभ ( काला  
पा० ११ इ० २ प्रतिमाएँ ), अज्ञातचिह्न मूर्ति ( स्फटिक,  
१½ इ० ), यक्षिणी ( धातु ४ इ० )

[ ४ ] दिगम्बर जैन मन्दिर, जुनी शुक्रवारी पेठ, नागपुर

६५ महावीर ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० २४२

६६ आदिनाथ ( सफेद पा० १ फु० २ इ० ) लेख क्र० १२६

६७ सिद्ध ( धातु ५½ इ० ) लेख क्र० २४३

६८ नन्दीश्वर ( धातु ६½ इ० ) लेख क्र० २४३

६९ पंचमेरु ( धातु १½ फु० ) लेख क्र० २४२ ( दो प्रतिमाएँ )

७० चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० ६ इ० ) लेख क्र० २७१

७१ चौबीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० २४४

७२ चौबीसी ( धातु १ फु० ) लेख क्र० २४२

७३ महावीर ( सफेद पा० ६ इ० ) लेख क्र० १३२

७४ आदिनाथ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० २६२

७५ शांतिनाथ ( धातु ७½ इ० ) लेख क्र० २४२

७६ आदिनाथ ( धातु १ फुट २ इ० ) लेख क्र० २४२

७७ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० २१६

७८ चन्द्रप्रभ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २४५

७९ चौबीसी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० १८१

८० पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० १०

८१ नेमिनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २४६

८२ आदिनाथ ( काला पा० ७ इ० ) लेख क्र० २४३

- ८३ पार्श्वनाथ ( लाल पा० ७ इ० ) ( लेख क्र० २७४ )  
 ८४ पार्श्वनाथ ( धातु ३३ इ० ) लेख क्र० २७४  
 ८५ चन्द्रप्रभ ( धातु २३ इ० ) लेख क्र० २०८  
 ८६ वासुपूज्य ( काला पा० ७ इ० ) लेख क्र० २५१  
 ८७ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८  
 ८८ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १३६  
 ८९ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १ फु० १ इ० ) लेख क्र० २४७  
 ९० वक्षिणी ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० १९७

लेखरहित प्रतिमाएँ - पार्श्वनाथ ( काला पा० १ फु० ), आदि-  
 नाथ ( काला पा० ६ इ० ), आदिनाथ ( काला पा० ३३ इ० ),  
 सिद्ध ( धातु ५३ इ०, दो मूर्तियाँ ), वक्षिणी ( धातु ४ इ०  
 दो मूर्तियाँ )

[ ५ ] दिगम्बर जैन सैतवाल मन्दिर, इतवारी बाजार, नागपुर

- ९१ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ६ इ० ) लेख क्र० १८  
 ९२ आदिनाथ ( सफेद पा० १ फु० ६ इ० ) लेख क्र० १८  
 ९३ आदिनाथ ( सफेद पा० १ फु० ३ इ० ) लेख क्र० १८  
 ९४ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 ९५ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 ९६ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८  
 ९७ पार्श्वनाथ ( काला पा० १० इ० ) लेख क्र० १८  
 ९८ चन्द्रप्रभ ( काला पा० ८ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 ९९ सुपार्श्वनाथ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८  
 १०० अजितनाथ ( लाल पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८  
 १०१ मुनिसुव्रत ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८  
 १०२ सुपार्श्वनाथ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १८

- १०३ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० २०६  
 १०४ शांतिनाथ ( धातु ११ इ० ) लेख क्र० २८६  
 १०५ बाहुबली ( धातु १० इ० ) लेख क्र० २८६  
 १०६ पार्श्वनाथ ( काला पा० ८ इ० ) लेख क्र० २०७  
 १०७ पार्श्वनाथ ( धातु ११ इ० ) लेख क्र० २७६  
 १०८ नन्दीश्वर ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ७१  
 १०९ आदिनाथ ( धातु ११ इ० ) लेख क्र० २८७  
 ११० नेमिनाथ ( काला पा० १ फु० ) लेख क्र० १९५  
 १११ पार्श्वनाथ ( काला पा० १० इ० ) लेख क्र० ७६  
 ११२ चौबीसी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २१८  
 ११३ शांतिनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० १२  
 ११४ शांतिनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ४  
 ११५ पार्श्वनाथ ( धातु ४½ इ० ) लेख क्र० ३  
 ११६ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २९६  
 ११७ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २३  
 ११८ पार्श्वनाथ ( धातु ४½ इ० ) लेख क्र० ८३  
 ११९ पार्श्वनाथ ( ३½ इ० धातु ) लेख क्र० १५०  
 १२० यक्षिणी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ७५  
 १२१ यक्षिणी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २६  
 १२२ यक्षिणी ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० १०३  
 १२३ यक्षिणी ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० ३७  
 १२४ रत्नत्रय यंत्र ( धातु ९ इ० ) लेख क्र० ५१  
 १२५ सम्यग्दर्शन यंत्र ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० ३२०  
 १२६ दशलक्षण यंत्र ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० ३२०  
 १२७ सम्यक्चारित्र्य यंत्र ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० ३२०  
 १२८ बोधप्रकरण यंत्र ( धातु १२ इ० ) लेख क्र० १८३

१२६ अज्ञातवर्णन यंत्र ( धातु ७ इंच ) लेख क्र० ११६

लेखरहित प्रतिमाएँ — चन्द्रप्रभ (काला पा० ६ इंच दो मूर्तियाँ),  
चरणपादुका ( धातु ३ इंच, दो पादुका ), अजितनाथ ( काला  
पा० ४ इंच ), चौबीसी ( धातु ५ इंच दो मूर्तियाँ ) पार्श्व-  
नाथ ( धातु-छोटी छोटी ८ मूर्तियाँ ) चरणपादुका ( धातु ३  
इंच, दो पादुका ),

[ ६ ] दिगम्बर जैन सेनगण मन्दिर, लाडपुरा इतवारी, नागपुर

१३० पार्श्वनाथ ( धातु १० इंच ) लेख क्र० ५२

१३१ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १० इंच ) लेख क्र० २६७

१३२ शीतलनाथ ( सफेद पा० १० इंच ) लेख क्र० १८५

१३३ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८२

१३४ शांतिनाथ ( सफेद पा० ११ इंच ) लेख क्र० ७७

१३५ बाहुबली ( धातु ११ इंच ) लेख क्र० ८१ ( दो मूर्तियाँ )

१३६ बाहुबली ( धातु १० इंच ) लेख क्र० २६८

१३७ अस्पष्ट चिह्न मूर्ति ( धातु ९ इंच ) लेख क्र० २१

१३८ पार्श्वनाथ ( धातु ३ १/२ इंच ) लेख क्र० १६०

१३९ चौबीसी ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० ३२

१४० पार्श्वनाथ ( धातु २ इंच ) लेख क्र० १

१४१ पार्श्वनाथ ( काला पा० ९ इंच ) लेख क्र० ८८

१४२ सुपार्श्वनाथ ( काला पा० १० इंच ) लेख क्र० ८९

१४३ पार्श्वनाथ ( काला पा० १ फु० ) लेख क्र० ६६

१४४ पार्श्वनाथ ( धातु १ इंच ) लेख क्र० ७२

१४५ आदिनाथ ( धातु १० इंच ) लेख क्र० २७८

१४६ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १० इंच ) लेख क्र० १८

१४७ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ६ इंच ) लेख क्र० १८



- १४८ अरनाथ ( सफेद पा० १० इंच ) लेख क्र० १८  
 १४९ पद्मप्रभ ( सफेद पा० १० इंच ) लेख क्र० १९ ( दो मूर्तियाँ )  
 १५० मुनिसुव्रत ( सफेद पा० ११ इंच ) लेख क्र० १८  
 १५१ अजितनाथ ( सफेद पा० ११ इंच ) लेख क्र० १८  
 १५२ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ११ इंच ) लेख क्र० १८  
 १५३ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १, फु० २, इंच ) लेख क्र० १८  
 ( दो मूर्तियाँ )

- १५४ अरनाथ ( सफेद पा० ८ इंच ) लेख क्र० १८  
 १५५ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० ६ इंच ) लेख क्र० १८  
 १५६ आदिनाथ ( ४ इंच धातु ) लेख क्र० १८  
 १५७ चौबीसी ( धातु ६ इंच ) लेख क्र० ९  
 १५८ धर्मनाथ ( धातु ६ इंच ) लेख क्र० ६३  
 १५९ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इंच ) लेख १०८  
 १६० वासुपूज्य ( धातु ५ इंच ) लेख क्र० १३  
 १६१ आदिनाथ ( धातु ४ इंच ) लेख क्र० ३२४  
 १६२ चिह्नरहित मूर्ति ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० १०६  
 १६३ पार्श्वनाथ ( धातु ६ इंच ) लेख क्र० २६१  
 १६४ श्रेयांसनाथ ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० ३१३  
 १६५ सुमतिनाथ ( धातु ७ इंच ) लेख क्र० २०  
 १६६ आदिनाथ ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० २  
 १६७ पंचपरमेष्ठी ( धातु ५ इंच ) लेख क्र० ८  
 १६८ रत्नत्रय मूर्ति ( धातु ६ इंच ) लेख क्र० २२  
 १६९ चौबीसी ( धातु ११ इंच ) लेख क्र० १३५  
 १७० सरस्वती ( धातु ५ इंच ) लेख क्र० १९८  
 १७१ यक्षिणी ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० १६७  
 १७२ रत्नत्रय यंत्र ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० १२२

- १७३ रत्नत्रय यंत्र ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० १८४  
 १७४ दशलक्षण यंत्र ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० १२२  
 १७५ रत्नत्रय यंत्र ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० १२३  
 १७६ रत्नत्रय यंत्र ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० १३०

लेखरहित प्रतिमाएँ — चौबीसी ( काला पा० १ फुट ), सिद्ध  
 ( धातु ६ इंच, दो मूर्तियाँ ), नन्दीश्वर ( धातु ५ इंच ),  
 पार्श्वनाथ ( काला पा० ३ $\frac{३}{४}$  फु० चौबीसी के मध्यस्थित ),  
 पद्मावती ( सफेद पा० २ फु० ), पद्मावती ( धातु ९ इंच ),  
 पद्मावती ( धातु ६ इंच ), पद्मावती ( धातु १० इंच ),

[ ७ ] पार्श्वप्रभु दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर, इतवारी, नागपुर

- १७७ पार्श्वनाथ ( धातु १ $\frac{३}{४}$  फु० ) लेख क्र० १५७  
 १७८ शान्तिनाथ ( धातु १ फु० २ इंच ) लेख क्र० २२१  
 १७९ आदिनाथ ( धातु १ फु० २ इंच ) लेख क्र० २२१  
 १८० नन्दीश्वर ( धातु ५ इंच ) लेख क्र० १०२  
 १८१ पंचमेरु ( धातु ११ इंच ) लेख क्र० २२० ( चार मूर्तियाँ )  
 १८२ वासुपूज्य ( धातु ७ इंच ) लेख क्र० २६६  
 १८३ अनन्तनाथ ( धातु ९ इंच ) लेख क्र० २३५  
 १८४ पार्श्वनाथ ( धातु ४ $\frac{३}{४}$  इंच ) लेख क्र० ८७  
 १८५ चौबीसी ( धातु ३ $\frac{३}{४}$  इंच ) लेख क्र० २३१  
 १८६ चौबीसी ( धातु ८ इंच ) लेख क्र० १४४  
 १८७ चौबीसी ( धातु ९ इंच ) लेख क्र० १२०  
 १८८ रत्नत्रय मूर्ति ( धातु ६ इंच ) लेख क्र० ११  
 १८९ महावीर ( धातु १० इंच ) लेख क्र० २११  
 १९० चौबीसी ( धातु ६ इंच ) लेख क्र० ५६  
 १९१ क्षेत्रपाल ( धातु ६ इंच ) लेख क्र० २०४

- १९२ सरस्वती ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १३६ ( दो मूर्तियाँ )  
 १९३ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० २ इ० ) लेख क्र० ३००  
 १९४ यक्षिणी ( धातु ४½ इ० ) लेख क्र० १३७  
 १९५ पंचमेरु ( धातु २ फुट ९ इ० ) लेख क्र० २३२  
 १९६ पार्श्वनाथ ( धातु १½ फु० ) लेख क्र० २३० ( दो मूर्तियाँ )  
 १९७ आदिनाथ ( धातु १० इ० ) लेख क्र० २८२  
 १९८ बाहुबली ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० २३६ ( दो मूर्तियाँ )  
 १९९ आदिनाथ ( धातु ७½ इ० ) लेख क्र० २४६  
 २०० पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ३४  
 २०१ पार्श्वनाथ ( धातु ३½ इ० ) लेख क्र० ७०  
 २०२ पार्श्वनाथ ( धातु ३½ इ० ) लेख क्र० ६३  
 २०३ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १६१  
 २०४ चौबीसी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० १३६  
 २०५ चन्द्रप्रभ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २८  
 २०६ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १७८  
 २०७ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ३०१  
 २०८ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० ९९  
 २०९ पंचमेरु ( धातु २ फु० ३ इ० ) लेख क्र० १५४ ( दो मूर्तियाँ )  
 २१० चौबीसी ( धातु १० इ० ) लेख क्र० १४३  
 २११ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ७८  
 २१२ पार्श्वनाथ ( धातु ४½ इ० ) लेख क्र० १५८  
 २१३ चन्द्रप्रभ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ६१  
 २१४ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ३ इ० ) लेख क्र० २१५  
 २१५ नन्दीश्वर ( धातु १ फु० ) लेख क्र० ६२  
 २१६ चौबीसी ( धातु ३½ इ० ) लेख क्र० १३७  
 २१७ नेमिनाथ ( काला पा० १ फु० ३ इ० ) लेख क्र० २३३

- २१८ आदिनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १३०  
 २१९ पद्मप्रभ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १३०  
 २२० चौंसठ ऋद्धि ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ११२  
 २२१ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १०४  
 २२२ चौबीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १०३  
 २२३ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ६३  
 २२४ मुनिसुव्रत ( काला पा० १ फु० ३ इ० ) लेख क्र० २३७  
 २२५ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ३७  
 २२६ चौबीसी ( धातु १० इ० ) लेख क्र० २३४  
 २२७ शांतिनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० १७७  
 २२८ श्रेयांस ( काला पा० ७ इ० ) लेख क्र० १०५  
 २२९ चिन्ह रहित मूर्ति ( काला पा० १० इ० ) लेख क्र० ३८  
 २३० आदिनाथ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० २३३  
 २३१ मुनिसुव्रत ( सफेद पा० ३ फु० ३ इ० ) लेख क्र० ५  
 २३२ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ३ फु० ३ इ० ) लेख क्र० ५  
 २३३ शिखरजी पादुका ( सफेद पा० १ इ० फु० ) लेख क्र० २८२  
 २३४ पद्मावती ( धातु ११ इ० ) लेख क्र० २२९  
 २३५ यक्षिणी ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० ७९  
 २३६ यक्षिणी ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० १६८  
 २३७ पद्मावती ( धातु ११ इ० ) लेख क्र० २१०  
 २३८ आदिनाथ ( सफेद पा० १ फु० २ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २३९ आदिनाथ ( सफेद पा० ९ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २४० शीतलनाथ ( सफेद पा० ९ इ० ) लेख क्र० १८  
 २४१ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २४२ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ३ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )

- २४३ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २४४ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २४५ पद्मप्रभ ( सफेद पा० १ इ० ) लेख क्र० १८  
 २४६ मुनिसुव्रत ( साँवला पा० ८ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २४७ चन्द्रप्रभ ( साँवला पा० १ इ० ) लेख क्र० १८  
 २४८ आदिनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २४९ सुपार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८  
 २५० सुपार्श्वनाथ ( सफेद पा० ६ इ० ) लेख क्र० १८  
 २५१ सुमतिनाथ ( सफेद पा० ७ इ० ) लेख क्र० १८  
 २५२ भरनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २५३ नेमिनाथ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २५४ सुपार्श्वनाथ ( सफेद पा० ९ इ० ) लेख क्र० १८  
 २५५ अजितनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८  
 २५६ श्रेयासनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८  
 २५७ मुनिसुव्रत ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २५८ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १९ फु० ४ इ० ) लेख क्र० १८  
 २५९ अजितनाथ ( लाल पा० १० इ० ) लेख क्र० १८  
 २६० चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० ७ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २६१ नेमिनाथ ( लाल पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८  
 २६२ पार्श्वनाथ ( लाल पा० १० इ० ) लेख क्र० १८  
 २६३ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २६४ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० ५ इ० ) लेख क्र० १८  
 २६५ सम्यक्चारित्र्यंत्र ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० ६८  
 २६६ दशलक्षण यंत्र ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ४६  
 २६७ सम्यक्चारित्र्य यंत्र ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० १२१  
 २६८ सम्यग्दर्शन यंत्र ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ३६

- २६६ सम्यक्चारित्र्यं ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ४९  
 २७० जलयंत्र ( धातु ८ इ० ) ले० क्र० २१६  
 २७१ सम्यग्दर्शनयंत्र ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ५४  
 २७२ सम्यग्दर्शनयंत्र ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० ११४  
 २७३ दशलक्षणयंत्र ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० ६५  
 २७४ कलिकुण्डयंत्र ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० ७३  
 २७५ सिद्धयंत्र ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० ८६  
 २७६ षोडशकारणयंत्र ( धातु १४ इ० ) लेख क्र० २६३  
 २७७ दशलक्षणयंत्र ( धातु ११ इ० ) लेख क्र० २९३  
 लेखरहित मूर्तियाँ - सप्तऋषि ( धातु ५ से ८ इ० ),  
 पार्श्वनाथ ( काला पा० १ फु० २ इ० ), आदिनाथ ( पीला  
 बालुकापाषाण २ फु० २ इ० )

### [ ८ ] दिगम्बर जैन परवार मन्दिर, इतवारी, नागपुर

- २७८ शीतलनाथ ( धातु ४ $\frac{१}{२}$  इ० ) लेख क्र० ५७  
 २७९ नेमिनाथ ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० २७२  
 २८० पुष्पदन्त ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २५२  
 २८१ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० ३०२  
 २८२ चन्द्रप्रभ ( पीला पा० ६ इ० ) लेख क्र० २२८  
 २८३ पार्श्वनाथ ( काला पा० ६ इ० ) लेख क्र० २२२  
 २८४ चौबीसी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २५३  
 २८५ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ५ $\frac{१}{२}$  फु० ) लेख क्र० २५६  
 २८६ पार्श्वनाथ ( धातु ६ $\frac{१}{२}$  इ० ) लेख क्र० २४१ ( दो मूर्तियाँ )  
 २८७ आदिनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २४८  
 २८८ वासुपूज्य ( धातु ६ $\frac{१}{२}$  इ० ) लेख क्र० २४१  
 २८९ महावीर ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २४१

- २९० अजितनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २४१  
 २६१ पार्श्वनाथ ( धातु १३ फु० ) लेख क्र० २४६  
 २९६ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० २६८  
 २६३ चौबीसी ( धातु ६३ इ० ) लेख क्र० २४१  
 २६४ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० ५ फु० ) लेख क्र० २५७  
 २९५ नेमिनाथ ( सफेद पा० २ फु० २ इ० ) लेख क्र० २५७  
 २६६ नेमिनाथ ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० २५८  
 २६७ पार्श्वनाथ ( धातु ८३ इ० ) लेख क्र० २५७  
 २९८ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० ६५  
 २६९ अजितनाथ ( काला पा० ४ इ० ) लेख क्र० १६५  
 ३०० चिह्नरहितमूर्ति ( काला पा० ५ इ० ) लेख क्र० २२२  
 ३०१ आदिनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २५७  
 ३०२ चिह्नरहित मूर्ति ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० ६  
 ३०३ चौबीसी ( धातु ४३ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३०४ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० २७३  
 ३०५ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १४५  
 ३०६ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ४१  
 ३०७ अजितनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० ४०  
 ३०८ अनन्तनाथ ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३०९ सुपार्श्वनाथ ( काला पा० ११ इ० ) लेख क्र० २६  
 ३१० चिह्नरहितमूर्ति ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० ८२  
 ३११ मुनिसुव्रत ( काला पा० ११ इ० ) लेख क्र० ४७  
 ३१२ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ९ इ० ) लेख क्र० २५६  
 ३१३ मुनिसुव्रत ( सफेद पा० ७ इ० ) लेख क्र० २५६  
 ३१४ आदिनाथ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० २५९  
 ३१५ पार्श्वनाथ ( धातु ३३ इ० ) लेख क्र० १७६

- ३१६ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १६४  
 ३१७ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० २ कु० ३ इ० ) लेख क्र० २५७  
 ३१८ पार्श्वनाथ ( काला पा० २ कु० ४ इ० ) लेख क्र० २५७  
 ३१९ नन्दीश्वर ( धातु ५ इ० ) उर्वू लिपिमें लेख०  
 ३२० आदिनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २८४  
 ३२१ शीतलनाथ ( लाल पा० १ कु० ४ इ० ) लेख क्र० २८४  
 ३२२ महावीर ( धातु १ कु० ५ इ० ) लेख क्र० २८४  
 ३२३ पुष्पदंत ( धातु १ कु० ९ इ० ) लेख क्र० २८४  
 ३२४ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १७६  
 ३२५ महावीर ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २८०  
 ३२६ चौबीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १२७  
 ३२७ चौबीसी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २६०  
 ३२८ यक्षिणी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २३९  
 ३२९ यक्षिणी ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २३९  
 ३३० यक्षिणी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १४०  
 ३३१ यक्षिणी ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० २४१ ( दो मूर्तियाँ )  
 ३३२ चन्द्रप्रभ ( धातु १ कु० २ इ० ) लेख क्र० २१७  
 ३३३ चौबीसी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३३४ रत्नत्रयमूर्ति ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३३५ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १५५  
 ३३६ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ८४  
 ३३७ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३३८ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १४५  
 ३३९ आदिनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २६१  
 ३४० पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० २५७  
 ३४१ चन्द्रप्रभ ( काला पा० ८ इ० ) लेख क्र० २५७



- ३४२ पार्श्वनाथ ( काला पा० १ फु० ) लेख क्र० २२३ ( तीन मूर्तियाँ )  
 ३४३ नेमिनाथ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० १७  
 ३४४ आदिनाथ ( काला पा० ७ इ० ) लेख क्र० २६२  
 ३४५ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ११ फु० ) लेख क्र० २५७  
 ३४६ अरनाथ ( काला पा० ३ इ० ) लेख क्र० १६३  
 ३४७ चन्द्रप्रभ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३४८ आदिनाथ ( धातु ३३ इ० ) लेख क्र० २३९  
 ३४९ गीतलनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३५० आदिनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३५१ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३५२ चौबीसी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३५३ पार्श्वनाथ ( धातु २३ इ० ) लेख क्र० ३०३  
 ३५४ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३५५ चन्द्रप्रभ ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० २६३  
 ३५६ अजितनाथ ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० २६३  
 ३५७ आदिनाथ ( धातु ७३ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३५८ आदिनाथ ( धातु ४३ इ० ) लेख क्र० ३०४  
 ३५९ नन्दीश्वर ( धातु ३३ इ० ) लेख क्र० १११  
 ३६० सुपार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३६१ पार्श्वनाथ ( धातु २३ इ० ) लेख क्र० १२८  
 ३६२ महावीर ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३६३ आदिनाथ ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० २६७  
 ३६४ आदिनाथ ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३६५ महावीर ( धातु ७३ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३६६ आदिनाथ ( धातु १ फु० ) लेख क्र० २५०  
 ३६७ पुष्पदन्त ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८

३६८ अरनाथ ( सफेद पा० ७ इ० ) लेख क्र० १८

३६९ चन्द्रनाथ ( सफेद पा० ८ इ० ) लेख क्र० १८

लेखरहित मूर्तियाँ - वासुपूज्य ( काला पा० ५ इ० ),  
पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० २ इ० ), पार्श्वनाथ ( काला  
पा० १० इ० ), शान्तिनाथ ( धातु ४ इ० ), १५ मूर्तियाँ  
लेख तथा चिह्नके बिना छोटी-छोटी हैं ।

### [९] दिगम्बर जैन मन्दिर, सदर बाजार, नागपुर

३७० पार्श्वनाथ ( काला पा० १२ फु० ) लेख क्र० १६४

३७१ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० २६४

३७२ पार्श्वनाथ ( काला पा० १ फु० ) लेख क्र० १९४

३७३ शान्तिनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २६५

३७४ यक्षिणी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २६५

३७५ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ११५

३७६ चौबीसी ( धातु ११ इ० ) लेख क्र० २७६

३७७ दशलक्षण यंत्र ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० १०७

लेखरहित - पद्मप्रभ ( सफेद पा० १ फु० )

### [१०] गृहचैत्यालय-श्री० सुन्दरसा हिरासा जोहरापुरकर, इतवारी, नागपुर

३७८ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० १३३

३७९ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ३०५

३८० रत्नत्रय ( धातु ३२ इ० ) लेख क्र० १५

३८१ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३०६

३८२ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ७४

३८३ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० २४

३८४ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १२९  
लेखरहित - छोटी-छोटी धातुकी १० प्रतिमाएँ

[११] गृहचैत्यालय-श्री० अंबादास गुलाबसा गहाणकरी, इतवारी

३८५ चौबीसी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २३१

३८६ आदिनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० २८८

३८७ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० २८८

३८८ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १००

[१२] गृहचैत्यालय-श्री० माणिकसा चिन्तामणसा दर्यापुरकर,  
इतवारी

३८९ चौबीसी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ८०

३९० पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ३०७

३९१ यक्षिणी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ४५

३९२ नवग्रह यंत्र ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २०१

[१३] गृहचैत्यालय-श्री० रतनसा गणपतसा देवलसी, इतवारी

३९३ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ४ इ० ) लेख क्र० २८८

३९४ आदिनाथ ( काला पा० ४ इ० ) लेख क्र० २८८

३९५ चन्द्रप्रभ ( काला पा० ४ इ० ) लेख क्र० २२४

३९६ चौबीसी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २१२

३९७ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० २६४

३९८ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३०८

लेखरहित-पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ), आदिनाथ ( धातु  
२ इ० )

[१४] गृहचैत्यालय-श्री० कन्ह्यालाल सुन्दरसा गरिबे, इतवारी

३३९ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ३४

यक्षिणी ( धातु ६ इ० )-लेखरहित

[१५] गृहचैत्यालय-श्री० सवाईसंगई मोतीलाल गुलाबसा, इतवारी

४०० पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३०९

४०१ यक्षिणी ( धातु ५ ) लेख क्र० १४५

लेखरहित-पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ), चन्द्रप्रभ ( स्फटिक, ३ इ० )

[१६] गृहचैत्यालय-श्री० हिरासा पदासा खोरणे, इतवारी

४०२ आदिनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २७५

४०३ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ३०८

४०४ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३१०

४०५ यक्षिणी ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० १५१

[१७] गृहचैत्यालय-श्री० दादा गुलाबसा मिश्रीकोटकर, इतवारी

४०६ चौबीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ९४

[१८] गृहचैत्यालय-श्री० हिरासा खेमासा जोहरापुरकर, इतवारी

४०७ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३११

[१९] गृहचैत्यालय-श्री जयकुमार प्रभुसा किल्लेदार, इतवारी

४०८ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ४२

[२०] गृहचैत्यालय-श्री तिल्लेकचंद येसूसा खेडकर, इतवारी

४०९ चौबीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ९४

४१० पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० २८३

४११ आदिनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १३४

४१२ चरणपादुका ( धातु २ इंच ) लेख क्र० १४२

लेखरहित - शान्तिनाथ ( धातु २ इंच ), पार्श्वनाथ  
( धातु २ इंच )

[२१] गृहचैत्यालय-श्री विष्णुकुमार हिरासा जोगी, इतवारी

४१३ यक्षिणी ( धातु ६ इंच ) लेख क्र० १४

४१४ यक्षिणी ( धातु ५ १/२ इंच ) लेख क्र० ५५

लेखरहित - (चौबीसी धातु ३ इंच), महावीर (धातु २ ३/४ इंच)

[२२] गृहचैत्यालय-श्री नागोराव गुजावा श्रावणे, इतवारी

४१५ सिद्ध ( धातु ४ इंच ) लेख क्र० २८८

४१६ आदिनाथ ( चौदी ३ इंच ) लेख क्र० २८८ ( दो मूर्तियाँ )

४१७ आदिनाथ ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० २८८ ( दो मूर्तियाँ )

४१८ पार्श्वनाथ ( सोना २ इंच ) लेख क्र० २७७

४१९ चौबीसी ( धातु ५ इंच ) लेख क्र० २३७

४२० चरणपादुका ( चौदी १ इंच ) लेख क्र० ३१२

लेखरहित - पार्श्वनाथ ( धातु ३ इंच ) ( दो मूर्तियाँ ),  
बाहुबली ( धातु ३ इंच ), सरस्वती ( धातु २ इंच )

[२३] गृहचैत्यालय-श्री गुलावसा व्यंकुसा मिश्रीकोटकर, इतवारी

४२१ चन्द्रप्रभ ( धातु ३ ३/४ इंच ) लेख क्र० ४४

४२२ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इंच ) लेख क्र० २९०

४२३ यक्षिणी ( धातु ३ ३/४ इंच ) लेख क्र० १७५

लेखरहित-पार्श्वनाथ ( लाल पा० ३ इंच )

[२४] गृहचैत्यालय-श्री० हिरासा जिनदास चवडे, इतवारी

४२४ सिद्ध ( धातु ४ इंच ) लेख क्र० २८८

४२५ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० १८६

[२५] गृहचैत्यालय-श्री०नेमासा पासुसा जोहरापुरकर, इतवारी

४२६ पंचपरमेष्ठी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ३०

४२७ पार्श्वनाथ ( धातु २३ इ० ) लेख क्र० २५१

४२८ कलिकुण्ड यन्त्र ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० २०२

४२९ षोडशकारण यन्त्र ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० २०३

[२६] गृहचैत्यालय-श्री०माणिकचंद बालाजो आगरकर, इतवारी

४३० पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ४८

४३१ पार्श्वनाथ ( धातु २३ इ० ) लेख क्र० १६२

४३२ यक्षिणी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० १३१

[२७] गृहचैत्यालय-श्री०सुंदरसा गंगासा खेडकर, इतवारी

४३३ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १६

४३४ यक्षिणी ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० ३८

लेखरहित-पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) चौबीसी ( धातु ५ इ० )

[२८] गृहचैत्यालय-श्री०लक्ष्मणराव सेवाराम पिंजरकार, इतवारी

४३५ आदिनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० १४६

४३६ पार्श्वनाथ ( धातु २३ इ० ) लेख क्र० ४३

लेखरहित-यक्षिणी ( धातु ६ इ० )

[२९] गृहचैत्यालय-श्री०पुरणलाल बापुसा खेडकर, इतवारी

४३७ चौबीसी ( धातु ३३ इ० ) लेख क्र० २८१

४३८ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ६०

[३०] गृहचैत्यालय-श्री०महादेवराव तानबा पिंजरकर, इतवारी

४३९ चौबीसी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ५८

४४० पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १८०

४४१ पार्श्वनाथ ( धातु २ ३/४ इंच ) लेख क्र० ६४

४४२ पार्श्वनाथ ( धातु २ ३/४ इंच ) लेख क्र० ३१४

४४३ यक्षिणी ( धातु ६ इंच ) लेख क्र० १५६

[ ३१ ] गृहचैत्यालय-श्री०वर्धासा सकुसा महाजन, इतवारी

४४४ चौबीसी ( धातु ३ ३/४ इंच ) लेख क्र० १५६

४४५ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० ६६

४४६ षोडशकारण यंत्र ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० १२२

४४७ यक्षिणी ( धातु ५ इंच ) लेख क्र० ६०

४४८ यक्षिणी ( धातु ५ इंच ) लेख क्र० ६१

४४९ यक्षिणी ( धातु ५ इंच ) लेख क्र० १२५

४५० यक्षिणी ( धातु ५ इंच ) लेख क्र० ४६

लेखरहित-पार्श्वनाथ ( धातु ५ इंच )

[ ३२ ] गृहचैत्यालय-श्री०नय्युसा पैकाजी चवरे, इतवारी

४५१ सुपार्श्वनाथ ( सफेद पा० ५ इंच ) लेख क्र० २६६

४५२ चन्द्रप्रभ ( धातु २ इंच ) लेख क्र० ११६

४५३ पार्श्वनाथ ( धातु २ ३/४ इंच ) लेख क्र० २७

४५४ पार्श्वनाथ ( धातु २ ३/४ इंच ) लेख क्र० २१३ ( दो मूर्तियाँ )

४५५ पार्श्वनाथ ( धातु २ इंच ) लेख क्र० ३१५

४५६ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० ३०८ ( दो मूर्तियाँ )

४५७ यक्षिणी ( धातु ५ इंच ) लेख क्र० १०६

लेखरहित - पार्श्वनाथ ( धातु २ इंच )

[ ३३ ] गृहचैत्यालय-श्री रुखवसा पिंजरकर, इतवारी

४५८ पार्श्वनाथ ( धातु २ ३/४ इंच ) लेख क्र० २१३

[ ३४ ] गृहचैत्यालय-श्री लक्ष्मणराव देवमनसा बोवडे, इतवारी

४५९ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० १६६

- ४६० पार्श्वनाथ ( धातु २½ इ० ) लेख क्र० ३५  
 ४६१ पार्श्वनाथ ( धातु २½ इ० ) लेख क्र० ३६  
 ४६२ चौबीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ११७  
 ४६३ चिह्नरहित मूर्ति ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १४६  
 ४६४ पार्श्वनाथ ( काला पा० ३ इ० ) लेख क्र० ३१६

[३५] गृहचैत्यालय-श्री बापुजी विश्रामजी गिल्लरकर, मस्कासाथ

- ४६५ आदिनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १७०  
 ४६६ आदिनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३१७  
 ४६७ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० १६७  
 ४६८ यक्षिणी ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० १८६  
 लेखरहित - पार्श्वनाथ ( धातु १½ इ० )

[३६] गृहचैत्यालय-श्री गोविंदराव शिवराम नाकाडे, इतवारी

- ४६९ चौबीसी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १३६  
 ४७० चिह्नरहित मूर्ति ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १६३  
 ४७१ पार्श्वनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २०३  
 ४७२ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३१८  
 ४७३ यक्षिणी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १७१  
 ४७४ यक्षिणी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ११८  
 ४७५ दशलक्षणयंत्र ( धातु ४½ इ० ) लेख क्र० ५०

[३७] गृहचैत्यालय-श्रीमती तानाबाई बापुजी गांधी, इतवारी

- ४७६ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ८५  
 ४७७ पार्श्वनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० १७२  
 ४७८ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १२४  
 ४७९ चन्द्रप्रभ ( धातु १½ इ० ) लेख क्र० १७३  
 लेखरहित - पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) यक्षिणी ( धातु ६ इ० )



- [३८] गृहचैत्यालय-श्री राजाबापू लच्छाबापू ठवली, इतवारी  
 ४८० चौबीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १७४  
 ४८१ यक्षिणी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १९६;  
 ४८२ यक्षिणी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २५
- [३९] गृहचैत्यालय-श्री जयकृष्णपंत सावलकर, इतवारी  
 ४८३ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ५३  
 ४८४ यक्षिणी ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० ३१
- [४०] गृहचैत्यालय-श्री कृष्णाजी भागवतकर, इतवारी  
 ४८५ सिद्ध ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० २८८  
 ४८६ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३०८  
 लेखरहित - यक्षिणी ( धातु ३ इ० )
- [४१] गृहचैत्यालय-श्री राजाराम डुब्बोसाव काटोलकर, इतवारी  
 ४८७ चौबीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० २४३  
 ४८८ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३१९  
 लेखरहित - चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० ४ इ० )
- [४२] गृहचैत्यालय-श्री हिरासा नत्थुसा मुठमारे, इतवारी  
 ४८९ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ५६  
 ४९० आदिनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३३  
 ४९१ चौबीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ११३  
 ४९२ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १८७  
 ४९३ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३०७  
 लेखरहित - यक्षिणी ( धातु ३ इ० )
- [४३] गृहचैत्यालय-श्री रुखबसा विनायकसा, इतवारी  
 ४९४ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ३२२

- [४४] गृहचैत्यालय-श्री पांडुरंग बापूजी उदापूरकर, इतवारी  
 ४९२ पार्श्वनाथ ( धातु २ १/२ इं० ) लेख क्र० ३२३
- [४५] गृहचैत्यालय-श्री गणपतराव पलसापुरे; इतवारी  
 ४९६ पार्श्वनाथ ( धातु २ इं० ) लेख क्र० १८७
- [४६] गृहचैत्यालय-श्री सुरेन्द्र गंगासा जोहरापुरकर, इतवारी  
 ४९७ चन्द्रप्रभ ( धातु २ इं० ) लेख क्र० १९०  
 लेखरहित - पार्श्वनाथ ( धातु २ इं० )

## नामसूची

उल्लिखित अंक पृष्ठों के हैं ।

अकबर ३२८	अजितकीर्ति ३६०, ४०७, ४१३-
अकलंक ५८, ६०, १७५, २००,	४१५
२१४, २१६, ३३५, ३३८,	अजितचंद्र २२१, २२३
३३९, ३७७, ३७९	अजितसेन ९२, ९३, १७५, २१४,
अकालवर्ष ३१, ४४, ५३	२१६, २२७, ३६१
अकोटा ३८५	अज्ज ३०४-५
अकम्म ३१४	अज्जर्णदि २१, २२, ४२
अकलकोट ११३	अज्जरट्टय ५६
अकसालकामोज १६६	अणहिल्लपुर २२१-२
अक्कादेवी ८४, ८५	अण्णन् २५५
अक्कूर ३७४	अण्णमट्टय १६४
अगरवाल ३९५, ४०२	अण्णिगरे २५, ८५, १०४, १०७,
अगस्तियण्य ३४७	१०९, १११, २५९
अगिख ४	अत्तिमब्बे १४९
अगोकेमोगे ४०	अत्तियम्बे ७३
अगलदेव ९१, ९३, १०२	अथनी २३२
अगलसेट्टि ३७४	अदरगुंवि २६६
अगोति २७	अनत्तवन् २२
अक्युतदेव ३१७	अनमकोड १४१, १४३, १४५
अजण ३५५	अनुपमकवि ६१-२
अजयमेरु १९१	अनंतकसेट्टि २९७

अनंतकीर्ति २५०, २९६

अनंतवीर्य १७५, १७७, ३५५-६,  
३६०, ३६५, ३७९

अपराजित ३५-६

अप्पण २३८-९, २४४

अप्पाण्डार २७९, ३५७, ३७६

अबडनगर ३९५, ४१०

अबेयमाचर २९२

अबबकदेवी ३२७

अभयचंद्र ९६, ३५९, ३६२

अभयनेदि १०५, ११०-१, २५८,  
२७१

अभिर्नंदन २२

अमरकीर्ति २७८, २८८, ३११

अमरमुदलगुरु ४२

अमरसिंह ३४०

अमरापुरम् २६०, ३८०

अमिदसागर ३९१

अमृतपाल १६०

अमृतब्बे ५५-६

अमृतैय २६०

अमोघवर्ष ३३-४, ३६-७

अम्ब ३०४-५

अम्बले ३६९

अम्बावती ३४३

अम्बाराय ३०३-५

अम्मरस ३८

अम्मराज ६४, ६५, ६८, ६९

अम्मिनमावि २२९

अटववत्ति १३४

अट्यप्प २६

अट्यवोले १६४

अटवतोककुलु २६३

अटवसामि ७१

अरताल १४८

अरत्तुलान् देवन् ८३

अरमंडमेगलु ४०

अरयन् उडैयान् ९९

अरसप्पोडेय ३४७, ३५६

अरसरबसदि ११२

अरसम्य १२०-१

अरसीबीडि ८३, १२१, १७३,  
१८३

अरिकुठार ३१४

अरिकेसरी १३९

अरिन्दमंगलम् ५६

अरिमंडल २२

अरिवन् कोयिल् ३९

अरिविगोज ६२

अरिष्टनेमि १६, ५२

अरुगर् देवर् ९९

अरुमोलिदेव १६०

अरुमोलिदेवपुरम् १६७, १७६	आकलपे २५९
अरुवन्दै आण्डाल् २८९	आकाशिका १६
अरुवाहि १	आकियमंगिसेट्टि ३०८
अरुहणंदि ११२, २५८	आगुप्तायिक १५-१६
अरुंगलान्वय १२८, २१४, २१६, २३३, २६७, २६९	आचणीड १८६
अरेयम्बे ८८, ८९	आचण १८६
अरैयंगाविदि २२	आचन चामुण्डर ६९
अर्णोराज १८९	आचलदेवी १७१
अर्हणंदि ७३, १३४, २५२-३, २७१	आच्चन् २२
अलगरमलै ४२	आट्कोण्डान् १६७
अलनावर ११४	आणदेव २२८
अलवर ३८७-८	आण्डारमडम् ५६
अलियमरम ३८	आदगे १३८
अवनिपशेखर ३६	आदवनी ३१२, ३२६
अवनिमहेन्द्र १८, २०	आदित्यवर्मा ३७५
अविनीत १२, १७, २०	आदिनाथ १२०-१
अष्टोपवासी २२, ७७, ९३, २५८, २७१	आदिराज ३०३
असवङ्गरसि १२२	आदिसेट्टि २९७, ३१६
अमुण्डि ४४	आदिसेन ३५२
अहिच्छत्र १८९	आनंदमंगलम् २५१
अंक १५३	आनेसेजन्नसदि ११३
अंकतायपुर ७०-१, १३४	आपिनहल्लि ३४५
अंकुलगे १३८, १४०	आघू ३८५
अंकेगुडु ८९	आमरण ३८६
	आम्बट १९१, १९६
	आयतवर्मा ५६, ७७

आयुचगावुण्ड ७६	हन्दरपिट्टम्म ४०
आयुचप्पय्य ११२	हन्दोर १९७, २६१, २८४
आयुचिमय्य ९८	हन्द्रकीर्ति ९४, १५८
आय्वोज ८८-९	हन्द्रणंद १५-१६
आरम्बनंदि १५८	हन्द्रनंदि ७३, १२६, २३४
आरान्दमंगलम् ७५	हन्द्रराज ३१, ३४, ३६, ५५, ६१
आरियदेव २२७	६३
आरुलगपेरुमान् ४१	हन्द्रभूपाल ३३५
आर्यणदि १५, १६, ४३	हन्द्रभूषण ४०६, ४०९-११
आर्यपंडित ११२	हम्मडि १७६
आर्यसंघ ५७	हम्मडि अरसप्पोदेय ३४७
आलपदेवी ३८०	हम्मडिदेवराय ३१५-६
आलप्पिरन्दान् मोगन् १६६, २७४	हम्मडिबुक्क २८८
आलाक १३२	हम्मडिभैरवरस ३१५
आलुप १५४	इरुग २८८
आशिका १९०	इरुगोण २६०
आशिरियन् ३९	इरुवुन्दूर ३०४-५
आहड १९६	इरुगोल ३८०
आहवमल्ल ७३, ७८, ८१, ८२	इलपेरुमानडिगल् ७५
आंतरी ३८७	इलंगीतमन् ३९
इक्केरि ३३९	इंगणेश्वर-इंगलेश्वर २१७, २२४,
इट्टगे १०४, १०९	२३२, २६६-७, २७२, २७४,
इडैयारन् १६७	३७४, ३७६, ३८०, ३८३-४
इडैयालम् ३७६	इंगरस ३०८
इदम्पट्टव १२	इंगोली ३९५, ४१९
इन्दप १२०-१	ईचवाडि ५८

ईश्वर १२०-१	उरिगपसिद्धि २०
उत्काल ७४	ऊन १२७
उत्कलसेट्टि २७३	ऊरुष्काडु १७८
उगरगोल १४९	ऋषिदाम ६
उगुर २६३	ऋषिशृंगी १४९
उग्रवाहि १४४-५	एकम्बे २७३
उच्छंगि २०४, २६६	एकसंधि १७५
उज्जंत ३२५	एकसंघि १८५
उज्ज्वेनीपल्लीवाल ३९५, ४०८-९, ४११	एकसम्बुगे १८६
उज्ज्वल १९२, १९७	एक्कोटिजिनालय २१९-२०
उडिपि ३०५	एचलदेवी २०२-३, २१२
उडैयार १२७	एचिकम्बे १२०-१
उदय २३८, २४४	एचिसेट्टि २०५
उदयगिरेन्द्र ४०३	एटा २६१
उदयचन्द्र १०७, ११०, २५८, २७१	एडेनाडु २८
उदयपुर ७५, ३८६-८८	एणक्कुनल्लनायकर् २५५
उदयादित्य १२७, १५४, २०२, २११, २१७, २२४	एरक ७६
उद्दरि २९३	एरण्दि १६७
उद्योतकेसरी ५६-७	एरेकप ११७, १२०
उमरावती ३९५, ४१६	एरेग ११६-७, १२०, १२४
उम्पटाय्चण बसदि ३७२	एरेय ४३-४४
उम्बरबाणि २४६, २४९	एरेयप ५८, ६०
उम्मतूर ७०, ३५८	एरेयमय्य ११६, १२०
	एरेयंग ५८, ६०, १२२-५, १५४, १७६, २०२, २११, २७०
	एलबाचार्य २८, ३०

एलाचार्य ४४, ५४, २८८	१५०, १५२, २७५, ३८४
ऐम्बुखवपेरुम्पल्लि ३६६	कण्णम्मन् १८-२०
ऐवर अंबण ३५३	कण्णसेट्टि २१४
ऐबरमल्ल ३७	कण्णूर १३४
ऐहोले १४५	कत्तम १८५
ओत्तरिक ५, ६	कदम्ब १३, १५, २६, ३८, ७१,
ओजण ३५५	८२, ११४, १२३, १२४-५,
ओडेयमसेट्टि ३७९	१३६, १४८, १५७, १७१-२,
ओड्डिपाणि ४०	२०८-९, २५०-१, ३१३,
ओवेयमसेट्टि ३६५	३७८
ओरंकत्वायगर् १९, २०	कदलालयबसदि १४३, १४५
ओगेरु ३८१	कनककीर्ति ३६३
कक्करगोड १०५, ११०	कनकगिरि ३४६
कच्चिनायकर् २७४	कनकचन्द्र १४८, २५८, २७१
कच्चिनायनार् १६६	कनकचिन्नगिरि २७३
कच्चियरायर् २७४	कनकनन्दि २२, ७७, ९५, १०२
कच्छवेगडे २३०-१	कनकरायनगुडु ३६१
कछवाह ३४३	कनकवीर २२, ५६, १६७
कडकोल २६१	कनकशक्ति ९५
कडलेहल्लि २१५-६	कनकसेन ३९, ९२-३, १७५
कडितले २६८	कन्नडिगे १८२
कणबियसेट्टि १०८	कन्नडिबसदि ३०९
कणितमाणिकसेट्टि ८९	कन्नप १२०-१, १६४
कण्डन् पोपट्टन् २२	कन्नर ( कन्धर, कन्हर ) देव ४५,
कण्डन् माघवन् ३९१	१५१, २५६-७, २६३
कण्डूर, कण्डूर गण ११६, १२०,	कन्नसेट्टि ३७३



कल्लुपतिपाडु ३५४	कलचुर्य १७९, १८२, १८६-७,
कमलदेव १२८, २९१	१९८, २०१
कमलभद्र ७०, २९४-५	कलशनगर २२५
कमलध्री १९३, १९७	कलसापुर २०१
कमलसेन २५०, २५४	कलिंगन्ने ६९
कमलापुरम् ७३, ३९१	कलिगावुण्ड २२६
कम्बदहल्लि १५६, १६९	कलिदेव ८१, १०९-१०, १२०-१,
कम्भराज २८-३०	१४९, १८६
कम्भनहल्लि ३५९	कलिमानम् ७८
कम्भरचोडु ३८०	कलियत्तिगंड ६४
कयिलायप्पुलवर् ३३९	कलियम्म २५, ३८९-९०
करगुदरि १७२	कलिविण्णुवर्धन ६४
करडकल १७९	कलिसेट्टि १०८, १७२
करन्दे ९९, १४०, १७८, २८९,	कलिग २
३१३, ३३६, ३३९, ३४७	कलकलेस्वर ८६
करसिदेव २५६	कल्लेदेव ४३-४, ५४
करिकालबोलजिनमंदिर ३५४	कल्याण ८५, ८६, २१४
करिमानो २६	कल्याणकीर्ति ७४, ३८२
करिविडि ७६, ८५	कल्याणवसंत २४
कर्कराज ३१, ३४-६	कल्लप ३५५
कणदिवी १६६	कल्लन्ने ५४
कर्म ३	कल्लरस ३०४-५
कलकत्ता ४०, २३४, ३४०	कल्लहल्लि ३६०
कलक्करि २५४, २५६, २६३, ३७९	कल्लारुप्पल्लि २७
कलचुम्बुरु ६८	कल्लंबिका ११७
कलचुरि १५९, १७८	कल्लेगोल्ल १६३-५

कत्रडेमय्य २०४-५  
 कसपगावुण्ड २४९  
 कंचरस ९१-३  
 कंचलदेवी ३७८  
 कंचिकुब्बे ७६  
 कंति २३४  
 कंदगल २५१  
 काकतीवेत १४२, १४५  
 काकन (काकन्दी) ३४८  
 काकुत्स्थ १३  
 कागिनेल्लि ७७, ३७५  
 काटरस १०६, ११०  
 काटिमय्य ११२  
 काडूरगण २६६  
 काणूर (क्राणूर) गण ५८-६०,  
 १४८, १५५-८, १७३, २२४,  
 २३३-४, २५०-१, २६८,  
 २९६, ३२१, ३२३, ३२६,  
 ३६४, ३७०, ३७५, ३७८-८०  
 काण्वायन ९, १७  
 कादलूर ५४  
 कान्तराजपुर २१७  
 काप ३२१-३, ३२६  
 कामठी ३९५, ४१२  
 कामण्ण २८२, २८६  
 कामवेव ७७

कामनुगल २९७  
 कामराज ३५५-६  
 कामैय ३१४  
 काम्बोदि ३४९  
 कायस्थ १९५  
 कायाम्पट्टि ३६६  
 कारकल ३१९-२०, ३२९, ३७१  
 कारंजा ३९५, ४०५-६, ४०९,  
 ४१२-३, ४१६-७, ४२५  
 कारिजे ३२०  
 कारेयगण १५३  
 कार्तवीर्य १२८, १८५-६, २३५-९  
 २४२-६, २४८-९  
 कालडिय ७८, ८१  
 कालण १८६  
 कालहल्लि ३१९  
 कालिदास १३४, १७८  
 कालिमय्य ९९  
 कालियूर ९९  
 कालिसेट्टि ३७६  
 कावण्ण २६७  
 कावदेवरस २०८-९  
 कावनहल्लि १३३-४  
 कावय्य २५७  
 कावला गोत्र ४०५  
 काशिक ७-९

- काशिवल ७३  
 काष्ठासंघ ३९६, ४००, ४०२-६,  
 ४०९-११, ४१४-६, ४२७  
 कासिमय्य १९८  
 कांचन ९८  
 कांचेलादेवी २१७  
 किन्निगभूषाल ३३५  
 किरुसंपगाडि १५३  
 किमुबल्लि २३०-१  
 किमुबोलल २५  
 कीरप्पाक्कम् ४२  
 कीयरबुर ३१७  
 कीर्ति १५१-२  
 कीर्तिवर्मन् २५  
 कीर्तिसागर ३६१  
 कीलक्कुडि २२, ७२, २२७, ३६५  
 कुक्कुटासन १६७  
 कुच्चंगि २०७, ३२८  
 कुडलूर २६, ५४  
 कुडुगिनवयलु ३२०  
 कुण्टनहोसल्लि १७१  
 कुण्डकुन्दान्वय ११४, १५५-६  
 २३३-४, ३६०, ३६४  
 कुण्डघाट ३०७, ३६५  
 कुण्डमय्य ४०  
 कुण्णत्तूर ३०७  
 कुदेपस्त्री २  
 कुन्तलनाडु ३०४-५  
 कुन्दकुन्दान्वय, कुन्दकुन्दाचायन्वय  
 १२६, २७८, ३१७, ३९७,  
 ४०१-४, ४०७, ४०९-१२,  
 ४१५-२७  
 कुन्दकुन्द २२१-२, २२५  
 कुन्दनव्रालु २८८  
 कुन्दरगे ८५  
 कुन्दाति १३९-४०  
 कुपण ३८  
 कुप्पटूर २२४  
 कुञ्ज विष्णुवर्धन ६३, ६८  
 कुमठ २०८, २७८, ३७८  
 कुमरन् देवन् ४१  
 कुमरम्य १४७  
 कुमारकीर्ति १८६  
 कुमारनन्दि २८-३०  
 कुमारपवंत ५७  
 कुमारबोडु १४६, २२३  
 कुमारसेन १७५, २९४-५  
 कुमिलिगण ४२  
 कुमुदचन्द्र २५८-९, २७१-२, ४०७  
 कुमुदिगण ८२, ३७७  
 कुम्बनूर १४५  
 कुरंजन १३७

कुरट्टिगल १६	कृष्णसेट्टि ३८१
कुरण्डि २२, ६३	केतगावुड १०७, २२७
कुरुगोडु ३१९	केतय्य ३६३
कुरुवडिमिदि ३१८	केतसेट्टि १०८, १८२, २०५
कुलगाण १७	केतोज ८८-९
कुलचन्द्र ५७-८, १५७-८, २५७	केम्पम्मणि ३५१
कुलत्तूर ३९१	केरवसे २९९
कुलशेखर १५४	केरेसन्ते १७९
कुलोत्तुंग १२१, १२७, १४०, १४५-६, १६६, २५१, २७३ ३९१-२	केलगेरे २७०
कुलोत्तुंगशोलकाडवरायन् १६६	केलडिवोरभद्र ३४१
कुसुम ४	केलडिवेकटप्प ३३९
कुसुमजिनालय ३७६	केलियब्बरसि ९५, २०२
कुंकुमदेवी २५	केल्लिपुसूर १८-२०
कुंगियवमिसेट्टि ३६८	केशण्दि २६६
कूण्डि ७९, ८१, १२८, १३७, १५३, १६४, २३५, २४१, २४३, २४६, २४९	केशव १९५, १९७, २६५, ३०२- ५, ३६९
कूष्माण्डीविषय १५	केशवदेवी २८३
कृष्णदेव २७६	केशवय्य १४६
कृष्णदेवराय ३१३-४	केशवरस ७६
कृष्णप्पराज ३४४-५	केशवसूरि ५१-५२
कृष्णराज ३१, ४४, ५३, १०९, १५२, २३६, ३५१	केशवादित्य ८०, १५१
कृष्णवर्मा १७	केशिराज ९१
	केसरिसेट्टि २०७
	केसिसेट्टि २२६
	कैतडुप्पूर १४१
	कोकलिपुर ९४

कोकिवाड ५४	कोस ३१७, ३८२
कोककल १३६	कोप्पण (कोप्पल) ३८, ४५, ७४, १३०, २५०, ३२५-६, ३७१
कोकिकलि ६४	कोमरगोप ३८३
कोगलि २६५, ३६५, ३७९	कोम्मणाय १४९
कोछल गात्र ४२१-३	कोम्मसेट्टि ३८०
कोट्टगेरे १७४	कोरण २९९
कोट्टशिवरम् ३८०	कोरमंग १२, १४, १५
कोट्टिय गण ६	कोरवल्लि २४६, २४९
कोडिहल्लि ७१	कोरिकुन्द ११
कोडुगूर १८, १९	कोलारस ३४०
कोणेरिर्मकोण्डाम् २७, २५५	कोलूर ३८९-९०
कोण्डकुन्दान्वय ५३, ९४, १२५, १३०, १३३-४, १५७-८, १६६, १७०, २०४, २०७, २४६, २४९, २५२-३, २५९, २६६, २७२, २८८, २९५-६ ३६३	कोल्लापुर (कोल्हापुर) १३५, १६२, १६४-६, ३४४-५
कोण्डकुन्देय अन्वय २८, ३०	कोल्बुगे ८५
कोण्डकुन्देय तीर्थ ११४	कोवल ६२
कोण्डय्यसेट्टि ३६१	कोविलंगुलम् १४५
कोण्डैमलै ३३७	कोशिक २६
कोनकोण्डल २०, ७२, ११४, २२६, २९३	कोह नगोरी ३१५
कोनाट्टन् ८३	कोहल्लि ८५
कोन्तकुलि १४८	कोंकण ८२, १३७, ३२७
कोन्तिमहादेविसदि ३०२	कोंगज १३६
	कोंगणित्रर्मा ९, १७, २०, ५४
	कोंगणिवृद्धराज १७, २०
	कोंगण्यधिराज ११, १२
	कोंगरपुलियंगुलम् २१

कोंगरैयर् ६३	गण्डरादित्य ६२, १३७-९, १६२,
कोंगल देश ५३	१६४-६, १८५-६, २३९
कोंगु १५५, २०३, २६७, २८०	गण्डविमुक्त १०५, ११०-१२, १४९
कोंठूर २४	१७०, २५८, २७१
कोरूरगच्छ ७३	गण्डिसेट्टि १०८
क्षेमपुर ३०३, ३१५	गयाकर्ण १५९
क्षेमकीर्ति २२१, २२३	गरग ३७७
क्षोणीपति १११	गंग १२, २०, २६, ४०, ४४,
खटवड गोत्र ४०२	५३-४, ५८-६०, ८९, ९४,
खण्डगिरि २-५, ५६-७	१०२, १०४, १२९, १५१-२
खण्डिल्लवाल १६१, ३००, ३१५	गंगपट्ट १४६-७, १६७
खण्डेलवाल ३१७, ३९६, ४०८,	गंगपेमीडि १०४, १०७, १०९, १३५
४२१, ४२५	गंगरबमिसेट्टि १४८
खप्परट्ट १६४	गंगरसावन्त २५९
खर २	गंगराज १५६
खंडारिया गोत्र ४०५, ४०८, ४१०	गंगराडा ३९५, ३९७
खंभात ३८७	गंगरुल सुन्दरपेरुम्बल्लि १२२
खारवेल २	गंगचुर २३२
खाग गोत्र ४०३	गंगादास ३४१
खोट्टिग ५४	गंगायि २८५
ख्वाजा अजोजबेग ३२८	गंगेवे २२७
गजपंथ ४२६	गंजेनाड १८-२०
गजा ४०१	गावरवाड १०२, १०४, १०७,
गणपण ३२३, ३२५, ३३७	१०९, १११
गणपवरम् १६६	गिरधरदास ३४१
गणिगेमहाव्रति २४	गिरनार २२२, ३२६

गुजरपल्लीवाल ३९५, ३९८  
 गुडुगुडि ३७२  
 गुड्डिगेरे २५  
 गुणकोत्ति ५६, ७६, १०४, १०९,  
 ११०-१, ४००  
 गुणगवित्रयादित्य ६४  
 गुणचन्द्र ५३, ७३, १०५, ११०,  
 १९७, २३४, २५८  
 गुणदबेडंगि ८४-५, १८७  
 गुणनन्दि ५८, ६०  
 गुणनेरिमंगलम् ७५  
 गुणन्दांगि १६  
 गुणपाल १६१  
 गुणभद्र ७२, १९५, १९७, २९४-५  
 ३३०-२, ३३४, ३३७, ४०२,  
 ४२०  
 गुणमति २२  
 गुणवर्मा ६२  
 गुणवीर ३७-८, ६३, २७४  
 गुणसागर ३६१, ३९१  
 गुणसेन २२, १७७, २६४, ३६५,  
 ३६६, ४०२  
 गुप्त १८२  
 गुप्तवायि २८६  
 गुन्दुराज १८९  
 गुम्मतबेव ३०९

गुम्मणसेट्टि ३१२  
 गुम्मिसेट्टि २२६, ३०८  
 गुम्मुंगोल १०४, १०९  
 गुम्मैयसेट्टि ३३७  
 गुणवयनकेरे ३०९, ३१४  
 गुर्जर १९७  
 गुलियपुर २६२  
 गुह्ननन्दि ७-९  
 गूढी २८८,  
 गुवक १८९  
 गुवल १३६  
 गुप्त्रवाल गोत्र ४०८  
 गेरसोप्पे २७९, २८२, २८४,  
 २८६-७, २९७-८, ३०१,  
 ३१५, ३२७, ३३०-४, ३५४-  
 ५, ३६८, ३९२  
 गोमालभिता ९  
 गोकवे २३३-४  
 गोकर्ण ३३५-६, ३९१  
 गोकक १५, ८४-५  
 गोमि १८३-५  
 गोगियबसदि १५८  
 गोविजका ९१-३, १०२  
 गोदृगडि १९८  
 गोणदबेडंगि १२१  
 गोणिबीड ३५९

गोपनन्दि २०४, २०७	मङ्गकुल ५७
गोपरस २६६	ग्राम २२४
गोपाचल ४१२	घटेयङ्कार ७६
गोपेन्द्र १८९	घण्टोडेय ३२०
गोप्यण्ण २७९	घनविनीत १८
गोयिन्दम्म ४०	घनशोकवली ३५४-५
गोरविसेट्टि १०८, १६४	चच्चिग १८९
गोरुर २२६, २२९	चच्चुल १९१, १९६
गोर्म १५१-२	चटवेगन्ति २९२
गोललतक २६१	चट्टजिनालय ११४
गोलसिधारा ३९५, ४०४	चट्टयपदेव ८२
गोलिहल्लि १५३	चट्टरसि ८८-९
गोल्लाचार्य २३४	चण्डब्बे १०७
गोल्लापूर्व १५९, ३९६, ४०३, ४२७,	चण्डिगौडि २६१
गोल्हणदेव १५९	चण्डिग्रण ३९
गोव १८०	चण्डिमेट्टि १०८
गोवर्धन २२७, २५०	चतुर्थजाति १७२
गोवलदेव ११४	चतुर्थमुनोश्वर ३२६
गोवा २८७	चतुर्मुख देव २०४, २०७
गोवालगोत्र ४०३, ४०६, ४०९-१०	चतुर्मुखवसति ४१
गोषाटपुञ्जक ७-९	चनुदव्रोळु ३८१
गोहिलगोत्र ४०३, ४१५, ४२५	चन्तलदेवी १३३-४
गौकय्य २७	चन्दन १८९
गौकल १३६	चन्दलदेवी २३७, २४४, ३१९-२०
गौडसंघ ५३	चन्दब्बे ३८०
	चन्दियब्बे ४५



चन्द्रिसेट्टि १०८  
 चन्द्र १३६, १८९  
 चन्द्रकराचार्याम्नाय १५९  
 चन्द्रकवाट अन्वय ९२-३  
 चन्द्रकीर्ति २०८, ३६७, ३८३,  
 ४०२, ४०३, ४०५  
 चन्द्रगिरि ३१३  
 चन्द्रनन्दि ४०, १०२, २२४  
 चन्द्रनाथ ३५६-७  
 चन्द्रपुर २८२  
 चन्द्रप्रभ ४४, ७२, २१७, ३१५-६  
 चन्द्रभूति ३७८  
 चन्द्रसेन १८-२०, ६७-८  
 चन्द्रांक ३८१  
 चन्द्रिकावाट वंश ९८  
 चन्द्रिकादेवी २३७  
 चन्द्रेन्द्र ३७८  
 चल्लपिल्ले २६१  
 चवुडिसेट्टि १०८  
 चवुण्ड २६३  
 चवरिया ३९९-४००, ४०७,  
 चवरे ४१६, ४१९, ४२५  
 चंगलराय ३९२  
 चंगल्व १२९  
 चाण्डरस १७३  
 चान्दकवटे ९८

चान्द्रायणदेव १८०, २७१  
 चामकब्बे ७०, ३८३  
 चामराज १४७, ३४९  
 चामराजनगर २९६, ३१४  
 चामुण्डराज १८९  
 चारुकीर्ति १२२, २२१, २२३,  
 २९७-८, ३१२, ३२७, ३३३,  
 ३३५, ३४१, ३४३, ३४७,  
 ३६८, ३८१  
 चारुचन्द्रभूषण ४१२  
 चालुक्य २४-५, २७, ५३, ६३,  
 ६६, ६८, ७३-८२, ८४-६,  
 ८९, ९०, ९३-४, ९८-९,  
 १०२-३, ११०, ११२-५,  
 १२०-१, १२६, १३४, १३७,  
 १३९, १४१-५ १४८-५०,  
 १५२-३, १५७-८, १७०-३,  
 १७८, २०८, ३८९-९०  
 चालुक्यभोम ६४, ६७-८  
 चावय्य ३७१  
 चावुण्ड ८२  
 चावुण्डरस १८७  
 चावुण्डराय ८८-९, २७७  
 चाहमान १५९-६०, १६९, १७१,  
 १८९, १९६  
 चिकण्ण ३७

चिकमगलूर १२९, १३१	चैदिकुलमाणिकपेहम्बल्लि १२२
चिककन्नेयनहल्लि २७१-२	चैन्न भैरादेवी ३२७
चिककणम्म ३३३	चैन्नराय ३३०-३
चिककमल्लण १७९-८०	चैन्नवीरप्प ३३०-४
चिककमालिगेनाडु ३२०	चैपल्लि ३२९
चिककराय ३४१	चोकिसेट्टि ३११
चिककवीरप्प ३३०-२, ३३४	चोल ५२, ५६, ६२, ७४-५, ७८,
चिककहनसोगे ४३, १२९, ३३३	८३, ९९, १०५-६, ११०,
चिककहन्दिगोल २०१	१२१, १२७, १४०-१,
चिकिकसेट्टि १०८	१४५-६, १५८, १६६-७,
चिण्ण १२३-५	१७८-९, २०८, २५१, २६०,
चितरल १६	२७३, ३५४, ३९१
चितलद्रुग ३०८-९	चोलपेहम्पल्लि २७
चितोड ३८६	चोलवाणिडपुरम् ६२
चित्तामूर ३२८, ३५२	चोटकुन ३२७, ३४१
चित्तारि ८८-९	चोलुक्य ९८, २२२
चित्रकूट २२१-२	छतरपुर १७४
चित्रकूटगच्छ १७२, ३७८	छत्रसेन ४११
चित्रकूटान्वय १०२, ११२, १७२,	छपारा ४९५, ४२५
२६९	छन्वि ९५
चित्रभंडारदेव ३३९	छोतग १९५
चिप्पगिरि २६६, २९३, ३२६	जकवेहट्टि २९२
चिचलो २३५	जकम्बे २३२, २५०
चूलकम्म ३	जक्कब्बरसि ३०२-३
चैकवा २५७	जक्कय २५८
चेदि ६२	जक्कलदेवी ३०४-५

जक्कलि १३५	जसनन्दि ५७
जक्कियक्क १५५	जाकवे २६६
जक्कियब्बे ४३, २७२	जाकिमब्बे ९८
जक्कसेट्टि २०५	जातियक्क १४६
जगतकीर्ति ४०२	जाबालिपुर १९०
जगतापिगुप्ति ३२९	जालोर ३८६
जगदेकमल्ल ७५-७, ८०-१, ९३, १७०-२	जावूर ३८३
जगमणचारि १३२	जासट १९१, १९६
जटासिहर्नदि ३७१	जाह्नवेयकुल ९, १७
जट्टिगौड ३२९	जिह्ङुलिगे २७७
जतिग १३५-६	जिनकांचि ३४४-५
जननाषपुरम् १२२	जिनगिरिपल्लि २५१
जननाथमंगलम् १६६	जिनगिरिमल्ल २५५
जत्रलपुर ३१०	जिनचन्द्र १९५, १९७, २०४, २०७ २५८, २७५, २८७, ३१०, ३६९, ३९६, ३९८, ४०३, ४२७
जम्बुलण्डगण १५-१६	जिनदत्त २२५
जयकीर्ति ९५, १२९, ३८३	जिनदास ३९७
जयकेशि ११२, १५३, १७२, २५१	जिनदेव १५३, ३७६, ३९७
जयदेव १८९, ३६०	जिनभूषण ३६६
जयन्ताचार्य ६८	जिनवल्लभ ४०-१
जयराज १८९	जिनसेन २९४-५, ४०७-८, ४१२
जयवीरपेल्लिमैयान् ३६६	जिनेन्द्र मंगलम् ३१८
जयसिंह २४, ६३, ७६, ११५, १२०, १५१-२, ३४३, ३९०	जिन्नण १८६
जयसेन ६७, ६९, ३८१	जीमूतबाहनान्वय १३७-८, १६२, ३१
जयगोडशोलमंडलम् १७८	

३८९-९०	तम्मवहल्लि ३८१, ३८४
जीयगौड ३६०	तम्मय्य ३३२-३
जीवराज ३९६, ३९८	तम्मरस ३०४-५
जुगियागोत्र ४१४	तलकाड १४६, १५५, २०१
जेबुलगेरि २५	२१४, २९१
जेमपाय १४६	तलक्कूडि ४१
जेमिसेट्टि ३७५	तलप्रहारि १८३, १८५
जोगीबंडि ५६	तललूर ३६९
जोन्नगिरि ८२	तलवननगर २८-३०
जोयिमय्यरस ११४	तलवलि २१४
ज्ञानभूषण ३९७-८	तवनन्दो २६९, २९१
टोडा रायसिंह ३४३	तवनिधि २९०-१
टोंक १३२, ३००	तंगले ३६०
ठवला गोत्र ४००	तंगलेदेवी ३०३-५
ठवली, शान्तिकुमारजी ३९३	ताडकोड २६३
डम्बल ९४, २६३	ताडपत्री २१७
डिल्लिका १९०	तायूर २६२
तगडूर २६२, २९६	तालराज ६४
तगरपुर १३८, १६२	तिकमदेव २६५
तगरे २६	तिष्क ११७
तजोगांव ३९५, ४०८	तिन्निणीगच्छ १५५-६, २२४, २५०
तट्टिकेरे ५९-६०	३२१, ३२६, ३६४, ३७९
तडागपत्तन १९१, १९६	तिप्पगौड ९६
तण्डपुरम् १६७	तिप्पय २६६
तमिलप्पलवरैयन् २५५	तिप्पिसेट्टि ११४
तम्मण ३७८	तिम्मगौड ३२९

तिम्मप्प ३२०	तुलु (तुलुव) २८०, ३१४, ३२१-
तिरुक्कोल १६७	२, ३२७
तिरुक्काट्टाम्पल्लि १४०	तुलुअडि २६
तिरुक्कामकोट्टपुरम् ९९	तुंगपल्लवरैयन् ३७४
तिरुगोकर्णम् २७	तेणिमलै ३६७
तिरुच्छाणत्तुमलै १६	तेरकणाबि २९५
तिरुच्छोस्तुरै २८९	तेवारम् ६३
तिरुनिडंकोण्डै ४१, ७८, १२७,	तैकविणाडु २७
१६०, १६६, २७३-४, २७९,	तैल ७३, १७१-२
३३७, ३५४, ३७५	तैलप १४८-९, १८५
तिरुपरम्बूर १४०, १७३	तैलमेरे २६१
तिरुपरंकुण्डम् ३७३	तोगरकुंट १४८
तिरुप्परुत्तिकुण्डम् १४०-१, १८५	तोयिमरस ३७२
तिरुप्पान्मलै ५२	तोरेनगल्लु ३७७
तिरुमणजेरि ७८	तोरेंबगे १६४
तिरुमय्यम् ३६६	तोललु ९५-६, १२६-७, ३६२
तिरुमलरस ३१९, ३२२-३, ३२५	तोलहरबलि २९७
तिरुवयिरै ३७-८	तोललग्राम २६
तिरुवेण्णायिल् ३६६	तोंडमंडल ७४, २८०
तिलकरस २६०, ३०१	तोंडूर ७५
तिलिवल्लि ३४८	तोलव ३१५
तिगकूर ८३	त्रिकूटबसदि १४१
तोर्थबसदि १२९	त्रिणयनकुल ६६, ६८
तुंगलिकिलान् ९९	त्रिभुवनकीर्त्ति २६०, ३८०
तुम्बदेवनहल्लि १२२	त्रिभुवनचन्द्र १०६-७, ११०-१२
तुम्बिगि ३८४	त्रिभुवनमल्ल ११४-५, १२०, १२२,

१२६-७, १३३, १४१, १४३,	दासण्ण ३८९
१४५, १४८-५०, १५२-३,	दासजीव १८७
२००, २०८	दादि १६१
त्रिभुवनवीर ३७८	दिनकर ११९, १२१
त्रैकीर्ति २७५	दिनकरजिनालय १६७
त्रैलोक्यमल्ल ८२, ८४-६, ८९,	दिल्ली ३४४-५
९०, ९३-४, ९८-९, १००,	दिवाकर २५०
१०५, ११०, ११५, १२०,	दुग्गमार ३९, ४०
१७३, १७८, ३८९-९०	दुद्धमल्ल १३३-४
दडग १५४	दुद्यक १९१, १९७
दडिगनकेरे १५५-६	दुर्गभट्ट ३६
दडिगसेट्टि ७०	दुर्लभ ( दुर्लभराज ) ४६, ५०,
दण्डब्रह्मा १३७	१८९, १९२, १९७
दण्डिपल्लि ४४	दुर्विनीत १७, २०, ९४
दत्ता ५, ६	दूडम ११९-१२१
दत्तकसूत्रवृत्ति १०	दूसल १८९
दन्तिदुर्ग ३१	देकवे २०५
दमित्र ५, ६	देज्जमहाराज १५-१६
दयापाल २१४, २१६	देमलदेवी १७३
दयाभूषण ४०८	देमायप २३४
दयावसन्त २४	देल्हण १९६-७
दानप्य ३२८	देवकीर्ति ७६, ३२३, ३२६, ३६३,
दानबुलपाडु ५५, ६०, ३६३	३८४
दानिवास ३३१-४	देवगण ३८२
दारिसिट्टि १०८	देवगेरी ३८९
दावणदि १०२, ३८०	देवचन्द्र २२५, २५८, २७१, ३२३,

३२६, ३५४-५, ३८१-२	४१६-२५, ४२८
३८४	देवेन्द्रसेन २९४-५
देवणय्य ११२	देशवल्लभत्रिनालय ४२
देवण्ण २६०, ३१६-७, ३४१, ३४८	देशीय ( देशी, देसि, देसिग ) गण
देवत्तूर ३७४	४३, ५३, ७७, ९३-४, ११४,
देवदास ३२८	१२५-६, १२९, १३३-४,
देवधर १५२, १९७	१४०, १४८, १५६, १५९,
देवनन्दि २७०, ३६१	१६४-५, १६७, १७०, १७३,
देवपाल १६१	१७९, १८२, १९७, २०४,
देवप्प ३०८	२०७, २२५, २३२, २४६,
देवमाम्बे २९४	२४९, २५२-३, २५६, २६०,
देवरदासय्य ७०	२६५-८, २७२, २७४, २७८,
देवरस १४९	२९५, ३१५-६, ३३५, ३३८-
देवराज १९०, ३५१	९, ३४२, ३५४-५, ३५९,
देवराय ३००, ३०५-६, ३१४,	३६०, ३६३, ३७६, ३७९-८३
३९१	देसल १९१, १९६-७
देवस्पर्श १९१, १९७	दोडणसेट्टि ३१२
देवाद्री १९२	दोण ११७-८, १२०-१
देवांगना १११	दोणि १२२
देवियम्बे ७०	दोरसमुद्र २५३, २५६, २७०-१
देविसेट्टि १०८, २०५, २०७, ३१२,	दोहद ५
३१६	द्रमिल संघ २१४
देवीरम्मणि ३४९	द्रविल संघ १७९-८०, २३३, २६७
देवूर ३७६	२६९, २९१
देवेन्द्र ६९, २०४, २०७	द्राविडसंघ १२८
देवेन्द्रकीर्ति ३१४, ४०२, ४११,	द्राविडान्वय २६४

द्रोहघरट्टाचारि १५६

द्वीपितटाक २९४

धन्यवसन्त २४

धरदृष्टि ६

धर्मकीर्ति ४०३-४

धर्मचन्द्र ३१७, ३४०, ४००, ४०४-  
५, ४०७-१०, ४१२-३, ४१६,  
४२८

धर्मपुर ३०३

धर्मपुरी ३८-९

धर्मभूषण २८८, ३११, ३९७,  
३९९-४०१, ४०५-८, ४१०

धर्मबोलल ९४, २६३

धर्मसेन २६९

धवल ४६, ४९, ५२

धारवाड ५३

धारावर्ष ३८, ३०

धुरामोरो गोत्र ४२२

धृति २७

घोरजिनालय ४४, ९५, १८७

ध्रुव ३०, ३२

नकुलरस ८८-९

नगिरि २९७-८, ३०३, ३२७

नदिहरलहल्लि १८७, १९८

नदूलढागिका १६०, १६८-९,  
१७०-१, १९०

नन्दवर ४५

नन्दवाडिगे ८५

नन्दसेठि १

नन्दापुर ८५

नन्दिआम्नाय ४२२

नन्दिगण (संघ) १०४, १०९, १२८  
२१४, २२१-२, २३३, २५८  
२६७, २६९, २९१, ४०२

नन्दिबेरू ९३

नन्दिभट्टारक २५८-९, २९६, ३७५

नन्दिमुनि २३४

नन्दियड संघ ७२

नन्दियडिगल ३६१-२

नन्दीतटगच्छ ३९६, ४०२-३,  
४०५-६, ४०९, ४११, ४१४,  
४१६, ४२७

नन्धियगंग ५९, ६०

नमयर ५३

नम्बिसेट्टि २८२-३

नयकीर्ति १७३, २०७, २१९-२०  
२३१-३, २५६, २५८-९,  
२७१-३

नयसेन ९१-३, ११८, १२१

नरतोंग १६७

नरवर १९१, १९७

नरवाहन ६६-८



नरसप्प ३३२-३	नागकुमार ४३
नरसिगय्य ११४	नागमावुण्ड १९८, २६२
नरसिंह १६९, १७६-७, १७६, १८०, २०३, २११-२, २५६, २५८-६०, २६२, २७०-२, ३१३	नागमोड ३७२
नरसिंहबंग ३०९	नागचन्द्र ९५, १२९, १७२, १८६, २७८
नरसिंहराजपुर २६, ३१२, ३४९	नागण्ण ३००
नरसीगेरे ३९, ४०	नागदेव ७३, १९२, १९७
नरसीमट्ट ३९२	नागनन्दि ३७, २९६
नरेगल ५३	नागपुर २०९, ३९३-५, ४१२, ४१५, ४१८-२३, ४२५-२७
नरेन्द्रकीर्ति ४०४, ४१०	नागप्प ३४९
नरेन्द्रसेन ९२-३, ११८-२१, ३७५	नागभूप ३४३
नल १२९	नागय्या ४४, २०९, ३५०, ३५७, ३६६
नलन्नम्माडु २३	नागरखण्ड ४४, २५०, २७७, २८९
नल्लूर २७३	नागरस ३०१
नविलगुन्द ३८३	नागरहाल १७६-७
नवलूर १२६-७, २२६	नागराज २९४
नविले ८५	नागलदेवी २६६
नंगलि १५५	नागलपुर ३३०-१
नंजेदेवरगुड्ड २१६	नागवर्मा २६, ८८-९
नाकण १४७, २६७	नागवे १८१, २३३-४, २८६, ३७२
नाकिग ९५	नागश्री १९२, १९७
नाकिमय्य ११२	नागसारिका ३५-६
नाकिया ४	
नाकिराज १६६	

नागसिख्यल्ले २५१	नाहर ३८५
नागसेट्टि २८९-९०	नाहटा ३८५
नागसेन ७२, ८४-५	निगमाम्बय २७६
नागहृद १९४	निगुम्बवंश १३९
नागिसेट्टि १७१, २८६	निजिकम्बे २३०-१
नागुलपोलमम्बे ३७	निट्टूर २२५, ३६८
नागुलबसदि ३७	निडुगल ( निडुगल्लु ) २६०, ३८२
नागेयिसेट्टि २६३	नित्वकल्याणदेव १६०
नागोज ३६०	नित्यवर्ष ४४-५, ५५
नागोर ४२२-३	नित्वगोहाली ७-९
नाडलाई १५९, १६७, १६९, १७०	निधियण्ण ३९
नाडलि १००-१	निम्बदेव १६३, १६५-६, २३९
नाडोल ३८६	निरुपम ३०
नाथशर्मा ७-९	निर्घडेवृक्षसंघ ३४९
नाथसेन ६७-८	निलिम्पपुर २९८
नादीवे ३५७	नीडूर ३९१
नानिग १९६	नीरलगि १७१
नामिसेट्टि २७३	नीलगिरि ३४६-७
नायिम १३५, १३९-४०	नीलत्तनहल्लि ३१८
नाराणक १९१, १९६	नीलिङ्गम्बे १७२
नारायण ३६, ४०	नूतिसेट्टि १०८
नारियप्पाडि ४१	नूलबन्दिसेट्टि ३५७
नालिसेट्टि १०८	नूलवागिसेट्टि ३५७
नालपुर ३३४	नेगलूर २५७
नाल्कुवागिलु ३२८	नेच्चटिमतायि १२९
नाविकम्बे ११४	नेमण ८१-२, २८६-७, ३६२

नेमसेन ४२०	पदुमणसेट्टि ३१८
नेमिचन्द्र ४२-३, १२६-७, १५३, १७३, २१९-२०, २२६, २३२, २४५, २४९, २५८, २६५, २७१, ३७०, ३८२, ४२८	पदुमलदेवी ३२७
नेमिदेव २२७, ३७६	पदुमल्ले ३७६
नेमिसेट्टि १०८, ३१२	पद्मकोटि ४०१, ४०७-९, ४११, ४१४
नेरिलगे १७१	पद्मकुल ३४६
नेल्लिकर ३१७, ३८२	पद्मट १९१, १९६
नेवाज्ञाति ४१३	पद्मण्णरस ३०४-५
नेगम १९५	पद्मनन्दि ४५, ५५-६, १४९, २१७, २५०, २५८, २७७, ३००, ३१०, ३९७, ४१६-७
नोम्पियबसदि २०८	पद्मप्रभ २००, २०८, २६९, ३८०
नोलम्ब ३८-९, ७६, ९३, ११६, १३९-४०	पद्मम्बरसि ५३
नोलम्बवाडि ( नोणम्बवाडि ) ७६, १५५, २१४, ३९०	पद्मन्देवी १७९, २४४
न्यायपरिपालपेक्ष्मल्लि २५५	पद्मसेन २५४, २६१
पटना ३१७	पद्मावती २३६, ३६२
पट्टिपोम्बुर्ब ८६, ८९, १८३, १८५	पद्मावतीपल्लीवाल ३९५, ४०८
पडियरकाटि ८८-९	पद्मैय ३५०, ३५३
पडेवल ७३	पनसोगे ४३, २०७, २२५
पडेवोट्टु ३१३	पण्डिण १४८
पण्डितय्य ३३३	परकेसरिवर्मन् ५२, ७५, १४१, १५८, १६०, १६७, २५१
पदमूलक ४	परमजिनदेवजीयर् ३५७
पदार्थसार २५६	परमार ८६
	परम्पुर ९९
	परवार ३९६, ४०४, ४१५, ४२३-६

परान्तक ५२	पायण ३४३
परिसय २६६	पायिम्म ७८, ८१
पर्नेयूरनाडु १७९	पायिसेट्टि २५४
पर्वतमुनि २२४	पारिसदेव १७९
पलसिगे ८२	पारिससेट्टि २१९-२०
पल्लव ११-२, ३८, ९३, ३५४	पार्श्व १२०-१
पल्लवपेमनिडि ११५, १२०	पार्श्वदेव ३८४
पल्लवरैयन् १६७	पार्श्वदेवी ३३६
पल्लवादित्य २३	पालियड ९६
पल्लवेलरस १८, २०	पालैयूर ३५४
पल्लिका १९०	पात्यकीति २२७
पल्लिच्छन्दल् ३१७	पाल्हण १९६
पल्लीवाल ३९५, ४०१	पासकीति ४०४
पसिडिगंग २६	पिट्टनूप १५१-२
पहाडपुर ६	पितल्यागोत्र ४२७
पंचस्तूपनिकाय ७-९	पिरियमोसंगि ७६-७
पाटणी गोत्र ४२५	पुगलोकरनाथनल्लूर २५५
पाटश्रीवरम् २०८	पुट्टैय ३५३
पाण्ड्य २७, ३८-९, ७४, १०५, २५३, २५५, २६१, २६४, २९९	पुणिस १४७
पाण्ड्यप्परस ३१९-२०	पुण्ड्रवर्धन ७, ९
पाण्ड्यरस १८३, १८५	पुत्तडिगल ६३
पानुंगल १४८, २१४	पुत्तिगे ३२७, ३४१
पान्थिपुर १८६	पुडुप्पट्ट १४१
पापडीवाल ३९६, ३९८, ४११	पुन्नागवृक्षमूलगण ८०, ८१, १८६
	पुन्नाद १७, १८, २८, ५४
	पुरगूर ८५

पुरिकर ११३, ११८, २५४, २६५	पेण्डरवाचिमुत्तम्बे २१७
पुरिगेरे २५, ११२, १७२	पेद्दगालिडिपर्क ६७, ६९
पुलिगेरे ९०, ९३, १०३, ११०, ११२, ११७, १२०, २५४	पेनिकेल्पाडु २१
पुलुवरणि ३८४	पेनुगोष्ठ ३४४-५, ३६३, ३६६
पुल्लिऊर ११-२	पेरियनक्कनार् ४१
पुष्करगण ( पुष्करगच्छ ) ४००, ४०४, ४१०-१२, ४२०	पेरियवडुगणार् ४१
पुष्पदन्त ९६, १७५, २१४, २१६	पेरुनकिलि २७
पुष्पनन्दि ३८०	पेरुर्त्तगदेव ३५४
पुष्पसेन ८८-९, १७५, २१०, २१४, २१६, ३३६	पेरुक् ८५
पुस्तकगच्छ ११४, १२६, १२९, १३३-४, १४८, १६४, १७०, १७३, १७९, १८२, २२५, २४६, २४९, २६६-७, २७२, २९४-५, ३३५, ३६०, ३६३	पेरेर १२
पूणुससेट्टिट २०५	पेर्गुमि १५२
पूणिड ३६७	पेर्म १५१-२
पूर्णतल्ल १८९	पेर्मण २३८, २४४
पूलि ७९-८२, १५०-२	पेर्मिडिबसदि ११२
पूयिकोकोणि १७, १८, २०	पेर्मिडि ९३, १०५
पूयिकोदेशरट्टुगुडि २४	पेर्वयल ८९
पूयिकोकोगल्ल १३३	पेवय्य ३४८
पूयिकोराज १८९, १९०, १९६	पोगरियगण ३९
पूष्ठिमपोस्तक ७-९	पोतोज ३८०
	पोन्निनाथ ३६७
	पोन्नुगुन्द ८५, ११२
	पोन्नूर १६७, २६४, २८९, ३४६
	पोम्बुक्क ३१५
	पोय्सण ( पोय्सल ) ९५, १५४, २११, २७०
	पोलेय ७६

पोसवूर ७६	१२४, १४८, १५५, १५७,
प्रतापकीर्ति ४००, ४०२-३, ४०५-	१९८, २०४, २१४, २७६,
६, ४०९-१०, ४१६	२८१, २८९-९०, ३९०
प्रथमसेनबसदि ३८९	बन्दलिके ४४
प्रभाकरदेव २५४	बप्पयराज १८९
प्रभाकरसेन २९४-५	बमण ६९, २३२
प्रभाचन्द्र ५४, ५८, ६०, ७०,	बम्बई २०९, ३२७, ३८६-७
१३३-४, १४०, १५४, १५७-	बम्मगवुड २६४
८, ३००, ३६१, ३८०	बम्मय २८३
प्रमलदेवी ३५४	बम्मव्वे ३६९
प्रमिसेट्टि ३८१	बम्माचारि २१०
प्रवरकीर्ति २२२-३	बम्मिसेट्टि १०८, १५२, १६४,
प्राग्घाट १९१, १९६	१७०, २०७, २२६
प्रोल १४२-३, १४५	बयिचिसेट्टि ३७७
बघेरवाल ३९६, ३९८-४०३, ४०५-	बर्मदेवरस १२१
७, ४०९-१०, ४१२, ४१४,	बर्मनन्व ३६८
४१६, ४१९	बलगारगण १०४, १०९
बट्टकेरे १०८, ११०, १४८	बलगारवंश २९४-५
बडोदा ३८५	बलगोरि १७८
बण्डुवाल ३१५	बलदेव ७१, ९१, ९३, १०२,
बदनगुप्ते २८, ३०	१९९, २३९, २४५, ३९०
बदनोर ३०७	बलमद्र ५०-२
बद्देग ५३	बलात्कारगण १०७, ११२, १५३,
बघनोरा ४२०	२२९, २५८, २७०, २७२,
बनदाम्बिके ३४३	२७८, २८८, २९९, ३०६,
बनवासि ८५, ११४, ११६, १२०,	३१०-१, ३१५, ३९६-७,

४००-५, ४०७-१२, ४१४-२३, ४२५-८	बादंमट्टि ३७१
बलिकुल ६१-२	बान्धवनगर २५०
बलेयवट्टण १६४	बाबानगर १८२
बल्लभ्य १९९, २००	बायिसेट्टि ३२९
बल्लाल १३१, १३७, १५४, १९८, १९९, २००, २०२-४, २०७, २०९-१८, २२०, २४९-५०, २७०, २७३, २७६-७, ३३५	बारकूष २९९, ३२२, ३२६, ३४१
बल्लिग्रामे ( गाँवे ) २७६-७, ३८९	बारली १
बसरूर ३०६	बालचन्द्र ५८, ६०, ७०, ८०-१, १३४, १४८, २०४-५, २०७, २१९-२०, २२७, २४२-३, २४८, २६०, २६३, ३६३, ३८०, ३८३
बसवदेव २८१-२	बालप्रसाद ४७, ५२
बसवपट्टण २६६	बालूर २४९, २५७, ३४८
बसविसेट्टि १०८	बालेहल्लि १७०, २७९, ३७२
बस्तिहल्लि १६७, २५६	बासबे ७१
बहादरपुर ३९५, ४०३	बासवूर १२५, ३८९
बंकापुर ४४, ३७२	बासिसेट्टि १८१
बंकेयरस ४४	बाहुबलि १२६, १२९, १५०, १५२, २१९-२०, २५२-३
बागियूर ५४	बाहुबलिकूट १५५-६
बाचण ३०९	बिजापुर ४५, २५५, २७६
बाचय ९४	बिजोलिया १८८
बाचवे २३१	बिजण १३६, १८२, १८६-७
बाचिगावुण्ड १४९	बिजल १५१-२, १७८-९
बाचिसेट्टि २७५	बिटिसेट्टि ३११
बाचेय २६०	बिट्टय ४४
बादय ३७८	

बिट्टरस १८७	बुचम्बे १२९
बिट्टिदेव १५४, २११, २७०	बूत १२३, १२५
बिट्टियण ३६२	बूतम्य ५३
बिडक्क ७१	बूतुग ५८, ६०, १०४, १०९
बिण्डगनवले ५५	बूपोज ३६०
बिदिक्कर २६८, ३०९-१०	बुवनहल्लि ७०
बिदुरे ३२०, ३३६-७, ३३९-४०	बेंगूर ४२
बिरणंतर ३२६	बेचारकबोमलापुर ७४
बिलगोण्ड १२६-७	बेट्टेकेरि ३४०
बिलपाणसेट्टि १६४	बेट्टिसेट्टि ३८१
बिलिगि ३२०, ३३५	बेन १४२-५
बिलिगिरि रंगनबेट्ट २०९	बेन्नेवुर ९८
बिलिचाग्राम २५३	बेरिसेट्टि ३८०
बिल्लमनायक ३८२	बेलगामि २१७, २७६, ३७०, ३८९
बीचगवुड ७४-५	बेलगांव ४२, २३६, २४३, २४९
बीचण ( बीचिराज ) २३८-९, २४३-६, २४८-९, २५४	बेलगुल २२७, २६७, ३२५ ६
बीचिसेट्टि ३८३	बेलतंगडि ३१४
बीरण १३९-४०	बेलप्प २७९
बीरम्य ९४	बेलूर १३०, १४७, १७५, २०७, ३४४, ३४६
बीररस १८३, १८५	बेल्लगलि ८५
बुक्कराज २७८-९, २९०, २९५	बेल्लदेव ९१, ९३, १०२
बुघमुप्त ९	बेल्लट्टि ५६
बुलिसेट्टि ३०१	बेल्लुम्बट्टे ३८२
बुल्लप ३५९	बेल्वत्ति १५२
बुल्लोड्डि ३२९	



बेल्बल ७९, १०४-६, १०९-१०,  
११२, १७८, २१४  
बेल्बोल ९०, ९३, १०३, १२०,  
१७२

बेहार २२८

बेटूर ३७

बैचण २९७-९

बैचय २७८, २८८

बैचिसेटिट २८५-६, २९९

बैन्दु ३०८

बैराट ३८८

बैरामक्षेत्र ४१६

बैदु ९३

बोगगावुण्ड ३८४

बोगाडि १९८

बोचुवनायक ३८४

बोप्पगोड ३७५

बोप्पदेव १५६, २५०

बोप्पय २९६

बोप्पिसेटिट १०८, १६४

बोप्पेयम्बे १८३

बोप्पेयवाड १३८, १४०

बोम्मक्क ३५६

बोम्मण ३६८

बोम्मरस ३३७

बोम्मरसेटिट ३१६

बोम्मम्बे २२९, २६६

बोम्मिसेटिट २६०, २६६, २७७,  
२९९, ३१२, ३२८, ३७१,  
३८०

बोयुगट्ट २७

बोरखंड्यागोन ४०१, ४०३, ४०६,  
४०९, ४१६

बोलगडि ७८, ८१

बोलयनाग २९३

बोसिसेटिट १०८

ब्रमदेव २२६

ब्रह्मदेवण ३६४

ब्रह्म २५०, २९०-१

ब्रह्मकुल ११६

ब्रह्मजिनालय १५२, १५७

ब्रह्माधिराज ९३

ब्रिटिश म्यूजियम २७, ३८७

भटकल ३००, ३३५

भट्टाकलंक ३१६, ३३५, ३३८-९,  
३४२

भट्टिदाम ६

भद्रबाहु ९६, १७५, २१४, २१६

भद्ररायि १५७-८

भद्रेश्वर ३८६, ३८८

भरत ७३, १५५-६, २७२

भरतपुर १७४, ३८५

भरतिमय्य १७०	भूलोकमल्ल १५३, १५७-८, ३९०
भरतिसेट्टि २१४	भैरवस ३१३
भंवर गोत्र ४०४	भैरवदेव २६५
भागिणब्बे ७९, ८१	भैरवपुर ३१५
भागियब्बे ४०-१, ९५	भैरादेवी ३००
भानुकीर्ति १२९, २५०, २७२, ३७९	भोगदेव २०८
भानुचन्द्र ३९८	भोगराज २७८
भानुमनीश्वर ३२१, ३२६	भोगवदि १९९-२००
भालेपालबन्दप्प ३३०-१	भोगवे ११४
भावचन्द्र १९७	भोगादित्य ९८
भावनगन्धवारण ८५	भोज ८६, १३६-७
भावसेन ३८०	भोसले ३९४
भासगवुण्ड ३६२	भोसे ३७०
भास्करनन्दि ११३	भगर कारगरस १५७
भिल्लम १३७, २१३	भणलकुल ११२
भोम ६७	भणलिमनेओडेयोन् २६
भोमदेव ९७-८, २२१-२	भणलेर १७२
भोसो ३९५, ४११	भणिचन्द्र ४२
भुजबलमल्ल १८६	भण्टूर २२९
भुरा गोत्र ४००	भण्डलकर १९२, १९७
भुवनकीर्ति ३९७-८, ४२८	भण्डालगोरे ८५
भुवनेकमल्ल १०२-३, ११०, ११२-३, ३८९	भण्डलोई ३३८
भुव-लोकनाथनल्लूर २६१	भण्णे ६९
भूतबलि १७५, २१४, २१६	भतिबीर ३४०
	भतिसेन ९९

मत्सिखागर ३५४  
 मत्तावार ९९, २९२, ३५३  
 मत्तिकट्टि ९९  
 मयुरा ५, ६, ७२, ३८६  
 मदनसेन २९४-५  
 मदनूर ६८  
 मदवणसेट्टि ३१८  
 मदविल्लगम् १३०  
 मदिरै ३९  
 मदिरैकोण्ड ५२, २५१  
 मदिसागर २५५  
 मदुवण १८६  
 मदुवरस ३०१  
 महहेगडे ३२१-३, ३२५-६  
 मद्रास ३६४  
 मधुकण्ण २५६  
 मधुर ३९१  
 मनगुन्दि २५१  
 मनोलो २२७  
 मनोविनोत १८  
 मन्तरबर्मण १२१  
 मन्तगि १८६, ३७२-३  
 मन्त्रचूडामणि ९५  
 मन्नेरमसलवाड २६५  
 मम्मट ४६, ५०-२  
 मयिलिसेट्टि १०८

मयूरवर्मा १५७  
 मरकत ३२७  
 मरगोड ३७७  
 मरवोलल ७६  
 मरसे २३३  
 मरिनाग ३५०-३  
 मरियाने १३१, १५५-६, १६९  
 मरुत्तुवक्कुटि १२१  
 मरुलजिन २९२  
 मरुलयरस २८०  
 मरोल ७५  
 मलवारिदेव १३०, १७०, १८२,  
 २२८, २४५, २४९  
 मलयकुल ६३  
 मलयन ३३४  
 मलवसेट्टि २२६  
 मलेय २२५  
 मलेयालपाण्ड्य २५८  
 मलैयन् कोविल ३६६  
 मलैयन् मल्लन् १६०  
 मल्ल २५४  
 मल्लगानुण्ड १७१-२  
 मल्लप ६४, २८७  
 मल्लय १०७, ११०  
 मल्लबल्लि २६  
 मल्लवादि ३५-६

मल्लम्बे १०८	महामोज १५९
मल्लि २६८	महामद ४
मल्लिकामोद २१७, २७६-७	महामेघवाहन २
मल्लिकार्जुन २३७, २३९, २४३-४, २४६, ३०८	महालक्ष्मी २९१
मल्लिगुण्ड ३७३	महावीर ४२
मल्लिगौड ३६०	महोचन्द्र ४२७
मल्लिदेव ३८३, ३९०	महोषर १९२, १९७
मल्लिभूषण ४२९	महोशब्दिक ८६
मल्लिमध्य १६७	महेन्द्र ३८-९, ४६, ५२-३
मल्लियक्का २२६	महेन्द्रकीर्ति ७१
मल्लियण्ण १५८, २१७, २७६-७	महेश्वर ३२८
मल्लिराय ३००	मंगभूप ३०२-५, ३५५-६
मल्लिसेट्टि ८२, १०८, १५३, २६०, २८२, ३१६	मंगराज २९८
मल्लिसेन (मल्लिषेण) ९९, १२७, १७५, २१४, २१६, ३७०, ३७६	मंगलिवेड १८२
मसुलिपट्टम् ६३	मंगलूर ३२२, ३२६, ३४१
मस्की ७७	मंगियुवराज ६३
महाकीर्ति २८४	माकण २१४-५
महादेव २५८-९	माकनूर ३७५
महादेवी ७६	माकम्बे ७४
महादेवसेट्टि २२६	मागुण्ड २५०
महानागकुल ३२९	माघनन्दि २२, ५८, ६०, ९८, १५०, १५२, १६६, २०४, २०७, २२९, २५८, २७१-२, २७४, २७८, ३७५
	माच १७६
	माचम्बे १२५

माखियण १७६-७	मानलदेवी १६०
माचिराज १८३, १९८, २००	मानसेन २९९
माखेल २४	माबलरसि ३०३, ३०५
माणिकदेवो ३०५	माबाम्बा ३५५
माणिकसेट्टि १००-१, २८५-७	मामटा १९२, १९७
माणिकसेन २०९, ३९७-८, ४०२, ४२०	मायण २९४-५
माणिक्यतीर्थ १५२	मायदेव २६३, ३७०
माणिक्यनन्दि १०४, ११०	मायसेट्टि २९९
माणिक्यभट्टारक १८२	मार २९२
माण्डू ३०६	मारगीढ १८५-६
माधुर संघ १९५, १९७	मारदेवी २८३
मादरम ३७४	मारब्बेकन्ति ६९
मादलदेवी २६६	मारमय्य ७०
मादलंगडिकेरि ३४०	मारय ३८०
मादवे २५८, २६३	मारवर्मन् २५५, २६४
मादैय २६३	मारसिंह ५३, ५४, ५९, ८९, १०९, १३६
माधव २८७	मारिसेट्टि १८१-२, २१४
माधवचन्द्र १५४, २३३-४, २४२-३, २६६, २६८, ३७२	मारुगोट्टेर् १९, २०
माधवनन्दि १५९	मारु ३३६
माधवमहाधिराज १०, १२, १७, २०	मारेय २१९-२०
माधववर्मा १०, १४४-५	मार्तण्डय्य ८२
माधवसेट्टि १०८	मालकोण्ड १
माध्यमिका १	मालवे २२५
	मालवेगडे २७७
	मालियम्बरसि ३५५-६

मालेयब्बे १३२	मुनिभद्र १५५-६, ३३६
मावलि २३३	मुनिवलि २२७
माविनकेरे २२५, २९७	मुनुगोडु २७, ३८२
मावीरन् १६७	मुम्मुहिचोल ६२
मासवाडि ७३	मुलगुन्द ८५, ९०-१, २६०, ३०१, ३४३, ३७९
मासाविबर्म १३१	मृत्कि ३६४
मासेनन् ५२	मुल्लभट्टारक १५३
मिरिजे १३८-९, १६४	मुष्कर १७, २०
मीचारमागाणे ३२७	मुंजराज ४६, ५२
मुकुन्ददेव ३७८	मुंजार्य ५४
मुक्कुडैयार् १४५	मूगूर २७२
मुगद ( मुगुन्द ) ८२	मूडगेरि १०४, १०९
मुळ्ळण्डि २१५-६	मूडबिदुरे ३१३, ३२०, ३२६-७, ३३९-४१, ३४७, ३६७-८
मुडासा ३९६, ३९८	मूलपल्लि ३९
मुडिगोण्डम् १३३	मूलराज ४६, ५२, २२०
मुत्तदहोसूर २९९, ३५८	मूलवसतिका २२१, २२३
मुत्तुप्पट्टि २२	मूलसंघ ३५-६, ३९, ४३, ७२, ८४-५, ९२-३, ९६, ९८, १०४, १०९, ११२, ११८, १२०, १२६, १२९, १३३-४, १४०, १४८-९, १५३, १५७- ८, १६४-५, १६७, १७१, १७३, १७९, १८२, २०४, २०७, २२४, २२५, २२७,
मुत्तोल्लूरम् ३१८	
मुद्दगावण्ड १००-१, ३६२	
मुद्दगोड ९६, ३६०	
मुद्दण्डेश्वर ३९१	
मुद्दसावन्त २५०	
मुनिगिरि ३४७	
मुनिचन्द्र ( मुनीन्दु ) ५९, ६०, १२२, १८६, १९१, १९७, २२७, २५०, ३२३-४, ३२६	

२२९, २३३-४, २४६, २४९-५३, २५६, २५८-६१, २६५-७०, २७२, २७६, २७८, २८८, २९५-६, ३००, ३०६, ३१०-१, ३१५, ३१७, ३२१, ३२६, ३३५-६, ३४०, ३५९-६०, ३६३-४, ३७०, ३७३, ३७५-६, ३७८-८२, ३९६-४२९	मैललदेवी ८५, १५१-३ मैलाप अन्वय १५३ मैलुगि १७८, १८२ मैसुनाड २१५-६, २८३ मैसूर ३४९-५३ मोटेबेन्नूर ४०, ९८, २७५ मोदलियहल्लि १७० मोनभट्टारक ४२ मोरक कुल ७६ मोरब ९५ मोरासरी १९०, १९६ मोसल १९१, १९७ मोसलेयकुळु ३१६ मोसलेवाड २६५ मोहनदास ३४१, ३४३ मोगामा ३८७ मोनपाचार्य ३५७ मोनिदेव १५०, १५२ यलवट्टि ३६३ यशःकीर्ति २२१, २२३, ४०२-३ यशोनन्दि ५७ यसोराज १८९ यशोवर्मन् ८६ याकमब्बे १४२-३, १४६ यादव २५१, २५४, २५६-९,
मूलिगतिष्णय २६६ मृगेश १३-१५ मेघचन्द्र ५८, ६०, ९६, १३३-४, १४०, १५५-६, २४९ मेघनन्दि २५० मेडता ३८७, ४०३ मेण्डाम्बा ६६, ६८ मेलपराज ६६, ६८ मेलपाडि ५३ मेलरस १४४-५ मेलब्बे २६० मेलाम्बा ६४ मेलुसान्तलिगे १८३, १८५ मेघपाषाणगच्छ १५७-८, ३७५ मैणदान्वय २६८ मैलम १४३, १४५	

२६३, २६५, ३८९-९०	रत्नकीर्ति २६१, ३१०, ४०३-४,
यापनीय संघ ४२, ८०, ८१, ९५,	४१५
१२२, १५०, १५२, १५३,	रत्नगिरि २१, ३४४-५
१८६, २२७, २६६, २७५,	रत्नचन्द्र १९७
३७६, ३७७-८	रत्ननन्दि २०४, २०७
याप्पुंगलक्कारिगै ३९१	रत्नपौड्य ३१४
यावनि ११-२	रत्नभूषण ३७७
यिवल्लिग्राम ३२९	रत्नागुरि २६७
योचलदाल ३३२-३	रवि १३-१५
येचिसेट्टि १०८	रविचन्द्र ५४, १२५, २५८, २७१
येडेहल्लि ३३०-१, ३३३	रविनन्दि ५४
येरगजिनालय ३६४	रससिद्धुल्लुगुट्ट २०, ७२, २२६,
येलवर्गि ३७३	२९३
योजणसेट्टि २८२, २८४, २८६-७	रंगनबेट्ट २१०
रक्कसगंग ५९	रंगप्पराज ३४४-४५
रघु १३	रंगरम २५६
रघुवर, रघुजी ३९४, ४१५	राइकवाल ३९५, ३९७
रट्टगुडि २४	राक्षमल्ल ५८, ६०, १०९
रट्टजिनालय २४०, २४३, २४६,	राक्षय ७१
२४९	राजकीर्ति ४०५-६
रट्टवंश १२८, १३२, १५३, १८५,	राजकेसरिवर्मन् ५६, ९९, १४०
२३५, २३७, २४३, २४५,	राजगावुण्ड १००-१
२४९	राजदेव १६८-७१
रणकि १२३, १२५	राजदेवी १८९
रणपाकरस २६	राजपाल ४००
रणाबलोक २८, ३०	राजमीम ६४-५, ६८



राजमार्तण्ड ६४	रामसेट्टि २८५
राजराम ७४, १७८-९, २८०, ३५४	रामसेनान्वय ४०५-६, ४११, ४२७-८
राजलदेवी २५४	रामो ७-९
राजल्ले १७६, ३७५	रामोज ३७४
राजाधिराज ११०	रायगौड ३६०
राजि १२०-१	रायद्रुग २७८, ३७८
राजिमय्य ११९	रायपाल १५९-६०, १६८-७१
राजेन्द्र ७५, ७८	रायबाग ७७, २३५, ३३६
राजेन्द्रशोलचेदिराजन् १२७	रायरसेट्टि ३८०
राणिबेण्णूर ३७	रावदेवी १११
रामकीर्ति ३९९, ४१६	रावसेट्टि १६४
रामक २८२, २८४-७	राष्ट्रकूट १५-६, २८, ३०-२, ३६-७, ४२, ४४, ५०-१, ५३-५, ६४, १०९, १५९, १७२, २४३, ३९४
रामचन्द्र ८१-२, २६३, २६५, ३१५, ३८९, ४२५	रासलदेवी १८९
रामटेक ३९५, ४०४, ४०७, ४२२	राहक १९१, १९७
रामण १८६, २८२, २८६	रुद्रपाल १६०
रामतीर्थ ३८१	रुग्गि २३५
रामदेव २६५, ३३९	रूपनारायणवसदि १६४-५
रामनाथ २६५	रेचड्य ७१, २५०
रामनाथक ३१०	रेचरस ३८४
रामपुरम् ३८१	रेचिदेव १०८, ११०
रामप्प ३१३	रेचुस ९३
रामराज ३१९, ३२२, ३२६	
रामल्ले २८६	

रेवकनिर्महि १०४, १०९, १५१-१	ललितकीर्ति २२२-३, २२५, २९५-
रेवकम्बरसि ७६	६, ३१९, ३५४-५, ३७९,
रेवणभ्य ११२	३८२, ४०३
रेवणाम्रास १९०, १९६	ललिता १९३, १९७, ३६८
लक्कवरपुकोट २८७	लाघक ६
लक्कुण्डि ७३, २०८, ३७५, ३८२	लाटीय मण्डल ३४
लक्ष्मट १९१, १९६-७	लाडबागडगच्छ ४००, ४०२-६,
लक्ष्मण १९२, १९४, १९७	४०९-१०, ४१४, ४१६
लक्ष्मण्यरस ३१३	लाडोल ३८५-६
लक्ष्मरस ९८, १०३, १०५-६,	लातूर ४२६
११०-३, २३६-७, २४४	लालाक २
लक्ष्मादेवी १७८, २११	लिंगण ३३०-१
लक्ष्मी १९३, १९७	लोकटेयरस ४४
लक्ष्मीदेव १३२, २३६-७, २४४	लोकाचार्य २९१
लक्ष्मीघर ३९१	लोकाम्बा ६५
लक्ष्मीमार्णकदेवी ३०३	लोकिकरे ३७७
लक्ष्मीसेन २९४-५, २९९, ३४४-५,	लोकिकगुण्डि ७३
४०१, ४०५-६, ४१४, ४२०,	लोढा गोत्र ४०३
४२७-८	लोलाक १९२-५, १९७
लक्ष्मेश्वर ५४, ११२-३, ११५,	लोहाचार्यान्वय ४०४-६, ४१०
१५८, २६५, ३००, ३१५,	वकग्रीव १७५, २१४, २१६, २८८
३१८	वज्र ९५
लखनऊ १७४, १८०, ३८६, ३८८,	वज्रदेव २५१
लच्छलदेवी } ७९-८२, १८६	वज्रनन्दि १७५, २१४-६
लच्छियम्बे }	वज्रसिग ७५
	बटगोहाली ७, ९

वटेववर ९८	वाणकोवईयर् ४१
वडुल्ल ३	वादिर्वचलमट्ट ५४
वण्णमट्ट ३८९	वादिराज ५९, १२८, १७५-७, २१४, २१६, ४०५
वमिरिमल्लैयन् ७५	वादिराजुल २३
वरगुण १६, ३७-८	वादीमसिह १७६
वरलाइका तीर्थ १९३, १९७	वामनन्दि ३७०
वरांग ३०६, ३१४-५	वायड ९७
वरुण ६९, २६९	वालनागम ३३९
वर्धमान २८, ३०, १०४, ११०, १२८, १३४, २०८, २५१, २५८, २७०-१, २८८, ३०६, ३३७, ३६५	वावणरस ७६, १७२
वलभो १९०	वासल गोत्र ४२६
वलयवाड १३८, १६२	वासियण्ण ३८३
वलुवामोलि ७५	वासुदेव ४६, ४८, ५२, २२४
वसन्तकीर्ति २९९	वासुपूज्य १५३, १७२, १७६-७, २१५-६, २५८, २६३, २७१
वसुधाकर ३७४	वाहिल ७५
वस्तुपाल १९०	विक्रमचोल ८३, १५८, १६०
वंकिकातट ३५	विक्रमपाण्ड्य २६४
वाक्पतिराज १८९	विक्रमपुर ८४-५, १२१
वाग्देवी २३८, २४५	विक्रमराय ३९२
वाच २५४	विक्रमादित्य १६, ६४, ७४, ११३, ११५, १२०, १२२, १२६, १२७, १२९, १३४, १३६-७, १३९, १४५, १४८, १८२, २१२, ३९०
वाचम्य ३८०	
वाजसेन २०९	
वाञ्जिकुल ७३, ३९१	

विग्रहराज १८९-९०	विद्यागण ४०६
विजयकीर्ति १८६, २९३, ३१६, ३३५, ३९८-९	विद्यानन्द १०४, ११०, २५८, २९३
विजयवका ३६१	विद्याभूषण ४००-१, ४०५, ४०९, ४११, ४१४, ४२२-३
विजयगण्डगोपाल २८९	विनयचन्द्र २६५
विजयगण ६९, २५६	विनयसेन ३९
विजयदेव ४०४	विनयादित्य ९५-६, १००-१, १५४, २०२, २११, २७०
विजयनगर २७८-९, २८७-८, ३००, ३०५, ३०८, ३१३-४, ३१७, ३१९, ३२६, ३३९, ३४७	विन्ध्यराज १८९
विजयनाथकर् ३१७	विन्ध्यवल्ली १९२, १९७
विजयवाटिका ६७, ६९	वियंगबरमैय ३४९
विजयशक्ति २६	विरिसेठि १
विजयादित्य २५, ६४-६, ६८, १५३, १८५-६	विरूपय ३८०
विजयानन्द १५-६	विलम्पकम् ५२
विजयालयमल्ल ७८	विलशार १५८
विजो ५७-८	विल्लवडरेयन् २७९
विट्टरस २६	विशालकीर्ति २७८, ३११, ३२६, ४०७, ४०९, ४१०, ४२४, ४२६
विट्ठप्पनायक ३२७	विशंयनल्लूना ४१
विठगीढ ३७३	विषवसेन ४०५
विडालपर २६४	विष्णुकलम्बुर ३६७
विणैयाभशूर २५१	विष्णुगोप १०, १७, २०
विष्णुकोवरैयन् ७५	विष्णुवर्धन २७, ६३-४, १३३-४,
विदम्भराज ४६, ४९-५२	

१४७, १५६, १७६, २००,	वृक्षमूलगण १२२, ३७६
२०२-३, २११	वृषभ २१
वीरगडि १९१, १९७,	वृषभनन्दि २०४, २०७
वीन १९७	वृषभसेनगणधरान्वय ४०१-२
वीरकांगाल्व १३३-४, १४०	वेडल ५६
वीरगंग ९५, १३३, १४६, १५४,	वेणगि १२८
२००, २०४-५, २१४	वेणुग्राम ( वेणुपुर ) १३२, १३७,
वीरनन्दि ५३, ९३, २०८, २५२-३	२३९-४१, २४६
२५८, २७१	वेणुगाव ३४७
वीरनोलम्ब ११५-६, १२०	वेणुनाडु २२
वीरपेमाडि १५३	वेमुलबाड ५३
वीरप्योड्येय ३२०	वेम्बुवलनाडु १४५
वीरबलज १६३, १६५, २४०	वेरावल २२०
वीरभैरव २९९	वेलनाण्डु ६६, ६९
वीरभ ११४, ३२०	वेलि ६३
वीरराजेन्द्र ९९	वेलूर ३८१
वीरसंघ ३३८	वेलूरबोम्मनायक ३१७
वीरसान्तर ८७-९	वेल्लप्रभाटिका १५९
वीरसेन २०९, २३५, २९३, २९५,	वेंगी ६३, ६५, ६८, ९०
३३०-४, ३४४-५, ४२५	वैसर ७२
वीराम्बुधि ३९२	वैज १४२, १४५, २३९, २४५
वीरेववर ३६५	वैजयन्ती १३
वीरैय ३१४	वैयप्य ३१७
वीर्यराम १८९	वैद्यवण १९१, १९६
वीसल १८९	

वोजणसेटिट २८६-७	शान्तिनन्दि ९८
व्याघ्रेरक १९१-६	शान्तिनाथ ३७४
शक १२९	शान्तिभद्र ४८, ४९, ५२
शडंयापारं २७	शान्तिमुनि १२८
शण्वै ३१७	शान्तियक्क १५३
शमणर् तिळल् ३६६	शान्तिवर्मा १३, ९१, ९३
शम्बुदेव २२९	शान्तिवोर ३७-८, ३७७
शम्बुवराय ३६७	शान्तिसेटिट १६४, १८१, ३७४
शर्कर ३४६	शान्तिसेन ४१३
शशकपुर २०१	शाबल ३६३
शंकरगण २९	शावड २२८
शंकरदेवी ३१७, ३२६	शास्त्रसारसमुच्चय २५९
शंकरसेटिट ३२६	शाहजहां ३४०, ३४३
शंखजिनालय ५५, २०१, ३००, ३१५-६	शिगांव २५
शंखणाचार्य ३१८	शिरसेय ३५३
शंखदेव ३८२	शिकर ३७६
शाकम्भरा १८९	शिलाश्री १६१
शान्तदेव २१४, २१६	शिलाहार १३५, १३८-९, १६२, १६५-६, १८५
शान्तर १३६, १८३	शिवकुमार १८, २०
शान्ति १२०-१, १६१	शिवझूंगर ३१०
शान्तिग्राम २२४	शिवनहसेटिट २२५
शान्तिदास ४०५	शिवपुरी ३४१-२
शान्तिदेव १७५, २१४, २१६, ३७५	शिवमार २६
	शिवराम ३१९

शिवरामय्य ३००

शिबसिंह ३९६

शिगणार ४१

शिगिकुलम् २५५

शीतलप्रमादजी ३९३

शुभकीर्ति ७२

शुभचन्द्र ५७-८, १३१, १५०,  
१५२, १६७, २४०, २४३,  
२४६, २४९, २५८, २६८,  
२७१, ३१०, ३६१, ३९९

शुभतुंग ३१

शुभंकर १९१, १९६

शृंगेरी १७३, १८१, ३१६

शोडबाल १७४

शेरगढ १६१, २३५

शेंगाट्टिककं १४५

शेंबादि २७९

शेंबियन् शेंबोत्रिलाडणान् १६७

शैनियम्मण् कोयिल् ३१७

श्रवणन अरे २१०

श्रवणनहल्लि १३३

श्रवणबेलगोल ३३५

श्रावकाचारसार २५९

श्रोकीर्ति १९७, २२१-२

श्रीचन्द्र १५४

श्रीधर ४३, २५८, २७०-१, ३६७

श्रीनन्दि ११३

श्रीपादरस ७६

श्रीपाल २२, १६१, १७५-७,  
२१४, २१६, २६९

श्रीपुरुष २६

श्रीभूषण ४००, ४०३, ४०५

श्रीमाल १९०, ३९६, ४०१

श्रीयम्म २६

श्रीयादेवी १८०

श्रीरंगपट्टम् ३४३

श्रीवल्लभदण ३६७

श्रीवल्लभ १८, २०, ३९, १८५

श्रीविक्रम १७, २०

श्रीविजय २९, ३०, ६१-२, १७५,  
२१४, २१६, २५४

श्रुतकीर्ति ५९, ६०, १६४-५-  
१७५, २५८, २६७, २७१,  
३३५,

श्रुतवीर ४२०

श्वेतपद ८६

सकलकीर्ति ३९७-८, ४०५, ४१४

सकलचन्द्र १०२, १०७, ११०-१,  
११४, २५१-३, २५७, २६८,  
३६३, ३८३

सकलभद्र ३६४

सकललोकाश्रय २४

सकरेपट्टण २९३, २९९, ३५७	सर्व ३३
सण्णमल्लीपुर २६२	सर्वदेव २५६
सत्तिग ७६	सर्वधर १५९
सत्यण्ण ३७४	सर्वलोकाश्रय २७
सत्यवाक्य ५४, १४०	सलनूप २०१
सत्यवेगहे २३०-३	सल्लक्षण ३
सत्यसेन ६	सवणू १५२, २२८
सत्याश्रय २५, ६३, ७३, ७६	सवाईजयनगर ३९५, ४१५
सदाशिवनायक ३२२, ३२६	सवाईराम ४२३
सदाशिवराय ३१९, ३२२, ३२६, ३४७	सवाईसिंगई नेमलालजी ३९३
सप्तरस २६३	सहस्रकीर्ति ३७३, ३७९
सब्बि ९५, १४२, १४५	सहेटमहेट २५५
समणरमले ७२	संकण ३३४
समन्तभद्र २६३, ३३०-२, ३३४, ३३६, ३३९, ३४१, ३४४- ६, ४०१	संकिसेट्टि १०८
सम्यक्त्वरत्नाकर ८२	संखेस्वग् गोत्र ३९९
सयबिमारय ३८०	संगनूप ३०३-५
सरटूर १०२, २६०	संगप २८६
सरणसेट्टि २८६	संगमदेव २८७
सरस्वतीगच्छ २७८, २८८, ३०६, ३१०, ३९७, ४००-४, ४०७, ४०९, ४१०-२, ४१४-२३, ४२५, ४२७	संगिराम ३००, ३०८
	संगोतपुर ३३५, ३३८-९
	संगूर २५९, २८७
	संग्राम ३४१
	संघय्यसेट्टि ३३७
	संजालपुर ३९५, ४०४
	संविसेट्टि ३८०



संसारभोत २४	सिद्धबहवन् ६२
सागरकट्टे १२८	सिद्धान्तयोगीन्द्र २६४
सागरसेन २३५	सिद्धान्तसार २५९
सातव्य ११४	सिन्दकुल ९३, १८७
सातानिकोट २४	सिन्दनाडु २६
सातिपेह २०८	सिन्दनूप ९१
सातोज ३७४	सिन्दय ७०
सान्तर ८७, २९९	सिन्दरस ७६, १२१
सान्तलदेशी ३५५-६	सिन्दिगे ९८
सान्तलिंगे ८७, ११६, १२०, १५७, १८३, ३९०	सिरसग्राम ३९५, ४१६
सान्तेबीवे ३५८	सिरसांग १४९
सामन्तणबसदि २३२	सिरिणंदि १०२
साम्भर १९६	सिरियण्ण २१७, २७७
सायिगवुाड ३७२	सिरियम्पगोड २६१
सालिग्राम २२६	सिरियव्वे १८१-२
सालुव ( साल्व ) २६३, ३२७, ३६४	सिरियादेवी १५१-२, २२७
सालूर ( सालियूर ) १५७, ३५६	मिरोही ३८५, ३८७
साबन्तपण्डित २६५	सिर्मलगेगूरु गण २८, ३०
सावरगावि ३९५, ४२७	मिबनो ३९५, ४२५
सावला गोत्र ४१३	सिगनन्दि २०
साविकेरि २७९	सिगिसेट्टि ३७६
सिगालि २५४	सिगेय ३७६
सिस्तप्रवासल ३९	सिषट १८९
सिदवसयदेव ३२०	सिषल १८६
	सिहण ( सिघण ) २५१, २५४, ३९०

सिहनन्दि ७४, १७५, २१४,	सेट्टिगीह ३२९
२१६, २८८	सेणिगकोत्तलि १७४
सिहराज १८९	सेणिसेट्टि २८९, ९०
सिहविष्णु ११-२	सेतु ३२९, ३३७
सिहवूरगण ३७	सेन अन्वय ३९, ९२-३
सोम्पालत्रायगर् १९, २०	सेन गण ८४-५, १०७, ११८,
सोयक १९१-२, १९४, १९७	१२०, २९३, २९५, २९९,
सुजानराय ३२८	३३६, ३३९, ३४१, ३८०,
सुन्दरपाण्ड्य २७, २५५	३९६-९, ४०१-२, ४०४,
सुमद्र १५९	४०८, ४१२, ४२०, ४२८
सुभूति ४	सेननसिग १२८
सुमति ३५-६, १७५, २१४, २१६	सेनन्प ( सेनविमु ) २३६, २४३-४
सुरभिकुमुदचन्द्र २३२	सेनसंघ ३५-६
सुरेन्द्रकीर्ति ४०८-११, ४१४-६,	सेन्द्रक १५६
४२८	सेम्बूर २५७
सुलोचना २७	सेवुण २१३-४, २१८
सुवर्णवर्ष ३५-६	संगोट्ट ५८, ६०
सूरत ३०	सेतवाल ३९६, ४०७, ४२५-६
सूरसेन २९४-५	संढान्तिदेव २८३
सूरस्थ गण ५४, ७३, ९८, १०२,	सोणि २००
११२-३, १७२, २२४, २६९,	सोडक ७५
३७२-३, ३७४, ३७८	सोसियूर ७०
सूर्याचार्य ४९, ५२	सोदे ३१५, ३४७
सूर्याश्रम १६१	सोन्द ३१६, ३३८, ३४२
सूलाकोमरन् २०	सोनोपडित ४०७
सेटिमहादेवी २७५	सोमदेव ५३, २५९, ३७४

सौमव २६५, २७७	हनगल १८६
सौमलदेवी ७६, १८९	हनगुन्ध ११२, १२६
सौमवे २८५-६	हनुमन्तगुडि ३१८
सौमसेन ३३६, ४०२, ४०४, ४१२	हन्दिगुल २८६
सौमापुर ११३, २११, २१६	हनुरेमरस ३८४
सोमिदेव २१७	हम्पी २३४, २८८, ३९१
सोमेय २५९-६०	हम्मिकब्जे ७९, ८१, १२०-१
सोमेववर ८१-२, ८५, ९०, ९३-४, १०२, ११०, ११२, १८२, १९०, १९६, २०८, २८२, ३८९, ३९०	हरति ३४४-५
सोरटूर १०२	हरसिम १९५
सोरव २९०-१	हरिकान्त ३७२
सोल्लज १८९	हरिकेसरी ३७२
सोव २५९	हरिचन्द्र २७४
सोवण १४६-७	हरिदत्त १४-५
सोवगस ८२, १७२	हरिद्वार १८०
सोबिदेव १९८, २०१	हरिनन्दि १७२
स्त्रिभुवनोत् १८	हरियनन्दन २९१
स्योमिष ३९८	हरियनन्दि २५८, २७१
स्वरटोर ३०१	हरिवर्मा १०, ४६, ५०-१
स्वर्णपुर ३४६	हरिसेट्टि २८६
हट्टण १३१	हरिसेन २९४-५
हडजण २८३	हरिहर २७८, २८७-८, ३५५-६, ३९१
हत्तिमस्तूर २५८	हर्षकोति ४२२
हदिनाडु १३३	हलसंगि १८७
३३	हलसिंगे २१४
	हलहरवि ४५

हलिगावुण्ड ३७९	हुमच २६४, ३११, ३३७
हलुमिडि ३१६	हुलगूर १७२
हलेबोड १५६, २३२, २५२, २५८, २७३	हुलदेनहल्लि ३६१
हलेसोरब २९०	हुल्लिकल ( हुलेकल ) २९२, ३४६
हलेह्ववलि २७५, ३५२	हुलिकेरे ( हुलिबेरे ) २१४, २५९, २८५-६, ३१६
हव्वक्का २१०	हुलियव्व १०२
हस्तिकुण्डो ४६-७, ५०, ५२	हुलियार १८०
हस्तिसाहस २	हुलूर ३८४
हंम ४००	हुंबड ३९६, ४००, ४०४-५
हाडुवाल्लि ३०८, ३३५	हुलि ७८, १४९, २२६
हादरिवागिलु १४६-७	हुविनसिग्गलि २५४
हानुंगल १५५, १७२, १८६, २०४	हुविनहिप्पणि ३८४
हालियसेट्टि १६४	हुडुव १२३, १२५
हालुगुड्डे १८३, १८५	हुण्णोगडलु १४०
हालोवे २६६	हुण्णंगडंग १३४
हावेरि ३७४	हुव्वल्लगुप्पे ३९
हात्तिनसेनबोव २०१	हुव्वल्लु ८६
हिरण्ययोगा ३५-६	हुमकीति ४०१-२, ४१०-२, ४१४, ४२२-३, ४२८
हिरियमादण्ण २८३	हुमणाचार्य ३१८
हरियमुहगोड १२६-७	हुमदेव १५८, ३००
हिरेचोटि २८९	हुमसूरि २२१
हिरेमन्नूर १८७	हुमसेन २१४, २१६, ३०१
हिरेसिगनगुत्ति १४८	हुम्मरसि ३२७
हीरगुप्पे २५६	हुम्माडिसेडि १८१-२
हुकेरी २७५	

हैरगु २७४	१५५-६, १६९, १७६-७,
हैरियबासेवेण्डे २३०-१	१७९-८०, २००-१, २०४-७
हेर्माडियरस ३९०	२०९-१०, २१६-८, २२०,
हेलाचार्य ३४६-७	२२३-४, २४९-५०, २५६,
हैदराबाद ७६, १११, ३७०	२५८-६०, २६२, २६५,
हेवण ३०३-५, ३५५-६	२७१-२, २७७, २९५
हैवेनूप ( भूगल ) २८०-२, २८४,	होरिम १३९-४०
२९८, ३००, ३०२, ३२७	होन्नरस १८७
होगरिगच्छ ८४-५	होलैनरसोपुर ७१, १४०
होनण २६७	होल्लराज २९४
होन्कुन्द २६०	होल्लिगीड १८६
होन्नम्बरसि ३०२, ३०५	होसकोटे ९
होन्नभूप (होन्नरस) २९७-८, ३०३,	होसनगर २१०
३५५-६	होसपट्टण २९५
होन्नसेट्टि २२४	होसाल २७८
होयसल ९६, १००-१, १२८,	होसूर ७६, १३२, ३५७
१३१, १३३-४, १४६-७,	होंगनूर २६८

## MĀNIKACHANDRA D. J. GRANTHAMĀLĀ

\* The Serial Numbers marked with asterisk are out of print.

\*1. **Laghyastraya-ādi-saṁgrahaḥ** : This vol. contains four small works: 1) *Laghyastrayam* of Akalaṅkadeva (c. 7th century A. D.), a small Prakaraṇa dealing with *pramāṇa*, *naya* and *pravacana*. Akalaṅka is an eminent logician who deserves to be remembered along with Dharmakīrti and others. His works are very important for a student of Indian logic. Here the text is presented with the Sk. commentary of Abhayacandrasūri. 2) *Svarūpasambodhana* attributed to Akalaṅka, a short yet brilliant exposition of *ātman* in 25 verses. 3-4) *Laghu-Sarvajña-siddhiḥ* and *Bṛhat-Sarvajña-siddhiḥ* of Anantakīrti. These two texts discuss the Jaina doctrine of Sarvajñatā. Edited with some introductory notes in Sk. on Akalaṅka, Abhayacandra and Anantakīrti by Pt. KALLAPPA BHARAMAPPA NITAVE, Bombay Saṁvata 1972, Crown pp. 8-204, Price As. 6/-.

\*2. **Sāgāra-dharmāmṛtam** of Āśādhara: Āśādhara is a voluminous writer of the 13th century A. D., with many Sanskrit works on different subjects to his credit. This is the first part of his *Dharmāmṛta* with his own commentary in Sk. dealing with the duties of a layman. Pt. NATHURAM PREMI adds an introductory note on

**Āśādhara** and his works. Ed. by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1972, Crown pp. 8-246, Price As. 8/-.

\*3. **Vikrāntakauravam** or **Sulocanānāṭakam** of Hastimalla (A.D. 13th century) : A Sanskrit drama in six acts. Ed. with an introductory note on Hastimalla and his works by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1972, Crown pp. 4-164, Price As. 6/-.

\*4. **Pārsavanātha-caritam** of Vādirājasūri : Vādirāja was an eminent poet and logician of the 10th century A. D. This is a biography of the 23rd Tirthaṅkara in Sanskrit extending over 12 cantos. Edited with an introductory note on Vādirāja and his works by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1973, Crown pp. 18-198, Price As. 8/-.

\*5. **Maithilikalyāṇam** or **Sitānāṭakam** of Hastimalla : A Sk. drama in 5 acts, see No. 3 above. Ed. with an introductory note on Hastimalla and his works by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1973, Crown pp. 4-96, Price As. 4/-.

\*6. **Ārāḍhanāsāra** of Devasena : A Prākṛit work dealing with religio-didactic topics. Prākṛit text with the Sk. commentary of Ratnakīrtideva, edited by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1973, Crown pp. 128, Price As. 4/6.

\*7. **Jinadattacaritam** of Guṇabhadra : A Sk. poem in 9 cantos dealing with the life of Jinadatta, edited by Pt. MANOHARLAL, Bombay saṁvat 1973, Crown pp. 96, Price As. 5/-.

8. **Pradyumnacarita** of Mahāsenācārya : A Sk. poem in 14 cantos dealing with the life of Pradyumna. It is composed in a dignified style. Edited by Pts. MANOHARLAL and RAMAPRASAD, Bombay Saṃvat 1973, Crown pp. 230, Price As. 8/-.

9. **Cāritrasāra** of Cāmuṇḍarāya : It deals with the rules of conduct for a house-holder and a monk. Edited by Pt. INDRALAL and UDAYALAL, Bombay Saṃvat 1974, Crown pp. 103, Price As. 6/-.

\*10. **Pramāṇanirṇaya** of Vādirāja : A manual of logic discussing specially the nature of Pramāṇas. Edited by Pts. INDRALAL and KHUBCHAND, Bombay Saṃvat 1974, Crown pp. 80, Price As. 5/-.

\* 11. **Ācārasāra** of Vīranandi : A Sk. text dealing with Darśana, Jñāna etc. Edited by Pts. INDRALAL and MANOHARLAL, Bombay Saṃvat 1974, Crown pp. 2-98, Price As. 6/-.

\* 12. **Trilokasāra** of Nemichandra : An important Prākṛit text on Jaina cosmography published here with the Sk. commentary of Mādhavacandra. Pt. PREMI has written a critical note on Nemichandra and Mādhavacandra in the Introduction. Edited with an index of Gāthās by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṃvat 1975, Crown pp. 10-405-20, Price Rs. 1/12/-.

\* 13. **Tattvānuśāsana-ādi-saṃgrahaḥ** : This vol. contains the following works. 1) *Tattvānuśāsana* of Nāgasena. 2) *Iṣṭopadeśa* of Pūjyapāda with the Sk.



commentary of Āśādhara. 3) *Nītisāra* of Indranandi. 4) *Mokṣapañcāśikā*. 5) *Śrutāvatāra* of Indranandi. 6) *Adhyātmatarāṅgiṇī* of Somadeva. 7) *Brhat-panṇa-namaskāra* or *Pātrakesarī-stotra* of Pātrakesarī with a Sk. commentary. 8) *Adhyātmāṣṭaka* of Vādirāja. 9) *Dvā-triṃśikā* of Amitagati. 10) *Vairāgyamaṇimālā* of Śrīcandra. 11) *Tattvasāra* (in Prākṛit) of Devasena. 12) *Śrutuskandha* (in Prākṛit) of Brahma Hemacandra. 13) *Dhāḍasi-gāthā* in Prākṛit with Sk. chāyā. 14) *Jñānasāra* of Padmasimha, Prākṛit text and Sk. chāyā. Pt. PREMI has added short critical notes on these authors and their works. Edited by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṃvat 1975, Crown pp. 4-176, Price As. 14/-.

\* 14. **Anagāra-dharmāmṛta** of Āśādhara : Second part of the *Dharmāmṛta* dealing with the rules about the life of a monk. Text and author's own commentary. Edited with verse and quotation Indices by Pts. BANSIDHAR and MANOHARLAL, Bombay Saṃvat 1976, Crown pp. 692-35, Price Rs. 3/8/-.

\*15. **Yuktyanuśāsana** of Samantabhadra : A logical Stotra which has wielded great influence on later authors like Siddhasena, Hemacandra etc.. Text published with an equally important commentary of Vidyānanda. There is an introductory note on Vidyānanda by Pt. PREMI. Ed. by Pts. INDRALAL and SHRILAL, Bombay Saṃvat 1977, Crown pp. 6-182, Price As. 13/-.

\*16. **Nayacakra-ādi-saṃgraha** : This vol. contains the following texts. 1) *Laghu-Nayacakra* of Devasena, Prākṛit text with Sk. chāyā. 2) *Nayacakra* of Devasena, Prākṛit text and Sk. chāyā. 3) *Ālāpāpaddhati* of Devasena. There is an introductory note in Hindī on Devasena and his *Nayacakra* by Pt. PREMI. Edited by Pt. BANSIDHARA with Indices, Bombay Saṃvat 1977, Crown pp. 42-148. Price As. 15/-.

\*17. **Ṣaṭprābhṛtādi-saṃgraha** : This vol. contains the following Prākṛit works of Kundakunda of venerable authority and antiquity. 1) *Darśana-prābhṛta*, 2) *Cāritra-prābhṛta*, 3) *Sūtra-prābhṛta*, 4) *Boḍha-prābhṛta*, 5) *Bhāva-prābhṛta*, 6) *Mokṣa-prābhṛta*, 7) *Liṅga-prābhṛta*, 8) *Sīla-prābhṛta*, 9) *Rayaṇasāra* and 10) *Dvādaśānuprekṣā*. The first six are published with the Sk. commentary of Śrutasaṅgāra and the last four with the Sk. chāyā only. There is an introduction in Hindī by Pt. PREMI who adds some critical information about Kundakunda, Śrutasaṅgāra and their works. Edited with an Index of verses etc. by Pt. PANNALAL SONI, Bombay Saṃvat 1977, Crown pp. 12-442-32. Price Rs. 3/-.

\*18. **Prāyaścittādi-saṃgraha** : The following texts are included in this volume. 1) *Chedapīṇḍa* of Indranandi Yogīndra, Prākṛit text and Sk. chāyā. 2) *Chedaśāstra* or *Chedanavati*, Prākṛit text and Sk. chāyā and notes. 3) *Prāyaścitta-cūlikā* of Gurudāsa, Sk. text with the commentary of Nandiguru. 4) *Prāyaścittigrantha* in Sk. verses by Bhaṭṭākalaṅka. There is a critical

introductory note in Hindi by Pt. PREMI. Edited by Pt. PANNALAL SONI, Bombay Saṁvat 1978, Crown pp.16-172-12, Price Rs. 1/2/-.

\*19. **Mūlācāra** of Vaṭṭakera, part I : An ancient Prākṛit text in Jaina Śaurasenī, Published with Sk. chāyā and Vasunandi's Sk. commentary. A highly valuable text for students of Prākṛit and ancient Indian monastic life. Edited by Pts. PANNALAL, GAJADHARALAL and SHRILAL, Bombay Saṁvat 1977, Crown pp. 516, Price Rs- 2/4/-.

20. **Bhāvasaṁgraha-ādiḥ** : This vol. contains the following works. 1) *Bhāvasaṁgraha* of Devasena, Prākṛit text and Sk. chāyā. 2) *Bhāvasaṁgraha* in Sk. verse of Vāmadeva Paṇḍita. 3) *Bhāva-triḥṣaṅgī* or *Bhāvasaṁgraha* of Śrutamuni, Prākṛit text and Sk. chāyā. 4) *Āśravatriḥṣaṅgī* of Śrutamuni, Prākṛit text and Sk. chāyā. There is a Hindi Introduction with critical remarks on these texts by Pt. PREMI. Edited with an Index of verses by Pt. PANNALAL SONI, Bombay Saṁvat 1978, Crown pp. 8-284-28, Price Rs. 2/4/-.

21. **Siddhāntasāra-ādi-Saṁgraha** : This vol. contains some twentyfive texts. 1) *Siddhāntasāra* of Jinacandra, Prākṛit text, Sk. chāyā and the commentary of Jñānabhūṣaṇa. 2) *Yogasāra* of Yogicandra, Apabhraṁśa text with Sk. chāyā. 3) *Kallāṇāloṇaṇā* of Ajitabrahma, Prākṛit text with Sk. chāyā, 4) *Amṛtāṭī* of Yogīndradeva, a didactic work in Sanskrit. 5) *Ratna-*

*mālā* of Śivakoṭi. 6) *Śāstrasārasamuccaya* of Māgha-  
 tandi, a Sūtra work divided in four lessons. 7) *Arhat-  
 pravacanam* of Prabhācandra, a Sūtra work in five  
 lessons. 8) *Āptasvarūpam*, a discourse on the nature  
 of divinity. 9) *Jñānalocanastotra* of Vādirāja (Poma-  
 rājasuta). 10) *Samavasaraṇastotra* of Viṣṇusena. 11)  
*Sarvajñastavana* of Jayānandasūri. 12) *Pārśvanātha-  
 amasyā-stotra*. 13) *Citrabandhastotra* of Guṇabhadra.  
 14) *Maharṣi-stotra* (of Āśādhara). 15) *Pārśvanātha-  
 stotra* or *Lakṣmīstotra* with Sk. commentary. 16) *Nemi-  
 nātha-stotra* in which are used only two letters viz. *n* &  
*m*. 17) *Śaṅkhadevāṣṭaka* of Bhānukīrti. 18) *Nijāt-  
 māṣṭaka* of Yogīndradeva in Prākṛit. 19) *Tattvabhāvana*  
 or *Sāmāyika-pāṭha* of Amitagati. 20) *Dharmarasāyana*  
 of Padmanandi, Prākṛit text and Sk. chāyā. 21)  
*Sārasamuccaya* of Kulabhadra. 22) *Aṅgapañṇatti* of  
 Śubhacandra, Prākṛit text and Sk. chāyā. 23) *Śrutā-  
 vatāra* of Vibudha Śrīdhara. 24) *Śalākānikṣepaṇa-  
 niṣkāsaṇa-vivaraṇam*. 25) *Kalyāṇamālā* of Āśādhara.  
 Pt. PREMI has added critical notes in the Introduction  
 on some of these authors. Edited by Pt. PANNALAL  
 SONI, Bombay Saṁvat 1979 Crown pp. 32-324, Price  
 Rs. 1/8/-.

\*22. **Nītivākyāmṛtam** of Somadeva : An important  
 text on Indian Polity, next only to *Kauṭilya-Arthasāstra*.  
 The Sūtras are published here along with a Sanskrit  
 commentary. There is a critical Introduction by PREMI  
 comparing this work with *Arthasāstra*. Edited by

Pt. PANNALAL SONI, Bombay Saṁvat 1979, Crown pp. 34-426, Price Rs. 1/12/-.

\* 23. **Mūlācāra** of Vaṭṭakera, part II : Prākṛit text, Sk. chāyā and the commentary of Vasunandī, see No. 19 above. Bombay Saṁvat 1980, Crown pp. 332, Price Rs. 1/8/-

24. **Ratnakaraṇḍaka-śrāvaka-cāra** of Samantabhadra : With the Sanskrit commentary of Prabhācandra. There is an exhaustive Hindī Introduction by Pt. JUGAL KISHORE MUKTHAR, extending over more than pp. 300, dealing with the various topics about Samantabhadra and his works. Bombay Saṁvat 1982, Crown pp. 2-84-252-114, Price Rs. 2/-.

25. **Pañcasamgrahaḥ** of Amitagati : A good compendium in Sanskrit of the contents of *Gommatasāra*. Edited with a note on the author and his works by Pt. DARBARILAL, Bombay 1927, Crown pp. 8-240, Price As. 13/- .

26. **Lāṭisamhitā** of Rājamalla : It deals with the duties of a layman and its author was a contemporary of Akbar to whom references are found in his compositions. There is an exhaustive Introduction in Hindī by Pt. JUGALKISHORE. Edited by Pt. DARBARILAL, Bombay Saṁvat 1948, Crown pp. 24-136, Price As. 8/- .

27. **Purudevācampū** of Arhaddāsa : A Campū work in Sanskrit written in a high-flown style. Edited with notes by Pt. JINADASA, Bombay Saṁvat 1985, Crown pp. 4-206, Price As. 12/- .

28. **Jaina-Śilālekha-saṁgraha** : It is a handy volume giving the Devanāgarī version of *Epigraphia Carnatica* II (Revised ed.) with Introduction, Indices etc. by Prof. HIRALAL JAIN, Bombay 1928, Crown pp. 16-164-428-40, Price Rs. 2/8/- .

29-30-31. **Padmacarita** of Raviṣeṇa : This is the Jaina recension of Rāma's story and as such indispensable to the students of Indian epic literature. It was finished in A. D. 676, and it has close similarities with *Paṁcariu* of Vimala (beginning of the Christian era). Edited by Pt. DARBARILAL, Bombay Saṁvat 1985, vol. i, pp. 8-512 ; vol. ii, pp. 8-436 ; vol. iii, pp. 8-446. Thus pp. about 1400 in all. Price Rs. 4/8/- .

32-33. **Harivaṁśa-purāṇa** of Jinasena I : This is the Jaina recension of the Kṛṣṇa legend. These two volumes are very useful to those interested in Indian epics. It was composed in A.D. 783 by Jinasena of the Punnāṭa-saṁgha. There is a Hindī Introduction by Pt. PREMIJI. Edited by Pt. DARBARILAL, Bombay 1930, vol. i and ii pp. 48-12-806, Price Rs. 3/8/-.

34. **Nītivākyaṁṛtam**, a supplement to No. 22 above : This gives the missing portion of the Sanskrit commentary, Bombay Saṁvat 1989, Crown pp. 4-76, Price As. 4/-.

35. **Jambūsvāmi-caritam** and **Adhyātma-kamala-mārtanda** of Rājamalla : See No. 26 above. Edited with an Introduction in Hindī by Pt. JAGADISH-

CHANDRA, M. A., Bombay Saṃvat 1993, Crown pp. 18-264-4, Price Rs. 1/8/-.

36. **Triṣaṣṭi-smṛti-sāstra** of Āśādhara : Sanskrit text and Marāṭhī rendering. Edited by Pt. MOTILAL HIRACHANDA, Bombay 1937, Crown pp. 2-8-166, Price As. 8/-.

37. **Mahāpurāṇa** of Puṣpadanta, Vol. I **Ādipurāṇa** (Saṃdhis 1-37) : A Jaina Epic in Apabhraṃśa of the 10th century A.D. Apabhraṃśa Text, Variants, explanatory Notes of Prabhācandra. A model edition of an Apabhraṃśa text. Critically edited with an Introduction and Notes in English by Dr. P. L. VAIDYA, M. A., D.Litt., Bombay 1937, Royal 8vo pp. 42-672, Price Rs. 10/-.

37(a) Rāmāyaṇa portion separately issued. Price Rs. 2.50.

38. **Nyāyakumudacandra** of Prabhācandra Vol. I : This is an important Nyāya work, being an exhaustive commentary on Akalaṅka's *Laghitrayam* with Vivṛti (see No. 1 above). The text of the commentary is very ably edited with critical and comparative foot-notes by Pt. MAHENDRAKUMARA. There is a learned Hindi Introduction exhaustively dealing with Akalaṅka, Prabhācandra, their dates and works etc. written by Pt. KAILASCHANDRA. A model edition of a Nyāya text. Bombay 1938, Royal 8 vo., pp. 20-126-38-402-6, Price Rs. 8/-.

39. **Nyāyakumudacandra** of Prabhācandra, Vol. II : See No 38 above. Edited by Pt. MAHENDRAKUMAR SHASTRI who has added an Introduction in Hindī dealing with the contents of the work and giving some details about the author. There is a Table of contents and twelve Appendices giving useful Indices. Bombay 1941. Royal 8vo pp. 20 + 94 + 403-930. Price Rs. 8/8/-.

40. **Varāṅgacaritam** of Jaṭā-Simhanandi : A rare Sanskrit Kāvya brought to light and edited with an exhaustive critical Introduction and Notes in English by Prof. A. N. Upadhye, M. A., Bombay 1938, Crown pp. 16+56+392, Price Rs. 3/-.

41. **Mahāpurāṇa** of Puṣpadanta, Vol. II (Saṁdhis 38-80) : See No. 37 above. The Apabhramśa Text critically edited to the variant Readings and Glosses, along with an Introduction and five Appendices by Dr. P. L. VAIDYA, M.A., D. Litt., Bombay 1940. Royal 8vo pp. 24+570 Price Rs. 10/-.

42. **Mahāpurāṇa** of Puṣpadanta, Vol. III (Saṁdhis 81-102) : See No. 37 and 40 above. The Apabhramśas Text critically edited with variant Readings and Glosses by Dr. P. L. VAIDYA, M. A., D. Litt. The Introduction covers a biography of Puṣpadanta, discussing all about his date, works, patrons and metropolis (Mānyakheta). Pt. PREMI'S essay 'Mahākavi Puṣpadanta' in Hindī is included here. Bombay 1941. Royal 8vo pp. 32+28+314. Price Rs. 6/-.



42(a). **Harivaṁśa** portion is separately issued.  
Price Rs. 2.50.

43. **Ajanāpavanamjaya-nāṭakam** and **Subhadrā-nāṭikā** of Hastimalla : Two Sanskrit Dramas of Hastimalla (see also No. 3 above). Critically edited by Prof. M. V. PATWARDHAN. The Introduction in English is a well documented essay on Hastimalla and his four plays which are fully studied. There is an Index of stanzas from all the four plays. Bombay 1950. Crown pp. 8+68+120+128. Price Rs. 3/-.

44. **Syādvādasiddhi** of Vāḍibhasiṁha : Edited by Pt. DARBARILAL with Introductions etc. in Hindī shedding good deal of light on the author and contents of the work. Bombay 1950. Crown pp. 26+32+34+80. Price Rs. 1.50.

45. **Jaina Śilālekha-saṁgraha**, Part II (see No. 28 above) : The texts of 302 Inscriptions (following A. Guérinot's order) are given in Devanāgarī with summary in Hindī. There is an Index of Proper Names at the end. Compiled by Pt. VIJAYAMURTI, M. A. Bombay 1952. Crown pp. 4+520. Price Rs. 8/-.

46. **Jaina Śilālekha-saṁgraha**, Part III (see Nos. 23 & 45 above) : The texts of 303-846 inscriptions (following Guérinot's list) is given in Devanāgarī with summary in Hindī compiled by Pt. VIJAYAMURTI, M.A. There is an Index of Proper Names at the end. The Introduction by Shri G.C. CHAUDHARI is an exhaustive

study of inscriptions. Bombay 1957. Crown pp. 8 + 178 + 592 + 42. Price Rs. 10/-.

47. **Pramāṇaprameyakalikā** of Narendrasena (A. D. 18th century) : A Nyāya text dealing with Pramāṇa and Prameya. The Sanskrit text critically edited by Pt. DARBARILAL. The Hindi Introduction deals with the author and a number of topics connected with the contents of this work. Bhāratiya Jñānapīṭha Kashi, Varanasi 1961. Price Rs. 1.50.



*For copies please write to—*

BHĀRATĪYA JÑĀNAPĪṬHA

Durgakunda Road,

Varanasi—5 (India).

Or

BHĀRATĪYA JÑĀNAPĪṬHA

3620/21 Netaji Subhash Marg,

Delhi—6 (India).



बोर सेवा मन्दिर

पुस्तकालय

काल नं० ४६३.२ जोहरा

लेखक जोहरापुरकर विद्याप्यर

शीर्षक जैन शीलालेख संग्रह

खण्ड चार क्रम संख्या ४०४५